शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

कक्षा : ग्यारहवीं

हिंदी (ऐच्छिक)

मार्गदर्शन:

श्री अशोक कुमार
सचिव (शिक्षा)

श्री हिमांशु गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. रीता शर्मा
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एवं परीक्षा)

समन्वयक:

श्री संजय सुभास कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा)

श्रीमती सुनीता दुआ
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री राजकुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

श्री कृष्ण कुमार
विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

उत्पादन मंडल

अनिल कुमार शर्मा

दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो में राजेश कुमार, सचिव, दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो, 25/2, पंखा रोड, संस्थानीय क्षेत्र, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित तथा मैसर्स अरिहन्त ऑफसेट, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

ASHOK KUMAR
IAS

सचिव (शिक्षा)
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054
दूरभाष: 23890187 टेलीफैक्स : 23890119

सत्यमेव जयते

Secretary (Education)
Government of National Capital Territory of Delhi
Old Secretariat, Delhi-110054
Phone : 23890187, Telefax : 23890119
E-mail : secyedu@nic.in

DO No. PS/SE/2022/231
06/09/2022

Message

Remembering the words of John Dewey, "Education is not preparation for life, education is life itself", I highly commend the sincere efforts of the officials and subject experts from Directorate of Education involved in the development of Support Material for classes IX to XII for the session 2022-23.

The Support Material is a comprehensive, yet concise learning support tool to strengthen the subject competencies of the students. I am sure that this will help our students in performing to the best of their abilities.

I am sure that the Heads of Schools and teachers will motivate the students to utilise this material and the students will make optimum use of this Support Material to enrich themselves.

I would like to congratulate the team of the Examination Branch along with all the Subject Experts for their incessant and diligent efforts in making this material so useful for students.

I extend my Best Wishes to all the students for success in their future endeavours.

22-8-22
(Ashok Kumar)

HIMANSHU GUPTA, IAS
Director, Education & Sports

PS/DE/2022/311

सत्यमेव जयते

Directorate of Education
Govt. of NCT of Delhi
Room No. 12, Civil Lines
Near Vidhan Sabha,
Delhi-110054
Ph.: 011-23890172
E-mail : diredu@nic.in

06/09/2022

MESSAGE

"A good education is a foundation for a better future."
- Elizabeth Warren

Believing in this quote, Directorate of Education, GNCT of Delhi tries to fulfill its objective of providing quality education to all its students.

Keeping this aim in mind, every year support material is developed for the students of classes IX to XII. Our expert faculty members undertake the responsibility to review and update the Support Material incorporating the latest changes made by CBSE. This helps the students become familiar with the new approaches and methods, enabling them to become good at problem solving and critical thinking. This year too, I am positive that it will help our students to excel in academics.

The support material is the outcome of persistent and sincere efforts of our dedicated team of subject experts from the Directorate of Education. This Support Material has been especially prepared for the students. I believe its thoughtful and intelligent use will definitely lead to learning enhancement.

Lastly, I would like to applaud the entire team for their valuable contribution in making this Support Material so beneficial and practical for our students.

Best wishes to all the students for a bright future.

(HIMANSHU GUPTA)

Dr. RITA SHARMA
Additional Director of Education
(School/Exam)

सत्यमेव जयते

Govt. of NCT of Delhi
Directorate of Education
Old Secretariat, Delhi-110054
Ph.: 23890185

D.O. No. PS/Addl.DE/Sch/2022/131

Dated: 01 सितम्बर, 2022

संदेश

शिक्षा निदेशालय, दिल्ली सरकार का महत्वपूर्ण लक्ष्य अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षा निदेशालय ने अपने विद्यार्थियों को उच्च कोटि के शैक्षणिक मानकों के अनुरूप विद्यार्थियों के स्तरानुकूल सहायक सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया है। कोरोना काल के कठिनतम समय में भी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया को निर्बाध रूप से संचालित करने के लिए संबंधित समस्त अकादमिक समूहों और क्रियान्वित करने वाले शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की सहायक सामग्रियों में सी.बी.एस.ई. के नवीनतम दिशा-निर्देशों के अनुसार पाठ्यक्रम में आवश्यक संशोधन किए गए हैं। साथ ही साथ मूल्यांकन से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिए गए हैं। इन सहायक सामग्रियों में कठिन से कठिन पाठ्य सामग्री को भी सरलतम रूप में प्रस्तुत किया गया है ताकि शिक्षा निदेशालय के विद्यार्थियों को इसका भरपूर लाभ मिल सके।

मुझे आशा है कि इन सहायक सामग्रियों के गहन और निरंतर अध्ययन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में गुणात्मक शैक्षणिक संवर्धन का विस्तार उनके प्रदर्शनो में भी परिलक्षित होगा। इस उत्कृष्ट सहायक सामग्री को तैयार करने में शामिल सभी अधिकारियों तथा शिक्षकों को हार्दिक बधाई देती हूँ तथा सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देती हूँ।

रीता शर्मा

(रीता शर्मा)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a [1]**[SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC]** and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship;

EQUALITY of status and of opportunity; and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the [2][unity and integrity of the Nation];

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty-sixth day of November, 1949 do **HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.**

---

1. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)
2. Subs. by the Constitution (Forty-second Amendment) Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

Constitution of India

Part IV A (Article 51 A)

Fundamental Duties

It shall be the duty of every citizen of India —

(a) to abide by the Constitution and respect its ideals and institutions, the National Flag and the National Anthem;

(b) to cherish and follow the noble ideals which inspired our national struggle for freedom;

(c) to uphold and protect the sovereignty, unity and integrity of India;

(d) to defend the country and render national service when called upon to do so;

(e) to promote harmony and the spirit of common brotherhood amongst all the people of India transcending religious, linguistic and regional or sectional diversities; to renounce practices derogatory to the dignity of women;

(f) to value and preserve the rich heritage of our composite culture;

(g) to protect and improve the natural environment including forests, lakes, rivers, wildlife and to have compassion for living creatures;

(h) to develop the scientific temper, humanism and the spirit of inquiry and reform;

(i) to safeguard public property and to abjure violence;

(j) to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement;

*(k) who is a parent or guardian, to provide opportunities for education to his child or, as the case may be, ward between the age of six and fourteen years.

Note: The Article 51A containing Fundamental Duties was inserted by the Constitution (42nd Amendment) Act, 1976 (with effect from 3 January 1977).

*(k) was inserted by the Constitution (86th Amendment) Act, 2002 (with effect from 1 April 2010).

शिक्षा निदेशालय

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री

(2022-2023)

हिंदी

कक्षा : ग्यारहवीं

नि:शुल्क वितरण हेतु

दिल्ली पाठ्य-पुस्तक ब्यूरो द्वारा प्रकाशित

सहायक सामग्री निर्माण समिति
हिंदी (ऐच्छिक)
कक्षा– ग्यारहवीं
2022–23

क्रम संख्या	नाम	पद
1.	**डॉ. सुमन शर्मा (समूह संदर्शिका)**	उप प्रधानाचार्य, सर्वोदय विद्यालय, वजीरपुर गाँव, दिल्ली
2.	**डॉ. अनुपमा (विषय–विशेषज्ञ)**	प्रवक्ता–हिंदी, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, झिलमिल कालोनी, दिल्ली
3.	**सुश्री नीरु मलिक (विषय–विशेषज्ञ)**	प्रवक्ता–हिंदी, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशन गंज, दिल्ली
4.	**सुश्री शीतल (विषय–विशेषज्ञ)**	प्रवक्ता–हिंदी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, गुरुतेग बहादुर नगर, दिल्ली
5.	**श्री मनोज त्रिपाठी (विषय–विशेषज्ञ)**	प्रवक्ता–हिंदी, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, राजनिवास मार्ग, दिल्ली

विषय सूची

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	अंतरा भाग–1 (गद्य खण्ड)	1–52
2.	अंतरा भाग–1 (काव्य खण्ड)	53–92
3.	पूरक पुस्तक (अंतराल)	93–108
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम	109–182
5.	अपठित बोध (गद्यांश तथा काव्यांश)	183–197
6.	प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र–1	198–219
7.	प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र–2	220–227
8.	प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र–3	228–236

हिंदी (ऐच्छिक)
(कोड सं. 002)
कक्षा–11वीं
(वर्ष 2021–22)

प्रश्न–पत्र दो खण्डों – खंड 'अ' और 'ब' का होगा।

खंड 'अ' में 48 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होंगे।

खंड 'ब' में वणर्नात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक 80 **निर्धारित समय 3 घंटे**

विषय–वस्तु			अंक
(1)	**अपठित अंश**		18
	क.	अपठित गद्यांश (लगभग 300 शब्दों का) बिना किसी विकल्प के (1 अंक × 10 प्रश्न)	10
	ख.	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश करना होगा। (लगभग 150 शब्दों के) (1 अंक × 8 प्रश्न)	08
(2)	**अभिव्यक्ति और माध्यम**		05
	इकाई एक–जनसंचार माध्यम और लेखन (पाठ 1 और 2) पर आधरित बहुविकल्पात्मक प्रश्न। (1 अंक × 5 प्रश्न)		05
(3)	**पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग–1 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		12
	क.	पठित काव्यांश पर छह बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक × 06 प्रश्न)	06
	ख.	पठित गद्यांश पर छह बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक × 06 प्रश्न)	06
(4)	**पूरक पाठ्यपुस्तक अंतराल भाग–1 से बहुविकल्पीय प्रश्न**		05
	क.	पठित पाठो पर पाँच बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक × 5 प्रश्न)	05

खंड – ब (वर्णनात्मक प्रश्न) 40 अंक

	विषय–वस्तु		अंक
5.	**अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के आधर पर** इकाई– दो सृजनात्मक लेखक पाठ 9, 10 और इकाई– तीन व्याहारिक लेखन पाठ 14, 15, 16		17
	(1)	दी गई स्थिति/घटना के आधर पर दृश्य लेखन (विकल्प सहित) लगभग 120 शब्दों में (5 अंक × 1 प्रशन)	05
	(2)	औपचारिक– पत्र/स्ववृत लेखन/रोजगार संबंधी आवेदन पत्र (विकल्प सहित) लगभग 120 शब्दों में (5 अंक × 1 प्रश्न)	05
	(3)	व्यावहारिक लेखन प्रतिवेदनल, प्रस–विज्ञप्ति, परिपत्र, कार्यसूची, कार्यवृत से संबंधित (विकल्प सहित) (3 अंक × 1 प्रश्न)	03
	(4)	अभिव्यक्ति और माध्यम पुस्तक के पठित पाठों पर आधारित दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक × 2 प्रश्न)	04
6.	**पाठ्यपुस्तक अंतरा भाग–1 + अंतराल भाग–1**		**23**
	(1)	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक × 2 प्रश्न)	04
	(2)	एक काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या (विकल्प सहित) (6 अंक × 1 प्रश्न)	06
	(3)	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक × 2 प्रश्न)	04
	(4)	एक गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या (6 अंक × 1 प्रश्न)	06
7.	**अंतराल भाग–1**		03
		पाठों की विषयवस्तु पर आधारित एक प्रश्न (विकल्प सहित) (3 अंक × 1 प्रश्न)	03
8.	**(अ)**	**श्रवण तथा वाचन**	10
	(ब)	**परियोजना कार्य**	10

प्रस्तावित पुस्तकें:

- **अंतरा, भाग–1,** एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
- **अंतराल, भाग–1,** एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
- **'अभिव्यक्ति और माध्यम',** एन. सी. ई. आर. टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

नोट: निम्नलिखित पाठों से प्रश्न नहीं पूछे जाएँगे।

पाठ्यपुस्तक – अंतरा भाग–1

1. नए की जन्म कुंडली (एक) (पूरा पाठ)
2. पद्माकर (पूरा पाठ)
3. महादेवी वर्मा– सब आँखों के आँसू उजले (घटाया गया पाठ का अंश और उससे संबंधित)
4. नरेन्द्र शर्मा – नींद उचट जाती है (पूरा पाठ)

अनुपूरक पाठ्यपुस्तक – अंतराल

1. अंडे के छिलके (एकांकी) पूरा पाठ

मौखिक परीक्षा और परियोजना कार्य

उद्देश्य : भाषा की सृजनात्मक बारीकियों और व्यावहारिक प्रयोगों का बोध तथा संदर्भ और समय के अनुसार प्रभावशाली ढंग से उसकी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करना।

मौखिक परीक्षा (श्रवण तथा वाचन) हेतु निर्देश–

श्रवण तथा वाचन की दक्षताओं का मूल्यांकन निरतंरता के आधार पर किया जाए।

श्रवण (सुनना) : निम्न विषयों को सुनकर समझाना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझाना।

- वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थ ग्रहण करना
- वार्तालाप सुनना
- वाद–विवाद / संवाद
- भाषण सुनना (पूर्व में दिए गए किसी साहित्यकार के भाषणों को सुनना)
- कविता पाठ सुनना
- किसी विद्यार्थी द्वारा दी गई प्रस्तुति को रिकार्ड कर सुनाना

श्रवण का मूल्यांकन : परीक्षक उपर्युक्त विषयों में से या अन्य किसी विषय पर सुनने के लिए विद्यार्थियों को तथा विद्यार्थी के श्रवण कौशल की जाँच हेतु विषय से प्रश्न पूँछेंगे। अभ्यास प्रश्न, रिक्त स्थान पूर्ति, बहुविकल्पीय अथवा सत्य–असत्य, किसी भी प्रकार के हो सकते हैं। परन्तु केवल तथ्यपरक न होकर विचारपरक भी हों ताकि श्रवण क्षमता का अभीष्टम आकलन हो सके साथ ही भाषिक ग्राह्यता का पता चल सके।

वाचन (बोलना) :

- किसी चित्र का वर्णन
- भाषण
- सस्वर कविता पाठ करना
- वार्तालाप
- कार्यक्रम प्रस्तुति
- कथा–कहानी अथवा घटना सुनाना

- परिचय देना
- भावानुकूल संवाद वाचन (दो विद्यार्थियों के मध्य भी हो सकता है)
- आशु भाषण, मंच अनुभव
- कठपुतलियों का नाच या अन्य कोई दृश्य बनाना
- किसी धारावाहिक / फिल्म का वर्णन

वाचन के अंग :

1. शुद्धता
2. स्पष्टता
3. उचित यति, गति, लय
4. प्रवाह–आरोह–अवरोह
5. ध्वनि परिवर्तन
6. अंग संचालन

वाचन मूल्यांकन :

- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित
- जब परीक्षार्थी बोलना प्रारंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करे।
- परीक्षार्थी को तैयारी के लिए थोड़ा समय दिया जाए।

परियोजना कार्य

- व्यक्तिगत रूप से तैयार की जाएगी।
- किसी भी विषय वस्तु पर परियोजना कार्य कराया जा सकता है।
- गद्य या पद्य की विभिन्न विधाएं जैसे : निबंध, नाटक कहानी का चुनाव किया जा सकता है।
- किसी फिल्म की समीक्षा
- जनसंचार के विभिन्न माध्यम
- हिंदी साहित्य का इतिहास

- कवि / लेखक का संपूर्ण परिचय तथा एक रचना की समीक्षा
- समसामयिक विषय (पानी की किल्लत, भ्रष्टाचार आदि)

परियोजना का स्वरूप (सुझावात्मक)

- प्रस्तावना
- आभार ज्ञापन
- उद्देश्य
- सीमांकन
- प्रस्तुति / रूपरेखा
- कार्यविधि
- परिणाम
- सुझाव
- उपसंहार
- विषयवस्तु की जानकारी के स्रोत

मूल्यांकन के बिन्दु (परीक्षक के लिए सुझावात्मक बिन्दु)

1. विषय–वस्तु
2. शोध / मौलिकता
3. भाषा एवं प्रस्तुति

श्रवण कौशल की जाँच हेतु निर्देश (सुझावात्मक)

- शिक्षिका / शिक्षक एक अंश को सुनाने से पहले ब्लैकबोर्ड पर कुछ प्रश्न और लिख दें और विद्यार्थियों को ध्यानपूर्वक सुनकर उन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहे।
- इससे विद्यार्थियों में श्रवण कौशल का विकास होगा व श्रवण क्षमता का पता लगाया जा सकेगा ।

उदाहरणस्वरूप ब्लैकबोर्ड पर निम्न प्रश्न शिक्षक लिखे –

1. मेघालय की तीन पर्वत शृंखलाएँ कौन सी हैं?
2. इनमें से कौन सा राज्य मातृसत्तात्मक है?

   (क) मेघालय (ख) महाराष्ट्र

   (ग) गुजरात (घ) पंजाब
3. मणिपुर की राजधानी क्या है?
4. मेघालय भारत की किस दिशा में है?
5. 'भारती' शब्द का क्या अर्थ है?

श्रवण कौशल

तीन पर्वतीय अंचलों में बँटा हुआ है मेघालय–खासी पर्वत, गारो पर्वत और जयंतिया पर्वत। और इन्हीं तीन पर्वतीय अंचलों से जयंतिया पर्वत जिला। हर अंचल की अपनी अलग संस्कृति है, रीति–रिवाज, पर्व–उत्सव हैं, लेकिन हर कहीं पारिवारिक व्यवस्था मातृसत्तात्मक है–भूमि, धन, संपत्ति सब माँ से बेटी को मिलती है। "मातृसत्तात्मक व्यवस्था होने के कारण यहाँ नारी–शोषण की वैसी घटनाएँ नहीं होती, जैसी कि देश के अन्य भागों में देखने–सुनने को मिलती हैं।" संगमा कहते हैं।

स्त्री का यहाँ वर्चस्व है, यह अहसास गुवाहाटी से मेघालय की सीमा में घुसने के साथ ही होने लगता है। तमाम दुकानों पर स्त्रियाँ सौदा बेचतीं और बेहिचक बतियाती दिखाई देती हैं। शायद कमोबेश यह स्थिति पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों में भी है, भले ही वहाँ मातृसत्तात्मक परिवार व्यवस्था न हो। कुछ साल पहले मणिपुर की राजधानी इंफाल में भी यही सब देखा था। स्त्रियों का एक पूरा–का–पूरा बाजार ही है वहाँ, जिसे 'माइती बाजार' कहते हैं–यानी माँ का बाजार। दिन–दोपहर हुई नहीं कि सिर पर सब्जी, कपड़ों या अन्य सामान के टोकरे रखे स्त्रियाँ इस बाजार में आ पहुँचती है। दिन–भर सामान की बिक्री कर शाम को अपने–अपने घर लौट पड़ती हैं। किसी प्रकार का वर्ग–भेद नहीं। यानी अमीर घरों की स्त्रियाँ भी इस 'माइती बाजार' में मिल जाएँगी और गरीब घरों की स्त्रियाँ भी। और यह बाजार केवल इंफाल में ही नहीं है, मणिपुर के हर नगर, कस्बे, गाँव में है–वहाँ की संस्कृति का एक अटूट सिलसिला।

उत्तर : 1. गारो, खासी, जयंतिया

2. मेघालय

3. इंफाल

4. उत्तर–पूर्वी राज्य

5. माँ का घर

भाषा कौशल

लेखन कौशल

पठन कौशल

श्रवण कौशल

वाचन कौशल

कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

(इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं।)

श्रवण (सुनना)	वाचन (बोलना)
1. परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है किन्तु वह सुसंबद्ध आशय को नहीं समझ पाता।	1. केवल अलग–अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसबंद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता।
2. छोटे संबंद्ध कथनों को परिचित संदर्भों में समझने की योग्यता है।	2. परिचित संदर्भों में केवल छोटे संबंद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है।
3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है।	3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है, अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है, जिससे प्रेषण में रूकावट आती है।
4. दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने के ढंग और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है।	4. अपरिचित स्थितियों से विचारों को तार्किक ढंग से संगठित कर धारा–प्रवाह रूप से प्रस्तुत करता है। ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रूकावट नहीं आती।
5. जटिल कथनों के विचार बिंदुओं को समझने की योग्यता व प्रदर्शित करने की क्षमता है। वह उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है।	5. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, ऐसा करते समय वह केवल मामूली गलतियाँ करता है।

प्रश्नपत्र का प्रश्नानुसार विश्लेषण एवं प्रारूप
हिन्दी पाठ्यक्रम–11वीं ऐच्छिक (2022–23)

निर्धारित समयावधि : 3 घंटे अधिकतम अंक : 100

क्र.सं.	प्रश्नों का प्रारूप	दक्षता परीक्षण / अधिगम परिणाम	1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	8 अंक	कुल योग
1	**अपठित बोध (पठन कौशल)**	अवधारणात्मक बोध, अर्थग्रहण अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्द–ज्ञान व भाषिक प्रयोग, सृजनात्मकता, मौलिकता।	18	–	–	–	–	–	–	18
2	**कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)**	संकेत बिंदुओं का विस्तार, अपने मत किा अभिव्यक्ति, सोदाहरण समझना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाह्यता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता, सृजनात्मकता एवं तार्किकता।	5	4	3	–	10	–	–	22
3	**पाठ्य पुस्तकें**	प्रत्यास्मरण, विषयवस्तु का बोध एवं व्याख्या, अर्थग्रहण (भावग्रहण) लेखक के मनोभावों को समझना शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना, आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता, सराहना, साहित्यिक परंपराओं के परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन, विश्लेषण, सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता, कार्य–कारण संबंध स्थापित करना, साम्यता एवं अंतरों की पहचान, अभिव्यक्ति में मौलिकता एवं जीवन मूल्यों की पहचान।	17	8	3	–	–	12	–	40
4.	**मौखिक परीक्षा**	श्रवण तथा वाचन	–	–	–	–	–	–	–	10
5.	**परियोजना कार्य**	परियोजना	–	–	–	–	–	–	–	10
		कुल	**40**	**12**	**6**	**–**	**10**	**12**	**–**	**100**

परियोजना कार्य

– कुल अंक 10

विद्यार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिया जाएगा – 5 अंक

1. विषयवस्तु – 1 अंक
2. शब्द सीमा (1000 शब्द) – 1 अंक
3. भाषा शैली – 1 अंक
4. विषय से संबंधित चित्र तथा आँकड़े – 1 अंक
5. प्रस्तुतीकरण – 1 अंक

- परियोजना कार्य के आधार पर मौखिकी – **5 अंक**
- परियोजना कार्य हिंदी भाषा और साहित्य से संबंद्ध हो।

नोटः परियोजना कार्य के विषय **– 10 अंक**

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास
2. विभिन्न संचार माध्यम
3. कवि/लेखक का संपूर्ण परिचय
4. गद्य की विभिन्न विधाएँ
5. किसी एक विधा का विस्तृत वर्णन
6. समसामयिक विषय

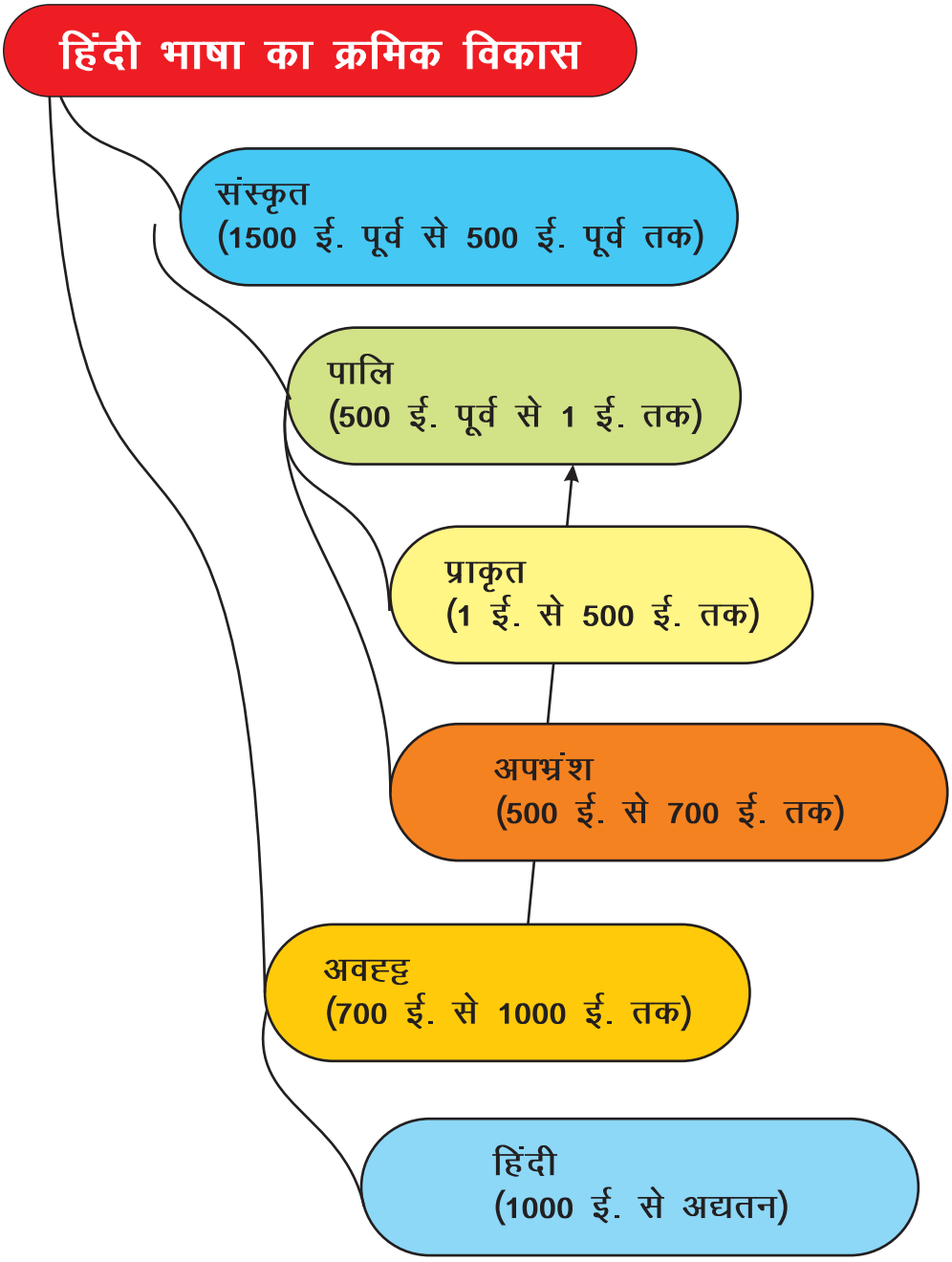
हिंदी भाषा का क्रमिक विकास
संस्कृत
(1500 ई. पूर्व से 500 ई. पूर्व तक)
पालि
(500 ई. पूर्व से 1 ई. तक)
प्राकृत
(1 ई. से 500 ई. तक)
अपभ्रंश
(500 ई. से 700 ई. तक)
अवहट्ट
(700 ई. से 1000 ई. तक)
हिंदी
(1000 ई. से अद्यतन)

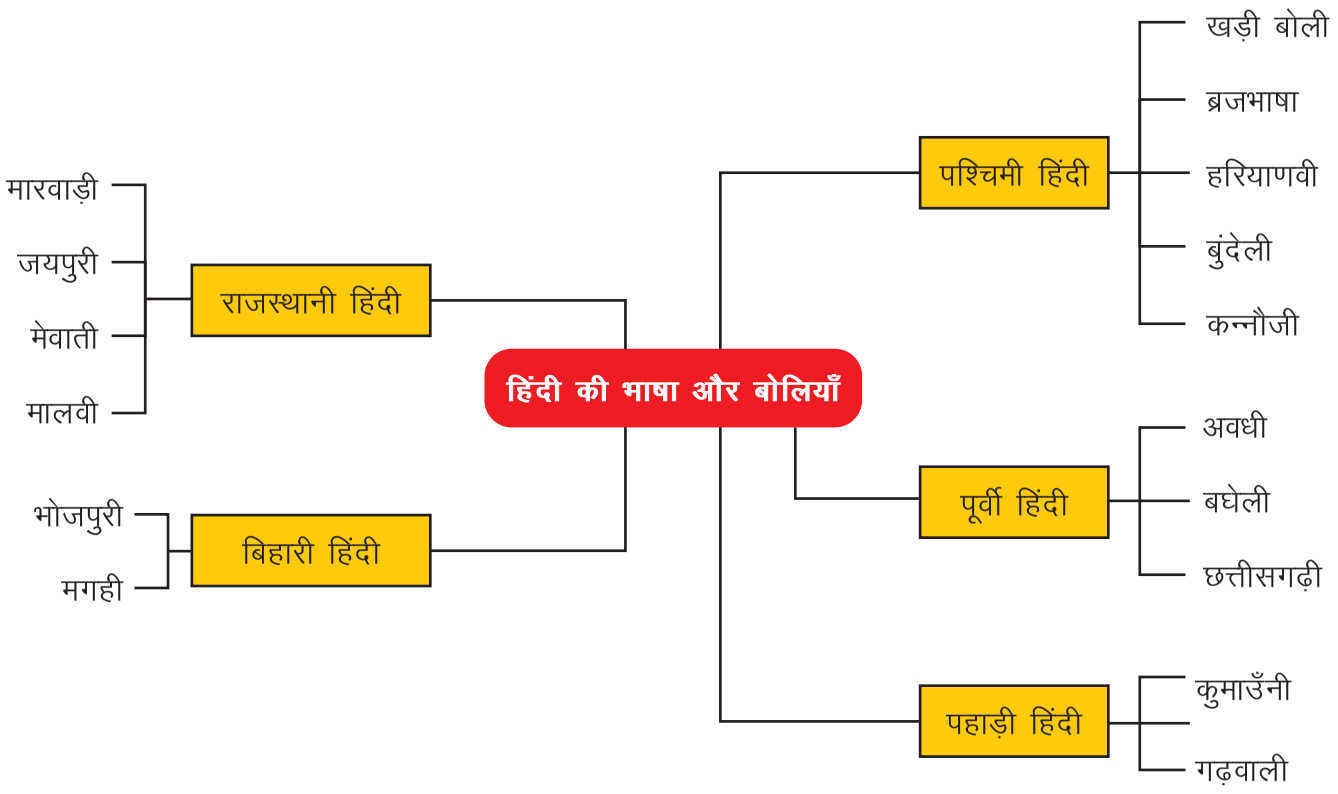
हिंदी की भाषा और बोलियाँ
पश्चिमी हिंदी
खड़ी बोली
ब्रजभाषा
हरियाणवी
बुंदेली
कन्नौजी
पूर्वी हिंदी
अवधी
बघेली
छत्तीसगढ़ी
पहाड़ी हिंदी
कुमाउँनी
गढ़वाली
राजस्थानी हिंदी
मारवाड़ी
जयपुरी
मेवाती
मालवी
बिहारी हिंदी
भोजपुरी
मगही

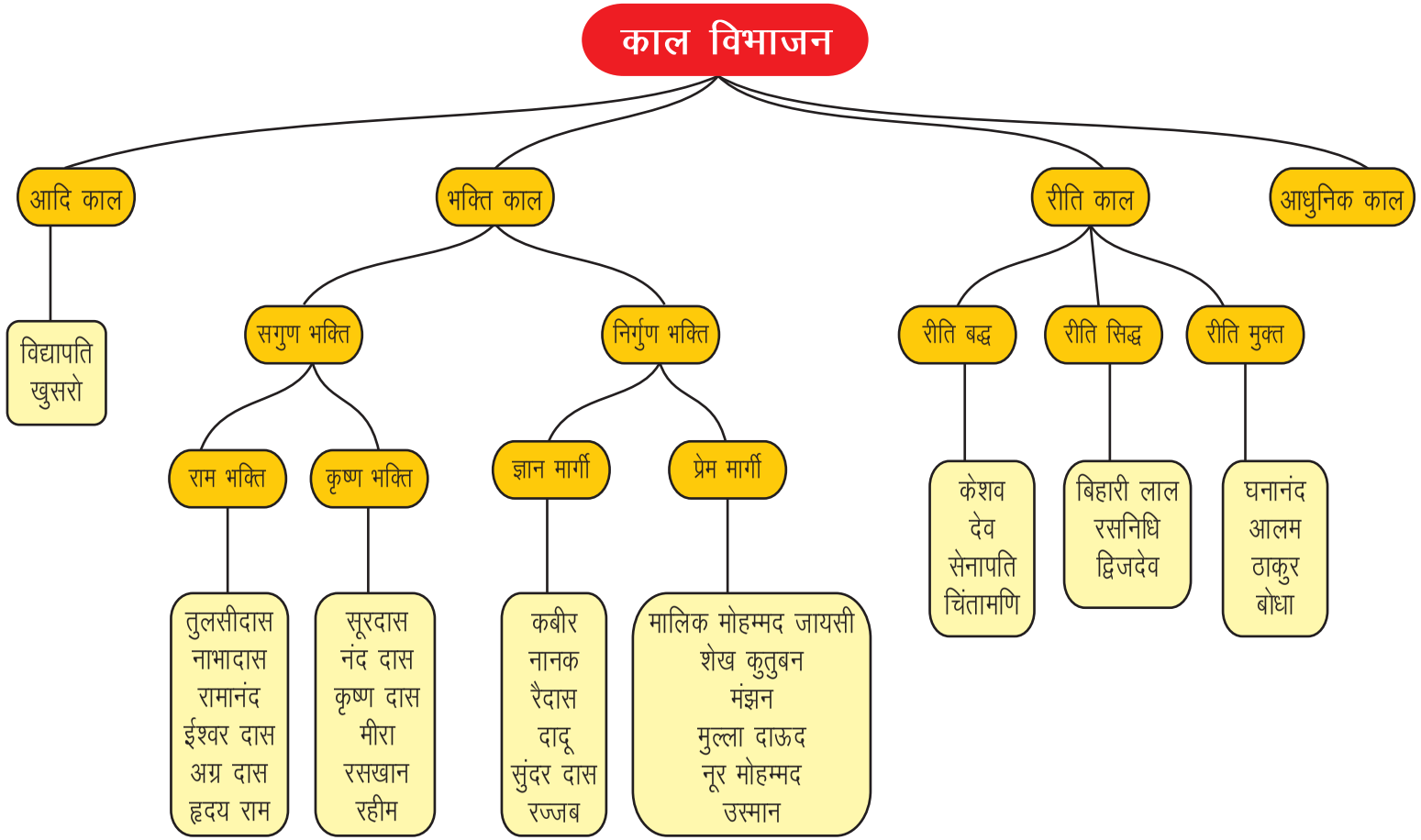
काल विभाजन
आदि काल
भक्ति काल
रीति काल
आधुनिक काल
विद्यापति
खुसरो
सगुण भक्ति
निर्गुण भक्ति
रीति बद्ध
रीति सिद्ध
रीति मुक्त
राम भक्ति
कृष्ण भक्ति
ज्ञान मार्गी
प्रेम मार्गी
केशव
देव
सेनापति
चिंतामणि
बिहारी लाल
रसनिधि
द्विजदेव
घनानंद
आलम
ठाकुर
बोधा
तुलसीदास
नाभादास
रामानंद
ईश्वर दास
अग्र दास
हृदय राम
सूरदास
नंद दास
कृष्ण दास
मीरा
रसखान
रहीम
कबीर
नानक
रैदास
दादू
सुंदर दास
रज्जब
मालिक मोहम्मद जायसी
शेख कुतुबन
मंझन
मुल्ला दाऊद
नूर मोहम्मद
उस्मान

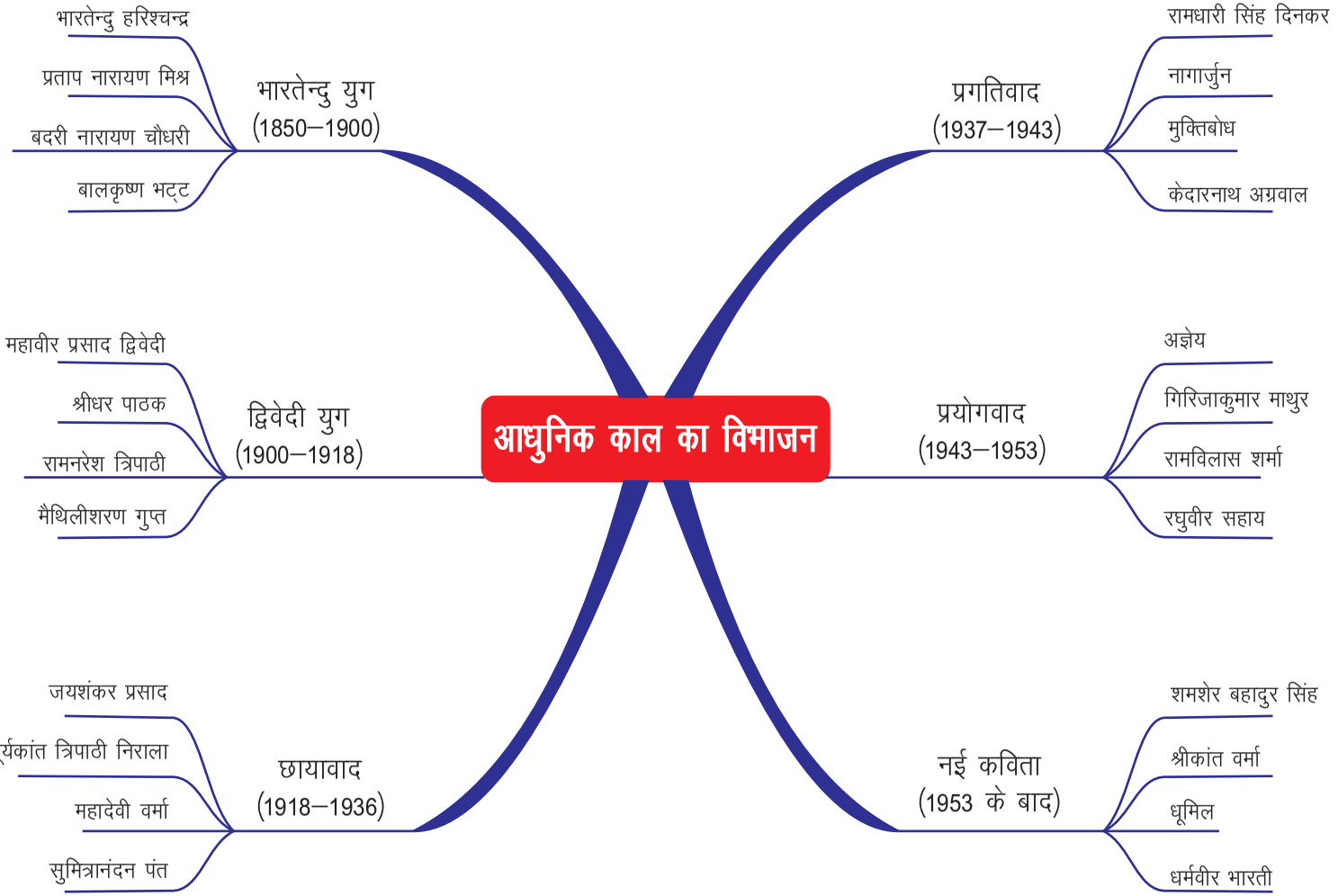
आधुनिक काल का विभाजन
भारतेन्दु युग
(1850–1900)
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
प्रताप नारायण मिश्र
बदरी नारायण चौधरी
बालकृष्ण भट्ट
द्विवेदी युग
(1900–1918)
महावीर प्रसाद द्विवेदी
श्रीधर पाठक
रामनरेश त्रिपाठी
मैथिलीशरण गुप्त
छायावाद
(1918–1936)
जयशंकर प्रसाद
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
महादेवी वर्मा
सुमित्रानंदन पंत
प्रगतिवाद
(1937–1943)
रामधारी सिंह दिनकर
नागार्जुन
मुक्तिबोध
केदारनाथ अग्रवाल
प्रयोगवाद
(1943–1953)
अज्ञेय
गिरिजाकुमार माथुर
रामविलास शर्मा
रघुवीर सहाय
नई कविता
(1953 के बाद)
शमशेर बहादुर सिंह
श्रीकांत वर्मा
धूमिल
धर्मवीर भारती

शब्द शक्तियाँ

(क) अभिधा

(ख) लक्षणा

(ग) व्यंजना

(क) **अभिधा**– जीवन के नित्य व्यवहार में अभिधा का अत्यधिक महत्व है।

किसी शब्द को सुनकर उसके प्रचलित और निश्चित अर्थ को समझना अभिधा शब्द शक्ति है।

जैसेः सिंह एक विशेष प्रकार का जीव

(ख) **लक्षणा**– मुख्यार्थ की बाधा होने पर रूढ़ि या प्रयोजन को लेकर जिस शक्ति के द्वारा मुख्यार्थ से सम्बन्ध रखने वाला अर्थ लक्षित हो उसे लक्षणा कहते हैं।

जैसेः आगि बड़वागि ते, बड़ी है आगि पेट की 'तुलसी दास'

यहाँ पेट की आग का कथन किया गया है। पेट में आग नहीं भूख लगती है। किन्तु तीव्र और कठिन भूख के लिए पेट की आग का प्रयोग परम्परा से होता रहा है।

सभी मुहावरों और लोकोक्तियों में लक्षणा होती है।

दूसरे उदाहरण से देखते है–

कौशल्या के वचन सुनि,

भरत सहित रनिवास।।

व्याकुल विलपत राजगृह,

मानहुँ शोक निवास।।

कौशल्या के वचन सुनकर समस्त राजगृह व्याकुल होकर रो रहा है–

राजगृह रो नहीं सकता– यहाँ राजगृह का अर्थ उसमें रहने वाले लोगों से है।

काव्य में लक्षणा शब्द शक्ति की प्रमुखता होती है।

(ग) **व्यंजना** – व्यंजना वह शब्द शक्ति है जिसमें सूचित अर्थ व्यंजना होता है।

एक शास्त्र प्रसिद्ध वाक्य से व्यंजना को समझते है–

''सास ने बहू से कहा– **सूर्य अस्त हो गया**'' बहू ने इसका अर्थ समझा कि दीपक जलाओ।

– यहाँ अभिधा नहीं हो सकता क्योंकि प्रचलित अर्थ नहीं किया गया।

– लक्षणा भी नहीं हो सकता क्योंकि मुख्यार्थ में बाधा नहीं उत्पन्न हो रही।

– अतः यहाँ व्यंग्य है क्योंकि मुख्य अर्थ लिया नहीं गया और उस अर्थ में बाधा भी नहीं है।

उदाहरण – पुर ते निकसी रघुवीर वधु.....

फिर बूझति है, चलनो अब केतिक पर्नकुटी करि हों कित हवै?

यहाँ सीता राम से पूछती हैं कि आप पर्णकुटी कहाँ बनाएंगे। सीता को पैदल चलने का अभ्यास नहीं है, उनके शब्दों से अर्थ व्यंजित होता है कि वे थक गई हैं।

यहाँ मुख्यार्थ में बाधा नहीं है पूछने का मुख्य अर्थ भी बना रहता है।

कर्णधार संभालकर पतवार अपनी थामना– 'प्रसाद'

इसमें कर्णधार या नाविक को सावधान किया गया है–

प्रसंग के अनुसार नाविक कोई भी हो सकता है प्रेम के प्रसंग में प्रेमी या प्रेमिका, युद्ध में सेनापति, जीवन संघर्ष में मनुष्य।

अतः यहाँ व्यंजना शब्द शक्ति है। साहित्कारों ने सर्वश्रेष्ठ काव्य उसे माना है जहाँ 'व्यंजना' हो।

गुण

मनुष्य की भांति काव्य में भी गुण दोष होते हैं। भारतीय आचार्यों ने गुण को काव्य की आत्मा का धर्म माना है।

गुण उसे कहते हैं जो रस के साथ सदैव विद्यमान रहता है।

गुण तीन प्रकार के होते हैं–

(क) माधुर्य

(ख) ओज

(ग) प्रसाद

(क) **माधुर्य गुण**– जहाँ काव्य पाठ से श्रोता का हृदय द्रवित हो जाता है वहाँ माधुर्य गुण होता है।

– शृंगार, करुण और शान्त रस में यह गुण विद्यमान होता है।

माधुर्य गुण में कठोर वर्ण (प, ठ, ण) का प्रयोग नहीं होता–

– हे खग, हे मृग, हे मधुकर श्रेणी

तुम देखी सीता, मृग नयनी।।

(ख) **ओज गुण** – जिस काव्य को पढ़ने से चित्त में तेज और स्फूर्ति का संचार हो जाए उसे ओज गुण कहते हैं। साहित्यकारों ने ओज को वीर, वीभत्स और रौद्र रस में बताया है।

''सब जाति फटी दुःख की दुपटी,

कपटी न रहै जहाँ एक घटी'' – केशव

(ग) प्रसाद गुण – जहाँ कविता का अर्थ और भाव सुनते ही समझ में आ जाए और श्रोता के हृदय में व्याप्त हो जाए वहाँ प्रसाद गुण होता है।

दीन दयाल विरद् संभारी

हरहूँ नाथ मम संकट भारी।।

प्रसाद गुण की सबसे बड़ी विशेषता काव्य अर्थ की स्पष्टता है। प्रसाद गुण सभी रसों में हो सकता है। प्रसाद गुण में सभी वर्णों का प्रयोग होता है।

ध्यान देने योग्य बातें

अन्तरा भाग–1

गद्य–खण्ड

1. गद्य–खण्ड के अन्तर्गत सप्रसंग व्याख्या का (6 अंक) एक प्रश्न पूछा जाता है।
2. सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न का उत्तर चार उपशीषर्कों के अन्तर्गत देना आवश्यक है–

   1. संदर्भ 2. प्रसंग 3. व्याख्या 4. साहित्यिक सौंदर्य
3. संदर्भ–लेखन के अन्तर्गत पाठ एवं लेखक का नाम अनिवार्य रूप से दें। पाठ्यपुस्तक का नाम न लिखें। प्रसंग में गद्य का पाठ में पूर्वापर संबंध स्पष्ट करें।
4. व्याख्या के अन्तर्गत गद्यांश की पंक्तियों का पूर्व प्रसंग से संबंध स्थापित करते हुए गद्यांश की व्याख्या करें।
5. साहित्यिक सौंदर्य के अन्तर्गत लेखक की भाषा एवं शैलीगत विशेषताएँ लिखें।
6. लेखक परिचय को भी तीन उपशीर्षकों में बाँटकर लिखें– जीवन परिचय, रचनाएँ तथा साहित्यगत और भाषागत विशेषताएँ।
7. 'जीवन परिचय' शीर्षक के अंतर्गत लेखक के जन्म, परिवार, शिक्षा एवं साहित्यिक गतिविधियों से सम्बन्धित जानकारी दें।
8. 'रचनाएँ' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक द्वारा रचित रचनाओं के नाम लिखें और किन रचनाओं पर कब उन्हें पुरस्कार मिले।
9. साहित्यगत विशेषताओं के अन्तर्गत लेखक के विषयों, भाषा एवम् शैलीगत विशेषताओं की जानकारी दें।

अन्तरा भाग–1 (गद्य–खण्ड)

पाठ–1

ईदगाह

पाठ– परिचय

प्रेमचन्द द्वारा लिखित कहानी 'ईदगाह' भावनात्मक एवं बाल मनोविज्ञान पर आधारित कहानी है। कहानी का प्रमुख पात्र हामिद है। जो अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। हामिद के चरित्र के माध्यम से अभावग्रस्त जीवन के कारण बच्चे का समय से पहले समझदार होना और इच्छाओं का दमन करना दर्शाया गया है। किस प्रकार बच्चा (हामिद) परिस्थितियों से समझौता करना सीख जाता है, यह बताया गया है।

स्मरणीय बिन्दु

ईद के अवसर पर गाँव में ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही है। सभी लोग कामकाज निपटाकर ईद के मेले में जाने की जल्दी में हैं। बच्चे सबसे ज्यादा खुश हैं। उन्हें गृहस्थी की चिंताओं से कोई मतलब नहीं, उन्हें तो यह भी नहीं मालूम कि उनके अब्बाजान ईद के लिए पैसों का इंतजाम करने चौधरी कायम अली के घर दौड़े जा रहे है और यदि चौधरी पैसे उधार देने से मना कर दे तो वे ईद का त्योहार नहीं मना पाएँगें। उनका यह ईद की खुशी का अवसर मुहर्रम जैसे मातम में बदल जाएगा। बच्चों को तो बस ईदगाह जाने की जल्दी हैं।

हामिद चार–पाँच साल का दुबला–पतला लड़का है, वह अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। उसके माता–पिता गत वर्ष गुज़र चुके हैं, परन्तु उसे बताया गया है कि उसके अब्बाजान रूपये कमाने गए हैं और उसकी अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए अच्छी–अच्छी चीजें लाने गई हैं। इसीलिए हामिद आशावान है और प्रसन्न है।

अमीना स्वयं सेवैयों के इंतजाम के लिए घर पर रहकर हामिद को तीन पैसे देकर मेले में भेज देती हैं हामिद के साथ उसके दोस्त मोहसिन, महमूद, नूरे और सम्मी भी हैं।

गाँव से बच्चे मेले की ओर चले, हामिद भी साथ में था। रास्ते में बड़ी–बड़ी इमारतें, फलदार वृक्ष आए। बच्चे कल्पनाशील होने के नाते तरह–तरह की कल्पनाएँ तथा उन चीजों पर टीका–टिप्पणी करते आगे बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में पुलिस लाइन आने पर एक ने कहा–यहाँ सिपाही कवायद करते हैं। मोहसिन का कहना था कि यहीं पुलिस वाले चोरी भी करवाते हैं। हामिद को सुनकर आश्चर्य होता है। इस प्रकार बालकों में पुलिस के प्रति अलग–अलग विचारधारा थी।

ईदगाह में नमाज़ का नज़ारा अलग ही था। नमाज़ के समय लाखों सिर एक साथ

सज़दे में झुकते हैं तथा एक साथ उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता है उनके मन में अपार श्रद्धा का भाव होता है। उनके भीतर की भाईचारे की भावना उनको आपस में जोड़े रखती है। धर्म आपस में लोगों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। धर्म के नाम पर तोड़ने वाले धर्म के रहस्य को समझते ही नहीं। कोई भी धर्म मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद नहीं करता।

ईदगाह में नमाज़ के पश्चात् हामिद के दोस्त चर्खियों पर झूलते हैं परन्तु हामिद दूर खड़ा रहता है। खिलौनों की दुकान से महमूद सिपाही, नूरे वकील, मोहसिन भिश्ती तथा सम्मी धोबिन खरीदता है। हामिद खिलौनों की निंदा करता है परन्तु साथ ही ललचाई निगाहों से उन्हें देखता भी है। सभी मित्र मिठाईयाँ खरीदते हैं और हामिद को चिढ़ा–चिढ़ाकर खाते हैं।

मेले के अंत में लोहे की दुकान पर चिमटा देखकर हामिद को अपनी दादी का ख़्याल आता है। दुकानदार से मोलभाव करके वह चिमटा खरीद लेता है। हामिद के तर्कों के कारण उसके सभी दोस्त उसके चिमटे से प्रभावित हो जाते हैं। घर पहुँचकर दोस्तों के खिलौने किसी न किसी प्रकार टूट जाते हैं।

हामिद के घर पहुँचते ही दादी अमीना उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी पर अचानक हाथ में चिमटा देखकर वह चौंक गई। पूछने पर हामिद बताता है कि उसने मेले से तीन पैसे का चिमटा खरीद लिया। दादी उसकी नासमझी पर क्रोधित होते हुए पूछती है कि पूरे मेले में उसे कोई और चीज़ खरीदने के लिए नहीं मिली। हामिद अपराधी भाव से बताता है कि दादी की उँगलियाँ तवे से जल जाती थी, इसलिए उसने चिमटा खरीदा। यह सुनकर बुढ़िया का क्रोध तुरन्त स्नेह में बदल गया।

दादी अमीना हामिद के त्याग, उसका स्नेह और उसका विवेक देखकर हैरान रह गई। सुबह से भूखा बच्चा, दूसरों को मिठाई खाते देख, कैसे इसने अपने मन को मनाया होगा। मेले में भी इसे अपनी बूढ़ी दादी की याद बनी रही। यह सब सोचकर अमीना का मन गद्‌गद् हो गया।

दादी अमीना एक बालिका के समान रोने लगी। वह दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जा रही थी तथा आँसुओं की बड़ी–बड़ी बूँदें गिराती जा रही थी। परन्तु हामिद इस रहस्य को समझने के लिए बहुत छोटा था कि दादी उसके त्याग का अनुभव कर भाव –विभोर हो गई। हामिद यह नहीं समझ पा रहा था कि वह तो दादी के लिए चिमटा लाया है तो फिर दादी रो क्यों रही हैं।

सप्रसंग व्याख्या :–

व्याख्या हेतु अनुच्छेद ''हामिद खिलौनों की निंदा करता है–

मिट्‌टी ही के तो हैं.....विशेषकर जब अभी नया शौक हैं

संदर्भ : पाठ – ईदगाह

लेखक – प्रेमचन्द

प्रसंग – प्रस्तुत पाठ में लेखक ने ईद के अवसर पर सर्वत्र छाई खुशी का वर्णन किया है। इस गद्यांश में हामिद के माध्यम से बालसुलभ इच्छाओं व चेष्टाओं का सुन्दर व सजीव वर्णन किया गया है।

व्याख्या – हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं जिन्हें वह खिलौने और मिठाईयों पर खर्च नहीं कर पाता जबकि उसके साथी रंग–बिरंगे व सुन्दर खिलौने खरीदते हैं। ऐसे में हामिद अपने को समझाने के लिए खिलौनों की निंदा करता है कि मिट्टी के हैं और जमीन पर गिरते ही टूट जाएंगे। परन्तु उसका बालसुलभ मन उन खिलौनों को ललचाई नजरों से देखता है और कुछ देर के लिए उन्हें हाथ में लेकर देखना चाहता है। उसके हाथ अनायास ही खिलौनों की तरफ बढ़ते हैं परन्तु साथी भी उसकी तरह बच्चे ही हैं और उन्होंने खिलौने अभी–अभी लिए हैं अतः वे भी त्यागी नहीं हो सकते है। उनका खिलौनों से खेलने का शौक अभी नया–नया है।

साहित्यिक सौंदर्य

1. बाल मनोविज्ञान का बहुत ही सुन्दर व हृदयग्राही चित्रण।
2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा में सजीवता आ गई है।
3. मिश्रित शब्दावली है।
4. भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा शैली सरल, सहज व प्रवाहमयी है।

व्याख्या अभ्यास–कार्य हेतु अनुच्छेद

1. इस्लाम की निगाह.....लड़ी में पिरोऐ हुए है।
2. बुढ़िया का क्रोध.....रहस्य क्या समझता ।
3. रमजान के पूरे तीस रोजों.....तैयारियाँ हो रही है।
4. रोजे बड़े–बूढ़ों के लिए.....सारी ईद मुहर्रम हो जाए।
5. अभागिन अमीना.....चितवन उसका विध्वंस कर देगी।
6. यह कानिसटिबिल ..... रूपये घर भेजते हैं।

विचारणीय प्रश्न

1. 'ईदगाह' कहानी के आधार पर प्रेमचन्द कालीन ग्रामीण जीवन की छवि प्रस्तुत कीजिए।
2. छोटे बच्चों की बातचीत में युगीन परिस्थितियाँ किस प्रकार झलकती हैं, उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए ।

3. दादी ने हामिद को अकेले मेले में क्यों भेजा?

4. पुलिसकर्मियों के बारे में हामिद और मित्रों की क्या धारणा है?

5. हामिद के मित्रों ने मेले से क्या–क्या खरीदा?

6. हामिद के हाथ में चिमटा देखकर दादी क्यों क्रोधित हो गई ?

7. बच्चों ने चौधरी के पास जिन्नात होने की बात क्यों कही?

8. दादी का क्रोध स्नेह में क्यों बदल गया?

9. 'हामिद इसका रहस्य क्या समझता' –यहाँ मुंशी प्रेमचन्द किस रहस्य की ओर संकेत कर रहे हैं?

10. हामिद की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिन्होंने उसे कहानी का नायक बना दिया?

11. 'बुढ़िया अमीना बालिका अमीना बन गई'– कैसे ?

12. 'ईदगाह' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए ।

13. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए क्या–क्या तर्क दिए?

14. आशय स्पष्ट कीजिए –

    (क) 'उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। विपत्ति अपना सारा दलबल लेकर आए, हामिद की आनंद भरी चितवन उसका विध्वंस कर देगी।

    (ख) 'उन्हें क्या खबर कि चौधरी आज आँखें बदल लें, तो यह सारी ईद मुहर्रम हो जाए।'

    (ग) 'मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए है।

अभ्यास–प्रश्न (उत्तर सहित)

1. हामिद की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। जिन्होंने उसे कहानी का नायक बना दिया।

उत्तर– 'ईदगाह' कहानी में हामिद ही एकमात्र ऐसा पात्र है जो पाठकों को सबसे अधिक प्रभावित करता है। उसके जिन गुणों ने उसे कहानी का नायक बना दिया, वे निम्नलिखित हैं–

i) हामिद एक तर्कशील बालक है। वह अपने तर्कों से अपने साथियों को पराजित कर देता है।

ii) हामिद एक समझदार बालक है। वह व्यर्थ की चीजें नहीं खरीदता और स्वयं पर नियंत्रण रखता है।

iii) हामिद दादी के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। तभी तो वह मेले में अपने लिए कुछ न खरीदकर दादी के लिए चिमटा खरीद लाता है।

2. हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए क्या–क्या तर्क दिए?

उत्तर – हामिद ने चिमटे की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए–

i) चिमटा बड़े काम की चीज़ है। रोटियाँ तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो, दूसरे को आग पकड़ा दो।

ii) खिलौने तो थोड़ी ही देर में टूट–फूट जाते हैं जबकि चिमटे का कुछ नहीं बिगड़ता।

iii) चिमटे को देखकर अम्मा खुश हो जाएगी। वह मुझे दुआएँ देगी।

iv) चिमटा एक खिलौना भी है, इसे कंधे पर रखो तो बंदूक हो जाती है, हाथ में लो तो फकीरों का चिमटा। इससे मजीरे का काम भी लिया जा सकता है।

v) चिमटे का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता । चिमटा–खिलौनों का बादशाह, रुस्तमे हिंद सिद्ध हुआ।

3. 'ईदगाह' कहानी के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए, क्या इस कहानी का कोई अन्य शीर्षक हो सकता था?

उत्तर – 'ईदगाह' कहानी का शीर्षक सर्वथा उचित है। इस कहानी की प्रमुख घटनाएँ ईदगाह स्थल के इर्द–गिर्द घटित होती है। ईदगाह कहानी का केन्द्र स्थल है। कहानी के प्रारंभ में वहीं जाने की तैयारियाँ होती दर्शायी गई हैं। ईदगाह पर ही नमाज़ पढ़ी जाती है। वहीं एकता व भ्रातृत्व का दृश्य दिखाई देता है। वहीं मेला लगता है जहाँ ईद की चहल–पहल है। यह शीर्षक कहानी के प्रमुख स्थल के आधार पर है। अतः पूर्णतः उचित एवं सार्थक है।

अन्य शीर्षक हो सकते हैं– 'हामिद का चिमटा' अथवा 'ईद का उपहार'।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हामिद की दादी के अठन्नी बचाने की तुलना किससे की गई है?

(क) बूँद–बूँद घड़ा भरने से (ख) उनके ईमान से

(ग) गुल्लक से (घ) सागर भरने से

2. 'जिन्नात को रूपये की क्या कमी? जिस खजाने में चाहे चले जाएँ। लोहे के दरवाजे तक उन्हें नहीं रोक सकते जनाब, आप हैं किस फेर में ! हीरे–जवाहरात तक उनके पास रहते हैं। जिससे खुश हो गये, उसे टोकरों जवाहरात दे दिये।

उपर्युक्त शब्द किसने कहे?

(क) नूरे (ख) महमूद

(ग) मोहसिन (घ) हामिद

3. शहर में मोटर के नीचे आते–आते कौन बचा?

(क) मोहसिन (ख) महमूद

(ग) नूरे (घ) हामिद

4. 'मेरे मामू एक थाने में कानिसटिबिल हैं। बीस रूपया महीना पाते हैं, लेकिन पचास रुपये घर भेजते हैं।' इस वाक्य में किस ओर संकेत किया गया है?

(क) भ्रष्टाचार की ओर (ख) चुस्त प्रशासनिक व्यवस्था की ओर

(ग) समृद्धि और सम्पन्नता की ओर

(घ) उपरोक्त सभी

5. 'पेड़ों में आम और लीचियाँ लगी हुई हैं। कभी–कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है।' इन वाक्यों में किस प्रकार का मनोविज्ञान है?

(क) स्त्री मनोविज्ञान (ख) बाल मनोविज्ञान

(ग) समाज मनोविज्ञान (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. किसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं–

(क) गाँव के मदरसे की (ख) शहर के क्लब की

(ग) शहर के कॉलेज की (घ) ईदगाह की

7. आठ आने में कितने पैसे होते हैं?

(क) 25 पैसे (ख) 50 पैसे

(ग) 16 पैसे (घ) 8 पैसे

8. 'वज़ू' शब्द का अर्थ है–

(क) इबादत करना

(ख) 30 दिन के रोजे रखना

(ग) नमाज़ पढ़ने से पूर्व हाथ–मुँह धोकर शुद्धि करना

(घ) सिज़दे में सिर झुकाना

9. खिलौनों को न खरीदने के लिए हामिद ने क्या तर्क दिया–

(क) खिलौने मिट्टी के हैं।

(ग) खिलौने महंगे हैं।

(ग) ज़रा सा पानी पड़े तो रंग घुल जाए

(घ) उपर्युक्त सभी

10. रुस्तम–ए–हिन्द की संज्ञा किसे दी गई ?

(क) भिश्ती को (ख) चिमटे को

(ग) वकील साहब को (घ) सिपाही को

उत्तर–

1. (ख) उनके ईमान से
2. (ग) मोहसिन
3. (घ) हामिद
4. (क) भ्रष्टाचार की ओर
5. (ख) बाल मनोविज्ञान
6. (घ) ईदगाह की
7. (ख) 50 पैसे
8. (ग) नमाज़ पढ़ने से पूर्व हाथ–मुँह धोकर शुद्धि करना
9. (घ) उपर्युक्त सभी
10. (ख) चिमटे को

पाठ–2

दोपहर का भोजन

पाठ–परिचय– 'दोपहर का भोजन' गरीबी से जूझते एक निम्न मध्यवर्गीय शहरी परिवार की कहानी है। जिसके मुखिया की अचानक नौकरी छूट जाने के कारण परिवार के सामने आर्थिक संकट खड़ा हो जाता है। परिवार के सदस्यों को भरपेट भोजन तक नसीब नहीं हो रहा है। पूरे परिवार का संघर्ष भावी उम्मीदों पर टिका है। सिद्धेश्वरी संकट की इस घड़ी में परिवार के सभी सदस्यों को एकजुट एवं चिंतामुक्त रखने का अथक प्रयास करती है। वह अपने परिवार को टूटने से बचाने का हर संभव प्रयत्न करती है।

स्मरणीय बिन्दु– सिद्धेश्वरी तथा मुंशीजी के परिवार में उनके अतिरिक्त उनके तीन पुत्र हैं – 21 वर्षीय बड़ा बेटा रामचंद्र, 18 वर्षीय मँझला बेटा मोहन तथा छः वर्षीय छोटा बेटा प्रमोद ।

रामचंद्र एक स्थानीय दैनिक समाचार–पत्र के दफ्तर में प्रूफ रीडिंग का काम सीखता है तथा नौकरी की तलाश में हैं। मोहन हाईस्कूल के इम्तिहान की तैयारी कर रहा है।

दोपहर का भोजन–सिद्धेश्वरी पाठ की जीवंत पात्र, वह अत्यंत अभाव में अपने परिवार की गाड़ी को खींच रही है। परिवार की स्थिति अत्यंत दयनीय होने पर भी वह परिवार को जोड़ने का पूरा प्रयास करती है। परिवार को जोड़े रखने के लिए वह झूठ का सहारा भी लेती है। उसका अथक प्रयास रहा है कि घर के सभी सदस्यों को सुख पहुँचाए, भले ही स्वयं कष्टों में जीती रहे। वह परिवार के सदस्यों के सामने एक दूसरे की कमी न बताकर उनकी बातों को छिपाती है ताकि किसी भी सदस्य को मानसिक कष्ट न हो। ये सभी बातें उसके अपार धैर्य को दर्शाती हैं। सिद्धेश्वरी ने झूठ बोलकर कोई पाप नहीं किया बल्कि परिवार के सभी सदस्यों को एक–दूसरे से जोड़े रखा है। ऐसा झूठ जो किसी भलाई के लिए बोला जाए उसे बोलने में कोई बुराई नहीं है।

घर के सभी सदस्य रामचंद्र, मोहन तथा मुंशीजी बारी–बारी भोजन के लिए आते हैं। सभी मन ही मन इस वास्तविकता से परिचित हैं कि घर में पर्याप्त भोजन नहीं है। वे सभी कुछ न कुछ बहाना बनाकर आधे पेट ही भोजन करके उठ जाते हैं।

रामचंद्र के भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी मंझले बेटे मोहन की पढ़ाई की झूठी तारीफ करती है। वह मोहन से झूठमूठ कहती है कि रामचंद्र उसकी प्रशंसा करता है। मुंशी जी से भी वह झूठ बोलती है कि रामचंद्र उन्हें देवता के समान कहता है। 'मकान किराया नियंत्रण विभाग' के क्लर्क के पद से उनकी छँटनी हो चुकी थी और आजकल मुंशीजी काम की

तलाश में हैं। मुंशी जी भोजन करते समय सिद्धेश्वरी से नजरें चुराते हैं। उन्हें मालूम हैं कि घर में भोजन बहुत कम है और वह स्वयं को इस स्थिति का जिम्मेदार मानते हैं।

भोजन के दौरान सिद्धेश्वरी एवम् मुंशी जी असंबद्ध बातें करते हैं जैसे बारिश का न होना, मक्खियों का होना, फूफा की बीमारी तथा गंगाशरण बाबू की लड़की की शादी–हालांकि इन बातों का कोई महत्व नहीं है फिर भी ये सभी बातें पाठ से जुड़ी हुई है। ये सभी बातें उनके मन की व्यथा, जीवन के अभाव आदि को दर्शाती हैं। इन बातों को करके शायद वे मूल विषय (गरीबी एवं अभाव) से बचना चाहते थे तथा अपने दुखों को कम करना चाहते थे।

सिद्धेश्वरी पर्याप्त भोजन न होते हुए भी सदस्यों से और भोजन लेने का आग्रह करती है। ऐसा करके वह घर के सदस्यों को गरीबी एवं अभाव का एहसास नहीं होने देना चाहती। वह सदस्यों की एक–दूसरे के विषय में झूठी तारीफ करके गरीबी, अभावग्रस्त एवं संघर्षपूर्ण वातावरण में भी उन्हें एकजुट तथा खुशहाल रखने की कोशिश करती है।

सबको भोजन करवाने के पश्चात् सिद्धेश्वरी जब स्वयं भोजन करने बैठती है। तो उसके हिस्से थोड़ी–सी दाल, जरा–सी चने की तरकारी तथा मात्र एक रोटी आती है। तब उसे अचानक अपने सबसे छोटे पुत्र प्रमोद का ध्यान आता है, जिसने अभी तक भोजन नहीं किया था। वह आधी रोटी तोड़कर प्रमोद के लिए रख देती है। तथा शेष आधी लेकर भोजन करने बैठ जाती है। पहला ग्रास मुँह में रखते ही उसकी आँखों से टपटप आँसू गिरने लगे जो उसकी विवशता को बयान करते हैं।

सप्रसंग व्याख्या –

अवतरण ''मुंशी जी ने पत्नी.....गुड़ होगा क्या?''

संदर्भ :

पाठ – दोपहर का भोजन

लेखक – अमरकांत

प्रसंग– प्रस्तुत कहानी गरीबी से जूझ रहे एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। इस अंश में लेखक ने परिवार के मुखिया की मनोदशा का चित्रण किया है। पत्नी सिद्धेश्वरी जब मुंशी जी से बड़े लड़के की कसम दिलाकर एक चपाती और खाने का आग्रह करती है तब.....

व्याख्या – मुंशी जी ने पत्नी की ओर अपराधी–भाव से देखा क्योंकि वे बेरोजगार थे और घर की स्थिति से भली–भांति परिचित थे। उन्होंने दबी आँख से रसोई की ओर देखा जैसे सिद्धेश्वरी को बता रहे हो कि उन्हें घर की हालत पता है। तब अपना और सिद्धेश्वरी का मान बचाते हुए एक अनुभवी गृहस्थ की भाँति पत्नी से कहा कि अन्न और नमकीन से

उनका दिल भर गया है जबकि वास्तव में उनकी भूख अभी शांत नहीं हुई थी। इसीलिए वे शपथ के बहाने पत्नी से गुड़ के बारे में पूछकर शर्बत पीने की अपनी इच्छा को भी व्यक्त कर देते हैं।

साहित्यिक सौंदर्य–

1. अभावग्रस्त निम्न मध्यवर्गीय गृहस्थ की मनोदशा का सजीव चित्रण।
2. शैली संवादात्मक है तथा प्रवाहपूर्ण हैं।
3. भाषा, सरल, सहज व पात्रानुकूल हैं तथा पाठक को अंत तक बाँधे रखने में पूर्ण सक्षम हैं।
4. चित्रात्मक भाषा है। दृश्य जैसे पाठक के समक्ष प्रस्तुत हो जाते हैं।
5. लेखक ने सामाजिक जीवन और उसके अनुभवों की यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्ति की है।

व्याख्या अभ्यास–कार्य हेतु अनुच्छेद–

(क) उन्माद की रोगिणी.....प्रमोद को कुछ हो जाए।

(ख) सारा घर.....कहीं जाना न हो।

(ग) मुंशी जी के निबटने ..... आँसू चूने लगे।

विचारणीय प्रश्न :–

1. सिद्धेश्वरी घर के सदस्यों से एक–दूसरे के विषय में झूठ क्यों बोलती हैं?
2. मुंशी जी तथा सिद्धेश्वरी की असंबद्ध बातें कहानी से कैसे संबद्ध हैं?
3. 'उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टपटप आँसू चूने लगे।' – इस कथन के आधार पर सिद्धेश्वरी की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए।
4. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
5. सिद्धेश्वरी का चरित्र चित्रण कीजिए।
6. आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) वह मतवाले की तरह उठी और गगरे से लोटा भर पानी लेकर गट–गट चढ़ा गई।

(ख) यह कहकर उसने अपने मंझले लड़के की ओर देखा, जैसे उसने कोई चोरी की हो।

(ग) मुंशी जी ने चने के दानों की ओर इस दिलचस्पी से दृष्टिपात किया, जैसे उनसे बातचीत करने वाले हो।

7. घोर गरीबी और अभाव से जूझते परिवार के सदस्यों के बीच एक–दूसरे के प्रति संवेदना और संवाद बनाए रखने के लिए सिद्धेश्वरी क्या प्रसास करती है? स्पष्ट करें।

8. मुंशी जी द्वारा पैर पसार के सोने में कौन–सा भाव व्यक्त होता है?

9. रामचन्द्र, मोहन और मुंशी जी खाते समय रोटी न लेने के लिए बहाने करते हैं उसमें कैसी विवशता है, स्पष्ट कीजिए।

10. सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों से भारी हैं विवेचना कीजिए।

11. 'दोपहर का भोजन'–कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न–अभ्यास (उत्तर सहित)

1. 'सिद्धेश्वरी के झूठ सौ सत्यों पर भारी हैं – विवेचना कीजिए।

उत्तर– सिद्धेश्वरी का परिवार भयंकर गरीबी से ग्रस्त था। अर्थाभाव (गरीबी) के कारण परिवार के सदस्यों में स्नेह का बंधन कमजोर होता जा रहा था। परिवार को बचाए रखने के लिए वह एक सदस्य के सामने दूसरे के विषय में झूठ बोलती थी ताकि परिवार में बिखराव न हो, परिवार के सदस्यों में एक–दूसरे के प्रति सम्मान, स्नेह एवं निकटता बनी रहे। उसके झूठ परिवार को टूटने से बचाते हैं। वह झूठ जो कल्याण के काम आए, सौ सत्यों से भी भारी होता है।

2. 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'दोपहर का भोजन' कहानी में निम्न–मध्यवर्गीय परिवार की गरीबी का मार्मिक चित्रण है। इस परिवार की स्थिति इतनी दयनीय है कि घर में खाने के लिए भी पूरा भोजन नहीं है। इस कहानी का पूरा घटनाक्रम दोपहर के भोजन के समय ही घटित होता है, जो कहानी की मूल संवेदना को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में पूर्ण सक्षम है। घर के मुखिया के बेरोजगार हो जाने पर परिवार को किस प्रकार एक के बाद एक समस्याओं से जूझना पड़ता है। दोपहर के समय घर के सभी सदस्य एक के बाद एक घर आते हैं और परिवार की स्थिति और अपने संघर्ष को प्रकारान्तर से व्यक्त कर कहानी को आगे बढ़ाते हैं। अतः यह शीर्षक सर्वथा उचित हैं।

3. 'उसने पहला ग्रास मुँह में रखा और तब न मालूम कहाँ से उसकी आँखों से टप–टप आँसू चूने लगे।

उत्तर– सिद्धेश्वरी एक भारतीय गृहिणी है। वह घर की सभी समस्याओं को अपने ऊपर लेती हैं तथा परिवार के अन्य सदस्यों के बीच कटुता नहीं आने देती। घर की आर्थिक दशा खराब है। वह कम साधनों में भी परिवार का पेट भरने की कोशिश करती है। इस काम में उसे बहुत झूठ बोलना पड़ता है। उसे इस बात की पीड़ा है कि घर का हर सदस्य आधे पेट भोजन करके पेट भरा होने का नाटक करता है। वह स्वयं भी भूखी ही रहती है। इस दर्द को वह किसी दूसरे के समक्ष व्यक्त नहीं कर पाती और वह पीड़ा आँखों से आँसुओं के माध्यम से निकलती हैं ।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. "दोपहर का भोजन" पाठ का मुख्य पात्र कौन है–

   (क) मुंशी जी (ख) रामचंद्र

   (ग) मनोज (घ) सिद्धेश्वरी

2. मोहन की उम्र क्या है?

   (क) 15 साल (ख) 18 साल

   (ग) 20 साल (घ) 7 साल

3. सिद्धेश्वरी के पति का क्या नाम है?

   (क) राम प्रसाद (ख) मोहम्मद खान

   (ग) मुंशी चंद्रिका प्रसाद (घ) इनमें से कोई नहीं

4. अंत में जब सब खा चुके थे तब कितनी रोटी बची थीं?

   (क) दो रोटी (ख) चार रोटी

   (ग) एक रोटी (घ) एक भी नहीं

5. अंत में सिद्धेश्वरी के अलावा और कौन बचा था जिसने खाना नहीं खाया था ?

   (क) उसका बड़ा बेटा, रामचंद्र (ख) उसका पति, मुंशी जी

   (ग) उसका सबसे छोटा बेटा, प्रमोद (घ) कोई नही

6. सिद्धेश्वरी के खाते समय आंसू टपकना कैसी व्यथा को दर्शाता है–

   (क) अमीरी (ख) गरीबी

   (ग) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

7. मुंशी चंद्रिका प्रसाद ने रोटी के स्थान पर खाने के लिए क्या मांगा?

(क) गुड़ तथा गुड का ठंडा रस

(ख) एक कटोरी पनियाई दाल

(ग) चने को तरकारी

(घ) इनमें से कोई नहीं

8. "दोपहर का भोजन" कहानी में सिद्धेश्वरी का मूल स्वर क्या है?

(क) वर्ग संघर्ष (ख) अपनी नाकामियों के विरुद्ध संघर्ष

(ग) समाज में व्यापक आर्थिक विषमता

(घ) शोषण के विरुद्ध संघर्ष

9. जब मोहन खा रहा था तब घर मे कौन प्रवेश करता है–.

(क) रामचंद्र (ख) मेहमान

(ग) पड़ोसी (घ) मुंशी चंद्रिका जी

10. रामचंद्र क्या काम करता है–

(क) मैकेनिक का (ख) प्रूफ रीडिंग का

(ग) ड्राइवर का (घ) अध्यापन का

उत्तर–

1. (घ) सिद्धेश्वरी
2. (ख) 18 साल
3. (ग) मुंशी चंद्रिका प्रसाद
4. (घ) एक रोटी
5. (ग) उसका सबसे छोटा बेटा प्रमोद
6. (ख) गरीबी
7. (क) गुड़ तथा गुड़ का ठंडा रस
8. (क) वर्ग संघर्ष
9. (घ) मुंशी चंद्रिका जी
10. (क) प्रूफरीडिंग का

पाठ–3

टार्च बेचने वाले

पाठ–परिचय : व्यंग्य रचना 'टार्च बेचने वाले' में परसाई जी ने टार्च बेचने वाले दो मित्रों के माध्यम से समाज में घटित अंध–विश्वास, रूढ़ियों पर कुठाराघात करने के लिए अपने सशक्त हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज पर तीव्र प्रहार किया है। दो मित्रों में से एक टार्च बेचते–बेचते प्रवचनकर्ता बन जाता है तो दूसरा संतों की वेशभूषा में भोली जनता की आत्मा के अँधेरे को दूर करने की बात करता है। आत्मा के उजाले के लिए लोगों को संसार का घना अंधेरा दिखाकर भय पैदा कर देता है। इस रचना के माध्यम से समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा तथाकथित धर्माचार्यों पर कड़ा प्रहार किया है।

स्मरणीय बिन्दु – लेखक बहुत दिनों बाद एक दाढ़ी बढ़ाये लम्बा कुर्ता पहने हुए उस व्यक्ति से मिला जो पहले चौराहे पर 'सूरजछाप' टार्च बेचा करता था। बदली हुई वेशभूषा का कारण पूछने पर उसने बताया कि जीवन में कुछ ऐसा घटित हुआ कि उसने टार्च बेचने का काम छोड़ दिया।

इसके बाद वह लेखक को उस घटना के विषय में बताता है। पाँच साल पहले वह और उसका दोस्त निराश बैठे थे। उनके सामने एक प्रश्न था– 'पैसा कैसे पैदा करें? इस सवाल के हल के लिए अपनी किस्मत आजमाने के लिऐ अलग–अलग दिशाओं में दोनों मित्र निकल पड़े। इस वादे के साथ कि पाँच वर्ष बाद इसी स्थान पर फिर मिलते हैं।

इन पाँच वर्षों के दौरान पहला मित्र टार्च बेचने का धंधा करने लगा। वह चौराहे पर या मैदान में लोगों को इकट्ठा कर लेता तथा अंधेरे का डर बड़े ही नाटकीय अंदाज से दिखाता कि उसकी सारी टार्च हाथों हाथ बिक जाती। उसका धंधा खूब चल निकला।

वायदे के मुताबिक पाँच साल बाद वह निश्चित स्थान पर पहुँचता है परन्तु मित्र वहाँ नहीं मिलता। वह उसे ढूँढ़ने निकल पड़ता है। एक शाम उसे एक मैदान में मंच पर सुन्दर रेशमी वस्त्रों से सजे एक भव्य पुरूष बैठे दिखाई दिये। हजारों लोग श्रद्धा से झुके गुरू गम्भीर वाणी को तन्मय होकर सुन रहे हैं। वह व्यक्ति प्रवचन दे रहा था– मैं आज मनुष्य को घने अंधकार में देख रहा हूँ, आज आत्मा में भी अन्धकार है। मनुष्य की आत्मा भय, पीड़ा से त्रस्त है। आज मनुष्य इस अन्धकार से घबरा उठा है। डरो मत, जहाँ अन्धकार है, वहीं प्रकाश है, प्रकाश को बाहर नहीं, अन्दर में खोजों। इस प्रकार वह लोगों को पहले डराते हैं फिर तुरन्त उन्हें अपने साधना–मन्दिर में बुलाकर अन्तः ज्योति जलाने का आह्वान करते हैं। लोग तन्मय होकर सन्त की बातें सुन रहे थे पर उसकी हँसी छूट रही थी।

तभी उसने देखा कि भव्य–पुरूष मंच से उतर कर कार पर बैठने जा रहा है। उसने तो उस भव्य पुरूष को नहीं पहचाना पर भव्य पुरूष ने उसे पहचान कर कार में बिठा लिया सन्त की वेशभूषा में यह उसका मित्र ही था। बंगले के वैभव को देखकर वह हैरान हो गया। फिर दोनों मित्रों में खुलकर बातचीत हुई।

उसने सन्त बने अपने मित्र से पूछा कि उसने इतनी दौलत कैसे पाई, क्या वह भी टार्च बेचता है। फिर वह कहता है कि उन दोनों के प्रवचन एक जैसे ही हैं, वह भी लोगों को अँधेरे का डर दिखाकर टार्च बेचता है तथा सन्त बना मित्र भी लोगों को डर दिखाकर टार्च बेचता है। दोनों लोगों के जीवन में प्रकाश लाने का वादा करते हैं पर दूसरे मित्र की टार्च किसी कम्पनी की बनाई हुई नहीं है। वह बहुत सूक्ष्म है मगर उसकी कीमत बहुत अधिक मिल जाती है। मित्र को सारा रहस्य समझ में आ गया।

पहला मित्र सन्त के साथ दो दिन तक रहा। अब उसने निर्णय लिया कि नया धंधा शुरू करूँगा। वह 'सूरज छाप' टार्च की पेटी नदी में फेंक देता है। दाढ़ी बढ़ाकर लम्बा कुरता पहन लेता है। वह लेखक को बताता है कि पहले वह लोगों को बाहरी अन्धकार से डराता है, फिर लोगों को आत्मा में प्रकाश फैलाने की बात कहकर उन्हें आसानी से ठग सकेगा। इस प्रकार दोनों मित्र इस ठगी के धन्धे में अँधेरे को दूर करने की बात करते हैं। बस फर्क सिर्फ बाहर के अंधेरे और अंदर के अँधेरे का ही है ।

सप्रसंग व्याख्या :–

''मगर यह बताओ.....भीतर आत्मा में कैसे घुसा।

संदर्भ :

पाठ – टॉर्च बचेने वाले

लेखक – हरिशंकर परसाई

इसमें लेखक ने टॉर्च बेचने वाले दो मित्रों के माध्यम से बताया है कि किस प्रकार अपने–अपने तरीके से वो दोनों भोली–भाली जनता को बेवकूफ बनाते हैं।

व्याख्या– जब लेखक उस व्यक्ति को नये रूप में देखता है तो वह उसके रूप परिवर्तन पर अनेक आशंकायें जताते हुए प्रश्न करता है। लेखक उससे दाढ़ी रखने और लम्बा कुरता पहनने का कारण जानना चाहता है। उसे लगता है कि कहीं उसे उसकी बीबी ने तो नहीं त्याग दिया या यह भी हो सकता है कि उसे उधार मिलना बन्द हो गया हो। उसे साहूकार कर्ज चुकाने के लिये तंग करते हो या किसी चोरी के मामले में फँस गया हो। ये सभी कारण व्यक्ति को साधु–संन्यासी का रूप धारण करने को मजबूर करते हैं। वह टार्च बेचकर लोगों के जीवन में प्रकाश भरने का दावा करता है। अब वह यह जानना चाहता हैं कि आखिर बाहर का टार्च भीतर उसकी आत्मा में कैसे घुस गया क्योंकि अब वह आत्मा के

प्रकाश की बातें करने लगता है।

व्यंग्यार्थ यह है कि बाहरी आदमी दुनिया के प्रपंचों से तंग आकर आन्तरिक ज्ञान और प्रकाश की बातें करने लगता है।

साहित्यिक सौंदर्य : 1. देशज भाषा–खड़ी बोली का प्रयोग

2. व्यंग्यात्मक शब्दों की बहुलता

3. प्रश्नात्मक शैली, संवाद शैली

4. रोचकता

महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर :–

1. भव्य पुरूष ने कहा–''जहाँ अंधकार है, वहीं प्रकाश हैं'' इसका क्या तात्पर्य है?''

उत्तर– इसका तात्पर्य है कि अँधेरे को चीरने के लिऐ प्रकाश की आवश्यकता होती है। अँधेरे और प्रकाश का गहरा सम्बन्ध है। अँधेरे से ही प्रकाश निकलता है, तभी अन्धकार मिटता है। भव्य–पुरुष हृदय के अन्धकार की बात कर रहा है। इसी हृदय से प्रकाश की किरणें फूटती है। अन्धकार में प्रकाश की किरणें होती हैं तो प्रकाश में अन्धकार की थोड़ी कालिमा भी होती है। प्रकाश को अन्तर में खोजना ही पड़ता है।

2. भीतर के अँधेरे की टार्च बेचने और 'सूरज–छाप' टार्च बेचने के धंधे में क्या फर्क हैं?

उत्तर– इस पाठ में दो प्रकार के अँधेरों का जिक्र हैं – बाहरी अँधेरा और भीतर हृदय का अँधेरा ।

कुछ लोग साधु–सन्त का रूप धारण कर हृदय के अन्धकार को मिटाने का उपाय बताते हैं यही उपाय भीतर के अँधेरे की टार्च हैं और इसी प्रकार लोगों की भावनाओं का शोषण करते हैं। मात्र धन–प्राप्ति ही ऐसे लोगों का एक मात्र उद्देश्य होता हैं। 'सूरज–छाप टार्च' बेचने वाले बाहर के अँधेरे का डर दिखाकर लोगों को भयभीत करते हैं उनके सामने तरह–तरह की दुर्घटनाओं की आशंकाएँ जताते हैं फिर प्रकाश के नाम पर टार्च बेचते हैं ।

3. आशय स्पष्ट कीजिए –

(क) आजकल सब जगह अँधेरा छाया रहता है रातें बेहद काली होती है। अपना ही हाथ नहीं सूझता।

उत्तर– टॉर्च बेचने वाला व्यक्ति लोगों का अंधेरे का भयावह चित्र खींचते हुए अपनी टॉर्च बेचना चाहता है। अंधकार में अपराध होते हैं। व्यक्ति को कुछ नहीं सूझता। अंधेरे

का डर दिखाकर टॉर्च बेचकर लाभ कमाने की रणनीति कारगर है।

(ख) प्रकाश बाहर नहीं है उसे अंतर में खोजों। अंतर में बुझी उस ज्योति को जगाओ।

उत्तर– शरीर बाती है और मन ज्योति है। मनुष्य के भीतर आत्मप्रकाश नहीं रहा उसकी ज्योति बुझ गई है। ज्ञान रूपी प्रकाश द्वारा ही अज्ञान रूपी आत्मा के अंधकार को दूर किया जा सकता है। अंधकार को मिटाने का प्रकाश हृदय में ही समाया हुआ है। यहाँ संत बना व्यक्ति लोगों को धर्म के नाम पर भयभीत कर अपनी शरण में बुलाना चाहता है।

(ग) ''धंधा वही करूँगा, यानि टार्च बेचूँगा। बस कम्पनी बदल रहा हूँ।

उत्तर– टॉर्च बेचने वाला कहता है कि धंधा वही करूँगा अर्थात् लोगों को ठगकर पैसा कमाऊँगा। धर्म का धंधा, टॉर्च बेचने के समान ही है। दोनों कंपनी अलग–अलग है, धर्म के ठेकेदार आस्था को बेचते हैं। इसमें कमाई और सम्मान ज्यादा है।

अभ्यास कार्य –

व्याख्या

1. मैंने कहा.....अन्धकार छाया है।
2. जहाँ अन्धकार है.....अपने भीतर जगाओ।
3. मैं आज.....पीड़ा से ग्रस्त हैं।

विचारणीय प्रश्न–

1. लेखक ने ऐसा क्या कहा कि ठार्च बेचने वाले को पीड़ा हुई?
2. पाँच साल बाद दोनों मित्रों की मुलाकात किन परिस्थितियों में हुई?
3. ''व्यंग्य विधा सबसे धारधार हैं'' परसाई जी की रचना के आधार पर अपने विचार स्पष्ट करो।
4. पैसा पैदा करने की लिप्सा में आज मनुष्य ने अध्यात्म को एक व्यापार बना दिया। स्पष्ट करो ।
5. 'टार्च बेचने वाले' के रचना प्रयोजन और व्यंग्य को अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता विस्तार

कक्षा में वाद–विवाद और परिचर्चा के विषय

1. पैसा पैदा करने की लिप्सा में अध्यात्मिकता भी एक व्यापार
2. समाज में फैले अंधविश्वास

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. दोनों दोस्त आपस में किस स्थान पर मिलते हैं?

   (क) होटल मे (ख) कॉलेज में

   (ग) प्रवचन स्थल पर (घ) घर पर

2. "टॉर्च बेचनेवाला" पाठ किस शैली में लिखा गया है?

   (क) व्यंग्यात्मक (ख) विवरणात्मक

   (ग) रचनात्मक (घ) रहस्यात्मक

3. "भव्य पुरुष" देखने में किस विशेषता से युक्त था?

   (क) दाढ़ी बड़ी हुई थी (ख) केश लंबे थे

   (ग) सुंदर रेशमी वस्त्र पहने थे (घ) उपर्युक्त सभी

4. आसमान को छूता सवाल कौन–सा था?

   (क) घर कैसे जाया जाये (ख) पैसे कैसे कमाया जाये

   (ग) क्या काम करें (घ) घूमने कहाँ जाएँ

5. "टॉर्च बेचने वाले" अध्याय में किस पर व्यंग्य किया गया है?

   (क) भगवान के प्रति आस्था रखने वालों

   (ख) राजनीतिक दुनिया

   (ग) धार्मिक आडंबरों

   (घ) इनमे से कोई नहीं

6. "टॉर्च बेचने वाले" पाठ की भाषा है :

   (क) व्यंग्यात्मक खड़ी बोली (ख) रचनात्मक बोली

   (ग) प्रेमप्रधान बोली (घ) प्रसन्नात्मक बोली

7. "हमने दूसरी तरफ मुँह कर लिया" टॉर्च बेचने वाला पाठ में से इस वाक्य में "हमने" किसके लिए प्रयोग हुआ है?

   (क) लेखक के लिए (ख) पत्रकार के लिए

   (ग) दोनों मित्रों के लिए (घ) इनमें से कोई नहीं

8. पहले मित्र के बदले हुए स्वरूप को देखकर, किसको चिंता होने लगती है?

(क) उसके मित्र को (ख) उसके पिता को

(ग) उसकी मां को (घ) लेखक को

9. "मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूँ। उसके भीतर कुछ बुझ गया है। यह युग ही अंधकारमय है। यह सर्वग्राही अंधकार संपूर्ण विश्व को अपने उदर में छिपाए है।" ये वाक्य किसने कहे?

(क) टॉर्च बेचने वाले ने (ख) मंच पर आसीन भव्य पुरुष ने

(ग) लेखक ने (घ) प्रवचन सुन रहे भक्त ने

10. मनुष्य मूर्खता के कारण किसके वश में आ जाता है?

(क) धर्म और गुरु के (ख) ज्ञान

(ग) विज्ञान (घ) उपरोक्त सभी

उतर–

1. (ग) प्रवचन स्थल पर
2. (क) व्यंग्यात्मक
3. (घ) उपर्युक्त सभी
4. (ख) पैसे कैसे कमाया जाये
5. (ग) धार्मिक आडंबरों
6. (क) व्यंग्यात्मक खड़ी बोली
7. (ग) दोनों मित्रों के लिए
8. (घ) लेखक को
9. (ख) मंच पर आसीन भव्य पुरुष ने
10. (क) धर्म और गुरु के

पाठ–4

गूँगे

पाठ–परिचय – गूँगे कहानी में एक गूँगे किशोर के माध्यम से शोषित पीड़ित मानव की अवस्था का चित्रण किया गया है। ऐसे विकलांगों के प्रति व्याप्त संवेदनहीनता को रेखांकित किया गया । ऐसे व्यक्तियों को जो देखते सुनते हुए भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते गूँगे और बहरे कहा गया है। इसीलिये कहानी का शीर्षक 'गूँगे' पूर्णतया सार्थक है।

स्मरणीय बिंदु – कहानी का प्रमुख पात्र गूँगा किशोर है। वह जन्म से वज्र बहरा होने के कारण गूँगा है। गूँगा बहुत मेहनती एवं स्वाभिमानी है। गूँगा तीव्र बुद्धि है। वह हाथ के इशारे से बताता है। कि जब वह छोटा था उसकी माँ छोड़कर चली गई थी क्योंकि उसका बाप मर गया था। वह यह भी बताता है कि वह भीख नही लेता, मेहनत का खाता है। गूँगा गला खोलकर दिखाता है कि बचपन में गला साफ करने की कोशिश में किसी ने उसका काकल काट दिया। चमेली ने पहली बार काकल के महत्त्व को अनुभव किया।

चमेली बहुत भावुक महिला थी। उसने चार रूपये और खाने पर गूँगे को नौकर रख लिया। पड़ोसिन सुशीला ने उसे सावधान किया कि बाद में पछताओगी। उसने फूफा के बारे में बताया कि वे उसे बहुत मारते थे अब वह वापिस नहीं जाना चाहता वे चाहते थे कि गूँगा पल्लेदारी करके पैसा कमाकर उन्हें दे।

एक दिन गूँगा भाग गया। सबके खाना खा चुकने के पश्चात् गूँगे ने आकर इशारे से खाना माँगा। चमेली ने गुस्से में रोटियाँ उसके आगे फेंक दी। पहले तो गूँगे ने गुस्से में रोटी छुई तक नहीं पर फिर न जाने क्या सोचकर उसने रोटियाँ उठाकर खा ली। फिर तो अक्सर गूँगा भाग जाता था।

एक बार चमेली के पुत्र बसंता ने कसकर गूँगे को चपत जड़ दी गूँगे का हाथ उठा फिर न जाने क्या सोचकर रूक गया। उसकी आँखों में पानी भर आया और वह रोने लगा। चमेली के आने पर बसंता बताता है कि गूँगा उसे मारना चाहता था। गूँगा सुन नहीं सकता पर चमेली की भाव–भंगिमा से सब कुछ समझ जाता है। चमेली ने गूँगे को मारने के लिये हाथ उठाया तो गूँगे ने उसका हाथ पकड़ लिया। चमेली को लगा जैसे उसके पुत्र ने उसका हाथ पकड़ लिया हो। उसने घृणा से अपना हाथ छुड़ा लिया। उसने सोचा कि यदि उसका बेटा गूँगा होता तो वह भी ऐसे ही कष्ट उठाता।

गूँगे के हाथ पकड़ने से चमेली को उसके शारीरिक बल का अंदाजा हुआ कि गूँगा बसंता से कहीं अधिक ताकतवर है। परन्तु फिर भी उसने अपना हाथ बसंता पर नहीं

चलाया था। इसीलिये कि बसंता बसंता है..... गूँगा गूँगा है। किन्तु पुत्र की ममता ने इस विषय पर चादर डाल दी।

एक बार घृणा से विक्षुब्ध चमेली ने गूँगे से कहा– क्यों रे, तूने चोरी की है। गूँगा चुप हो गया। चमेली ने हाथ पकड़ कर द्वार से निकल जाने को कहा। गूँगे की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चमेली उस पर खूब चिल्लाई, उसे बहुत बुरा–भला कहा। लेकिन जैसे मन्दिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती वैसे ही उसने भी कुछ नहीं कहा। उसे केवल इतना ही समझ में आया कि मालकिन नाराज है और उसे घर से निकल जाने को कह रही है। उसे इस बात पर हैरानी और अविश्वास हो रहा था। अन्ततः चमेली ने उसे हाथ पकड़ कर दरवाजे से बाहर धकेल दिया।

करीब एक घंटे बाद शकुन्तला और बसंता यह कहकर चिल्ला उठे –'अम्मा ! अम्मा! चमेली ने देखा के गूँगा खून से भीगा था। उसका सिर फट गया था। वह सड़क पर के लड़कों से पिटकर आया था। क्योंकि वह गूँगा होने के कारण उनसे दबना नहीं चाहता था। दरवाजे की दहलीज पर सिर रखकर वह कुत्ते की तरह चिल्ला रहा था। चमेली चुपचाप देखती रही । चमेली सोचती रही कि आज के दिन ऐसा कौन है जो गूँगा नहीं है। गूँगा भी स्नेह चाहता हैं, समानता चाहता है।

सप्रसंग व्याख्या

1. आज ऐसा कौन.....समानता चाहता है।

संदर्भ–

कहानी – गूँगे

लेखक – रांगेय राघव

प्रसंग – यहाँ विकलांगों के प्रति समाज की संवेदनहीनता का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – गूँगे की दशा देखकर चमेली सोचती है कि आज के समय में ऐसा कौन है जो गूंगा नहीं है। आज का मानव संवेदनहीन हो गया है। समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्ति के प्रति हर व्यक्ति कुछ करने की चाह रखता है, परंतु अन्याय का विरोध नहीं कर पाता। उसे अपनी सुख–सुविधाओं के खो जाने का भय है। वह मुँह में शब्द होकर भी गूंगा है। गूंगा स्नेह चाहता है, वह अपना हक चाहता है।

साहित्यिक सौंदर्य–

(1) अन्याय देखकर चुप रहने वालों को भी गूंगा कहा गया है।

(2) खडी बोली में सशक्त अभिव्यक्ति।

(3) समाज की संवेदनहीनता का चित्रण।

महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर

1. 'मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूंगेपन की प्रतिच्छाया छाया है।' आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– लेखक कहता है कि करुणा के प्रति अन्याय होता देखकर मनुष्य में करुणा की भावना जागती तो अवश्य है, परंतु अनेक कारणों से वह उसे व्यक्त नहीं कर पाता। ये कारण जैसे जिम्मेदारी से बचने की प्रवृत्ति, कृत्रिम सुखों को खोने का भय, स्वयं किसी विपत्ति में फंसने की आशंका आदि उसकी करुणा की भावना को कर्मरूप में परिवर्तित नहीं होने देते। अतः उसकी करुणा की भावना मौन रूप धारण कर लेती है। वह अपने में साहस नहीं पाता कि उस भावना को साकार कर सके। यह चमेली के पति के बारे में कहा गया है।

2. हमें विकलांगों के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर– कोई भी मनुष्य अपने आप में पूर्ण नहीं है। हम सभी में कोई–न–कोई कमी अवश्य होती है। अतः हमें विकलांगों के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए।

विकलांगों के प्रति हो रहे अन्याय व शोषण के खिलाफ संघर्ष करना चाहिए।

विषम परिस्थितियों में उनकी सहायता करनी चाहिए। उनके प्रति दया नहीं प्रेम व सौहार्द्धपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।

उनके सम्मान व स्वाभिमान को बनाए रखना चाहिए। हम स्वयं कई बातों में उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं, प्रेरणा ले सकते हैं।

अभ्यास के लिये व्याख्या –

(1) करुणा ने सबको.....उगल नहीं पाता।

(2) मनुष्य की करूणा.....किन्तु कर नहीं पाता।

(3) घर पर बुआ मारती थी.....गूँगा घर नहीं जाता।

(4) नाली का कीड़ा ..... मन नहीं भरा।

(5) कहीं उसका भी बेटा ..... बसंता पर नहीं चलाया।

विचारणीय प्रश्नः–

1. चमेली को गूँगे ने अपने बारे में क्या–क्या बताया?
2. ''गूँगा दया नहीं सहानुभूति नहीं सिर्फ अधिकार चाहता है।'' सिद्ध कीजिए।
3. कहानी के आधार पर गूँगे के चरित्र की विशेषताएँ बताइये।
4. गूँगे कहानी को पढ़कर आपके मन में कौन से भाव उत्पन्न होते हैं और क्यों?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. किशोर के जन्म से गूंगे होने का कारण क्या है?

   (क) दुर्घटना (ख) पागलपन

   (ग) बहरापन (घ) उपयुक्त सभी

2. गूंगे का पालन पोषण किसने किया था?

   (क) बुआ न (ख) माता–पिता ने

   (ग) फूफा ने (घ) बुआ फूफा ने

3. चमेली का पति स्वभाव से कैसा था?

   (क) नटखट (ख) उतावला

   (ग) पागल (घ) सीधा साधा

4. चमेली की बेटी का क्या नाम था?

   (क) परी (ख) बसंता

   (ग) शकुंतला (घ) किशोर

5. सीने पर हाथ मार कर गूंगा क्या इशारा करता है?

   (क) मैं पहलवान हूं (ख) मैं स्टंटमैन हूं

   (ग) मैं मेहनती हूं (घ) उपयुक्त सभी

6. चमेली ने गूंगे को कितने पैसे पर काम पर रखा था?

   (क) 4 रुपए (ख) 3 रुपए

   (ग) 100 रुपए महीना (घ) 200 रुपए महीना

7. चमेली गूंगे को किससे मारती है?

   (क) झाड़ू (ख) जूता

   (ग) चिमटा (घ) चप्पल

8. चमेली को गूंगे से सावधान किसने किया था?

   (क) शकुंतला ने (ख) पड़ोसन सुशीला ने

   (ग) बसंता ने (घ) इनमें से कोई नहीं

9. गूंगा किसकी आवाज को कभी अनसुना नहीं करता था?

(क) चमेली (ख) सुशीला

(ग) बसंता (घ) शकुंतला

10. चमेली गूंगे का हाथ पकड़कर दरवाजे से बाहर क्यों निकाल देती है?

(क) गंदी हरकते करने के कारण

(ख) चोरी के कारण

(ग) बसंता पर हाथ उठाने के कारण

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–

1. (ग) बहरापन
2. (घ) बुआ फूफा ने
3. (घ) सीधा साधा
4. (ग) शकुंतला
5. (ग) मैं मेहनती हूं
6. (क) 4 रुपए
7. (ग) चिमटा
8. (ख) पड़ोसन सुशीला ने
9. (क) चमेली
10. (ख) चोरी के कारण

पाठ–5

ज्योतिबा फुले

पाठ–परिचय – प्रस्तुत पाठ 'ज्योतिबा फुले' में ज्योतिबा और उनकी पत्नी 'सावित्रीबाई फुले' के प्रेरक जीवन चरित्र को दर्शाया गया है। शिक्षा का सभी जाति, वर्ग, वर्ण पर समान अधिकार है और उसके लिए फुले दम्पत्ति ने जो संघर्ष किया है उसे बताने का प्रयास किया गया है। फुले दम्पत्ति ने अछूतों, शोषितों, महिलाओं, विधवाओं आदि के उद्धार का प्रण लिया और उसके लिए संघर्ष भी किया। इन दोनों ने उस समय में प्रचलित सामाजिक विषमताओं, रूढ़ियों का विरोध किया और समाज के निचले वर्ग के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी।

उन्होंने ब्राह्मणवादी और पूंजीवादी मानसिकता के विरूद्ध आवाज उठाई। उनका मानना था कि शिक्षा पर केवल उच्चवर्ग का ही एकाधिकार नहीं है। केवल किसी वर्ग विशेष के लिए शिक्षा व्यवस्था हो वह किसी काम की नहीं है। उन्होंने शिक्षा पर सभी का हक है और शिक्षा ही समाज में सभी को समानता व शोषण से मुक्ति दिला सकती है इस बात पर बल दिया। उनका मुख्य रूप से इस बात पर बल रहा है कि समाज में स्त्री व पुरुष बराबर हैं और पुरुषों की भांति ही स्त्रियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का बराबर का अधिकार हैं इस बात के लिए दोनों दम्पत्ति को समाज का तिरस्कार व विरोध भी सहना पड़ा है। यह पाठ उनके इसी संघर्ष, समाज सुधार के मार्ग में आने वाली बाधाओं और उससे लड़ने की कहानी बताता है।

स्मरणीय बिन्दु – लेखिका द्वारा प्रसिद्ध समाज–सुधारक ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी के द्वारा शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में किए गए कार्यों का वर्णन इस पाठ में किया गया है। किन्तु सामाजिक विकास के आन्दोलन के पाँच प्रमुख लोगों में उनका नाम नहीं लिया जाता है। क्योंकि सूची को बनाने वाले उच्च वर्ग के प्रतिनिधि थे। ज्योतिबा फुले ने पूँजीवादी, पुरोहितवादी मानसिकता पर खुला हमला बोला। वर्ण, जाति और वर्ग व्यवस्था में निहित शोषण प्रक्रिया को एक दूसरे का पूरक बताया। 'गुलामगिरी', 'शेतकर याचाआसूड़' में विचारों का संकलन किया गया है उनके मत में – जिस परिवार में पिता बौद्ध, माता ईसाई, बेटी मुसलमान और बेटा सत्य धर्मी हो वह परिवार आदर्श परिवार है।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए लिखा कि स्त्री–शिक्षा के दरवाजे पुरुषों ने इसलिये बन्द कर रखे हैं ताकि वह पुरुषों के समान स्वतन्त्रता न ले सकें।

ज्योतिबा फुले ने स्त्री–समानता को प्रतिष्ठित करने वाली नई विवाह–विधि की रचना की। उन्होंने अपनी इस नई विधि से ब्राह्मण का स्थान ही हटा दिया। उन्होंने पुरुष–प्रधान

संस्कृति समर्थक और स्त्री की गुलामगिरी सिद्ध करने वाले सारे मन्त्र हटा दिये। उसके स्थान पर ऐसे मन्त्र रखे जिन्हें वर–वधू आसानी से समझ सकें।

1888 में ज्योतिबा फुले ने 'महात्मा' की उपाधि को लेने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि इससे मेरे संघर्ष का कार्य बाधित होगा। उनकी कथनी उनके आचरण और व्यवहार में उतरती हुई दिखाई देती थी। स्त्री–शिक्षा के समर्थक ज्योतिबा ने सबसे पहले अपनी पत्नी को शिक्षित किया। उन्हें मराठी, अंग्रेजी भाषा में पारंगत किया।

सावित्री बाई को पढ़ने की रूचि बचपन से ही थी। एक बार बचपन में लाट साहब ने उन्हें एक पुस्तक दी। घर पहुँचने पर पिता ने वह पुस्तक कूड़ेदान में फेंक दी। सावित्री बाई ने उसे छिपाकर रख दिया तथा विवाह पश्चात् शिक्षित होने पर उस पुस्तक को पढ़ा।

14 जनवरी 1848 को भारत में पहली 'कन्या–पाठशाला' की स्थापना पुणे में हुई निम्न वर्ग की बालिकाओं के लिये पाठशाला खोलने के लिये ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई को बहुत सी बाधाओं तथा बहिष्कारों का सामना करना पड़ा। ज्योतिबा के धर्मभीरू पिता ने भी बहु –बेटे को घर से निकाल दिया। सावित्री को तरह–तरह से अपमानित किया जाता था। पर उन्होंने 1840–1890 तक पचास वर्षों तक एक प्रण होकर अपना मिशन पूरा किया। उन्होंने मिशनरी महिलाओं की तरह किसानों और अछूतों की झुग्गी–झोपड़ी में जाकर काम किया। वे दलितों और शोषितों के हक में खड़े हो गये। महात्मा फुले और सावित्री बाई का अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित जीवन एक मिसाल बन गया।

सप्रसंग व्याख्या–

यह अप्रत्याशित नहीं है ..... इसका प्रमाण है।

संदर्भ –

निबंध – 'ज्योतिबा फुले''

लेखिक – सुधा अरोड़ा

प्रसंग – प्रस्तुत गद्यांश में लेखिका ने ज्योतिबा फुले के सामाजिक कार्यों की झाँकी प्रस्तुत की है।

व्याख्या – लेखिका बताती हैं कि ज्योतिबा फुले का नाम भारत के प्रमुख पाँच समाज–सुधारकों की सूची में शामिल नहीं किया जाता। यह कोई अचानक घटित हुई किसी घटना का परिणाम नहीं है कि भारत के समाज को प्रगति और परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ाने वाले ज्योतिबा फुले को इस सूची से विलग कर दिया गया। वास्तव में उनके सराहनीय कार्य व महत्त्वपूर्ण भूमिका को जानबूझ कर अनदेखा किया गया क्योंकि इस सूची को तैयार करने वाले समाज के उच्च वर्ग के लोग थे। उच्चवर्गीय समाज को प्रतिनिधित्व देने वाले ये लोग निम्नवर्गीय ज्योतिबा फुले को महात्मा अथवा समाज–सुधारक माने को

तैयार नहीं थे क्योंकि ज्योतिबा फुले ब्राह्मणों के एकाधिकार व ऐसी शिक्षा–पद्धति के विरुद्ध थे जो परंपरागत सामाजिक मूल्यों को ही बनाए रखना चाहती थी।

यही कारण है कि ज्योतिबा फुले ने पूँजीवादी और पुरोहित वादी मानसिकता पर तीव्र प्रहार किये। उन्होंने निम्नवर्ग को अधिकार दिलाने के लिए 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की व ऐसा साहित्य रचा जिसमें उनके क्रांतिकारी विचार सम्मिलित थे। इनके माध्यम से उन्होंने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष किया और समाज–सुधार के अपने प्रयासों का सबूत दिया।

साहित्यिक सौंदर्य –

1. ज्योतिबा फुले द्वारा समाज–सुधार के लिए किये गए प्रयासों का उल्लेख हुआ है।
2. उच्चवर्गीय लोगों द्वारा ज्योतिबा फुले की उपेक्षा की झलक मिलती है।
3. भाषा सरल, सहज, सुबोध है।
4. भाषा खड़ी बोली है।
5. शैली विषयानुकूल व प्रभावशाली है।

महत्वपूर्ण प्रश्न–उत्तर :–

1. ज्योतिबा फुले का नाम समाज–सुधारकों की सूची में शुमार क्यों नहीं किया गया? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

उत्तर– भारत के प्रमुख समाज सुधारकों की सूची में ज्योतिबा फुले के शामिल नहीं किया गया था। इसके प्रमुख कारण थे–

1. इस सूची को बनाने वाले लोग समाज के उच्च, संभ्रांत वर्ग व ब्राह्मणवादी मानसिकता व उनके अधिकारों के समर्थक थे। और वे स्वयं समाज के इसी वर्ग से सम्बंधित थे।
2. वे नहीं चाहते थे कि ज्योतिबा फुले के क्रांतिकारी, मानवतावादी विचार आम जनता तक पहुँचे। क्योंकि यदि आम जनता उनके इन विचारों से प्रभावित हो गई तो समाज के निम्न वर्ग पर से उनका वर्चस्व उनकी सत्ता समाप्त हो जाएगी।
3. ज्योतिबा फुले की शिक्षा नीति–जिसमें वे बताते हैं कि शिक्षा पर किसी का एकाधिकार नहीं है। दलित वर्ग, शोषित व निम्न वर्ग को भी पढ़ने का अधिकार है। साथ ही स्त्री स्वतंत्रता, समानता व शिक्षा उनके बराबर अधिकार की बात करते हैं। यदि शिक्षा द्वारा समाज में ये परिवर्तन हुए तो समाज में उच्च वर्ग, ब्राह्मणवादी सोच, वर्चस्व पर प्रहार होगा। अतः यह शिक्षा नीति समाज के

उच्च वर्ग के खिलाफ थी। इसीलिए उन्होंने ज्योतिबा फुले का नाम समाज–सुधारकों की सूची में नहीं रखा।

2. ज्योतिबा फुले और सावित्री कैसे एक और एक मिलकर ग्यारह हो गये?

उत्तर– ज्योतिबा और सावित्री ने आपस में मिलकर और पूरा सहयोग करके स्त्री–शिक्षा के मिशन को पूरा किया। वे मिलकर किसानों और अछूतों की झुग्गी–झोपड़ियों में जाकर लड़कियों को पाठशाला भेजने का आग्रह करते थे। लोग उनके काम में तरह–तरह की बाधायें डालते थे। लांछन लगाते थे पर वे लगातार वर्षों तक एक जुट होकर काम करते रहे उन दोनों के मिलकर काम करने से सामाजिक परिवर्तन की राह और आसान हो गई। इसीलिये दोनों के संयुक्त प्रयास एक और एक मिलकर ग्यारह हो गये। उन्हें अपने मिशन में सफलता भी मिली।

अभ्यास के लिए व्याख्या–

1. मुझे 'महात्मा' कहकर..... अलग न करो।
2. महात्मा ज्योतिबा फुले ..... आंदोलन करना चाहिए।
3. हर काम पति–पत्नी ने ..... मिसाल बनकर चाहता है।

विचारणीय प्रश्न–

1. शोषण–व्यवस्था ने क्या–क्या षड्यन्त्र रचे और क्यों?
2. आदर्श परिवार की परिकल्पना क्या थी? स्पष्ट कीजिए।
3. उनका दांपत्य–जीवन किस प्रकार आधुनिक दम्पत्तियों को प्रेरणा देता है?
4. ज्योतिबा फुले स्त्री–पुरुष के बीच किस प्रकार के सम्बन्ध चाहते थे?
5. सावित्री बाई के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किस प्रकार आए?
6. अस्पृश्य जातियों के विषय में उनके द्वारा किये क्या–क्या उत्थान कार्य थे?
7. ज्योतिबा फुले ने किस प्रकार के सर्वांगीण समाज की कल्पना की थी?
8. सावित्रीबाई और महात्मा फुले द्वारा समाजहित में किए गये कार्यो को स्पष्ट करें?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. ज्योतिबा फुले के अनुसार एक आदर्श परिवार में कौन होना चाहिए?

(क) माता ईसाई (ख) पिता बौद्ध

(ग) बेटा सत्य धर्मी (घ) उपयुक्त सभी

2. सामाजिक विकास और बदलाव के आंदोलन में किसका नाम शुमार नहीं किया गया है?

(क) मदर टेरेसा (ख) महात्मा गांधी

(ग) भीमराव अंबेडकर (घ) महात्मा ज्योतिबा फुले

3. ज्योतिबा फुले ने स्त्री को समानता दिलाने के लिए क्या किया?

(क) कन्या के लिए पाठशाला खोलना

(ख) नई विवाह विधि की रचना की

(ग) अपनी पत्नी को शिक्षा दिलाना

(घ) उपयुक्त सभी

4. भारत की पहली महिला शिक्षक कौन थी?

(क) पंडित रमाबाई (ख) सरोजिनी

(ग) सावित्रीबाई फुले (घ) उपयुक्त सभी

5. ज्योतिबा फुले जी को महात्मा की उपाधि कब दी जा रही थी?

(क) 1885 (ख) 1886

(ग) 1888 (घ) 1988

6. पुणे में निम्न वर्ग की बालिकाओं के लिए सबसे पहली पाठशाला कब खोली गई?

(क) 12 जनवरी 1848 (ख) 4 जनवरी 1850

(ग) 14 जनवरी 1848 (घ) 12 फरवरी 1948

7. लाट साहब के कहने पर "इस तरह रास्ते में घूमते हुए खाना अच्छी बात नहीं है" तो सावित्रीबाई ने क्या किया?

(क) थप्पड़ लगा दिया (ख) बुरा भला कहने लगी

(ग) हाथ का खाना फेंक दिया (घ) उपयुक्त सभी

8. ज्योतिबा फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई को क्या पढ़ना सिखाया?

(क) मराठी भाषा (ख) फ्रेंच भाषा

(ग) मैथिली भाषा (घ) उपयुक्त सभी

9. शादी के समय सावित्रीबाई की उम्र क्या थी?

(क) 9 साल (ख) 5 साल

(ग) 12 साल (घ) 15 साल

10. ज्योतिबा फुले का नाम समाज सुधारकों में क्यों शुमार नहीं किया गया?

(क) सूची को बनाने वाले उच्च वर्ग के लोग थे

(ख) समाज के सभी लोग उनसे जलते थे

(ग) इन्होंने अच्छे काम नहीं किए थे

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–

1. (क) उपयुक्त सभी
2. (घ) महात्मा ज्योतिबा फुले
3. (घ) उपयुक्त सभी
4. (ग) सावित्रीबाई फुले
5. (ग) 1888
6. (ग) 14 जनवरी 1848
7. (ग) हाथ का खाना फेंक दिया
8. (क) मराठी भाषा
9. (क) 9 साल
10. (क) सूची को बनाने वाले उच्च वर्ग के लोग थे

पाठ–6

खानाबदोश

पाठ–परिचय – इस सामाजिक समस्या–प्रधान कहानी के माध्यम से लेखक ने मेहनत मजदूरी करके किसी तरह गुज़र–बसर कर रहे मजदूर वर्ग के शोषण, यातना तथा समाज की जातिवादी मानसिकता का चित्रण किया है। मजदूर वर्ग मेहनत कर इज्जत से जीना चाहता है पर उच्च ताकतवर वर्ग ऐसा होने नहीं देता।

स्मरणीय बिन्दु – सुकिया और उसकी पत्नी मानो कमाने–खाने की इच्छा से गाँव–देहात छोड़कर शहर आए थे। वे असगर ठेकेदार के भट्टे पर ईंट पाथने का काम करते थे। भट्टे पर मोरी का काम सबसे खतरनाक था। ईंटें पकाने के लिए कोयला, बुरादा, लकड़ी और गन्ने की बाली को मोरियों के अंदर डालना होता था। छोटी–सी असावधानी मौत का कारण बन सकती थी। भट्टा मजदूरों को दड़बेनुमा छोटी–छोटी झोपड़ियों में रहना पड़ता था। संध्या के समय दिन–भर के थके–हारे मज़दूर रात को दड़बों में घुस जाते थे। साँप और बिच्छू का डर लगा रहता था तथा वातावरण में जंगल का सा सन्नाटा छा जाता था। मानों भट्टे के माहौल से तालमेल नहीं बिठा पाई थी, इसलिए खाना बनाते समय चूल्हे से आती चिट–पिट की आवाजों में उसे अपने मन की दुश्चिंताओं और आशंकाओं की आवाजें सुनाई देती थी। मानों के मन में शारीरिक शोषण का डर, बात न मानने पर प्रतिकूल व्यवहार की घबराहट थी।

एक दिन भट्टा मालिक मुख्तार सिंह कहीं बाहर चला गया तो उसका बेटा सूबे सिंह भट्टे पर आने लगा । सूबेसिंह के भट्टे पर आने से भट्टे का माहौल बदल गया। ठेकेदार असगर उससे डरा–डरा रहने लगा। सूबेसिंह अपनी सेवा–टहल कराने के बहाने एक मजदूर महेश की पत्नी किसनी का यौन–शोषण करने लगा। उसने किसनी को साबुन, कपड़े और ट्रांजिस्टर लाकर दिया। वह किसनी को शहर भी घुमाने ले जाने लगा। किसनी खुश थी, वह सूबेसिंह के साथ अधिक समय व्यतीत करने लगी थी। उसके रंग–ढंग में परिवर्तन आ गया था। उसका पति महेश शराब पीने लगा था। उसे देखकर मजदूरों में फुसफुसाहट शुरू हो गई थी।

मानों और सुकिया खुश थे क्योंकि भट्टे पर काम करते हुए उन्होंने कुछ पैसे बचाए थे। भट्टे पर पकती लाल–लाल ईंटों को देखकर मानों खुश थी। वह ज्यादा काम करके, ज्यादा रुपये जोड़कर अपना एक पक्का मकान बनाने का सपना देखने

लगी थी। एक दिन किसनी के अस्वस्थ होने पर सूबेसिंह ने ठेकेदार असगर के द्वारा मानों को अपने दफ्तर में बुलवाया। बुलावे की खबर सुनते ही मानों और सुकिया घबरा गए । वे सूबेसिंह की नीयत भाँप गए। मानों इज्जत की जिंदगी जीना चाहती थी। वह किसनी बनना नहीं चाहती थी। उनकी घबराहट देखकर जसदेव मानों के स्थान पर स्वयं सूबेसिंह से मिलने चला गया। सूबेसिंह ने जसदेव को अपशब्द कहे और लात–घूंसों से पिटाई कर दी। सुकिया और मानों उसे झोपड़ी में ले आए। जसदेव के इस अपनेपन के कारण मानों उसके लिए रोटी बनाकर ले गई, लेकिन ब्राह्मण होने के कारण उसने मानो की बनाई रोटी नहीं खाई । असगर ठेकेदार जसदेव को सुकिया और मानों के चक्कर में न पड़ने की सलाह देता है। जसदेव का व्यवहार मानों और सुकिया के प्रति बदलता चला जाता हें जसदेव की पिटाई से भट्टा मजदूरों में भय फैल जाता है।

सूबेसिंह की हिदायत पर असगर ठेकेदार सुकिया और मानों को तरह–तरह से परेशान करने लगा । उसने सुकिया से ईंट पाथने का साँचा ले लिया और मोरी का काम दे दिया। एक सुबह मानों ने अपनी ईंट पाथने की जगह पर सारी ईंट टूटी हुई देखीं। वह दहाड़े मारकर रोने लगी। आवाज़ सुनकर सुकिया वहाँ आया और टूटी ईंटे देखकर हक्का–बक्का रह गया। असगर ठेकेदार ने टूटी ईंटों की मजदूरी देने से साफ इन्कार कर दिया।

सुकिया सारी बात समझ गया और मानों का हाथ पकड़कर बोला कि 'ये लोग हमारा घर नहीं बनने देंगे।' वे लोग भट्टे को छोड़कर खानाबदोश की तरह किसी अनजान स्थान की ओर चल पड़े।

सप्रसंग व्याख्या –

मानों का हृदय फटा.....लेना–देना ही न हो।

संदर्भ –

पाठ – खानाबदोश

लेखक – ओमप्रकाश वाल्मीकि

प्रसंग– इस कहानी में मज़दूरों के शोषण व यातना को चित्रित किया गया है। प्रस्तुत अंश में उस समय का चित्रण है जब मानों रात में पाथी गई अपनी ईंटों को सुबह टूटा–फूटा पाती है तो उसे उसका घर बनाने का सपना टूटता प्रतीत होता है इसीलिए .....

व्याख्या – उसका हृदय फटा जा रहा है। वह पागल–सी हो गई थी। उसका सपना किसी ने तोड़ दिया था। टूटी–फूटी ईंटों को देखकर उसे लगा कि किसी ने उसके पक्की ईंटों के मकान को तहस–नहस कर दिया हो। उसके कुछ देर बाद जसदेव वहाँ आया। वह भी निरपेक्ष भाव से चुपचाप खड़ा था। ऐसा लग रहा था कि उसे उन टूटी–फूटी ईंटों से कोई लेना–देना ही न हो। मजदूर होते हुए भी जातिगत आधार पर अपने को श्रेष्ठ या निम्न समझकर एक मजदूर दूसरे मजदूर की लड़ाई को अपनी नहीं समझता है तो ऐसे में शोषण मुक्त समाज की कल्पना भी दम तोड़ देती है। ऐसे में मानों का अस्थिर हो जाना स्वाभाविक था।

साहित्यिक सौंदर्य–

1. मानव–मनोविज्ञान पर लेखक की अच्छी पकड़ है। मानों की मनोदशा व जसदेव की तटस्थता का चित्रण।
2. 'हृदय फटना', 'बौरा जाना', आदि मुहावरों के प्रयोग से भाषा सजीव हो उठी है।
3. खड़ी बोली में भावों की सशक्त अभिव्यक्ति है।
4. भाषा में चित्रात्मकता का गुण विद्यमान है।
5. लेखक ने बड़ी हो बारीकी से मजदूर वर्ग के शोषण व उत्पीड़न का चित्रण किया है।

अभ्यास–प्रश्न (उत्तर सहित)

1. सूबेसिंह के सम्पर्क में आने पर किसनी के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?

उत्तर– सूबेसिंह भट्टा मालिक मुख्तार सिंह का अय्याश बेटा था। उसने किसनी को दफ्तर की सेवा–टहल का काम दे दिया था। शुरू–शुरू में किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया था। धीरे–धीरे वह भट्टे पर गारे–मिट्टी का काम छोड़कर रोज़ ही दफ्तर में रहने लगी थी। इससे किसनी के पास वे सब सुविधाएं आ गई, जिनकी अन्य मजदूर कल्पना भी नहीं कर सकते थे। अब वह हैंडपंप के नीचे साबुन से रगड़–रगड़े कर नहाती थी। ट्रांजिस्टर पर फिल्मी गानें सुनती थी तथा अच्छे कपड़े पहनती थी। वह अपने पति महेश की उपेक्षा करने लगी थी और ज्यादातर समय दफ्तर में खिलखिलाती रहती थी। वह सूबेसिंह के साथ शहर भी जाने लगी थी और कई–कई दिनों तक शहर से लौटती नहीं थी। जब लौटती–थकी, हारी, निढ़ाल और मुरझाई हुई। इससे वह अन्य मजदूरों में काना–फूसी का कारण बन गई थी। वह

कुछ सुविधाओं के लिए शोषण और गर्त्त के ऐसे रास्ते पर चल पड़ी थी जहाँ से लौटना मुश्किल था।

2. 'खानाबदोश' कहानी की मूल संवेदना (भाव) पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'खानाबदोश' कहानी की मूल संवेदना है– मजदूर वर्ग का शोषण। इस कहानी में लेखक ने मजदूरी करके किसी तरह गुजर–बसर कर रहे मजदूर वर्ग के शोषण तथा यातना को चित्रित किया है। मज़दूर यदि इज्जत के साथ जीना भी चाहे तो सूबेसिंह जैसे समृद्ध और ताकतवर लोग उन्हें जीने नहीं देते । हमारे समाज में व्याप्त जातिवादी मानसिकता भी समाज को बाँटनें में अहम् भूमिका निभाती है। शोषक वर्ग इसको एक हथियार के रूप में अपने पक्ष में प्रयोग करता है। शोषित वर्ग कभी भी अपने लिए कुछ नहीं कर पाता। वह तो रोजी–रोटी की समस्या में ही उलझकर रह जाता हें इस कहानी में भी जमीन से उखड़े हुए लोगों की ब्यथा को बताया गया है जो रोज़ी–रोटी कमाने की इच्छा में शोषण–चक्र में ऐसे फँस जाते हैं कि आजीवन खानाबदोशों जैसा जीवन जीने को विवश होकर रह जाते हैं।

3. 'खानाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन–किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है? इन समस्याओं के प्रति कहानीकार के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस कहानी में आज के समाज की निम्नलिखित समस्याओं को रेखांकित किया गया है–

1) समाज में जाति–भेद अभी तक कायम है।

2) मजदूर–वर्ग का शोषण हो रहा है और वे इस यातना को झेलने के लिए विवश हैं।

3) मजदूर अभी भी नारकीय जीवन जीते हैं। उनके लिए सुविधाओं का अभाव है।

4) समाज में स्त्रियाँ सुरक्षित नहीं हैं वे दोहरे शोषण की शिकार है स्त्रियों के लिए सम्मानजनक दृष्टिकोण का अभाव है।

5) समाज में शोषण को देखकर चुप रहने की मानसिकता व्याप्त है। इन समस्याओं के प्रति लेखक का दृष्टिकोण मानो और सुकिया के माध्यम से प्रकट हुआ हैं। दोनों अपना जीवन जीना चाहते हैं, परन्तु शोषणकारी

शक्तियाँ उन्हें प्रताड़ित करती हैं वे शोषण के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं करते बल्कि कष्टपूर्ण जीवन झेलने के लिए कहीं और चल देते हैं वे खानाबदोश की जिंदगी जीने के लिए विवश है। कहानीकार के पास इस शोषण का कोई समाधान नहीं है। इतना अवश्य है कि वह शोषित और मजदूरवर्ग से गहरी सहानुभूति रखता है। पर वह कोई तर्कपूर्ण समाधान प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

व्याख्या–अभ्यास हेतु अनुच्छेद

क) भट्टे का काम खत्म.....पकवानों से अच्छी होती है।

ख) समूचा दिन अदृश्य.....आवाज भी नहीं आ रही है।

ग) कड़ी मेहनत और दिन–रात.....कितनी ईंटें लग जाती है।

घ) सुकिया के पीछे–पीछे.....एक दिशाहीन यात्रा पर।

ड़) भट्टे में उठते काले.....एक पड़ाव था वह भट्टा।

विचारणीय प्रश्न –

1. सुकिया और मानों भट्टे पर क्या काम करते थे?
2. मोरी का काम खतरनाक क्यों था?
3. संध्या के समय भट्टे का वातावरण कैसा हो जाता था?
4. मानों के मन की दुश्चिताओं और आशंकाओं को स्पष्ट करें।
5. सूबेसिंह के सम्पर्क में आने पर किसनी के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया और क्यों?
6. किसनी और सूबेसिंह के संबंधों को देखकर मजदूरों ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की?
7. सूबेसिंह ने जसदेव की पिटाई क्यों की?
8. जसदेव ने मानों का बनाया खाना क्यों नहीं खाया?
9. सूबेसिंह ने मानो और सुकिया को किस–किस तरह से परेशान किया?
10. आपके विचार से मानो द्वारा बनाई ईंटे किसने और क्यों तोड़ी होंगी?
11. मानों और सुकिया ने क्या सपना देखा था? वह सपना कैसे टूट गया?

12. 'खानाबदोश' कहानी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट कीजिए।

13. 'खानाबदोश' कहानी की मूल–संवेदना अथवा भाव पर प्रकाश डालिए।

14. 'ईंटों को जोड़कर बनाए चूल्हे में जलती लकड़ियों की चिट–पिट जैसे मन में पसरी दुश्चिंताओं और तकलीफों की प्रतिध्वनियाँ थी जहाँ सब कुछ अनिश्चित था।' यह वाक्य मानो की किस मानसिक स्थिति को उजागर करता है?

15. 'सुकिया ने मानों की आँखों से बहते तेज अँधड़ों को देखा और उसकी किरकिराहट अपने अंतर्मन में महसूस की। सपनों के टूट जाने की आवाज उसके कानों को फाड़ रही थी।' प्रस्तुत पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

16. मानों किसनी क्यों नहीं बनना चाहती थी?

17. आशय स्पष्ट कीजिए –

    क) अपने देश की सूखी रोटी भी परदेश के पकवानों से अच्छी होती है।

    ख) फिर तुम तो दिन–रात साथ काम करते हो.....मेरी खातिर पिटे.....फिर यह बामन म्हारे बीच कहाँ से आ गया।

    ग) सपनों के काँच उसकी आँख में किरकिरा रहे थे।

18. भट्टा मजदूरों के बच्चों का जीवन कैसा होता है? उनकी शिक्षा व्यवस्था कैसे होती होगी? इस पर अपने विचार लिखे।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'खानाबदोश' का क्या अर्थ है?

    (क) जो खाना बनाने का कार्य करते हैं।

    (ख) जो एक जगह टिक कर नहीं रहते

    (ग) खेतों में काम करते हैं

    (घ) जो झोपड़ी में रहते हैं

2. भट्टे के मजदूर शाम के समय कहां रहते थे?

    (क) गांव में (ख) शहर में

    (ग) दड़बेनुमा झोपड़ियों में (घ) पक्के घरों में

3. जसदेव कौन था?

(क) भट्टे पर काम करने वाला ब्राह्मण लड़का

(ख) मुख्तार सिंह का बेटा

(ग) सुकिया और मानो का बेटा

(घ) सुबेसिंह का बेटा

4. सूबेसिंह कौन था?

(क) भट्टे के मालिक का बेटा (ख) शहर का कारोबारी

(ग) गांव का मुखिया (घ) असगर का पिता

5. महेश के दारू पीने का क्या कारण था?

(क) बेरोजगार होना

(ख) समय पर पैसा न मिलना

(ग) पत्नी का गलत राह पकड़ लेना।

(घ) मालिक के द्वारा पिटाई होना

6. सुबेसिंह किसको शहर घुमाने ले जाया करता था?

(क) मानो (ख) किसनी

(ग) जसदेव (घ) महेश

7. मानो के बदले ऑफिस में काम करने कौन जाता है?

(क) महेश (ख) जसदेव

(ग) सुकिया (घ) असगर

8. किसनी के बदले ऑफिस में काम करने किस को बुलाया गया था?

(क) महेश (ख) सुकिया

(ग) जसदेव (घ) मानो

9. भट्टे पर सूबेसिंह किसकी पिटाई करता है?

(क) असगर (ख) किसनी

(ग) महेश (घ) जसदेव

10. प्रश्न–जसदेव ने मानो की बनी हुई रोटियां क्यों नहीं खाईं?

(क) क्योंकि वह ब्राह्मण था

(ख) क्योंकि उसे भूख नहीं थी

(ग) वह रोटी नहीं खाता था

(घ) क्योंकि उसे दर्द ज्यादा हो रहा था

उत्तर–

1. (ख) जो एक जगह टिक कर नहीं रहते
2. (ग) दड़बेनुमा झोपड़ियों में
3. (क) भट्टे पर काम करने वाला ब्राह्मण लड़का
4. (क) भट्टे के मालिक का बेटा
5. (ग) पत्नी का गलत राह पकड़ लेना
6. (ख) किसनी
7. (ख) जसदेव
8. (घ) मानो
9. (घ) जसदेव
10. (क) क्योंकि वह ब्राह्मण था

पाठ–8

उसकी माँ

पाठ–परिचय – इस कहानी में देश की बुरी अवस्था से चिंतित युवा–पीढ़ी के विद्रोह को नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस अवस्था के लिए युवा पीढ़ी शासन तंत्र को दोषी मानती है और उसे उखाड़ फेंकना चाहती है। नई पीढ़ी विद्रोह के स्वर लिए राजसत्ता के विरोध में खड़ी है, वहीं पूर्ववर्ती बुद्धिजीवी समाज अपनी सुविधा के लिए राजसत्ता के तलवे चाटने को तैयार है। इन दोनों के बीच में है एक माँ, जो अनेकानेक प्रयासों के बावजूद व्यवस्था की चक्की से अपने बेटे को नहीं बचा सकी। इस कहानी में ममतामयी माँ का सजीव चित्रण हुआ है।

स्मरणीय बिन्दु – यह कहानी स्वाधीनता–संग्राम से प्रेरित कहानी है। लेखक ने देश को आज़ाद कराने के लिए कुछ युवकों द्वारा दिए गए बलिदान का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। एक दिन दोपहर के समय लेखक कुछ पढ़ने के विचार से पुस्तकालय जाता है तभी शहर का पुलिस सुपरिटेंडेंट उससे मिलने आता है। पुलिस सुपरिटेंडेंट उसे लाल की फोटों दिखाकर, लाल के विषय में पूछताछ करता है लेखक बताता है कि वह उसके मैनेजर रामनाथ का पुत्र है और रामनाथ की मृत्यु हो चुकी है। लाल कॉलेज में पढ़ता है और अपनी बूढ़ी माँ के साथ दो मंजिले मकान में रहता है उनका खर्च लेखक के पास रखी उसके पिता की जमापूँजी से चलता है। पुलिस सुपरिटेंडेंट लेखक को लाल से सावधान रहने को कहकर चला जाता है।

लेखक लाल की माँ को बताता है कि वह लाल को समझा दे कि लाल क्रांतिकारियों से दूर रहे अन्यथा उसे दंड भोगना पड़ेगा। तभी लाल अपनी माँ को बुलाने आता है। तो लेखक उसे समझाने का प्रयास करता है। कि वह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध षड्यंत्र करना छोड़ दे। लाल उसके साथ तर्क–वितर्क करता है वह कहता है कि वह देश को पराधीन नहीं देख सकता और देश को स्वतंत्र कराने के लिए कुछ भी कर सकता है। जो राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र के नागरिकों की स्वतंत्रता का दमन करता है, ऐसे दुष्ट राष्ट्र (ब्रिटिश सरकार) के सर्वनाश में वह अपना योगदान चाहता है।

एक दिन लेखक घर आता है तो अपनी पत्नी को लाल की माँ से बात करते देखता है। वह लाल की माँ से लाल के मित्रों के विषय में पूछता है। वह बताती है कि लाल के सभी मित्र मस्त एवं हँसौड़ तथा जिंदादिल हैं। वे सभी उसे भारतमाता कहते हैं, और खूब बहस करते हैं। लेखक ने पूछा कि क्या वे लड़ने–झगड़ने, गोली, बंदूक की बातें करते हैं? तो वह सरलता से कहती हैं कि उनकी बातों का कोई मतलब थोड़े ही होता है।

एक दिन चार–पाँच दिन बाहर रहने के बाद लेखक घर आता है तो लाल के घर में

उसे सन्नाटा–सा दिखाई देता है। उसकी पत्नी उदास मुख से उसे बताती है कि लाल की माँ पर भयंकर विपत्ति आ गई है। पुलिस ने उसके घर की तलाशी में पिस्तौले, कारतूस और कुछ पत्र ढूँढ निकाले थे। उन पर हत्या, षड्यंत्र और सरकारी राज्य उलटने के आरोप लगाए गए और उन पर मुकदमा चलाया गया। सरकार के डर से कोई वकील उनकी पैरवी के लिए नहीं आया। मुकदमा लगभग एक वर्ष तक चला। लाल की माँ ने घर का सामान बेचकर एक–एक वकील को उनकी पैरवी के लिए तैयार किया। वह लाल और उसके साथियों को दोषी नहीं मानती थी। वह समझती थी कि यह पुलिस की चाल–बाजी है। वह उसे बचाने को निरन्तर दौड़–धूप करती रही। उसका शरीर अत्यंत कमजोर हो गया था किन्तु उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए। अदालत ने लाल, बंगड़ और उसके दो साथियों को फाँसी तथा अन्य दस लड़कों को सात वर्ष की कड़ी सजा सुनाई।

जब से लाल और उसके साथी पकड़े गए थे, तब से शहर या मुहल्ले के सभी आदमी लाल की माँ से मिलने से डरते थे क्योंकि वह एक विद्रोही की माँ थी। एक दिन लेखक अपने पुस्तकालय में मेज़िनी की कोई पुस्तक देख रहा था, जिस पर लाल के हस्ताक्षर थे। वह पुलिस सुपरिटेंडेंट की चेतावनी को याद कर उसे मिटाने ही वाला था कि लाल की माँ एक पत्र लेकर उसके पास आई वह लाल का पत्र पढ़कर सुनाता है। पत्र में लाल ने स्वयं और अपने साथियों के साथ मृत्यु के बाद माँ से मिलने की बात की थी। लाल की माँ पत्र लेकर चुपचाप चली जाती है, किन्तु लेखक बेचैन हो जाता है। वह सो नहीं पाता। उसे लगता है कि लाल की माँ कराह रही हैं वह लाल की माँ की खोज–खबर लेने के लिए नौकर को भेजता है। नौकर आकर बताता है कि वह हाथ में पत्र लिए घर के दरवाजे पर पाँव पसारे मृत पड़ी है।

सप्रसंग व्याख्या–

''इस पराधीनता.....नहीं छोड़ सकता ।''

संदर्भ–

कहानी – उसकी माँ

लेखक – पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

प्रसंग– इस कहानी में लेखक ने देश की बुरी स्थिति से चितिंत युवा पीढ़ी के विद्रोह को नए रूप में प्रस्तुत किया है।

यहाँ लेखक लाल को अपने क्रांतिकारी विचार त्यागने के लिए कहता है, प्रतिक्रिया स्वरूप लाल लेखक के सामने अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए कहता है।

व्याख्या– लाल कहता है कि गुलामी के बारें में आपकी और मेरी सोच में अन्तर है। आप और मैं दो भिन्न सिरों पर है। आप कट्टर राजभक्त हैं। मैं कट्टर राजद्रोही हूँ । राजभक्त होने के कारण आप अंग्रेजी शासन को ठीक मानते हैं, क्योंकि उससे आपको

सुविधाएँ मिलती हैं। मैं राज–विद्रोही होने के कारण दूसरी बात को ठीक मानता हूँ। आप अपने लाभ, ऐश्वर्य के लिए अपना पद छोड़ नहीं सकते । मैं देश के विकास के लिए विदेशी शासन को नष्ट करना चाहता हूँ।

साहित्यिक सौंदर्य–

1) लेखक और लाल के माध्यम से जमींदारों और क्रांतिकारियों के वैचारिक मतभेद को दर्शाया है।

2) खड़ी बोली में सहज अभिव्यक्ति है।

3) भाषा सहज, सरल और भावपूर्ण है।

4) तर्कपूर्ण शैली

5) संवाद संक्षिप्त और सारग्राही है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर–

1. क्या लाल का व्यवहार सरकार के प्रति षड्यंत्रकारी था?

उत्तर– लाल का विरोध सरकार से नहीं था। उसका विरोध उस व्यवस्था से था जो उसके देश को परतन्त्रता की जंजीर से जकड़े हुए थी। वह सरकार के प्रति षड्यन्त्र नहीं कर रहा था। उसका उद्देश्य भारतमाता को परतन्त्रता से मुक्ति दिलाना था। अतः कहा जा सकता है कि यद्यपि सरकार उसे षड्यन्त्रकारी मानती थी, वह षड्यन्त्रकारी न होकर क्रान्तिकारी था।

2. पूरी कहानी में जानकी न तो शासन तंत्र के समर्थन में हैं न विरोध में, किन्तु लेखक ने उसे केन्द्र में ही नहीं रखा, बल्कि कहानी का शीर्षक बना दिया क्यों?

उत्तर– जानकी शासन का समर्थन या विरोध समझने में असमर्थ है। वह एक ममतामयी माँ है। जिसका हृदय अपने पुत्र लाल के प्रति ममत्व से भरा है। जब लाल का चाचा जानकी को लाल के सरकार के प्रति विरोधी व्यवहार के बारें में बताता है तब जानकी उसे डाँटती है किन्तु जब वह गिरफ्तार हो जाता है तो वह शासन को कोसती है कि उसके बेटे को फँसाया गया है। लेखक ने जानकी के मातृत्व को महिमामंडित कर उसे मुख्य पात्र बना दिया है क्योंकि संपूर्ण घटनाचक्र में वही है जो सर्वाधिक प्रभावित होती है। अतः संपूर्ण कथा चक्र में ममतामयी माँ का चरित्र सभी पात्रों और घटनाओं की तुलना में सशक्त होकर उभरता है।

3. चाचा, जानकी और लाल के प्रति सहानुभूति तो रखता था, किन्तु वह डरता है, यह डर किस प्रकार का है?

उत्तर– चाचा जानकी और लाल के प्रति सहानुभूति तो रखता था परन्तु वह सरकार से

डरता था। वह जमींदार था जमींदारी सरकार की कृपा पर टिकी थी। अगर वह लाल का साथ देता तो उसे चिन्ता थी कि कहीं वह सरकार का कोप–भाजन न बन जाए। प्रलोभन और डर मनुष्य को उसके कर्त्तव्य से विमुख कर देता है।

विचारणीय प्रश्न–

1. इस कहानी में दो तरह की मानसिकताओं का संघर्ष है, एक का प्रतिनिधित्व लाल करता है तथा दूसरे का उसका चाचा। आपकी नज़र में कौन सही है? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
2. उन लड़कों तथा लाल ने कैसे सिद्ध किया कि जानकी सिर्फ माँ नहीं, भारतमाता है? कहानी के आधार पर जानकी का चरित्र–चित्रण कीजिए।
3. 'विद्रोही की माँ से सम्बन्ध रखकर कौन अपनी गरदन मुसीबत में डालता ? इस कथन के आधार पर उस शासन–तंत्र और समाज व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।
4. 'ऐसे दुष्ट, व्यक्ति–नाशक राष्ट्र के सर्वनाश में मेरा भी हाथ हो' के माध्यम से लाल क्या कहना चाहता है?
5. पुलिस द्वारा लाल के घर की तलाशी में क्या–क्या आपत्तिजनक सामग्री मिली?
6. पुलिस ने लाल पर क्या–क्या आरोप लगाए?
7. कोई भी वकील लाल की पैरवी करने के लिए तैयार क्यों नहीं हुआ?
8. लाल ने अपनी माँ को पत्र में क्या लिखा?
9. इस कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।
10. अभ्यास हेतु गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या–
    (क) पुलिस वाले केवल संदेह.....धीरे–धीरे घुलाना–मिटाना है।
    (ख) चाचा जी, नष्ट हो जाना.....भुजाओं की सखियाँ हैं।
    (ग) लोग ज्ञान न पा सकें.....यह शासन–प्रणाली।
    (घ) तू भी जल्दी वहीं.....वहाँ बड़ा आनन्द है।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'उसकी माँ' कहानी के अनुसार युवा पीढ़ी किसे उखाड़ फेंकना चाहती है?
    (क) मंहगाई (ख) गरीबी
    (ग) शासन तंत्र (घ) सामाजिक व्यवस्था

2. इस कहानी में किस का सजीव चित्रण हुआ है?

(क) माँ की ममता (ख) स्वाधीनता आन्दोलन

(ख) तत्कालीन जनमानस (घ) उपर्युक्त सभी

3. पुलिस सुपरिटेंडेंट ने डायरी में से किस की फोटो निकाली?

(क) लेखक (ख) अपने बच्चों की

(ग) लाल की (घ) समाज सेवक की

4. लाल के पिता रामनाथ क्या काम करते थे?

(क) प्रूफ रीडरी का (ख) मैनेजरी का

(ग) चपरासी का (घ) इन में से कोई भी नहीं

5. पुलिस सुपरिटेंडेंट लेखक को किससे सावधान रहने को कहता है?

(क) पुलिस (ख) सरकार

(ग) लाल (घ) गुंडों

6. लाल के मित्रों ने उसकी माँ की तुलना भारत माता से करते हुए कन्याकुमारी के सदृश किसे बताया?

(क) सफेद बालों को (ख) ठोड़ी को

(ग) नाक को (घ) माथे की गहरी रेखाओं को

6. 'उसकी माँ' कहानी में निम्नलिखित में से किसका चित्रण नहीं है?

(क) नई पीढ़ी का विद्रोही स्वर (ख) बुद्धिजीवी वर्ग का सुविधा–मोह

(ग) अंग्रेजी सरकार के अत्याचार (घ) सांस्कृतिक विरासत

7. लेखक ने किस रनाकार की पुस्तक के पन्ने से लाल के हस्ताक्षर मिटाने चाहे?

(क) मेजिनी (ख) शेक्सपियर

(ग) टॉलस्टाय (घ) नीत्शे

8. 'ब्यालू' शब्द किस अर्थ में प्रयोग किया गया है?

(क) नव विवाहित युवक के लिए (ख) रात के भोजन के लिए

(ग) सांप और बिच्छू के लिए (घ) देश की दुरवस्था के लिए

9. 'मेरी कल्पना यह है कि जो व्यक्ति समाज या राष्ट्र के नाम पर जीता हो उसका सर्वनाश हो जाए।' ये शब्द किसके हैं?

(क) लाल (ख) जानकी

(ग) लेखक (घ) लाल के मित्र

10. लाल के घर की तलाशी में पुलिस को क्या मिला?

(क) खूब धन–दौलत

(ख) विदेशी सामान

(ग) दो पिस्तौल, कारतूस और पत्र

(घ) शराब की बोतलें

उत्तर–

1. (ग) शासन तंत्र
2. (घ) उपर्युक्त सभी
3. (ग) लाल की
4. (ख) मैनेजरी का
5. (ग) लाल
6. (घ) सांस्कृतिक विरासत
7. (क) मेजिनी
8. (ख) रात के भोजन के लिए
9. (क) लाल
10. (ग) दो पिस्तौल, कारतूस और पत्र

पाठ–8

भारत वर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है

पाठ–परिचय – पाठ में दिया गया आलोचनात्मक निबन्ध भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने ददरी मेले के अवसर पर बलिया में एक उत्साहवर्द्धक भाषण एवं व्याख्यान के रूप में प्रस्तुत किया था। इस निबंध में साहित्यकार ने भारतीय दुर्दशा के लिए अंग्रेजी औपनिवेशिक साम्राज्यवाद को जिम्मेदार माना है। तो दूसरी तरफ भारतीय नागरिकों में विद्यमान आलस्य, अशिक्षा, अकर्मण्यता एवं दिशा हीनता को भी जिम्मेदार माना है। इस निबन्ध में भारतेन्दु ने भारतीयों में भारतीय अस्मिता को स्थापित करने के लिए ललकारा है।

स्मरणीय बिन्दु – भारतेन्दु ने भारतवासियों में नेतृत्व क्षमता को विकसित करना चाहा है। कई दशकों की गुलामी ने हमारी नेतृत्व क्षमता को हतोत्साहित किया है। इसलिए हम अंग्रेजीं के पिछलग्गू बन गये हैं भारत को सांस्कृतिक स्वतंत्रता तभी मिलेगी जब हम अपना नेतृत्व स्वयं करना सीख लें। इस सृजनात्मक विचार धारा का सकारात्मक परिणाम हमें गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, पटेल एवं अम्बेडकर आदि के लोकतांत्रिक नेतृत्व में दृष्टि गोचर होता है।

भारतेन्दु जी अंग्रेजों के विरोधी तो थे लेकिन पाश्चात्य आधुनिकतावादी संस्कृति के नहीं। उन्होंने बलिया के कलेक्टर राबर्ट साहब की खुलकर प्रशंसा की है, साहित्यकार ने अकबर, बीरबल, टोडरमल की धार्मिक सहिष्णुता, तीक्ष्ण नेतृत्व क्षमता एंव भूराजस्व नीतियों के कारण, उनकी सराहना की है। भारतेन्दु ने भारतवासियों की तुलना रेलगाड़ी के डिब्बों से की है। इसका तात्पर्य यह है कि हम भारतवासी बिना नेतृत्व के चल ही नहीं सकते । वे धार्मिक, पौराणिक उदाहरणो द्वारा सिद्ध करते हैं कि अगर भारतीयों को कोई बल एवं पराक्रम याद दिला दे तो ये सभी कार्य सम्पन्न कर सकते हैं।

भारतेन्दु इतिहास के मर्मज्ञ चित्रक है। इन्हें इतिहास की गतिशील नब्ज की पहचान थी। भारत गुलाम क्यों हुआ? भारत के विभाजित होने के कारण क्षेत्रवाद, अकर्मण्यता, धर्मभीरुता एवं आलस्य आदि कुप्रवृत्तियों के कारण ही भारतीय अस्मिता खतरे में पड़ी। इसके अतिरिक्त जमींदारी प्रथा एवं सामन्तवाद, जैसी भयावह कुरीतियों ने भी भारतीय राजनीतिक प्रशासनिक व्यवस्था को चकनाचूर किया।

भारतेन्दु पुनरुत्थानवादी, साहित्यकार हैं। इनके विचारों में आधुनिकतावाद के साथ ही भारतेन्दु जी पुनरूत्थानवादी, समाज–सुधारक, साहित्यकार हैं। उनके समय में आम जनता अपने देश भारत के अतीत का गौरव भूल–सी ही गई थी। ये सब जान बूझकर नहीं हुआ था बल्कि अंग्रेजी शासन उनका भय, आतंक, दमनकारी रवैया और भारतीयों का अशिक्षित होना इसके लिए जिम्मेदार था। अतः भारतेन्दु जी के सामने सबसे मुख्य प्रश्न

था। समस्या यही थी कि भारतीयों का पुनर्जागरण किया जाए अर्थात् भारत के लोग जो अतीत का गौरव भारत का महान इतिहास भूल गए हैं उसे नाटकों रंगमंचीय कला के माध्यम से बताया जाए। अतः वे अपने नाटकों का कथ्य चयन भी इसी प्रकार का रखते थे। तभी इनके विचारों में आधुनिकतावाद के साथ अतीतोन्मुखी परम्परा का बोध मिलता है। वे भारतीयों को विश्वस्तर पर उनका योगदान याद दिलाते हैं। वे बताते हैं कि भारतीयों ने खगोलशास्त्र, गणितीय प्रणाली, चिकित्सा शास्त्र एवम् रसायनशास्त्र, दर्शन, अध्यात्मवाद, संस्कृति आदि क्षेत्र में विश्वस्तर पर योगदान दिया है। इसी कारण भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता है। अतः आज हमें फिर से अपने योगदान अपने ज्ञान, ताकत को याद करने की जरूरत है। अपने पौरुष को पहचानने की आवश्यकता है। वे आगे यह बताते हैं, कि भारत विश्व विकास की दौड़ में इसी अज्ञानता की वजह से पिछड़ रहा है। और हम अपनी पुरातन रूढ़ियों की वजह से विकास की दौड़ में पिछड़ गए है।

भारतेन्दु के अनुसार मानव जीवन अत्यन्त दुर्लभ एवं अति महत्वपूर्ण है। मनुष्य को कायरों की भाँति जीवन नहीं व्यतीत करना चाहिए। बल्कि उसको समग्र सम–विषय अवसरों का लाभ उठाना चाहिए। इस विचारधारा का तात्पर्य यह है कि सम्पूर्ण भारतवासियों को भारतवर्ष के समग्र विकास एवं उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए। भारतेन्दु जी ने राष्ट्र हित के लिए व्यक्तिगत हित को महत्व नहीं दिया। यह साहित्यकार का प्रगतिशील दृष्टिकोण है।

भारतेन्दु जी ने भारतीय संस्कृति की अस्मिता के उद्वार हेतु निवृत्तिमूलक एवं पलायनवादी विचारों के स्थान पर प्रवृत्ति मूलक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया। उनके अनुसार भारत में जितना कोई निकम्मा होता है उसे उतना ही बड़ा अमीर समझा जाता है हालांकि इस कुप्रवृत्ति ने आज भी भारत को तोड़ने का प्रयास किया है हमारे यहाँ मानसिक श्रम की अपेक्षा शारीरिक परिश्रम को कम महत्व दिया जाता है। लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार के श्रम को समान महत्व देकर श्रमजीवी संस्कृति को समेकित धरातल प्रदान किया है। भारतेन्दु जी भारतवासियों को समय के साथ चलने के लिए कहते हैं। वे चाहते थे कि भारतवासी अपनी आवश्यकताओं के लिए किसी दूसरी ताकतों का मोहताज न रहे।

भारतेन्दु जी ने भारतवासियों में उत्साह का संचार करने के लिए ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पौराणिक साक्ष्यों को प्रस्तुत किया है। भारतेन्दु जी इतिहास की गम्भीर अवधारणा की जानकारी रखते थे। उपर्युक्त तथाकथित सन्दर्भों का प्रयोग भारतेन्दु जी ने सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना को समेकित रूप में किया है। भारतेन्दु जी भारत के कण–कण में उन्नति एवं अभ्युत्थान देखना चाहते थे। वे चाहते थे कि भारत का सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, मानवीय, धार्मिक एवं आर्थिक आदि क्षेत्रों में सर्वांगीण विकास सम्पन्न हो । भारतेन्दु जी ने भारतीय समस्याओं का बहुत सूक्ष्म विचार विश्लेषण किया है। वे समस्या मुक्त भारतीयता के हिमायती थे।

वे धर्मनीति के समर्थ हिमायती थे। लेकिन वे धर्माधंता, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद आदि तात्कालिक दोषों से मुक्त होने की तरफ भी इशारा करते हैं। भारतेन्दु के विचारों में देशभक्ति के साथ ही साथ राजभक्ति की प्रार्थना आखिल भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए खटकती है। वे तीज–त्योहार की नैतिक, मानवीय एवं वैज्ञानिक व्याख्या के हिमायती थे। वे नारी शोषण, दलित शोषण किसी भी कुप्रवृत्ति के खिलाफ थे। भारतेन्दु सौहार्द साम्प्रदायिक के कारण ही मुसलमानी–संस्कृति को पूर्ण तार्किकता एवं आधुनिकता से जोड़ना चाहते थे। वे भारतीय जनता को किसी भी प्रकार के कृपा पात्र के मोहताज नहीं रखना चाहते थे।

सप्रसंग व्याख्या–

भाइयो, राजा–महाराजों.....रसातल ही पहुँचोगे।

संदर्भ –

पाठ – भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है

लेखक – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

प्रसंग– लेखक उन उपायों का उल्लेख करता हैं जिनसे भारतवर्ष की उन्नति हो सके।

व्याख्या – लेखक आम लोगों को संबोधित करते हुए कहता है कि उन्हें अपनी तरक्की के लिए राजा–महाराजा अर्थात् उच्च संपन्न वर्ग की ओर नहीं देखना चाहिए। वे तुम्हारे लिए कुछ नहीं करेंगे। उनसे कोई भी आशा रखना व्यर्थ है। पंडित जी भी अपनी कथा में देश की समृद्धि और बुद्धि बढ़ाने का कोई तरीका नहीं बताएंगे। उन्हें तो सिर्फ अपने स्वार्थ को देखना है और आपको ठगना है। तुम्हें स्वयं ही कमर कसकर तैयार होना होगा और आलस्य को छोड़ना होगा। जरा सोचो, तुम कब तक जंगली, बुद्धु, मूर्ख और डरपोक कहलाओगे? अब इन बातों से अपना पीछा छुड़ाओं। तरक्की की दौड़ में तुम भी भाग लो और आगे निकलकर दिखाओ। यदि तुम इसमें पीछे रह गए तो फिर तुम्हें कहीं ठिकाना नहीं मिलेगा । यह मौका बार–बार नहीं मिलने वाला है। इसका लाभ उठाओं। यदि अबकी बार भी पिछड़ गए तो फिर नीचे की ओर गिरते चले जाओगे। इस पतन की कोई सीमा नहीं है लेखक लोगों को तरक्की की दौड़ में पूरी लगन के साथ दौड़ने के लिए प्रेरित कर रहा है

साहित्यिक सौंदर्य–

1. प्रस्तुत गद्यांश प्रेरक है
2. स्वावलंबी बनने की प्रेरणा दी गई है
3. रामचरितमानस की चौपाई का अंश देकर अपने कथ्य को सशक्त बनाया गया है– ''फिर कब राम जनकपुर है''

4. खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है।

5. भाषा सरल और सुबोध है।

अभ्यास–प्रश्न

1. भारतेन्दु के समय हिन्दुस्तान की दशा कैसी थी?

उत्तर– भारतेन्दु जी के समय देश की सामाजिक धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक स्थिति पिछड़ी हुई थी। देश पर अंग्रेजों का शासन था। वह हमारा सारा कच्चा माल सस्ते दामों पर खरीदकर अपने देश भेजते थे। और वहाँ का माल हमारे देश में मनमानी कीमत पर बेचते थे। जिससे हमारे उद्योग धंधे ठप्प हो गए, खेती बिगड़ गई, आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी। इन सभी का देश की आम जनता पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा। क्योंकि उनका दोहरे स्तर पर शोषण हो रहा था। एक तो उच्च वर्ग, सामंतवादी सोच के कारण दूसरा अंग्रेजी शासन के रूप में समाज में। समाज में विषमताएँ थी बहुत सारी कुरीतियाँ जैसे अंधविश्वास, जादू–टोना, जातिप्रथा, अनमेल विवाह, छूआ–छूत, धर्म के आधार पर भेदभाव, दलित समस्या स्त्रियों की दीन हीन दशा, बाल–विवाह, अशिक्षा, विधवा पुनर्विवाह ना होना आदि। इस प्रकार देखा जा सकता है कि इस समय में समाज राजनीति आर्थिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र प्रत्येक स्तर पर भेदभाव, शोषण अन्याय, हीन भावना आदि व्याप्त थी।

2. देश का रुपया और बुद्धि बढ़े, इसके लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर– देश का रुपया और बुद्धि बढ़े इसके लिए लोगों को राजा–महाराजाओं का मुँह देखना बंद करना होगा अर्थात् उन पर निर्भरता खत्म करनी होगी। अपने बल के भरोसे काम करना होगा। पंडित जी की कथा से भी यह काम नहीं हो सकता । हमें अपने आप ही कमर कसनी होगी, आलस्य छोड़ना होगा। हमें अब जंगली पशु, मूर्ख और कमजोर नहीं कहलवाना होगा। हमें रुपया पाने की होड़ में आगे बढ़ना होगा। एक बार पीछे पड़ने पर फिर उठ नहीं सकेंगे। इस समय में सरकार का राज्य पाकर और उन्नति का इतना सामान पाकर भी न सुधरे तो फिर कभी सुधर नहीं पाएंगे। यह सुधार भी ऐसा हो जो सभी क्षेत्रों में उन्नति हो। हमें ऐसी सभी बातों को छोड़ना होगा जो हमारी उन्नति के रास्ते में काँटे बिछाती हैं। हमें अपने सुख को होम करना होगा।

अभ्यास हेतु प्रश्न :–

1) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र किस काल के साहित्यकार हैं?

2) भारतेन्दु ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद की आलोचना क्यों की है?

3) भारतेन्दु ने अपने इस कालजयी निबन्ध में भारतीय अतीत का समर्थन क्यों किया है?

4) भारतेन्दु ने भारतीयों को आलसी क्यों कहा है?

5) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्यों चर्चित है?

6) भारतेन्दु ने स्वदेशी विचारधारा का समर्थन क्यों किया?

7) भारतेन्दु भारत में किस प्रकार का विकास चाहते थे?

8) भारतेन्दु ने राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव को क्यों आवश्यक माना है?

9) भारतेन्दु जी के धार्मिक विचारों पर प्रकाश डालिए?

10) भारतेन्दु को आधुनिक कबीर की संज्ञा क्यों दी जाती है?

11) भारतेन्दु भारत को कैसा बनाना चाहते थे?

12) भारतेन्दु की राष्ट्रवादी विचारधाराओं पर प्रकाश डालिए?

13) भारतेन्दु ने इस निबन्ध में भारतीय समाज की जीती–जागती तस्वीर प्रस्तुत की है। कैसे?

सप्रसंग व्याख्या हेतु अभ्यास–

1) ''हमारे हिन्दुस्तानी लोग.....क्या नहीं कर सकते ।''

2) ''आर्य लोग हिन्दुस्तान.....प्रतिदिन बैठे।''

3) ''हम क्या उन्नति करे.....काँटों को साफ किया।''

4) ''मुसलमान भाईयों.....जी दुखाने वाली हो, न करे।''

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. "भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है।" भारतेन्दु हरिश्चंद्र का एक प्रसिद्ध..... है।

   (क) भाषण (ख) कविता पाठ

   (ग) कहानी (घ) व्याख्यान माला

2. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार राजा–महाराजों को किससे फुरसत नहीं?

   (क) पूजा (ख) भोजन

   (ग) झूठी गप (घ) उपर्युक्त सभी

3. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने भाषण में अमीर हसन की किस पुस्तक का वर्णन किया है?

   (क) मसनवी (ख) इंदरसभा

   (ग) उपर्युक्त दोनों (घ) इनमें से किसी का भी नहीं

4. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने भाषण में 'मर्दुमशुमारी' शब्द का प्रयोग किया है जिसका अर्थ है–

(क) विभागीय (ख) जनगणना

(ग) माला (घ) राजकीय

5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने अपने भाषण में राबर्ट बहादुर की समानता किस मुगल बादशाह से की है?

(क) शाहजहाँ (ख) अकबर

(ग) शहजादा सलीम (घ) कुतुबुद्दीन ऐबक

6. भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने हिन्दुस्तानी लोगों की तुलना किससे की है?

(क) बैल गाड़ी (ख) रेल गाड़ी

(ग) घोड़ा गाड़ी (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

7. 'का' चुप साधि रहा बलवाना' में किसके चुप रहने का उल्लेख हैं?

(क) हनुमान (ख) राम

(ग) लक्ष्मण (घ) सुग्रीव

8. बलिया में 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो?' विषय पर किसने भाषण दिया?

(क) चन्द्रशेखर (ख) जवाहर लाल नेहरू

(ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (घ) नरेन्द्र मोदी

9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किस कारण से कहा कि हिन्दुस्तानी लोग तो रेल की गाड़ी हैं?

(क) बिजली से चलने के कारण

(ख) गंदगी के कारण

(ग) कोयले से चलने के कारण

(घ) बिना इंजन के न चल सकने के कारण।

10. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के अनुसार जितनी देर हमारे देश का कोचवान हुक्का पियेगा या गप्प करेगा उतनी देर में विलायती कोचवान, क्या करेगा?

(क) दूध पिएगा (ख) अखबार पढ़ेगा

(ग) गाड़ी की सफाई करेगा (घ) पूजा–पाठ करेगा

उत्तर–

1. (क) भाषण
2. (घ) उपर्युक्त सभी
3. (ग) उपर्युक्त दोनों
4. (ख) जनगणना
5. (ख) अकबर
6. (ख) रेल गाड़ी
7. (क) हनुमान
8. (ग) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
9. (घ) बिना इंजन के न चल सकने के कारण
10. (ख) अखबार पढ़ेगा

ध्यान देने योग्य बातें

1. व्याख्या का अन्तर पाँच उपशीर्षकों में लिखने का प्रयास करें।

(क) अवतरण

(ख) सन्दर्भ

(ग) प्रसंग

(घ) व्याख्या

(ड.) साहित्यिक सौंदर्य

(क) **अवतरण** – कहाँ से कहाँ तक की व्याख्या करनी है।

(ख) **सन्दर्भ** – कवि, कविता का नाम, ग्रन्थ का नाम और कवि की विशेषता।

(ग) **प्रसंग** – कौन कह रहा है? क्या कह रहा है? क्यों कह रहा है? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर या दूसरे शब्दों में पूर्व में हुई घटना का संक्षिप्त विवरण इत्यादि।

(घ) **व्याख्या** – कविता का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करें।

(ड.) **साहित्यिक सौंदर्य** – इसमें भाषा, रस, छंद, अलंकार, गुण इत्यादि स्पष्ट करें।

2. काव्य सौंदर्य – काव्य सौंदर्य को दो उपशीर्षकों में विभक्त करें।

(क) भाव पक्ष – इसके अन्तर्गत कविता का भाव स्पष्ट करें।

(ख) कला पक्ष – इसके अन्तर्गत कविता की भाषा, रस, छंद, अलंकार, गुण–दोष आदि को स्पष्ट करें।

पाठ–1

कबीर

(भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के संतकवि)

अवतरण – अरे इन दोहुन.....राह ह्वै जाई ।।

संदर्भ –

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के स्वर्णयुग भक्तिकाल की निर्गुण भक्ति काव्य धारा की ज्ञान मार्गी शाखा के संत कवि कबीर दास जी की रचनाओं से उदृत है। (बीजक)

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में संत कवि कबीर दास जी दोनों धर्मों, वैदिक (सनातन धर्म) और इस्लाम के बाह्य आडम्बरों, छूआ–छूत, जाति प्रथा, माँसाहार, घर में विवाह आदि प्रथाओं पर विरोध प्रकट करते हुए समाज के समक्ष यह प्रश्न रखते है कि व्यक्ति को कौन से धर्म का धर्मावलंबी होना चाहिए। अपनी बात रखते हुए कबीर दास जी कहते हैं कि –

व्याख्या बिंदु– कबीर दास जी कहते हैं– हिंदुओं के विषय में कबीर का कहना है कि ये वर्ण–भेद में विश्वास करते हैं उच्च वर्ग का व्यक्ति निम्न–वर्ण के व्यक्ति को अस्पृश्य मानता है उसे अपने पात्रों (बर्तनों) को छूने नहीं देता परन्तु स्वयं वैश्यागमन जैसे निम्न कर्म में लिप्त है। तात्पर्य यह है कि हीन कर्मों में लीन है केवल श्रेष्ठ होने का दिखावा करते है।

मुसलमानों की दशा भी कुछ भिन्न नहीं है। ये दिखावा करते हैं कि पीर औलिया बनकर माया–मोह से दूर हैं दूसरी ओर अपनी रसना के आगे विवश है। केवल स्वाद के लिए मांसाहार करते हैं, जीव–हत्या करते हैं। जीव हिंसा करने वाले खुदा के बंदे कैसे हो सकते हैं? समाज की नीतियों के प्रतिकूल रक्त–संबंधों में विवाह करते हैं। दोनों ही सत्य की राह से भटके हैं।

इस प्रकार इन दोनों को ही ईश्वर–प्राप्ति नहीं हो सकती।

काव्य–सौन्दर्य

साहित्यिक सौंदर्य–

भाषा – सधुक्कड़ी

रस – शान्त रस

छंद – पद

गुण – प्रसाद

अलंकार – धोय–धाय – अनुप्रास मुर्गी–मुर्गा – अनुप्रास

शैली – मुक्तक

विशेष – कबीर दास जी ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बाह्य आडम्बरों पर तीखा प्रहार किया है।

पद पर आधारित प्रश्न

1. कबीर ने हिन्दुओं और मुसलमानों के किन बाह्य आडम्बरों की बात कही है?

उत्तर – हिन्दू एवम् मुसलमान दोनों ही अज्ञानतावश वाह्य आडम्बरों को ही धर्म समझ बैठे हैं। धर्म के वास्तविक स्वरुप का इन्हें ज्ञान नहीं । ये दोनों ही पथभ्रष्ट हो चुके हैं।

हिन्दू वर्ण–भेद में विश्वास करते हैं। उच्च वर्ण का व्यक्ति निम्न वर्ण के व्यक्ति के साथ छुआछूत की भावना रखता है। उसे अपने बर्तन तक छूने नहीं देता। दूसरी ओर वैश्यागमन जैसे नीचकर्म में लिप्त है। मुसलमानों की दशा यह है कि इनके पीर–औलिया तक माँसभक्षण करते हैं। समाज की नीति के विरूद्ध मुसलमान अपने ही रक्त संबंधों में विवाह करते हैं।

अभ्यास कार्य

1. कबीर के अनुसार ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में क्या बाधा है?
2. इस पद में कबीर का कवि रूप नहीं समाज सुधारक रूप दिखाई पड़ता है, सिद्ध करें।
3. कबीर के अनुसार ईश्वर प्राप्ति कैसे की जा सकती है?

व्याख्या (उदाहरण)

पद – 2

बालम आवो.....जिव जाय रे''

अवतरण – बालम ..... जाय रे।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य इतिहास के स्वर्ण युग भक्तिकाल के निर्गुण भक्ति काव्य धारा के ज्ञान मार्गी शाखा के संत कवि कबीर दास द्वारा रचित 'बीजक' से उदृत हैं। कबीर दास जी के इस पद का सम्पादन श्री पारस नाथ तिवारी जी ने कबीर वाणी में किया है।

प्रसंग – कबीर दास जी ने स्वयं को पत्नि और ईश्वर को पति रूप में वर्णित किया है। भक्त (पत्नि) ईश्वर (पति) की विरह में व्याकुल है और उनसे मिलने का आग्रह करते हुए कहती है कि –

व्याख्या बिंदु – परमात्मा से मिलन न हो पाने के कारण कबीर को एक वियोगिनी की भाँति न अन्न भाता है न नींद आती है। निर्गुणमार्गी संत कवियों ने साधक को नायिका तथा परमात्मा को नायक के रूप में चित्रित किया है। यहाँ पति (परमात्मा) निराकार परन्तु पत्नी (साधक) साकार रूप में विद्यमान है। यहाँ कबीर निर्गुण और सगुण–दो भिन्न मतों के बीच एक साम्य स्थापित करते दिखाई देते हैं ।

साहित्यिक सौन्दर्य –

भाषा – सधुक्कड़ी (पंचमेल–खिचड़ी)

रस – वियोग श्रृंगार

छंद – पद

अलंकार – दुखिया देह – अनुप्रास

लागत लाज – अनुप्रास

कामिन को है ..... दृष्टान्त अलंकार

शब्द शक्ति – लक्षणा

विशेष – संत कवियों के यहाँ परमात्मा ईश्वर रूप में है वे ईश्वर को प्राप्त करने के लिए पति (भक्त) रूप में आह्वान करते हैं।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

प्रश्न कबीर ने साधक और परमात्मा को किस रूप में चित्रित किया है?

उत्तर– कबीर ने साधक को पत्नी एवम् परमात्मा को पति के रूप में चित्रित किया है। जिस प्रकार प्रेयसी प्रियतम से मिलन के लिए आतुर रहती है उसी प्रकार ज्ञान हो जाने पर साधक (आत्मा) निरन्तर परमात्मा से मिलन को आतुर रहता है। उसे सांसारिक कार्यों में कोई सुख नहीं मिलता जैसे प्रेयसी को विरहावस्था में न अन्न भाता है न नींद आती है।

अभ्यास प्रश्न

1. इस पद में सांसारिक प्रेम का वर्णन है, फिर भी यह भक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है कैसे?
2. इस पद में कौन–सा रस हैं?
3. 'कामिन को हैं.....ज्यों प्यासे को नीर' में कौन–सा अलंकार हैं?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कबीर किस काल के कवि है?

   (क) रीतिकाल (ख) भक्ति काल

   (ग) आदिकाल (घ) आधुनिक काल

2. कबीर की भाषा क्या है?

   (क) सधुक्कड़ी (ख) ब्रज

   (ग) अवधी (घ) मेवाती

3. कबीर ईश्वर को किस रूप में पाना चाहते हैं?

   (क) मित्र (ख) सखा

   (ग) पति (घ) पत्नी

4. 'ज्यों प्यासे को नीर' में कौन सा अलंकार है?

   (क) रूपक (ख) उपमा

   (ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक

5. कबीर किस काव्यधारा के कवि है?

   (क) निर्गुण संत (ख) सगुण संत

   (ग) छायावाद (घ) प्रयोगवाद

6. कबीर को लज्जा क्यों आती है?

   (क) लोग उनका आदर करते हैं।

   (ख) लोग उन्हे प्रेम करते हैं

   (ग) लोग उन्हें ईश्वर की नारी कहते हैं

   (घ) लोग उनका सम्मान नहीं करते।

7. कबीर किस धर्म को अपनाने की बात करते हैं?

   (क) हिन्दू (ख) ईस्लाम

   (ग) पारसी (घ) कोई नही

8. धोय–धाय के कौन–सा अलंकार है?

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) अनुप्रास (घ) रूपक

उत्तर–

(1) (ख) भक्तिकाल

(2) (क) सधुक्कड़ी

(3) (ग) पति

(4) (ग) उत्प्रेक्षा

(5) (क) निर्गुण संत

(6) (ग) लोग उन्हें ईश्वर की नारी कहते हैं।

(7) (घ) कोई नहीं

(8) (ग) अनुप्रास

पाठ–2

सूरदास

(सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्त कवि)

पद–1

अवतरण– खेलन में को.....करि नंद–दुहैया।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य इतिहास के स्वर्ण युग भक्तिकाल के सगुण भक्तिधारा के कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास जी के महाकाव्य 'सूर सागर' से उदृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि सूरदास जी ने कृष्ण बाल लीला का मनोहारी वर्णन किया है। कृष्ण खेल में हारने पर रूठ गए हैं और बाल सुलभ गुण के कारण खेलना भी चाहते हैं मित्रों द्वारा नंद बाबा की दुहाई देने पर वह पुनः खेलने को तैयार हो जाते हैं। समूचे परिदृष्य का वर्णन करते हुए महाकवि कहते है कि –

व्याख्या–श्रीकृष्ण और श्रीदामा खेल रहे हैं, जिसमें श्रीकृष्ण हार जाते हैं। हारने पर भी वे श्रीदामा की दाँव देने को तैयार नहीं होते वरन् श्रीदामा पर क्रोधित होने लगते हैं। श्रीदामा तथा अन्य चित्र कृष्ण से कहते हैं कि तुम हम पर इतना क्रोध क्यों दिखा रहे हो। खेल में कोई छोटा–बड़ा नहीं होता, सभी बराबर होता है। श्रीदामा कृष्ण से कहते हैं न तो जाति में तुम हमसे बड़े हो, न ही हम तुम्हारी शरण में रहते हैं जो तुम इतनी ऐंठ (अकड़) दिखा रहे हो। हाँ, तुम्हारे पास हमसे कुछ गाएँ अधिक हैं जिससे तुम इतना अधिकार जता रहे हो। खेल में रूठने वाले के साथ कोई खेलना पसंद नहीं करेगा–ऐसा कहकर सभी ग्वाल–बाल (मित्र) इधर–उधर बैठ जाते हैं। हालांकि श्रीकृष्ण भीतर से (मन से) खेलना चाहते हैं पर वे श्रीदामा पर ही एहसान रखते हुए कहते हैं कि देखो मैं दोबारा खेल रहा हूँ। वे नंद बाबा की दुहाई देते हुए श्रीदामा की दाँव (बाजी) देने को तैयार हो जाते हें।

साहित्यिक सौन्दर्य–

भाषा – ब्रजभाषा

रस – वात्सल्य रस

छंद – पद

गुण – माधुर्य

अलंकार – हरि हारे– अनुप्रास

दाऊ, दियो दुहैया – अनुप्रास

शैली – मुक्तक

विशेष – महाकवि ने बाल मनोविज्ञान सुन्दर चित्रण किया है।

पद–2

अवतरण – मुरली तऊ गुपलहि.....सीस डुलावति।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य इतिहास के स्वर्ण युग भक्तिकाल के सगुण भक्ति काव्यधारा के कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास जी के महाकाव्य सूरसागर से अवतरित है।

प्रसंग – महाकवि सूर के अनुसार गोपियाँ कृष्ण को अतिशय प्रेम करती हैं और वे चाहती हैं कि कृष्ण सदैव उनके साथ रहें, उनसे बातें करें और रास रचाऐं इसके विपरीत कृष्ण को अपनी मुरली बेहद प्यारी है जब वे मुरली बजाते हैं तो स्वयं अपनी सुध भी उन्हें नहीं होती गोपियों को तो वे भूल जाते हैं और यही बाते गोपियों को नाग़वार गुजरती है, इसी कारण गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी से द्वेष करती है और अपनी खीझ मिटाने के लिए मुरली पर विभिन्न प्रकार के दोष लगाती है महाकवि सूर गोपियों की ईर्ष्या का वर्णन करते हुए कहते हैं कि –

व्याख्या–एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि मुरली श्रीकृष्ण को इतना परेशान करती है तो भी उन्हें बांसुरी अत्यधिक प्रिय है। बांसुरी श्रीकृष्ण को नाना प्रकार से नचाती है, वह उनको एक पाँव पर खड़ा रहने को बाध्य कर देती है तथा उन पर अपना पूर्ण अधिकार जताती है (मुरली बजाते समय श्रीकृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा)। श्रीकृष्ण का शरीर अत्यंत कोमल है फिर भी मुरली उनसे अपनी आज्ञा का पालन करवाती है। उसकी आज्ञा का पालन करते–करते उनकी कमर तक टेढ़ी हो जाती है। यह मुरली चतुर कृष्ण को भी अपना कृतज्ञ बना देती है। गोवर्धन पर्वत को उठाने वाले श्रीकृष्ण की गर्दन तक को ये मुरली झुका देती है। मुरली स्वयं तो उनके अधर (होंठ) रूपी शैय्या पर लेटी रहती है और उनके हाथों से अपने पैर दबवाती है अर्थात् श्रीकृष्ण बांसुरी के छिद्रों पर हाथ फिराते हैं। मुरली बजाते–बजाते श्रीकृष्ण की भृकुटियाँ टेढ़ी हो जाती है और नाक के नथुने फूल जाते हैं इस मुद्रा को देखकर गोपियों को लगता है कि ये बांसुरी उन पर क्रोध कर रही है। ये सब मुरली के कारण ही हो रहा है। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों को लगता है कि ये मुरली श्रीकृष्ण को क्षणभर में प्रसन्न कर लेती हैं और कृष्ण अपने पूरे शरीर को डुलाने लगते हैं अर्थात् आनंद में झूमने लगते हैं।

साहित्यिक सौंदर्य–

भाषा – ब्रज भाषा

रस – शृंगार रस

छंद – पद

गुण – माधुर्य

अलंकार – अनुप्रास की लड़ियाँ, अधर सज्जा – रूपक

विशेष – गोपियों की प्रेमजनित ईर्ष्या का मनोहारी वर्णन किया है।

पदों पर आधारित प्रश्न

1. सूरदास श्रृंगार और वात्सल्य के अद्वितीय कवि हैं। अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– सूरदास श्रृंगार एवं वात्सल्य के अद्वितीय कवि है। कृष्ण भक्त कवियों में उनका स्थान सर्वोपरि है। उन्होंने सूर–सागर नामक अमर काव्य की रचना की है। सूरदास द्वारा रचित पद विनय भक्ति, श्रृंगार, वात्सल्य, बाल लीला आदि से सम्बन्धित है। सूरदास वात्सल्य का तो कोना–कोना, झांक आये हैं। उन्होंने बालक कृष्ण की सरलता, चपलता, चंचलता, मातृस्नेह का सहज चित्रण किया है। उनके वात्सल्य वर्णन में बालक की विविध क्रीडाओं का वर्णन हुआ है। मातृ हृदय के उत्साह और उल्लास का मनभावन वर्णन है।

2. कृष्ण को ''सुजान कनौड़े'' क्यों कहा गया है?

उत्तर– 'सुजान का अर्थ है– चतुर और ''कनौडे का अर्थ है – कृपा से दबे रहने वाला। कृष्ण को 'सुजान कनौड़े' इसलिए कहा गया है क्योंकि वे मुरली के आधीन होकर कार्य करते हैं। मुरली ने चतुर कृष्ण को भी अपनाकृतज्ञ बना लिया है। वे मुरली की आज्ञा का पालन करते हैं।

अभ्यास कार्य

व्याख्या– खेलन में को.....नन्द दुहैया।

अभ्यास प्रश्न –

1. पद में किस भाव का चित्रण किया गया है?
2. श्रीदामा और अन्य ग्वाल सखाओं ने कृष्ण के सम्मुख क्या–क्या तर्क दिये।
3. सूरदास के वात्सल्य वर्णन को अपने शब्दों में लिखो।
4. खेल में जातिवाद का भाव आना सूरदास के समय की समाज व्यवस्था की कैसी स्थिति के बारें में संकेत करता है?
5. कृष्ण ने नन्दबाबा की दुहाई देकर दांव क्यों दिया?
6. खेल में किस चीज का स्थान नहीं हैं?
7. सूरदास के काव्य की विशेषताएं बताइये।

अभ्यास हेतु प्रश्न–

1. मुरली के प्रति गोपियों का क्या भाव हैं?
2. सखियाँ आपस में क्या बात करती हैं?
3. मुरली कृष्ण से क्या–क्या कार्य करवाती है?
4. गोपियों को ऐसा क्यों लगता है कि मुरली ही कृष्ण के क्रोध का कारण है?
5. कृष्ण की किस मुद्रा का उल्लेख है?
6. अधर को सेज क्यों कहा गया है?
7. 'कर पल्लव पलुटावति' का आशय स्पष्ट करें।
8. भृकुटी–कुटिल ''नैन नासा पुट'' में कौन–सा भाव व्यक्त हुआ है?
9. पद की भाषा कौन–सी हैं?
10. इस पद में कौन–सा रस हैं?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. सूर किस भाषा के कवि हैं?

   (क) अवधी (ख) मैथिली

   (ग) ब्रज (घ) खड़ी बोली

2. सूर ने किसकी बाल लीला का वर्णन किया है?

   (क) राम (ख) भरत

   (ग) कृष्ण (घ) गौतम

3. गोपियाँ किससे ईर्ष्या करती हैं?

   (क) कृष्ण की गायों से

   (ख) कृष्ण की बाँसुरी से

   (ग) कृष्ण के वस्त्रों से

   (घ) कृष्ण के पौधों से।

4. श्रीदामा कौन थे?

   (3) कृष्ण के मित्र (ख) राधा के मित्र

   (ग) कंस के मित्र (घ) मथुरा के नागरिक

5. गोपियों के अनुसार कृष्ण को कौन नचाता है?

(क) पेड़–पौधे (ख) गाएँ

(ग) बाँसुरी (घ) गाँव वाले

6. सुजान कनौड़े कौन हैं?

(क) बलराम (ख) राम

(ग) श्रीदामा (घ) कृष्ण

7. नार–नवावति में कौन–सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) अनुप्रास

(ग) रूपक (घ) अतिशयोक्ति

8. सूर किस रस के सम्राट कहे जाते हैं?

(क) शान्त रस (ख) श्रृंगार रस

(ग) वात्सल्य रस (घ) रौद्र

उत्तर–

(1) (ग) ब्रज

(2) (ग) कृष्ण

(3) (ख) कृष्ण की बाँसुरी से

(4) (क) कृष्ण के मित्र

(5) (ग) बाँसुरी

(6) (घ) कृष्ण

(7) (ख) अनुप्रास

(8) (ग) वात्सल्य

पाठ–3

देव (रीतिकालीन)

(हँसी की चोट, सपना, दरबार)

हँसी की चोट

अवतरण – साँसनि ही सौं.....हरि जू हरि।।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ रीतिकाल के रीतिबद्ध काव्य धारा के श्रेष्ठ कवि 'देव' की 'हँसी की चोट' शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि 'देव' ने श्री कृष्ण के हँसी से घायल गोपी की विरह अवस्था का बड़ी ही मार्मिक चित्रण किया है। महाकवि देव के अनुसार कृष्ण के वियोग में पंच महाभूतों से बना यह गोपी का शरीर एक–एक कर नष्ट होता जा रहा है और क्रमशः वह मृत्यु की तरफ बढ़ रही है। गोपी की वेदना का वर्णन करते हुए महाकवि कहते है कि –

व्याख्या–कवि कहते हैं कि जिस दिन से श्रीकृष्ण गोपी के सामने से एक बार हँसते हुए मुख फेरकर चले गए उसी दिन से नायिका विरह में व्याकुल हो गई है। ऐसा करते हुए श्रीकृष्ण जैसे उसका हृदय ही चुरा कर ले गए हैं, तभी से गोपी के शरीर से पाँच तत्वों में से एक–एक तत्व विदा होते चले जा रहे हैं। विरहावस्था में तेज–तेज सांसे छोड़ने से वायु तत्व, आंसू बहने के कारण जल तत्व, शरीर की गर्मी के द्वारा तेज (अग्नि) तत्व, विरह के दुख में दुखी होने के कारण शरीर की कमजोरी के कारण भूमि तत्व चला गया है। इतना सब होने पर भी गोपी ने श्रीकृष्ण से मिलने की आशा में आकाश तत्व को बनाए रखा है। वह तो श्रीकृष्ण से मिलने की आशा पर ही जीवित है। जिस दिन से श्रीकृष्ण ने गोपी की तरफ से मुँह फेर लिया है तभी से उसका दिल उन के साथ चला गया है और गोपी के मुख की हँसी गायब हो गयी है। वह कृष्ण को ढूँढ–ढूँढ कर थक चुकी है।

साहित्यिक सौंदर्य –

भाषा – ब्रज भाषा

रस – वियोग शृंगार रस

छनद – सवैया

गुण – माधुर्य गुण

अलंकार – अतिश्योक्ति अलंकार साँसनि ही सौं समीर – अनुप्रास

हरि जू हरि – यमक

विशेष – वैदिक धर्म के अनुसार हमारा यह मानव शरीर पंच महाभूतों से मिलकर बना है। कृष्ण के वियोग में गोपी के मृत्यु की तरफ बढ़ने की महाकवि ने पंचमहाभूतों (पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, और आकाश) के एक–एक कर नष्ट होने के रूप में वर्णित किया है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. प्रस्तुत सवैये में किन पाँच भौतिक तत्त्वों का वर्णन है? वियोग में वे तत्त्व किस प्रकार विदा होते हैं?

उत्तर– 'हँसी की चोट' सवैये में कवि ने इन पाँच तत्वों का वर्णन किया है:–

1) वायु 2) जल 3) भूमि 4) अग्नि 5) आकाश

वियोग में ये तत्व इस प्रकार विदा हो गए ।

1) वायु तत्व– वियोग में तेज साँसों के चलने से वायु तत्व विदा हो गया।

2) जल तत्व– निरन्तर आँसू बहने से जल तत्व बह गया।

3) अग्नि तत्व– शरीर का तेज मिटने से अग्नि तत्व चला गया।

4) शरीर की दुर्बलता से भूमि तत्त्व समाप्त हो गया।

5) केवल आकाश तत्व शेष है क्योंकि नायिका में अभी आशा शेष है।

2. साँसों से समीर जाने का क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर– वियोग की दशा में नायिका गहरी आहें भरती है। अतः तेज साँसें लेने से उसके शरीर की प्राणवायु निकलती रहती है। पंचतत्वों से बने शरीर में वायु एक परम आवश्यक है। वियोगावस्था में इसी आवश्यकतत्व का क्षय होता रहता है।

अभ्यास–प्रश्न

1. श्रीकृष्ण ने गोपियों का क्या चुरा लिया है?
2. प्रस्तुत सवैये में गोपियों की किस मनोदशा का चित्रण है?
3. 'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' का आशय स्पष्ट करें।

सपना

कवि – 'देव'– रीतिकालीन प्रमुख कवि

काव्य–सौंदर्य

झहरि–झहरी.....वा जगन में।

भावपक्ष – प्रस्तुत पंक्तियों में स्वप्न और उसके टूटने के माध्यम से कवि ने शृंगार रस के

दोनों पक्षों अर्थात् संयोग व वियोग को बड़े ही रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। कवि के अनुसार गोपियाँ हर अवस्था में (स्वप्न व जागृत) श्री कृष्ण का सान्निध्य चाहती हैं। उनके लिए श्री कृष्ण का वियोग असह्य है।

कला पक्ष–

1. कोमल कान्त पदावली युक्त ब्रज भाषा का प्रयोग।
2. श्रृगांर के दोनों पक्षों (संयोग व वियोग) को एक साथ प्रस्तुत किया है।
3. भाषा में चित्रात्मकता व तुकान्तता है। गेयता का गुण विद्यमान है।
4. कवित्त छंद का प्रयोग है।
5. ' झहरि–झहरि' तथा 'घहरि–घहरि' में पुनरुक्ति प्रकाश 'झहरि–झहरि झीनी' व 'निगोड़ी नींद' में अनुप्रास तथा 'सोए गए भाग मेरे' में मानवीकरण अलंकार का प्रयोग है।
6. 'फूला न समाना' मुहावरे का प्रयोग है।
7. माधुर्य गुण है।
8. नींद का खुलना और भाग्य का सेाना विरोधाभास से गोपी की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर–

1. स्वप्न में नायिका की प्रसन्नता का क्या कारण था? उसकी प्रसन्नता क्यों खो गई ?

उत्तर– नायिका ने स्वप्न में देखा कि सुखद वर्षाकाल में कृष्ण उसके सम्मुख खड़े हैं और उससे झूला झूलने का आग्रह कर रहे हैं। नायिका इस प्रकार कृष्ण से मिलन के सुख के कारण प्रसन्नता से फूली नहीं समा रही थी। जैसे ही वह झूला झूलने के लिए उठी तभी उसकी नींद टूट गई । कृष्ण से मिलन न हो पाने के कारण उसकी प्रसन्नता खो गई ।

2. नींद को निगोड़ी क्यों कहा है?

उत्तर– नायिका नींद को कोसते हुए उसे निगोड़ी कह रही है क्योंकि उसके दुःख का कारण नींद है। नींद के खुलने से उसका कृष्ण से मिलन का सुख अधूरा रह गया।

अभ्यास–प्रश्न

1. प्रस्तुत कवित्त में किस ऋतु का वर्णन है?
2. सपना कवित्त का भाव–सौन्दर्य लिखें।

3. नींद टूट जाने से भाग सो जाने का क्या आशय है?

4. कवित्त से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण छांटिए।

दरबार

कवि–देव

काव्य–सौंदर्य

भाव–पक्ष :– प्रस्तुत सवैये में कवि देव ने अपने समय के दरबारी तथा सामंती वातावरण पर करारी चोट करते हुए उसके प्रति अपने असंतोष को प्रकट किया है। कवि का कहना है कि भोगविलासिता से पूर्ण वातावरण में काव्य और कला का कोई मोल नहीं है। सभी लोग मात्र चाटुकारिता व अपने स्वार्थ सिद्धि में ही लगे हुए हैं।

कला पक्ष –

1. सवैया छंद का प्रयोग हैं।
2. लालित्यपूर्ण ब्रज भाषा प्रयुक्त हुई है।
3. 'रुचि राच्यों', 'निसि नाच्यो', 'निबरेनट' मसाहिब मूक, रंग–रीझ में अनुप्रास अलंकार है।
4. भोगविलास के कारण अकर्मण्यता दृष्टिगोचर होती हैं।
5. प्रसाद गुण है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'दरबार' सवैये में किस प्रकार के वातावरण का वर्णन है?

उत्तर– 'दरबार' सवैये में दरबारी वातावरण में कला विहीनता, भोग–विलासपूर्ण प्रवृत्ति का वर्णन है, चाटुकारिता (चापलूसी) पूर्ण व्यवहार का वर्णन है। रीतिकालीन काव्य में इस प्रकार की दरबारी संस्कृति का वर्णन अनेक कवियों ने किया है।

2. 'दरबार' में गुण ग्राहकता और कला की परख को किस प्रकार अनदेखा किया जाता है?

उत्तर– दरबार का वातावरण आंडबरपूर्ण (दिखावा) और चाटुकारों से भरा होता है। कला के पारखी वहाँ न के बराबर हैं इसलिए जो चापलूसी करता है राजा को वहीं पसंद आता है। वहाँ गुण को नहीं चाटुकारिता को श्रेष्ठ माना जाता है। सब पर भोग–विलास और राग–रंग का रंग चढ़ा है इसलिए राजा और दरबारी इत्यादि अंधे बने रहते हैं, ऐसे दरबारी वातावरण में गुण और कला की परख की बात करना व्यर्थ है।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. देव किस काल के कवि हैं?

   (क) भक्ति (ख) आधुनिक

   (ग) रीति (घ) आदि

2. देव की भाषा क्या है?

   (क) ब्रज (ख) अवधी

   (ग) भोजपुरी (घ) मैथिली

3. कवि के अनुसार राजा कैसा है?

   (क) गूँगा (ख) बहरा

   (ग) अंधा (घ) लंगड़ा

4. झहरी–झहरी में कौन–सा अलंकार है?

   (क) उपमा (ख) रूपक

   (ग) अनुप्रास (घ) पुनरुक्ति प्रकाश

5. सपना टूटने पर नायिका की दशा कैसी हुई?

   (क) खुशी (ख) उत्साह से परिपूर्ण

   (ग) अश्रु युक्त (घ) शांत

6. सपने में नायिका ने क्या देखा?

   (क) बाहर टहल रही है (ख) बारिश में कृष्ण के साथ झूल रही है

   (ग) बारिश में नाच रही है (घ) भोजन पका रही है।

7. नट ने सारी रात क्या किया?

   (क) सोता रहा (ख) गाता रहा

   (ग) नाचता रहा (घ) कुछ नहीं

8. दरबार कविता में राज्य की स्थित कैसी थी?

   (क) सुंदर (ख) बिगड़ा हुआ

   (ग) व्यवस्थित (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–

(1) (क) रीति काल।

(2) (क) ब्रज।

(3) (ग) अंधा

(4) (घ) पुनरुक्ति प्रकाश।

(5) (घ) अश्रु युक्त।

(6) (ख) बारिश में कृष्ण के साथ झूल रही है।

(7) (ग) नाचता रहा।

(8) (ख) बिगड़ा हुआ।

पाठ–5

सुमित्रानंदन पंत

(छायावादी काव्यधारा के कवि)

संध्या के बाद

अवतरण – सिमटा पंख साँझ.....निर्झर ।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद के आधार स्तंभ सुमित्रा नन्दन पंत की कविता संध्या के बाद से अवतरित है। प्रस्तुत कविता पंत के ग्राम्या संकलन से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में छायावादी कवि 'पंत' ने सूर्यास्त के बाद ग्रामीण परिवेश में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों का उल्लेख किया हैं पंत कहते हैं कि –

व्याख्या–कवि संध्या को एक पक्षी के रूप में चित्रित करते हुए बताता है कि संध्या रूपी पक्षी अपने पंखों को समेटकर, लाली के साथ पेड़ की शाखाओं पर जा बैठता है अर्थात् सूर्य धीरे–धीरे अस्त होने जा रहा है, सांझ की लाली सिमटनी शुरू हो गई है। अब ये लाली पेड़ की ऊपर की फुनगियों पर ही दिखाई दे रही है जिसके कारण पेड़ के पत्ते ताम्र रंग के दिखाई दे रहे हैं। ताँबें के रंग के पत्तों के समान सैकड़ों मुख वाले झरने सुनहरी धाराओ में बह रहे हैं। झरनों के जल पर पीला प्रकाश होने के कारण वे ताम्र वर्ण के दिखाई दे रहे हैं। सूरज छुपने का यह दृश्य पूरी तरह से मन को हरने वाला लग रहा है।

साहित्यिक सौंदर्य–

भाषा – खड़ी बोली

रस – शांत रस

छन्द – मुक्त छंद

गुण – माधुर्य गुण

अलंकार – सिमटा पंख ..... मानवीकरण

ताम्रपर्ण पीपल से ..... उपमा अलंकार

विशेष – कवि ने संध्या का मानवीकरण किया है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को किन–किन उपकरणों द्वारा अभिव्यक्ति प्रदान की है?

उत्तर– बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को निम्नलिखित उपकरणों द्वारा अभिव्यक्त किया है:–

घरों में टिन की ढिबरी जलाई जाती है जो रोशनी कम धुँआ अधिक देती है। लोगों के मन का अवसाद उनकी आँखों में तैरता रहता है, जाला सा बुनता रहता है।

दीपक की लौ के संत्र उनके हृदय का कातर क्रंदन, मूक निराशा काँपती रहती है।

2. लाला के मन में उठने वाली दुविधा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– लाला के मन में दुविधा उठती रहती है कि उसी के जीवन में दीनता, दुःख, उत्पीड़न क्यों हैं? उसके मन में खुशी क्यों नहीं है? वह अपने परिजनों के लिए सुख–सुविधाओं को क्यों नहीं जुटा पाता। वह सोचता है समाज में शोषण क्यों है? क्या कोई ऐसी व्यवस्था हो सकती है जिसमें सभी को कर्म और गुणों के आधार पर अवसरों की प्राप्ति हो।

अभ्यास–कार्य

व्याख्या

1. मन में कढ़ अवसाद.....मूक निराशा।
2. व्यवस्था में जग की.....अधिकारी धन का ।
3. नील लटरियों.....बँधे सम्मुज्जवल ।

काव्य–सौंदर्य 1 – ज्योति स्तंभ सा.....गंगाजल।

भावपक्ष–इन पंक्तियों में कवि ने संध्याकालीन वातावरण का चित्रण किया है। संध्याकालीन लालिमा का प्रभाव संपूर्ण प्रकृति पर पड़ता है। क्षितिज पर छिपते सूर्य की नदी में पड़ती झलक धँसे हुए प्रकाश के खंभे के समान प्रतीत होती है। इसी प्रकार गंगाजल चितकबरा–सा दिखाई देता है। नदी एक थके हुए अजगर की केचुली के समान प्रतीत होती है।

कला पक्ष –ज्योति स्तंभ सा, विश्लय केंचुल–सा में उपमा अलंकार है। कवि ने तत्सम् युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया है। मुक्त छंद में लिखी इस कविता का दृश्य बिंब देखते ही बनता है। प्रकृति का सजीव वर्णन है।

अभ्यास–प्रश्न

1. पंत प्रकृति के चितेरे कवि हैं सिद्ध करें।

काव्य–सौंदर्य 2 – तट पर बगुलों सी.....रोदन ।

अभ्यास–प्रश्न

1. पंत प्रकृति के चितेरे कवि हैं सिद्ध करें।
2. संध्या के समय ग्रामीण परिवेश का चित्रण करें।
3. सिकता, सलिल तथा समीर को स्नेह सूत्र में बंधा क्यों कहा है?
4. बगुलों और वृद्धाओं में क्या समानता दिखाई गई है?
5. बनिए की कथनी व करनी का अंतर स्पष्ट करें।
6. सामाजिक दैन्य और निराशा के लिए व्यवस्था दोषी है, कैसे?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि के अनुसार गंगाजल किस रंग का प्रतीत हो रहा था।

   (क) मटमैला (ख) चितकबरा

   (ग) नीला (घ) हरा

2. कवि के अनुसार रेत का रंग कैसा था?

   (क) धूप–छाँह के रंग की (ख) चितकबरी

   (ग) मटमैली (घ) साँझ के रंग की

3. कवि के अनुसार मंदिर में क्या बज रहा है?

   (क) घंटा (ख) शंख

   (ग) शंख एवं घंटा (घ) तालियाँ

4. कवि के अनुसार कौन घरों को लौट गए?

   (क) खग (ख) गायें

   (ग) किसान (घ) सभी

5. मड़ई का क्या अर्थ होता है?

   (क) घर (ख) झोपड़ी

   (ग) आँगन (घ) दरवाजा

6. कवि के अनुसार बात–बात पर झूठ कौन बोल रहा है?

(क) माली (ख) किसान

(ग) बनिया (घ) गाड़ीवान

7. संध्या के बाद कविता किस दर्शन से प्रभावित है?

(क) मार्क्सवाद (ख) पूँजीवाद

(ग) प्रयोगवाद (घ) गाँधीवाद

8. "ज्यों गति द्रव खो बन....." में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) रूपक (घ) अनुप्रास

उत्तर–

(1) (ख) चितक बरा

(2) (क) धूप छाँह के रंग की

(3) (ग) शंख एवं घंटा

(4) (घ) सभी

(5) (ख) झोंपड़ी

(6) (ग) बनिया

(7) (क) मार्क्सवाद

(8) (ख) उत्प्रेक्षा

पाठ–6

महादेवी वर्मा

(छायावादी काव्यधारा की प्रसिद्ध कवयित्री)

जाग तुझको दूर जाना

प्रस्तुत गीत महादेवी की प्रसिद्ध रचना 'सांध्यगीत' से लिया गया है । यह एक जागरण गीत है जिसमें कवयित्री ने स्वाधीनता प्राप्ति के लिए भारतीय वीरों का राष्ट्रीय विघ्न बाधाओं और कठिनाइयों की परवाह किए बिना अपने लक्ष्य पर निंरतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी गई हैं। कवयित्री ने अपने स्वर्णिम अतीत और साहसी, निडर और कर्मवीर महापुरूषों की याद दिलाते हुए व उनसे प्रेरणा लेते हुए निरंतर लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ बढ़ने की प्रेरणा दी है।

कवयित्री ने देशवासियों को विषम परिस्थितियों, सांसारिक बन्धनों, व मोह–माया से अप्रभावित होते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी है। कवयित्री ने आत्मा की अमरता का ज्ञान कराते हुए मृत्यु से न डरने की सलाह दी है। कवयित्री ने पतंगे का उदाहरण देकर बलिदान का महत्व समझाया है। कवयित्री का कहना है कि देशवासियों को बलिदान के मार्ग पर अपनी कोमल भावनाओं को बलिदान करना होगा।

काव्य–सौंदर्य

भावपक्ष– कवयित्री ने विघ्न बाधाओं, मुसीबतों और विषय परिस्थितियों में भी निरंतर लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी है। स्वाधीनता की चाह रखने वाले विपरीत परिस्थितियों से विचलित न होकर निरंतर आगे बढ़ते जाते हैं।

कवयित्री ने आत्मा की अमरता और भारतीयों की दृढ़ता व शक्ति–सामर्थ्य की याद दिलाई है।

कला पक्ष –

1. तत्सम शब्द प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग है।
2. ओज गुण व गीत शैली में लिखा गीत है प्रश्न शैली भी अपनाई गई है
3. लक्षणा शब्द –शक्ति प्रयुक्त हुई है।
4. वीर रस में लिखा उद्‌बोधन गीत है
5. 'हिमगिरि के हृदय', ' बाधा बनेंगे', 'मधुप की मधुर' और 'मदिरा माँग' में अनुप्रास अलंकार है।

'जीवन–सुधा' में रूपक तथा 'सो गई आँधी' में मानवीकरण अलंकार है।

'सजेगा आज पानी' में श्लेष है।

6. बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग।

संदर्भ सहित व्याख्या

अवतरण – बाँध लेंगे ..... दूर जाना।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी हिन्दी काव्य के चार आधार स्तम्भों में से एक महादेवी वर्मा की कविता 'जाग तुझको दूर जाना' से उद्धृत हैं।

प्रसंग – महादेवी वर्मा के अनुसार संसार के समस्त बन्धन क्षण भंगुर है और पल–भर में नष्ट होना इनकी नियति है इसलिए इन सम्बन्धों की खातिर मानवता की बलि नहीं चढ़ाई जा सकती। महादेवी कहती हैं कि –

व्याख्या – महादेवी कहती है कि संसार के सारे बन्धन मोम की तरह हैं जो थोड़ी–सी आँच पाते ही पिघल जायेंगे। ये सारे बन्धन देखने में भले ही सुन्दर हो लेकिन इसमें स्थायित्व नहीं है। यह कभी भी नष्ट हो सकते हैं। जो सुन्दर सांसारिक प्रलोभन हैं वे केवल शोभा बढ़ाने की खातिर हैं। हम यदि अपने कर्म पथ से विचलित होकर इन तितलियों के सौंदर्य में डूब जायेंगे तो फिर मानवता का क्या होगा? यह समूचा विश्व हमारी तरफ बड़ी ही उत्कण्ठा के साथ देख रहा है कि हम इस मानवता के लिए उसकी पीड़ाओं को दूर करने के लिए कुछ ऐसा करेंगे। जिससे यह समूचा विश्व लाभान्वित होगा। प्रकृति की यह सारी सुन्दरता, भौंरों का सुन्दर गान, पुष्पों का सौंदर्य और सुगन्ध यह सब क्षणिक है और यह इसलिए है कि यदि हम बहुत थक गए हो तो दो पल इनके आगोश में विश्राम कर सके। इसलिए हे मानव! इस समूचे सौंदर्य को छोड़कर तुम आगे बढ़ो क्योंकि तुम्हें इस मानवता के निमित्त कुछ बड़ा करना है। यह तब सम्भव है जब इन सारे मोह के बन्धनों से तुम मुक्त हो सकोगे।

साहित्यिक सौंदर्य –

भाषा – शुद्ध संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली

गुण – ओज

रस – वीर रस

छंद – मुक्त छंद

शैली – गीत शैली

शब्द शक्ति – लक्षणा

अलंकार – मधुप की मधुर गुनगुन – अनुप्रास

विशेष – कवयित्री ने सुन्दर स्त्रियों को तितलियाँ और संसार के समस्त बन्धनों को झूठा एवं क्षणभंगुर बताया है।

महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता किसे सम्बोन्धित करते हुए लिखी है?

उत्तर– इस कविता में कवयित्री देशवासियों को स्वाधीनता संग्राम में बढ़–चढ़कर भाग लेने की प्रेरणा देती हैं। यह एक जागरण गीत है, उस समय देशवासी आलस्य में पड़े थे। उन्हें जगाने की आवश्यकता थी। कवयित्री उन्हें उनका पथ निर्देशित कर मार्ग में आने वाली बाधाओं के प्रति सचेत करती हैं।

2. मोम के बंधन और तितलियों के पर का प्रतीकार्थ लिखिए।

उत्तर– मोम के बंधन – इसमें पारिवारिक मोह के बंधन का अर्थ निहित है।

तितलियों के पर– इसमें सुंदर युवतियों के आकर्षण जाल (बहुरंगी पंख) का अर्थ निहित है।

अभ्यास प्रश्न

1. कविता में 'अमरता–सुत' किसे और क्यों कहा गया है?
2. कविता में कैसी हार को 'मानिनी जय की पताका' के रूप में स्वीकार किया गया है।
3. 'पतंगा' का उदाहरण प्रस्तुत कर कवयित्री भारतीय वीरों से क्या कहना चाहती है।
4. 'तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना' का आशय स्पष्ट करें।
5. नाश के पथ पर अपने चिह्न छोड़ने का क्या तात्पर्य है?
6. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता का मूल भाव क्या है?
7. कवयित्री किस मोहपूर्ण बंधन से मुक्त हेकर मानव को जागृति का सन्देश दे रही है?
8. स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी को किन गुणों का विस्तार करना चाहिए? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
9. 'सुधा और 'मदिरा' प्रतीकों को स्पष्ट कीजिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य लिखिए–

   क) विश्व का क्रंदन.....अपने लिए कारा बनाना।

   ख) कह न ठंडी.....सजेगा आज पानी।

   ग) है तुझे अंगार.....कलियाँ बिछाना।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. महादेवी किस युग की रचनाकार हैं?

   (क) भारतेन्दु (ख) प्रयोगवाद

   (ग) छायावाद (घ) प्रगतिवाद

2. कवयित्री ने मोम के बंधन किसे कहा है?

   (क) मित्रों को (ख) माता–पिता को

   (ग) रिस्तों को (घ) सभी संबंधों का

3. क्रंदन से कवयित्री का क्या आशय है?

   (क) खुशी (ख) विलाप

   (ग) उत्साह (घ) क्रोध

4. मधुप का अर्थ होता है–

   (क) भँवरा (ख) फूल

   (ग) पत्ते (घ) पक्षी

5. दृग पर्यायवाची है–

   (क) नेत्र (ख) हृदय

   (ग) चेहरा (घ) पद

6. कवयित्री इस कविता में किसे सम्बोधित कर रही हैं?

   (क) किसानों को (ख) युवाओं को

   (ग) नेताओं को (घ) मित्रों को

7. इस कविता का मूल भाव है–

   (क) देश प्रेम (ख) मानवीय प्रेम

   (ग) भक्तिभावना (घ) कोई नहीं

8. अंगार शैया से कवयित्री का क्या आशय है?

   (क) अंगारे (ख) विस्तर

   (ग) जीवन ही चुनौतियाँ (घ) खुशी

उत्तर –

(1) (ग) छायावाद

(2) (क) सभी सम्बंधों को

(3) (ख) विलाप

(4) (क) भँवरा

(5) (क) नेत्र

(6) (ख) युवाओं को

(7) (क) देश प्रेम

(8) (ग) जीवन की चुनौतियाँ।

पाठ–8

बादल को घिरते देखा है

कवि– नागार्जुन

कविता का परिचय–नागार्जुन द्वारा रचित 'बादल को घिरते देखा– कविता में प्रकृति का चित्रण किया गया है। यह कविता नागार्जुन की कविता संग्रह 'युगधारा' से ली गई है। वर्षा ऋतु के आने पर सम्पूर्ण प्रकृति में जो परिवर्तन आता है उसका कवि ने छः दृश्य द्वारा वर्णन किया है। इसी प्रकृति से सम्बन्धित मनोभावों को विविध बिम्बों के माध्यम द्वारा अभिव्यक्त किया है। वे छः दृश्य कुछ इस प्रकार हैं–पावस की उमस को शान्त करते हुए मानसरोवर में तैरते हंस, चकवा–चकवी का प्रणय मिलन, हिमालय की गोद में सुवास को खोजते हिरन, हिमालय की चोटियों पर बादल का गरजना, और तूफान, मनोरम अँगुलियों को वंशी पर फिरते किन्नर और किन्नरियाँ। ये सभी चित्र बहुत ही आकर्षक, मनोरम तथा हृदयस्पर्शी होने के साथ–साथ कविता को मनोरंजक और रोचक बनाते हैं। यदि देखा जाए तो ऐसा लगता है कि कवि ने कालिदास की परम्परा को आगे बढ़ाया है।

मूलभाव– नागार्जुन के कविता संग्रह 'युगधारा' से लिया गया है। कविता में प्रकृति चित्रण का सुन्दर उदाहरण है। वर्षा ऋतु आने पर सारी प्रकृति जैसे अपनी विरहाग्नि शान्त करती नजर आती है। इसी भाव को कवि ने विविध बिम्बों से व्यक्त किया है। कविता में हिमालय की पहाड़ियों, दुर्गम बर्फीली घाटियों, झीलों, झरनों तथा देवदारु के जंगलों के बीच दुर्लभ वनस्पतियों जीव–जन्तुओं, गगनचुम्बी कैलाश पर्वत पर मेघा किन्नर–किन्नरियों के विलास पूर्ण जीवन का अत्यन्त आकर्षण वर्णन किया है।

कवि बताता है कि जब स्वच्छ और धवल चोटियों पर वर्षा कालीन बादल छा जाते हैं तो सम्पूर्ण प्रकृति उल्लास से भर जाती है। मानसरोवर के सुनहरे कमलों पर ओस–कण मोतियों के समान झलकते हैं पावस की उमस से व्याकुल समतल प्रदेशों से आकर हंस झीलों में तैरते हुए कमल डंडियों को खोजते हैं। रात की विरह पीड़ा से व्याकुल चकवा–चकवी सवेरा होते ही अपनी प्रणय–क्रीडा में मग्न हो जाते हैं। सैकड़ों हजारों फुट दुर्गम बर्फीली घाटी में अपनी ही नाभि से उठने वाली मादक सुगन्ध को न पाने पर युवा हिरन को खीझते हुए देखा है।

पर्वतों पर छाई घटा कालीदास की रचना मेघदूत की याद दिला देती है। कवि ने भीषण जाड़ों में मेघों को झंझावत (तेज हवायें) को आपसे भिड़ते हुए देखा है। पर्वतीय शोभा पर मुग्ध कवि को किन्नर–किन्नरियों का विलासपूर्ण जीवन याद आ जाता है। वे मस्ती के वातावरण में द्राक्षासव (मदिरा) तथा संगीत का आनन्द उठाते दिखाई देते हैं ।

प्रसंग सहित व्याख्या

अवतरण – कहाँ गया धनपति.....घिरते देखा है।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि नागार्जुन की लंबी कविता ''बादल को घिरते देखा है'' से अवतरित है। पस्तुत कविता "युगधारा" काव्य संग्रह से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में महाकवि नागार्जुन कालिदास द्वारा रचित महाकाव्य 'मेघदूत' को कल्पित बताने का प्रयास करते हुए कहते हैं कि –

व्याख्या– कवि निराशा के स्वर में कहता है कि न जाने वह धनपति कुबेर जिसने यक्ष को निर्वासन का दंड दिया था, कहाँ चला गया। उसकी वैभव नगरी जिसका नाम अलकापुरी था उसका भी कोई निशान नहीं दिखाई दे रहा है। कालिदास ने अपने प्रसिद्ध विरह काव्य मेघदूत में जिस आकाश गंगा का वर्णन किया है, वह भी न जाने कहाँ बहती है। उस आकाश गंगा का जल भी कहीं दिखाई नहीं देता। मेघदूत के पात्रों एवं स्थलों को प्रयास करने के बाद भी कवि नहीं खोज पाता है। जो मेघ का दूत बनकर अलकापुरी भेजा था वह मेघदूत भी न जाने कहाँ गया? संभवतः वह इसी पर्वत पर बरस पड़ा हो।

कवि कहता है बादलों ने प्रेम संदेश दिया हो या न हो। शायद वह कालिदास की कल्पना में ही उपजा था। लेकिन मैंने इस पर्वत प्रदेश में भीषण सर्दी में गगनचुंबी कैलाश पर्वत पर मेघ खंडों को तूफानी हवाओं से टकराते हुए देखा है।

साहित्यिक सौंदर्य –

भाषा – तत्सम शब्दों से युक्त खड़ी बोली

रस – अद्भुत रस

छंद – मुक्त छंद

गुण – प्रसाद गुण

अलंकार – कवि कल्पित – अनुप्रास

विशेष– महाकवि ने भारतीय चिन्तन परम्परा कैलाश पर शिव या अन्य देवताओं का निवास स्थान होने की मान्यता का खण्डन करने के साथ–साथ महाकवि कालिदास की रचना 'मेघदूत' को केवल कवि की कल्पना मात्र बताया है।

काव्य–सौंदर्य

अमल–धवल.....कमलों पर गिरते देखा है।

भाव पक्ष–इन काव्य पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु में हिमालय पर्वत की बर्फीली चोटियों पर अपने अनुभव का वर्णन कर रहा है यहाँ बादलों के घिरने की छटा का मनोहारी चित्रण किया गया हैं। यहाँ बर्फ के छोटे–छोटे कणों को गिरते हुए देखा है। मानसरोवर में खिलने

वाले कमलों को स्वर्णिम बताया गया है। बर्फ के कण जब कमल पर गिरते हैं तो वह मोती जैसे दिख रहे हैं पर्वतों की चोटियों को स्वच्छ और सफेद बताया गया है।

कला पक्ष–

– छोटे–छोटे में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

– छोटे–छोटे मोती जैसे में उपमा अलंकार है।

– अमल–धवल, छोटे–छोटे में अनुप्रास अलंकार है।

– अनेक तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

– खड़ी बोली

– अद्‌भुत रस

– प्रसाद गुण

कविता पर आधारित प्रश्न–उत्तर

1. कविता में चित्रित प्रकृति–चित्रण एवं जन–जीवन का अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– **प्रकृति चित्रण**– कविता में वर्षा ऋतु में पर्वत शिखरों पर बादलों के घिरने की शोभा का वर्णन हैं ओस कणों को मोती के समान बताया गया है। ओस का कमल के फूलों पर गिरना बहुत ही मनोहारी चित्र उपस्थित कर देता हैं हिमालय पर स्थित झीलों में हंसों के तैरने का दृश्य भी नयनाभिराम हैं। वसंत ऋतु के प्रातःकालीन सूर्य की किरणें अनोखी छटा उपस्थित करती हैं। कस्तूरी मृग को अपनी नाभि से उठने वाली सुगंन्ध के पीछे पागल होते देखा जा सकता है।

जनजीवन– इस प्राकृतिक वातावरण में जन–जीवन मस्ती से परिपूर्ण होता है। किन्नर–किन्नरियाँ मृगछालाओं पर बैठकर चिन्ताओं से दूर मस्ती में बाँसुरी बजाते रहते हैं भोज पत्तों से बनी झोपड़ी में चंदन की तिपाही पर चांदी के बने मणियों से सजे हुए सुरा पात्र रखे हुए है। किन्नर और किन्नरियों की वेशभूषा और साज सज्जा बड़ी मन मोहक है।

2. बादलों का वर्णन करते हुए कवि को कालिदास की याद क्यों आती है?

उत्तर– बादलों का वर्णन करते हुए कालिदास की याद कवि को इसलिए आती है कि कालिदास द्वारा रचित मेघदूत में धनकुबेर ने यक्ष को एक वर्ष का जो निर्वासन दंड दिया था उस अवधि में यक्ष ने मेघ (बादल) को दूत बनाकर अपनी प्रिया के पास अपना संदेश भेजा था।

कवि ने उन स्थानों को खोजने का प्रयास किया है जिनका उल्लेख मेघदूत में हैं पर वे कहीं नहीं मिले। न आकाश गंगा मिली और न वह मेघ मिला। इसी कारण कवि को उनकी याद आती है।

अतिरिक्त अभ्यास कार्य

1. व्याख्या

   क) छोटे–छोटे.....देखा है।

   ख) दुर्गम बर्फानी.....अपने पर चिढ़ते देखा है।

   ग) ढूँढ़ा बहुत.....भिड़ते देखा है।

2. आशय सपष्ट कीजिए–

   क) अलख नाभि से उठने वाले.....

   ख) मैनें तो भीषण जाड़ों में.....

अभ्यास हेतु प्रश्न–

1. ''बादल को घिरते देखा है'' से क्या अभिप्राय है?
2. पावस की उमस से क्या अभिप्राय है।
3. कस्तूरी मृग का अपने पर चिढ़ने का क्या कारण है?
4. प्रणय कलह से कवि का क्या तात्पर्य है?
5. कवि ने महामेघ को झंझानिल से गरज–गरज भिड़ते देखा है। क्यों कहा है?
6. ''बादल को घिरते देखा है'' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कवि ने हंसों को कहाँ देखा है?

   (क) झीलों के पास (ख) हिमालय पर

   (ग) मानसरोवर पर (घ) जंगल में

2. कौन–सा पक्षियों का जोड़ा सारी रात अलग रहता है,

   (क) तोता–मैना (ख) चकवा–चकवी

   (ग) मोर–मोरनी (घ) कोयल

3. प्रणय कलह से कवि का क्या आशय है–

   (क) झगड़ा करना (ख) प्रेम में उलाहने देना

   (ग) लड़ना (घ) प्रेम करना

4. कस्तूरी कहाँ होता है?

(क) जंगल में (ख) पर्वत पर

(ग) मृग की नाभि में (घ) नदी में

5. मेघदूत किसकी रचना है?

(क) सूरदास (ख) कालीदास

(ग) नंद दास (घ) कबीर

6. रजत–रचित में कौन सा अलंकार है–

(क) उपमा (ख) अनुप्रास

(ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

7. कविता में किस झील का वर्णन है?

(क) प्रेम सरोबर (ख) मानसरोवर

(ग) वूलर (घ) दिव्य सरोवर

8. धवल का अर्थ होता है–

(क) श्याम (ख) श्वेत

(ग) लाल (घ) हरा

उत्तर–

(1) मानसरोवर पर (2) चकवा–चकवी

(3) प्रेम में उलाहने देना (4) मृग की नाभि

(5) कालीदास (6) अनुप्रास

(7) मानसरोवर (8) श्वेत

पाठ–9

हस्तक्षेप

कवि– श्रीकांत वर्मा

मूलभाव – कवि ने हस्तक्षेप कविता में आम व्यक्ति को गलत निर्णयों के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया है। कवि आम जनता का आह्वान करते हुए कहते है। कि सत्ता के गलत निर्णयों के विरूद्ध विद्रोह करते हुए डरना नहीं चाहिए। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए समय–समय पर उसमें हस्तक्षेप की जरूरत होती है वरना व्यवस्था निरंकुश हो जाती है। इस कविता में ऐसे ही तंत्र का वर्णन है जहाँ किसी भी प्रकार के विरोध के लिए गुंजाइश नहीं छोड़ी गई है। किन्तु कवि बताता है कि हस्तक्षेप तो मुर्दा भी कर जाता है। फिर जिंदा लोग चुप बैठे रह जायेगे यह कैसे सम्भव हैं।

व्याख्या बिंदु– यह है कि कवि ने मगध की सत्ता की निरकुशता एवं क्रूरता का वर्णन करते हुए दर्शाया है कि वहाँ ऐसा आतंकपूर्ण वातावरण हो गया है कि लोग भयवश किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए है। कवि सत्ताधारी वर्ग पर अप्रत्यक्ष रुप से व्यंग्य करते हुए कहता है कि मगध के लोग यह सोचते हैं कि मगध में शांति रहनी ही चाहिए। शांति भंग होने के डर से कोई छींक तक नहीं मार रहा है। मगध के अस्तित्व के लिए शांति का होना अत्यंत आवश्यक है।

निरंकुश शासन व्यवस्था में लोगों पर कितना ही अत्याचार क्यों न हो जाए कोई चीख पुकार नहीं कर सकता क्योंकि ऐसा करना शासन के विरूद्ध समझा जायेगा। शासन व्यवस्था में व्यवधान हो जायेगा। मगध सिर्फ नाम का मगध है रहने के लिए मगध नहीं है। मगध के शासन तंत्र की अनुचित बातों पर कोई हस्तक्षेप नहीं करता कि ऐसा करने से वहाँ सत्ता का विरोध करने की पंरपरा आरंभ हो जायेगी।

कवि कहता है तुम विरोध से कितना ही बचो परंतु तुम उसके स्पष्ट विरोध से बच नही पाओगे। जब कोई विरोध नहीं करता तो शहर के बीच से गुजरता मुर्दा यह प्रश्न करता है कि मनुष्य क्यों मरता है अर्थात् अत्याचार बढ़ने पर दबा–कुचला वर्ग भी निरंकुश सत्ता पर उंगली उठा सकता है।

'हस्तक्षेप' कविता की सप्रसंग व्याख्या–

अवतरण – कोई छींकता तक.....रहनी ही चाहिए।

संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कवता के प्रमुख कवि श्रीकांत वर्मा के मगध काव्य संगह के हस्तक्षेप शीर्षक से अवतरित है।

प्रसंग – श्रीकांत वर्मा जी ने मगध के बहाने सत्ता के निरंकुश तंत्र पर तीखा प्रहार किया है। सत्ता कभी नहीं चाहती कि कोई उसकी कार्य शैली पर प्रश्न चिन्ह लगाए कवि उसी कार्यशैली पर प्रश्न उठाते हुए कहता है कि –

व्याख्या – कवि सत्ताधारी वर्ग की निरंकुशता पर अप्रत्यक्ष रूप से व्यंग्य करते हुए कहता है। कि मगध (शासन का प्रतीक) में शांति व्यवस्था बनी रहनी ही चाहिए। यह शान्ति व्यवस्था भंग न हो जाये, इसी डर से कोई छींकता तक नहीं। शांति के नाम पर शासक वर्ग नागरिकों को चुप कराके रखता हैं उसकी अभिव्यक्ति की क्षमता पर नियंत्रण रखा जाता है। मगध है तो शांति बनी रहेगी। कोई भी नागरिक इस प्रतिबंध के विरोध में आवाज नहीं उठाता। उसे डराया जाता है कि इससे मगध की शासन व्यवस्था में विघ्न पड़ जायेगा, रूकावट आ जायेगी। उनका कहना है कि मगध में हर कीमत पर व्यवस्था बनी रहनी चाहिये।

भाव यह है कि सत्ता जब निरकुंश हो जाती है तब वह किसी नागरिक की विरोधी आवाज़ सहन नहीं कर पाती। वह नागरिकों को दबा कर रखती है। लोगों को शांति–व्यवस्था के भंग होने को भय दिखाया जाता है।

साहित्यिक सौन्दर्य–

भाषा – देशज़ शब्दों से युक्त खड़ी बोली

रस – शान्त रस

गुण – माधुर्य

छंद – मुक्त

शब्द शक्ति – व्यंजना

विशेष – किसी दार्शनिक का कथन है सत्ता का सबसे मुलायम रूप निरंकुशता ही होती है। कवि की पंक्तियाँ भी उसी विचारधारा को बल देती है।

कविता पर आधारित प्रश्न–उत्तर–

1. मनुष्य क्यों मरता है? पंक्ति में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– इस पंक्ति में यह व्यंग्य निहित है कि जो लोग अन्याय अत्याचार को झेलते हैं वे मरे हुये के समान होते हैं। जिंदा लोगों को मरे हुओं के समान जीवन नहीं

बिताना चाहिये। उसे मृतक के समान नहीं रहना चाहिए। निरंकुश व्यवस्था के विरूद्ध उसे अपनी आवाज उठानी चाहिये। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए हस्तक्षेप करना चाहिए।

2. मुर्दा के हस्तक्षेप करने से क्या तात्पर्य है।

उत्तर– 'मुर्दा के हस्तक्षेप करने से तात्पर्य है उस व्यक्ति से जो समाज के सबसे कमजोर तबके से आता है। जो सुविधाहीन है, सभी साधन व संसाधनों से दूर है। जब वह शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप अर्थात् प्रश्न पूछ सकता है। सत्ता द्वारा किए गए अनुचित कार्यों पर सवाल उठा सकता है तो अन्य मनुष्य जो सक्षम हैं वे हस्तक्षेप क्यों नहीं कर सकते। जनतंत्र, लोकतंत्र के लिए हस्तक्षेप करना बहुत आवश्यक हो जाता है।

अभ्यास कार्य–

1. मगध के माध्यम से हस्तक्षेप कविता किस व्यवस्था की ओर संकेत कर रही है।

2. मगध निवासी किसी भी प्रकार से सत्ता में हस्तक्षेप करने से क्यों कतरा रहे हैं।

3. ''मगध अब कहने को मगध है रहने को नहीं '' इस आधार पर मगध की स्थिति का वर्णन करो?

4. मुर्दे का हस्तक्षेप क्या प्रश्न खड़ा करता है। प्रश्न की सार्थकता को कविता के संदर्भ में बताओ।

5. लाक्षणिक प्रयोगों का स्पष्टीकरण :–

   1) कोई छींकता तक नही– छींक जैसी प्राकृतिक क्रिया भी अप्रत्यक्ष रूप से मना है। अर्थात् विद्रोह की जरा सी आवाज भी नहीं उठनी चाहिए बिल्कुल शांति रहनी चाहिए।

   2) कोई चीखता तक नही– निरकुंश शासन के विरूद्ध कोई भी (आम जनता) अपना आक्रोश व्यक्त नहीं कर सकता।

   3) कोई टोकता तक नहीं– शासन व्यवस्था की कमियों का विरोध करने के लिए कोई भी शासन कार्यों के बारें में बातचीत तक भी नहीं कर रहा है ।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. कविता में मगध किसका प्रतीक है?

   (क) लोगों का (ख) राज सत्ता का

   (ग) अच्छाई का (घ) बुराई का

2. जब कोई हस्तक्षेप नहीं करता तब हस्तक्षेप कौन करता है?

   (क) बालक (ख) बच्चा

   (ग) स्त्री (घ) मुर्दा

3. कवि के अनुसार राज सत्ताएँ क्या नहीं चाहती हैं?

   (क) अपनी तारीफ सुनना (ख) अच्छा काम करना

   (ग) अपने कार्यों की आलोचना (घ) निरंकुश होना

4. टोकने से कवि का क्या आशय है?

   (क) प्रशंसा (ख) आलोचना

   (ग) क्रोध (घ) हर्ष

5. मगध में लोग क्यों नहीं चीखते?

   (क) वे प्रसन्न हैं (ख) वे डरे हुए हैं

   (ग) राजसत्ता नहीं चाहती (घ) परंपरा बनने के डर से

6. मगध में व्यवस्था क्यों बनी रहनी चाहए?

   (क) क्योंकि लोग चाहते हैं (ख) मगध चाहता है

   (ग) राजसत्ता चाहती है (घ) कोई नहीं चाहता

7. कोई छींकता नहीं से कवि का क्या आशय है?

   (क) खुशी प्रकट करना (ख) असंतोष प्रकट करना

   (ग) विलाप करना (घ) आँसू बहाना

8. कवि के अनुसार मगध में शान्ति कैसे रहेगी?

   (क) लोगों के बोलने से (ख) लोगों के चुप रहने से

   (ग) चीखने–चिल्लाने से

उत्तर–

(1) राजसत्ता का
(2) मुर्दा
(3) अपने कार्यों की आलोचना
(4) आलोचना
(5) राजसत्ता नहीं चाहती
(6) राजसत्ता चाहती है
(7) असंतोष प्रकट करना
(8) लोगों के चुप रहने से

पाठ–10

घर में वापसी

कवि– सुदामा पांडेय (धूमिल) प्रगतिवादी–प्रयोगवादी

पाठ परिचय–'घर की वापसी' धूमिल जी की गरीबी से संघर्ष कर रहे परिवार की दुख भरी कविता है। कोई भी व्यक्ति अपने रोज़ की भाग दौड़ वाली जिन्दगी में प्रेम, ममत्व, स्नेह, सुरक्षा, ऊर्जावान रिश्ते चाहता है। वह एक ऐसा घर चाहता है जहाँ उस घर में रहने वाले लोगो के बीच आपसी सम्बन्ध मधुर, परिपक्व, ऊर्जावान हो। परन्तु इस कविता में जिस घर का उल्लेख किया है उसकी अपनी त्रासदी है। त्रासदी यह है कि उस घर के लोगों के बीच आपस में सवांदहीनता की दीवार खिंच गई है। इस संवादहीनता का कारण गरीबी है। ऐसा नहीं है कि ये परिवार पैसे की ओर आकर्षित या धन का लालच रखता है। बल्कि सच तो यह है कि परिवार के सभी सदस्यों को एक–दूसरे की मजबूरी और लाचारी को जानते हैं, समझते हैं। इसलिए वे एक–दूसरे से बोलते नहीं है। यह परिवार गरीबी से लड़ते–लड़ते इतना ऊर्जाहीन, दीन–हीन जर्जर हो गया है कि आपसी रिश्तों को जीवित रखने के लिए जिस संवाद और ऊर्जा की आवश्यकता होती है, वह समाप्त हो चुकी है। परिवार में पाँच सदस्य है। सभी के बीच खून का रिश्ता है, परन्तु गरीबी के कारण ये सभी अपने मन के भावों को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाते हैं। ये संवादहीनता इनके बीच आपस में भाषा रूपी जर्जर ताले को खोल भी नहीं पाती है। यहाँ तक कि ये आपस में एक–दूसरे के प्रति अपने दायित्वों, कर्त्तव्यों को भी गरीबी के कारण पूरा कर पाने में असमर्थ हैं। गरीबी इनके रिश्तों को आपस में जिन्दा रखने में सबसे बड़ी बाधक है।

मूलभाव – यह कविता गरीबी से संघर्ष करते हुए परिवार की व्यथा–कथा है। प्रत्येक मनुष्य संसार की भागम भाग भरी जिन्दगी से राहत पाने के लिए स्नेह , अपनत्व और सुरक्षा भरे वातावरण में घर बनाता है और उसमें रहता है। लेकिन विडम्बना यह है कि तमाम रिश्ते–नातों, स्नेह और अपनत्व के बीच गरीबी की दीवार खड़ी हो जाती है। गरीबी से लड़ते–लड़ते अब इतनी भी ताकत नहीं रही कि रिश्तों में मधुरता लाने के लिए कोई चाबी बनाई जाए जो इस जटिल ताले को खोल सकें।

कवि ने एक ऐसे घर की कामना की हैं, जहाँ गरीबी दीवार की भाँति बाधक न हो और परिवार के सभी सदस्य प्रेमपूर्ण वातावरण में रहते हुए सुख प्राप्त कर सकें।

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांश की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए।

अवतरण– वैसे हम स्वजन हैं.....भाषा के भुन्न–सी ताले को खोलते।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी साहित्य की नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर सुदामा पांडेय 'धूमिल' की कविता 'घर में वापसी' से अवतरित है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों में कवि धूमिल एक गरीबी से जूझते परिवार का चित्र खीचते है जहाँ गरीबी आपसी रिस्तों में बाधक है, कवि के अनुसार गरीबी रिस्तों की गर्माहट को महसूस ही नहीं होने देती। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कवि कहता है कि –

व्याख्या–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि यह बताना चाहता है कि यद्यपि हमारा परिवार गरीब है। तथापि हम स्वजन है। अर्थात् हम करीबी रिश्तेदार हैं हमारे रिश्ते मधुर हैं। आज भी गरीबी होने के बावजूद हम सभी में आत्मीयता बनी हुई है। परन्तु फिर भी हमारे रिश्तों के बीच गरीबी की दीवार है। जिसके कारण हम आपस में अपने मनोभावों को अभिव्यक्त भी नहीं कर पाते हैं। गरीबी के कारण रिश्तों में उपस्थित संवादहीनता के कारण हम सभी पारिवारिक सदस्य आपस में न तो बोल पाते हैं और न ही एक–दूसरे के प्रति अपने कर्त्तव्यों को निभा पाते हैं। प्रत्येक सदस्य पर एक मानसिक दबाव काम कर रहा है। जिसका कारण ये गरीबी और उससे उत्पन्न संवादहीनता है। यह गरीबी परिवार को विरासत में मिली है वे जन्मजात गरीब है। परिवार का कोई भी सदस्य अपने विचारों को इसी कारण प्रकट नहीं करता क्योंकि वे सभी आपस में एक–दूसरे की मजबूरी समझते हैं। आपसी रिश्तों की ऊर्जा व गर्मी बिल्कुल समाप्त हो गई है। आगे कवि कहता है कि रिश्तों में आपस में इतनी भी ऊर्जा नहीं बची जिससे कि इनके बीच जंग खाई भाषा रूपी ताले को खोला जा सके अर्थात् ये आपस में संवाद की परम्परा को शुरू कर सके।

साहित्यिक सौंदर्य–

भाषा – देशज़ शब्दों से युक्त खड़ी बोली

रस – करुण रस

छंद – मुक्त छंद

गुण – माधुर्य

अलंकार – दीवार के दोनों – अनुप्रास

– भाषा के मुन्ना सी उपमा

विशेष – कवि ने नवीन विम्बों और प्रतीकों से गरीबी का मार्मिक चित्रण किया है।

कविता पर आधारित प्रश्न उत्तर–

1. माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही तीर्थ यात्रा की बस के दो पंचर पहिए हैं। कैसे?

उत्तर– कवि सुदामा पांडेय धूमिल ने माँ की आँखों को तीर्थ यात्रा की बस के दो पहिए कहा है। पड़ाव शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक है वह मृत्यु का प्रतीक है। 'दो पंचर पहिए' का प्रतीकार्थ है ज्योति विहिन दो आँखें। अपेक्षित गंतव्य तक न पहुँच पाने की यातना 'पंचर पहिए' से व्यक्त होती है।

2. पिता की आँखें लोह साँय की ठंडी सलाखें हैं से क्या तात्पर्य हैं?

उत्तर– कवि ने पिता की आँखों को 'लोह साँय की ठंडी सलाखें' बताया हैं यह उपमान प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है। यौवनावस्था में पिता तेजस्वी और रौबदार रहे होंगे पर बुढ़ापे और गरीबी ने उनके तेज को उनसे छीन लिया है उनका उत्साह ठंडा पड़ चुका है। भाषा सहज, सरल, भावपूर्ण है।

काव्य सौंदर्य –

भाव पक्ष – प्रस्तुत कविता में कवि में गरीबी की विवशता भरी जिन्दगी का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। गरीबी के कारण परिवार में आए बिखराव और अलगाव का भावपूर्ण चित्र उपस्थित किया गया है। कवि के हृदय में गरीबी के कारण आए बिखराव और अलगाव का भावपूर्ण चित्र उपस्थित किया गया है। कवि के हृदय में गरीबी के कारण आए बिखराव को जोड़ने की तीव्र इच्छा है।

कला पक्ष –

1. कवि ने प्रतीकात्मकता और लाक्षणिकता से युक्त खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
2. भाषा में करीब, गरीब आदि उर्दू शब्दों के प्रयोग से व्यावहारिकता आ गई है भाषा में चित्रात्मकता का समावेश है।
3. मुक्त छंद में लिखी गई कविता है।
4. सर्वथा नवीन उपमानों का प्रयोग है।
5. 'पंचर पहिए', 'पड़ाव से पहले', 'भाषा के भुन्नासी' में अनुप्रास अलंकार है।
6. भाषा का भुन्नासी ताला बड़ा ही सुन्दर रूपक है।
7. 'जोखिम उठाना' मुहावरें का सटीक प्रयोग है।
8. मुक्त छंद प्रयोग किया गया है।

अभ्यास प्रश्न–

1. कवि परिवार के पाँच सदस्यों को पाँच जोड़ी आँखें क्यों मानता हैं?
2. 'पत्नी की आँखें–आँखें नहीं, हाथ हैं, जो मुझे थामे हुए हैं। से कवि का क्या आशय हैं?

3. 'वैसे हम स्वजन है, करीब है.....क्योंकि हम पेशेवर गरीब है। से कवि क्या कहना चाह रहा है?

4. 'रिश्ते हैं लेकिन खुलते नहीं'– कवि के सामने ऐसी कौन–सी विवशता है जिससे आपसी रिश्ते भी नहीं खुलते ?

5. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य लिखिए–

   (क) माँ की आँखे पड़ाव से पहले की तीर्थ–यात्रा की बस के दो पंचर पहिए हैं

   (ख) पिता की आँखे लोह साँय की ठंडी सलाखें हैं।

6. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए–

   (क) वैसे तो हम स्वजन है.....पेशेवर गरीब है।

   (ख) रिश्ते हैं.....यह मेरा घर हैं।

7. कवि ने भुन्ना सी ताले किसे कहा है?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. धूमिल का पूरा नाम क्या था?

   (क) रमन पांडेय (ख) सुदामा पांडेय

   (ग) मोहन पांडेय (घ) अवधेश पांडेय

2. 'जलते घी के दो दिये से' कवि का क्या आशय है?

   (क) प्रकाश (ख) उम्मीद

   (ग) रौशनी (घ) जलना

3. धूमिल किस काव्यधारा के कवि हैं?

   (क) प्रगतिवाद (ख) प्रयोगवाद

   (ग) नई कविता (घ) छायावाद

4. पत्नि की आँखें, आँखें नहीं हाथ क्यों हैं?

   (क) विकट परिस्थिति में सम्बल

   (ख) उसकी आँखों की जगह हाथ थे

   (ग) उनकी पत्नि हमेशा उनकी माँ से लड़ती थी।

   (घ) उनकी पत्नि गरीब होने के लिए ताने देती रहती थी।

5. 'जोखिम उठाना' का क्या अर्थ है?

(क) साहस करना (ख) डरना

(ग) जी चुराना (घ) आँखें फेरना

6. 'पंचर पहिए' में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) उत्प्रेक्षा

7. 'भुन्ना सी भाषा' में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक

8. पिता की आँखों की तुलना किससे की गयी है?

(क) तीर्थयात्रा की बस (ख) लोहसाँय की ठंडी सलाखें

(ग) जलते घी के दिए (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–

(1) सुदामा पांडेय (2) उम्मीद

(3) नई कविता (4) विकट परिस्थिति में संबंल

(5) साहस करना (6) अनुप्रास

(7) उपमा (8) लोहसाँय की ठंडी सलाखें

पूरक पुस्तक
'अंतराल'
भाग–1

ध्यान देने योग्य बातें :

पूरक पुस्तक को पाठ्यक्रम में समाहित करने का उद्देश्य है छात्रों की भाषिक तथा साहित्यिक रूचियों का विकास करना।

पूरक पुस्तक के रूप में 'अंतराल' को साहित्य की तीन विधाओं– एकांकी, आत्मकथा एवं जीवनी से अलंकृत किया गया है।

पुस्तक आरंभ करने से पूर्व हमें एकांकी (इसकी नाटक से भिन्नता), आत्मकथा एवं जीवनी के अर्थ को समझना होगा।

एकांकी

– एकांकी में केवल एक ही अंक होता है।
– एकांकी में केवल मुख्य कथा होती है।
– एकांकी में पात्रों के क्रियाकलापों और चरित्रों का संयोजन इस रूप में होता है कि एकांकी होते हुए भी उनके व्यक्तित्व का समूचा निरूपण हो जाता है।

नाटक

– नाटक में एक से अधिक अंक होते हैं।
– नाटक में मुख्य कथा के साथ–साथ प्रासंगिक कथाएं भी होती है
– नाटक में चरित्र का क्रमशः विकास दिखाया जाता है।

आत्मकथा

– आत्मकथा में लेखक द्वारा उत्तम पुरुष का प्रयोग करते हुए स्वयं अपने जीवन का संबद्ध वर्णन किया जाता है।
– आत्मकथा में लेखक अपने व्यक्तित्व, अपने अनुभवों व अपने जीवन प्रसंग आदि का वर्णन करता है।

जीवनी

– जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति विशेष का जीवन चरित्र प्रस्तुत करता है।
– जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति के व्यक्तित्व, कृतित्व तथा उसकी उपलब्धियों का वर्णन करता है।

पाठ–2

हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी

विधा – आत्मकथा

लेखक – मकबूल फिदा हुसैन

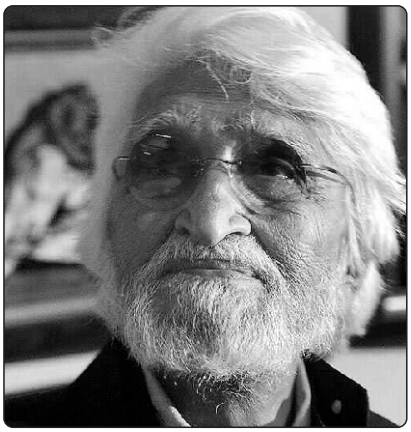

प्रेरणा – यदि विद्यार्थी जीवन में प्रतिभा विकास का सही अवसर और दिशा मिल जाए जो विद्यार्थी के जीवन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। अतः अभिभावक और शिक्षक दोनों को अपने बच्चों की शैक्षणिक योग्याताओं से इतर प्रतिभा को पहचान कर उसके विकास में सहयोग देकर उसके उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

मुख्य स्मरणीय बिन्दु –

– 'हुसैन की कहानी अपनी जबानी' का पहला अंश 'बड़ौदा का बोर्डिंग स्कूल' उनके विद्यार्थी जीवन से जुड़ा है जहाँ उनकी रचनात्मक प्रतिभा के अंकुर फूटे। उनकी प्रतिभा सबके सामने आई ।

– दूसरा अंश 'रानीपुर बाजार' है जहाँ हुसैन से अपने पारिवारिक व्यवसाय को स्वीकार करने की अपेक्षा की जा रही थी। किन्तु वहाँ भी हुसैन के अन्दर का कलाकार उनसे चित्रकारी कराता रहा। अंततः हुसैन के पिताजी ने अपने बेटे के हुनर को पहचाना और उनकी रोशन ख़्याली ने हुसैन को एक महान चित्रकार बना दिया।

– दादाजी की मृत्यु के बाद हुसैन दादा के कमरे में ही बंद रहता और उनके बिस्तर में ही सोता। हुसैन के इस तरह गुमसुम रहने के कारण उसके अब्बा ने उसे बड़ौदा के बोर्डिंग स्कूल भेज दिया। बोर्डिंग में मकबूल के छः दोस्त बने–मोहम्मद इब्राहीम गोहर अली, अरशद, हामिद कंबर हुसैन, अब्बास जी अहमद, अब्बास अली फिदा, अत्तार आदि। सभी में दो साल तक दोस्ती रही। फिर सभी भिन्न–भिन्न दिशाओं में चले गए। दो साल की नज़दीकी तमाम उम्र कभी दिल की दूरी में बदल नहीं पाई। विद्यालय में मकबूल ने ड्राइंग मास्टर द्वारा ब्लैकबोर्ड पर बनाई चिड़िया को अपनी स्लेट पर हुबहू बनाकर तथा दो अक्टूबर को गाँधी जयन्ती के अवसर पर गाँधी जी का पोट्रेट ब्लैकबोर्ड पर बनाकर अपनी जन्मजात कला का परिचय दिया।

– रानीपुर बाज़ार में चाचा मुरादअली की दुकान पर बैठकर उनका सारा ध्यान ड्राइंग और पेटिंग पर रहता था। वह दुकान पर बैठे–बैठे आने जाने वालों के चित्र बनाता

रहता जिनमें से घूँघटताने मेहतरानी, गेहूँ की बोरी उठाए मजदूर की पेंचावली पगड़ी का स्केच, बुरका पहने औरत और बकरी के बच्चे का स्केच आदि प्रमुख थे। एक बार 'सिंहगढ़' फिल्म का पोस्टर देखकर मकबूल को ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया। उसने अपनी किताबें बेचकर ऑयल कलर खरीदा तथा अपनी पहली पेंटिंग बनाई। पेंटिंग देखकर पिता ने पुत्र को गले लगा लिया।

– एक बार इंदौर के सर्राफा बाज़ार में लैंडस्केप बनाते समय बेन्द्रे साहब से मुलाकात हुई। फिर दोनों लैंडस्केप पेंट करने लगे। मकबूल ने एक दिन बेन्द्रे को अपने पिता से मिलवाया। बेन्द्रे ने मकबूल के काम पर उनसे बात की। मकबूल के पिता ने बंबई से 'विनसर न्यूटन' ऑयल ट्यूब और कैनवस मँगवाए। उन्होंने बेटे के लिए सारी पुरानी मान्यताओं को नज़रअंदाज कर, अपने बेटे को जिन्दगी में रंग भरने की इजाज़त दे दी। ये हुसैन के जीवन की ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ थी, जिनकी हुसैन को एक प्रसिद्ध चित्रकार बनाने में विशेष भूमिका रही।

क) विचार बोधात्मक प्रश्न

1. लेखक ने अपने पाँच मित्रों के जो शब्द चित्र प्रस्तुत किए हैं, उनसे उनके अलग–अलग व्यक्तित्व की झलक मिलती है, फिर भी वे घनिष्ठ मित्र हैं, कैसे?
2. आप कैसे कह सकते हैं कि लेखक का अपने दादा से विशेष लगाव रहा?
3. 'लेखक जन्मजात कलाकार है'–इस आत्मकथा में सबसे पहले कहाँ उद्घाटित होता है।
4. दुकान पर बैठे–बैठे भी मकबूल के भीतर का कलाकार उसके किन कार्यकलापों से अभिव्यक्त होता है।
5. प्रचार–प्रसार के पुराने तरीकों और वर्तमान तरीकों में क्या फ़र्क आया है? पाठ के आधार पर बताओ।
6. कला के प्रति लोगों का नज़रिया पहले कैसा था? उसमें अब क्या बदलाव आया है?
7. इस पाठ में मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की कौन–कौन सी बातें उभरकर आई हैं?
8. बेद्रें साहब कौन थे? उन्होंने पेंटिंग के क्षेत्र में क्या किया।

विचारणीय प्रश्नः–

1. हुसैन के मन में किस फिल्म के पोस्टर को देखकर ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया?

2. बड़ौदा शहर व वहाँ के मदरसे पर टिप्पणी कीजिए।

3. 1933 में बेन्द्रे द्वारा कैनवस पर बनाई गई पेंटिंग का नाम क्या था? इस पेंटिंग को किसने सम्मानित किया?

4. विद्यालयों में महापुरूषों की जयंतियाँ क्यों मनाई जाती है।

5. फ़िल्मी इश्तिहार को देखकर मकबूल ने क्या किया?

6. मकबूल और बेन्द्रे का आपसी परिचय किस प्रकार और कहाँ हुआ?

कला समेकित अधिगम (Art Integrated Learning)

1. एम.एफ. हुसैन भारत के सबसे प्रसिद्ध चित्रकारों में से एक हैं। उनके द्वारा बनाए गए चित्रों का संकलन कीजिए।

2. अपने राज्य में आयोजित किसी कला प्रदर्शनी में भ्रमण हेतु जाएं तथा विभिन्न चित्रकारों द्वारा बनाए गए चित्रों को देखें।

3. एक.एफ. हुसैन द्वारा बनाए गए चित्रों को अपने सहपाठियों के साथ मिलकर संकलित कर एक कोलाज बनाएं तथा विद्यालय में लगाएं।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी पाठ की विधा है?

   (क) आत्मकथा (ख) जीवनी

   (ग) कहानी (घ) उपन्यास

2. मकबूल फिदा हुसैन भारत के जाने–माने ..... थे?

   (क) चित्रकार (ख) पत्रकार

   (ग) दार्शनिक (घ) डॉक्टर

3. दादा की मृत्यु के बाद हुसैन को कहां पढ़ने भेजा गया?

   (क) बोर्डिंग स्कूल–बड़ौदा (ख) विदेश पढ़ने

   (ग) नाना के घर (घ) भागलपुर

4. हुसैन के द्वारा चाचा मुराद अली की दुकान पर बैठकर बनाए गए चित्र कौन से थे?

   (क) घूंघट ताने मेहतरानी

   (ख) बकरी का बच्चा

   (ग) गेहूँ की बोरी उठाए मजदूर की पेच वाली पगड़ी

   (घ) उपर्युक्त सभी

5. मकबूल के लिए 'विनसर न्यूटन' ऑयल ट्यूब और कैनवस किसने मँगवाए–

(क) उनके पिता ने (ख) दादाजी ने

(ग) वीरेन्द्र साहब ने (घ) उनके शिक्षक ने

6. बेन्द्रे साहब कौन थे?

(क) हुसैन के शिक्षक (ख) हुसैन के चाचा

(ग) हुसैन के सहपाठी (घ) विख्यात चित्रकार

7. बेन्द्रे द्वारा केनवास पर बनाई गई पेंटिंग का क्या नाम था?

(क) रॉक ऑन बैंड (ख) बैगबंड

(ग) यूफोरिया (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

8. हुसैन जन्मजात कलाकार थे यह कहां सबसे पहले उद्घाटित होता है?

(क) जब वह बेन्द्रे साहब से मिला।

(ख) जब वह दादा के कमरे में रोता रहता था।

(ग) जब कक्षा में हू–ब–हू चिड़िया बना दी।

(घ) जब पिता ने ऑयल कलर दिलाए।

9. हुसैन को लीक से हटकर चित्रकार बनाने में किसका सबसे अधिक सहयोग रहा?

(क) माता (ख) पिता

(ग) बेन्द्रे साहब (घ) शिक्षक

10. हुसैन की कहानी पाठ में कौन से दो अंश आत्मकथा के लिए गए हैं?

(क) बड़ौदा का बोर्डिंग स्कूल (ख) रानीपुर बाजार

(ग) इनसे कोई नहीं (घ) उपर्युक्त दोनों

उत्तर–

1. (क) आत्मकथा
2. (ग) चित्रकार
3. (क) बोर्डिंग स्कूल–बड़ौदा
4. (घ) उपर्युक्त सभी
5. (क) उनके पिता ने
6. (घ) विख्यात चित्रकार
7. (ख) वैगबंड
8. (ग) जब कक्षा में हू–ब–हू चिड़िया बना दी।
9. (ख) पिता
10. (घ) उपर्युक्त दोनों

आओ लूडो खेलें

एम.एफ. हुसैन
1. आत्मकथा : व्यक्तित्व
प्रसिद्ध चित्रकार
2. अंशों का ज़िक्र पाठ में
बड़ौदा का बोर्डिंग स्कूल
रानीपुर बाज़ार
3. लोगों की प्रतिभा निखारने में योगदान
पिता
ड्रॉइंग टीचर
बेंद्रे साहब
4. बातें अब्बा ने पढ़ाई के साथ सीखने हुसैन को भेजा
मज़हबी तालीम
रोज़ा नमाज़
अच्छे आचरण के 40 सबक
पाकीज़गी के 12 तरीके
5. चित्र जो चाचा मुराद अली की दुकान पर बनाए
घूँघट ताने मेहतरानी
गेहूँ की बोरी उठाए मजदूर की पेंचवाली पगड़ी का चित्र
बुरका पहने औरत का स्केच
बकरी के बच्चे का स्केच
सिंहगढ़ फ़िल्म का पोस्टर
हुसैन के 6 घनिष्ट और परम मित्र
इब्राहिम गौहर अली
हामिद कम्बर हुसैन
अब्बास जी अहमद
अब्बास अली फिदा
अरशद
अत्तार

प्रचार–प्रसार के तरीके

प्राचीन तरीके
- हाथ से घंटों तक पोस्टर व विज्ञापन बनाना
- घोड़े व तांगे की सहायता से प्रचार करने निकलना
- तकनीक के अभाव में सीमित दायरा
- डुगडुगी बजाकर प्रसार करना
- मुनादी करना

आधुनिक तरीके
- प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का प्रयोग करना
- रेडियो, टेलीविजन, होर्डिंग्स, फलेक्स आदि का प्रयोग
- कागजों पर प्रिंट करके गली मोहल्ले में चिपकाना
- सोशल मीडिया पर एकाउंट बनाकर अपने उत्पाद का प्रयार स्वंय करना
- इंटरनेट ने प्रसार को और द्रुत बना दिया है

कला के प्रति नज़रिए में समय के साथ बदलाव

प्राचीन समय
- कला के प्रति अध्कि जानकारी का अभाव
- तकनीक अभाव, सीमित संसाधन
- केवल राजा महाराजाओं की ऐयाशी का साधन समझा जाता

आधुनिक समय
- प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा कला की समुचित जानकारी
- रोज़गार के साधन के रूप में देखा जाना
- सम्मान की दृष्टि से देखा जाना

पाठ–3

आवारा मसीहा : दिशाहारा

विधा – जीवनी

लेखक – विष्णु प्रभाकर

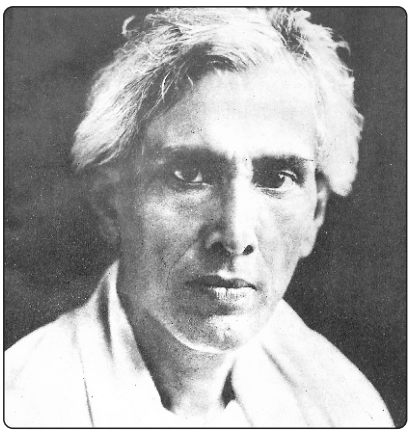

संदेश – इस रचना के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि व्यक्ति जीवन के हर मोड़ पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करे, यह आवश्यक नहीं, किन्तु किसी विशेष क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन से उसके पूरे व्यक्तित्व का आकलन हो सकता है। प्रतिभा के विकास को हर समय उचित अवसर मिलें, आवश्यक नहीं लेकिन जब भी मिले उसका उपयोग करना चाहिए।

स्मरणीय बिन्दु –

– 'आवारा मसीहा' विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित महान कथाकार शरत्चन्द्र की जीवनी है। इसके लिए विष्णु प्रभाकर जी को 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। यह पाठ 'आवारा मसीहा' के प्रथम पर्व 'दिशाहारा' का एक अंश है। इसमें लेखक ने शरत्चन्द्र के बचपन से किशोरावस्था तक के जीवन के विविध पहलुओं को इस प्रकार वर्णित किया है, जिससे बचपन की शरारतों में भी शरत् के एक अत्यन्त संवेदनशील और गम्भीर व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। उनके रचना–संसार के समस्त पात्र वस्तुतः उनके वास्तविक जीवन के ही पात्र हैं।

– शरत् के पिता यायावर प्रवृत्ति के थे। वे कभी भी एक जगह बँधकर नहीं रहे। उन्होंने कई नौकरियाँ की तथा छोड़ी। वे कहानी, नाटक, उपन्यास इत्यादि रचनाएँ लिखना तो प्रारम्भ करते किन्तु उनका शिल्पी मन किसी दासता को स्वीकार नहीं कर पाता इसलिए रचनाएँ पूर्ण नहीं हो पाती थी। जब पारिवारिक भरण–पोषण असंभव हो गया तब शरत् की माता सपरिवार अपने पिता के घर आ गई।

– भागलपुर विद्यालय में 'सीता–वनवास', 'चारू–पाठ', 'सद्भाव–सद्गुरू' तथा प्रकांड व्याकरण इत्यादि पढ़ाया जाता था। प्रतिदिन पंडित जी के सामने परीक्षा देनी पड़ती थी और विफल होने पर दण्ड भोगना पड़ता था। तब लेखक को लगता था कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनुष्य को दुःख पहुँचाना ही है।

– नाना के घर में शरत् का लालन–पोषण अनुशासित रीति और नियमों के अनुसार होने लगा। घर में बाल–सुलभ शरारतों पर भी कठोर दंड दिया जाता था। फेल होने पर

पीठ पर चाबुक पड़ते थे। नाना के विचार से बच्चों को केवल पढ़ने का अधिकार है, प्यार और आदर से उनका जीवन नष्ट हो जाता है। वहाँ सृजनात्मकता के कार्य भी लुक–छिपकर करने पड़ते थे।

– शरत् को घर में निषिद्ध कार्यों को करने में विशेष आनन्द आता था। निषिद्ध कार्यों को करने में उन्हें स्वतन्त्रता का तथा जीवन में ताज़गी का अनुभव होता था। शरत् को पशु–पक्षी पालना, तितली पकड़ना, उपवन लगाना, नदी या तालाब में मछलियाँ पकड़ना, नाव लेकर नदी में सैर करना और बाग में फूल चुराना अतिप्रिय था।

– शरत् और उनके पिता मोतीलाल दोनों के स्वभाव में काफी समानाताएँ थी। दोनों साहित्य प्रेमी, सौन्दर्य बोधी, प्रकृति प्रेमी, संवेदनशील तथा कल्पनाशील और यायावर (घुमक्कड़) प्रवृत्ति के थे।

– कभी–कभी शरत् किसी को कुछ बताए बिना गायब हो जाता । पूछे जाने पर वह बताता कि तपोवन गया था। वस्तुतः तपोवन लताओं से घिरा, गंगा नदी के तट पर एक स्थान था जहाँ शरत् सौन्दर्य उपासना करता था।

– अघोरनाथ अधिकारी के साथ गंगाघाट जाते हुए शरत् ने जब अपने अंधे पति की मृत्यु पर एक गरीब स्त्री के रुदन का करुण स्वर सुना तो शरत् ने कहा कि दुखी लोग अमीर आदमियों की तरह दिखावे के लिए जोर–जोर से नहीं रोते। उनका स्वर तो प्राणों तक को भेद जाता है। यह सचमुच का रोना है। छोटे से बालक के मुख से रुदन की ऐसी सूक्ष्म व्याख्या सुनकर अघोरनाथ के एक मित्र ने भविष्यवाणी की थी जो बालक अभी से रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है, वह भविष्य में अपना नाम ऊँचा करेगा। अघोरनाथ के मित्र की यह भविष्यवाणी सच साबित हुई।

– शरत् के स्कूल में एक छोटा–सा पुस्तकालय था। शरत् ने पुस्तकालय का सारा साहित्य पढ़ डाला था। व्यक्तियों के मन के भाव जानने में शरत् को महारत हासिल थी पर नाना के घर में उसकी प्रतिभा को पहचानने वाला कोई न था। शरत् छोटे नाना की पत्नी कुसुमकामिनी को अपना गुरु मानते रहे।

– नाना के परिवार की आर्थिक हालत खराब होने पर शरत् के परिवार को देवानंदपुर लौटकर वापस आना पड़ा।

– मित्र की बहन धीरू कालांतर में 'देवदास की पारो', 'श्रीकांत की राजलक्ष्मी', 'बड़ी दीदी' की माधवी के रूप में उभरी।

– शरत् को कहानी लिखने की प्रेरणा अपने पिता की अलमारी में रखी 'हरिदास की गुप्त बातें' और 'भवानी पाठ' जैसी पुस्तकों से मिली। इसी अलमारी में उन्हें पिता द्वारा लिखी अधूरी रचनाएँ भी मिली। जिन्होंने शरत् के लेखन का मार्ग प्रशस्त किया। शरत् ने अपनी रचनाओं में अपने जीवन की कई घटनाओं एवं पात्रों को सजीव किया है।

– शरत में कहानी गढ़कर सुनाने की जन्मजात प्रतिभा थी । वह पंद्रह वर्ष की आयु में इस कला में पारंगत होकर गाँव में विख्यात हो चुका था। गाँव के जमींदार गोपालदत्त मुंशी के पुत्र अतुलचंद्र ने उसे कहानी लिखने के लिए प्रेरित किया। अतुलचंद्र शरत् को थियेटर दिखाने कलकत्ता ले जाता और शरत् से उसकी कहानी लिखने को कहता। शरत् ऐसी कहानियाँ लिखता कि अतुल चकित रह जाता। अतुल के लिए कहानियाँ लिखते–लिखते शरत् ने मौलिक कहानियाँ लिखना प्रारंभ कर दिया।

– शरत् का कुछ समय 'डेहरी आन सोन' नामक स्थान पर बीता। शरत् ने 'गृहदाह' उपन्यास में इस स्थान को अमर कर दिया। 'श्रीकांत' उपन्यास का नायक श्रीकांत स्वयं शरत् है। 'काशीनाथ' कहानी का नायक उनका गुरुपुत्र था। जो शरत् का घनिष्ठ मित्र था। लम्बी यात्रा के दौरान परिचय में आई विधवा स्त्री को लेखक ने 'चरित्रहीन' उपन्यास में जीवंत किया है। 'विलासी' कहानी के सभी पात्र कहीं न कहीं लेखक से जुड़े हैं। 'शुभदा' में हारुन बाबू के रूप में अपने पिता मोतीलाल की छवि को उकेरा है। 'श्रीकांत' और 'विलासी' रचनाओं में सांपों को वश में करने की घटना शरत् का अपना अनुभव है। तपोवन की घटना ने शरत् को सौन्दर्य का उपासक बना दिया।

– देवानन्द गाँव में शरत्चन्द्र का संघर्ष और कल्पना से परिचय हुआ। बातें उनकी साधना की नींव थी। इसलिए शरतचन्द्र कभी भी देवानन्द गाँव के ऋण से मुक्त नहीं हो पाए।

विचार–बोधात्मक प्रश्न

1. बालक शरत् को ऐसा क्यों लगा कि साहित्य का उद्देश्य मात्र दुःख पहुँचाना है? अपके विचार से साहित्य के कौन–कौन से उद्देश्य हो सकते हैं?

2. नाना के घर किन–किन बातों का निषेध था? शरत को उन निषिद्ध कार्यों को करना क्यों प्रिय था?

3. बच्चों के प्रति शरत् के नाना की क्या मान्यता थी?

4. आपको शरत् और उसके पिता मोतीलाल में क्या समानताएँ नज़र आती है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5. ''जो रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है, वह साधारण बालक नहीं है। बड़ा होकर वह निश्चय की मनस्तत्व के व्यापार में प्रसिद्ध होगा।'' अघोर बाबू के मित्र की टिप्पणी पर अपनी टिप्पणी कीजिए।

6. 'शरत् की रचनाओं में उनके जीवन की अनेक घटनाएँ एवं पात्र सजीव हो उठे हैं'– पाठ के आधार पर विवेचना कीजिए।

7. सिद्ध कीजिए कि शरत्चन्द्र एक सवंदेनशील, प्रकृतिप्रेमी, परोपकारी एवं दृढ़निश्चयी व्यक्ति थे?

8. 'आवारा मसीहा' उपन्यास में वर्णित तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति के विषय में बताइये।

9. शरत् के पिता मोतीलाल साहित्यकार होते हुए भी घर जँवाई बनने के लिए क्यों विवश हुए?

10. शरत् के शौक कौन–कौन से थे? उसे वह शौक छिपकर पूरे क्यों करने पड़ते थे?

विचारणीय प्रश्नः–

1. ''इस गाँव के ऋण से वह कभी मुक्त नहीं हो सका।'' लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

2. पाठ में वर्णित बाल सुलभ शरारतों का वर्णन कीजिए।

3. शरत् को नाना के घर पर क्यों रहना पड़ा?

4. वर्तमान समय में नारी की स्थिति व 'आवारा मसीहा' में वर्णित समाज में नारी की स्थिति–दोनों के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

कला समेकित अधिगम (Art Integrated Learning)

1. 'शरत प्रकृति प्रेमी थे' ऐसा आपको आवारा मसीहा पढ़ते हुए किन–किन स्थानों पर लगता है? आप अपने सुन्दर पृथ्वी ग्रह के लिए क्या करना चाहेंगे?

2. नाना के घर से जाते ही शरत ने कहा कि 'कैट इज़ आउट, लैट माउस प्ले'.... इसके अंत में शरत ने हिन्दी अनुवाद करते हुए कहा कि 'खुशी से, खुशी से, ताक धिनाधिन'। क्या आप भी किसी अपने पसंदीदा गीत को अपनी क्षेत्रीय बोली या अन्य भाषा में अनूदित कर सकते हैं? इसे कक्षा में अपने सहपाठियों तथा शिक्षकों के साथ साझा करें।

3. शरत के समय के खेल और आज के समय के खेल बहुत बदल चुके हैं। दोनों समय के खेलों की सूची बनाने का प्रयास करें। क्या आप अपने सहपाठियों के साथ मिलकर कोई नया खेल बना सकते हैं?

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. शरत के पिता का व्यक्तित्व कैसा था?

   (क) शिल्पी मन और उन्मुक्त (ख) क्रोधी व झगड़ालू

   (ग) शिल्पी मन और उन्मुक्त (घ) रूढ़िवादी

2. आवारा मसीहा की विधा है?

(क) आत्मकथा (ख) जीवनी

(ग) उपन्यास (घ) कहानी

3. आवारा मसीहा के लेखक कौन हैं?

(क) विष्णु प्रभाकर (ख) रामवृक्ष बेनीपुरी

(ग) रांगेय राघव (घ) महादेवी वर्मा

4. आवारा मसीहा जीवनी किसके जीवन पर आधारित है?

(क) शरतचन्द्र (ख) बंकिमचन्द्र

(ग) हरीश्चन्द्र (घ) सतीशचन्द्र

5. पाठ में संकलित आवारा मसीहा जीवनी का कौन सा अंश है?

(क) दिशा की खोज (ख) दिशांत

(ग) दिशाहारा (घ) दिगांत

6. शरत और उसके पिता मोतीलाल में क्या–क्या समानताएं थीं?

(क) साहित्य प्रेमी (ख) सौंदर्य बोधी

(ग) प्रकृति प्रेमी (घ) सभी

7. शरत की माता का क्या नाम था?

(क) भुवनमोहिनी (ख) सुभद्रा

(ग) चन्द्रमोहिनी (घ) सुशीला

8. 'जो रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है, वह साधारण बालक नहीं है।' किसने कहा?

(क) अघोरनाथ (ख) अघोरनाथ के मित्र

(ग) काशीनाथ (घ) मोतीलाल

9. बच्चों के प्रति शरत के नाना की क्या मान्यता थी?

(क) ज्यादा प्यार नहीं देना चाहिए

(ख) कड़ी निगरानी में लालन पालन होना चाहिए।

(ग) शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

(घ) उपर्युक्त सभी

10.शरत कौन–कौन से बाल सुलभ कार्य किया करते थे?

(क) मछली पकड़ना (ख) नाव पर सैर करना

(ग) तितलियाँ पकड़ना (घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर–

1. (क) शिल्पी मन और उन्मुक्त
2. (ख) जीवनी
3. (क) विष्णु प्रभाकर
4. (क) शरतचन्द्र
5. (ग) दिशाहारा
6. (घ) सभी
7. (क) भुवनमोहिनी
8. (ख) अघोरनाथ के मित्र
9. (घ) सभी
10. (घ) सभी

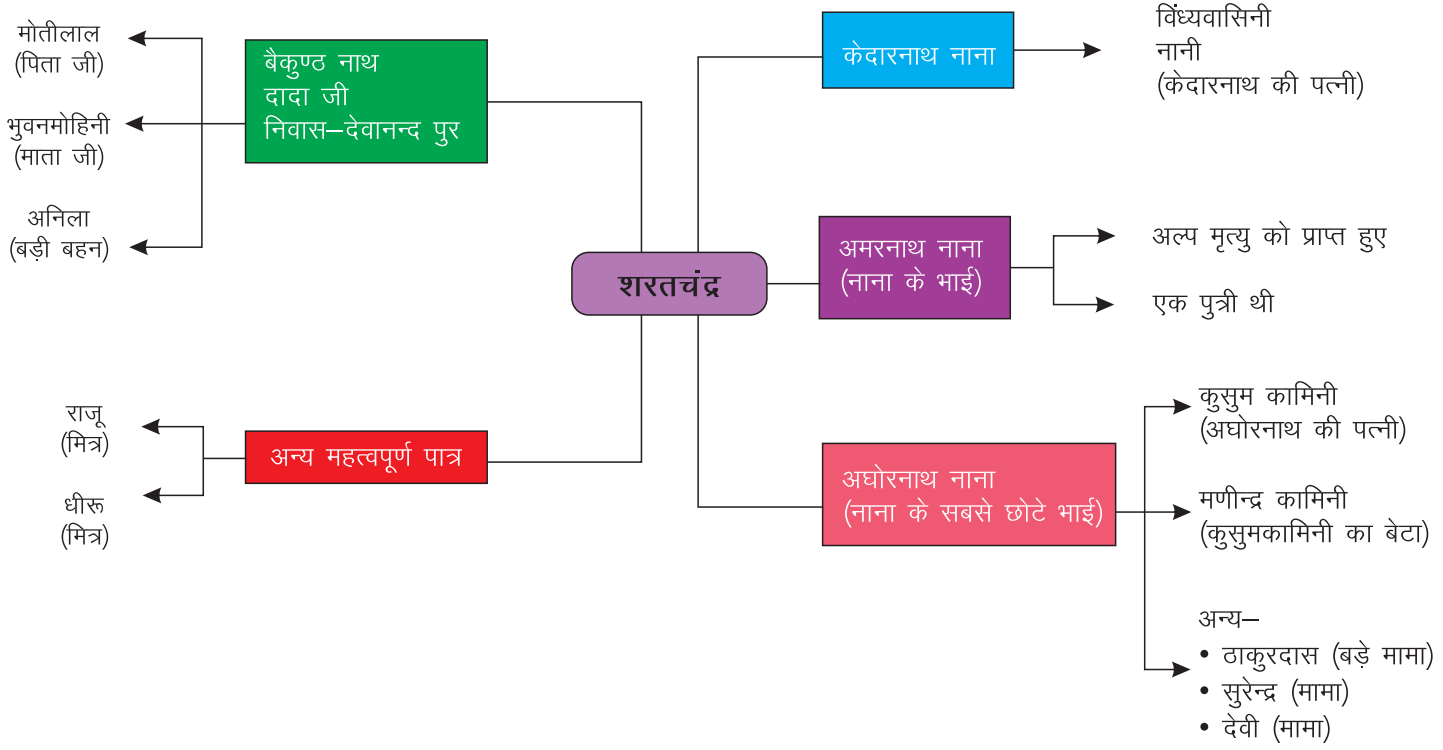
शरतचंद्र
बैकुण्ठ नाथ
दादा जी
निवास–देवानन्द पुर
मोतीलाल
(पिता जी)
भुवनमोहिनी
(माता जी)
अनिला
(बड़ी बहन)
अन्य महत्वपूर्ण पात्र
राजू
(मित्र)
धीरू
(मित्र)
केदारनाथ नाना
विंध्यवासिनी
नानी
(केदारनाथ की पत्नी)
अमरनाथ नाना
(नाना के भाई)
अल्प मृत्यु को प्राप्त हुए
एक पुत्री थी
अघोरनाथ नाना
(नाना के सबसे छोटे भाई)
कुसुम कामिनी
(अघोरनाथ की पत्नी)
मणीन्द्र कामिनी
(कुसुमकामिनी का बेटा)
अन्य–
• ठाकुरदास (बड़े मामा)
• सुरेन्द्र (मामा)
• देवी (मामा)

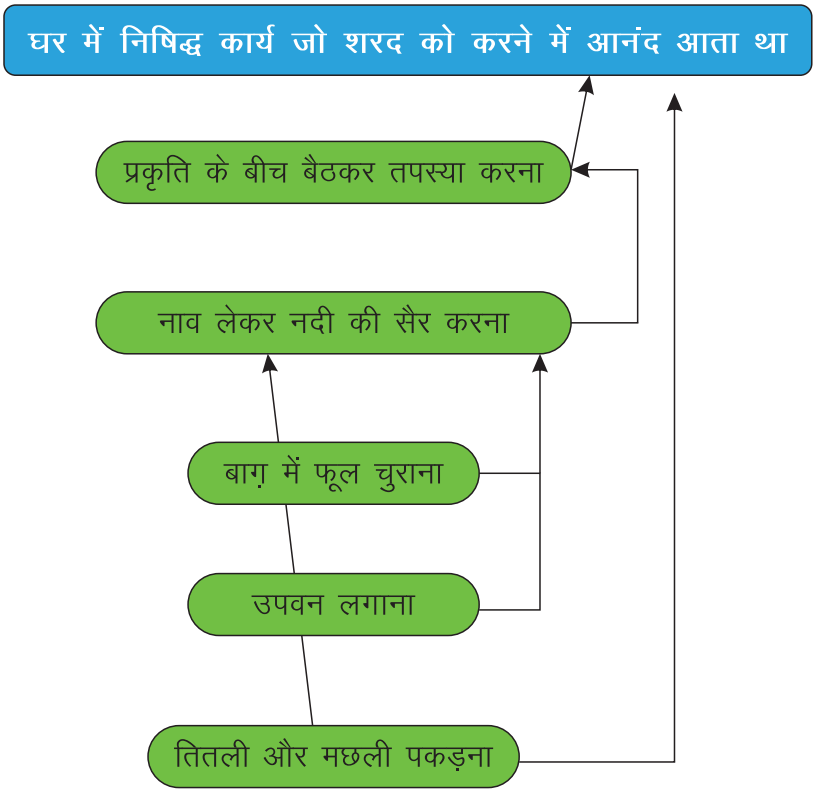
घर में निषिद्ध कार्य जो शरद को करने में आनंद आता था
प्रकृति के बीच बैठकर तपस्या करना
नाव लेकर नदी की सैर करना
बाग़ में फूल चुराना
उपवन लगाना
तितली और मछली पकड़ना

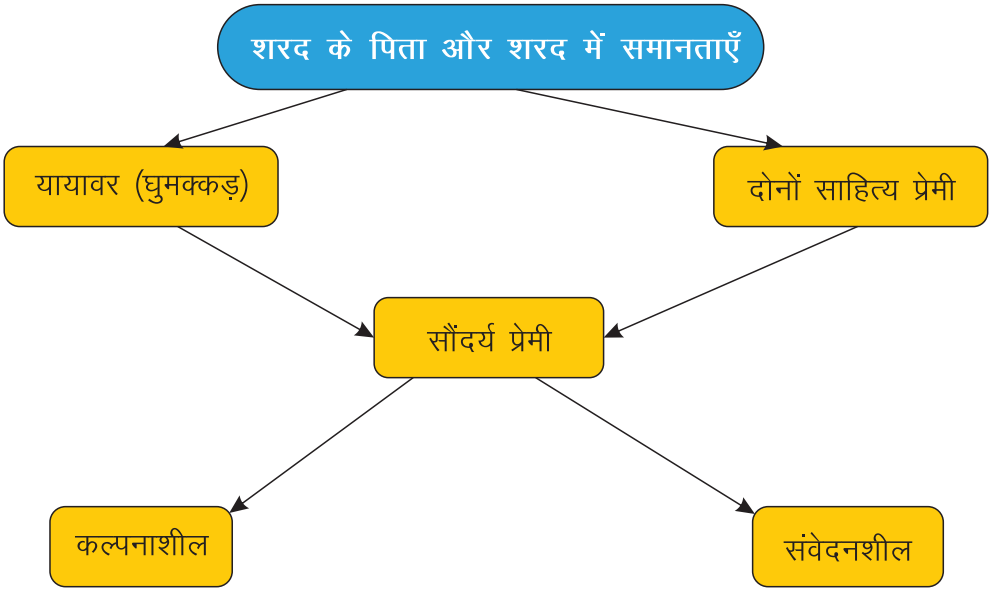
शरद के पिता और शरद में समानताएँ
यायावर (घुमक्कड़)
दोनों साहित्य प्रेमी
सौंदर्य प्रेमी
कल्पनाशील
संवेदनशील

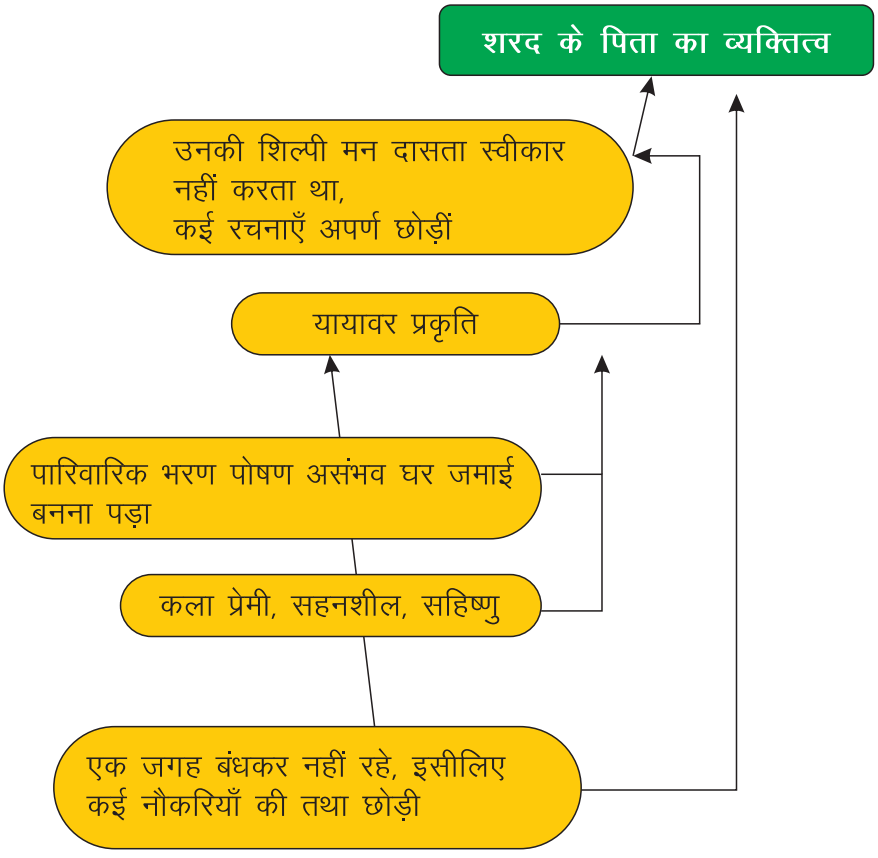
शरद के पिता का व्यक्तित्व
उनकी शिल्पी मन दासता स्वीकार नहीं करता था, कई रचनाएँ अपर्ण छोड़ीं
यायावर प्रकृति
पारिवारिक भरण पोषण असंभव घर जमाई बनना पड़ा
कला प्रेमी, सहनशील, सहिष्णु
एक जगह बंधकर नहीं रहे, इसीलिए कई नौकरियाँ की तथा छोड़ी

अभिव्यक्ति और माध्यम

1. जनसंचार माध्यम और लेखन।

2. पत्रकारिता के विविध आयाम।

3. डायरी लेखन की कला।

3. कथा पठकथा।

5. दृश्य लेखन।

4. कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया।
(प्रतिवेदन, प्रेस–विज्ञप्ति, स्ववृत्त लेखन, परिपत्र, कार्यसूची, कार्यवृत्त लेखन)

7. औपचारिक पत्र लेखन।

5. शब्दकोश, संदर्भ ग्रन्थों की उपयोग विधि और परिचय।

संचार

सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य–श्रव्य माध्यमों के जरिए सफलतापूर्व एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाना ही संचार है और इस प्रक्रिया को अंजाम देने में मदद करनेवाले तरीके संचार माध्यम कहलाते हैं।

संचार एक प्रक्रिया है जिसमें सूचना देने वाले और पाने वाले की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।

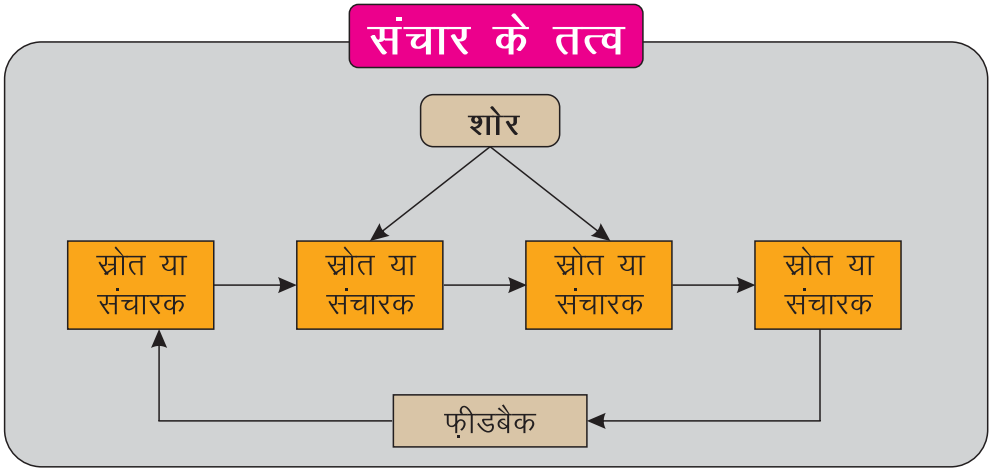

उदाहरण -:संचार के तत्व
शोर (जैसे सिग्नल ना होना)
क्या कल दीपावली मेले में घूमने चलें?
संचारक
सन्देश
माध्यम
प्राप्तकर्ता/रिसीवर
हाँ, हाँ, जरूर
फ़ीडबैक

मौखिक व अमौखिक संचार
मुख से बोलकर या
बिना बोले बात समझाना

→ **संचार के प्रकार** →

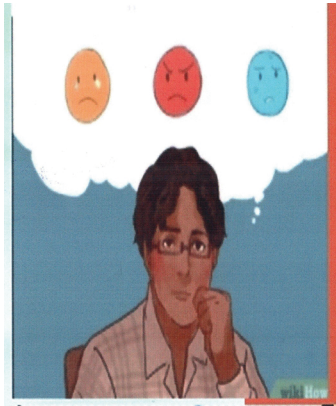

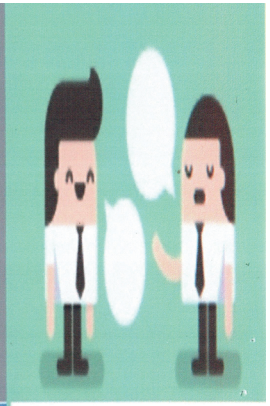

सांकेतिक संचार
संकेत के माध्यम से
बात समझाना

जनसंचार(मास कम्यूनिकेशन)-:किसी तकनीक या यांत्रिक माध्यम के ज़रिये समाज के एक विशाल वर्ग से सम्वाद कायम करना जनसंचार कहलाता है।

जनसंचार के परम्परागत माध्यम

दृश्य माध्यम-
शिलालेख,
चित्र,गुफाचित्र,नृत्य,मूर्ति आदि।

श्रव्य माध्यम-
गीत,वादन,कथा कहानी आदि

दृश्य श्रव्य-लोकनाटक ,कठपुतली,

जनसंचार के आधुनिक माध्यम

जनसंचार के माध्यम-:

1.प्रिंट माध्यम-:दृश्य माध्यम(पुस्तकें, पत्रिकाएँ, समाचार –पत्र,जर्नल(शोध पत्रिकाएँ),पैम्फलेट ।

2.इलेक्ट्रॉनिक माध्यम-:श्रव्य(रेडियो) व दृश्य-श्रव्य(टी .वी)

3.इंटरनेट माध्यम-:बहुमुखी माध्यम(समाचार पत्र के साइट,टेलीविजन साइट, गूगल,ई. मेल,यू. ट्यूब)

जनसंचार के कार्य

सूचना देना

मनोरंजन करना

निगरानी करना

शिक्षित करना

एजेंडा तय करना

विचार विमर्श के मंच

पाठ–1

जनसंचार माध्यम और लेखन

स्मरणीय बिन्दु –

1. **अर्थ** – 'चर' धातु से उत्पन्न संचार शब्द का अर्थ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना है । दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान–प्रदान संचार कहा जाता है।

   विल्बेर श्रेम (प्रसिद्ध संचार शास्त्री) के अनुसार संचार अनुभवों की साझेदारी है।

2. **संचार** – संचार जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है। सभी जीव संचार करते हैं। परन्तु मनुष्य बौद्धिक रूप से विकसित होने के कारण सर्वोत्तम संचार करता है। संचार माध्यमों के विकास में भौगोलिक दूरियाँ कम हो गई हैं एक अँगुली के स्पर्श से दूर बैठे अपनों से संचार कर सकते हैं।

   सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को मौखिक, लिखित अथवा दृश्य–श्रव्य माध्यमों के द्वारा सफलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचना ही संचार है।

   संचार एक प्रक्रिया है जिसमें सूचना देने वाले और पाने वाले दोनों की ही सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। एक के अभाव में भी ये संभव नहीं है, इस अर्थ में संचार अंतर क्रियात्मक (इंटरएक्टिव) प्रक्रिया है।

3. **संचार के विभिन्न तत्व –**

   1) स्रोत– संचार प्रक्रिया को प्रारम्भ करता है जो व्यक्ति अपने संदेश या सूचना को अन्य तक पहुँचाता है, वह स्रोत या संचारक कहलाता है।

   2) कूटीकृत या एन कोडिंग– संदेश की भाषा का ज्ञान संचारकर्त्ता व प्राप्तकर्त्ता दोनों को होना चाहिए।

   3) संदेश– सफल संचार के लिए संदेश का स्पष्ट और सीधा होना आवश्यक है।

   4) माध्यम (चैनल)– संदेश को किस माध्यम (टेलीफोन, समाचारपत्र, रेडियो, इंटरनेट) से संदेश प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचाया जाता है।

   5) डीकोडिंग– प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझना।

   6) फीडबैक– फीडबैक द्वारा पता चलता है कि संदेश सही रूप में प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचा या नहीं।

   7) शोर– संचार प्रक्रिया में आने वाली रुकावटें शोर कहलाती है शोर मानसिक

तकनीकी और भौतिक भी हो सकता है।

4. **संचार के प्रकार**

1) सांकेतिक संचार – जब संकेंतों से बात समझाई जाए।

2) मौखिक और अमौखिक संचार – जब मुख खोलकर, बोलकर संचार करें वह मौखिक संचार होता है और बिना मुख खोले बात समझाए, तब वह अमौखिक संचार है।

3) अंतः वैयक्तिक संचार – जब व्यक्ति अपने से बात करे अर्थात् मन में प्रश्न करें और उत्तर भी दे वह अंतः वैयक्त्कि संचार होता है।

4) अंतरवैयक्तिक संचार – जब दो व्यक्ति आमने–सामने बैठकर संचार करें वह अन्तर वैयक्तिक संचार कहलाता है।

5) समूह संचार – जब एक समूह आपस में विचार–विमर्श या चर्चा करें तो उसे समूह संचार कहते हैं।

6) जनसंचार– जब हम समूह से यांत्रिक या तकनीक के माध्यम से बात करते हैं तब उसे जनसंचार कहते हैं। यह माध्यम अखबार, रेडियों, टी.वी., सिनेमा या इंटरनेट कुछ भी हो सकता है।

5. **संचार के कार्य** – प्राप्ति नियंत्रण, सूचना, अभिव्यक्ति, सामाजिक संपर्क, समस्या समाधान, प्रतिक्रिया और भूमिका को पूरा करने के लिए संचार का प्रयोग किया जाता है।

6. **जन संचार के कार्य** – सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना, एजेंडा तय करना, निगरानी करना, विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मंच उपलब्ध करना।

7. आधुनिक जनसंचार के माध्यम पाश्चात्य तकनीक से प्रेरित हैं परन्तु भारतीय इतिहास गवाह है कि देवर्षि नारद पहले समाचार वाचक माने जाते हैं महाभारत काल में संजय की कल्पना जिसने युद्ध का आँखों देखा वर्णन धृतराष्ट्र को सुनाया था, एक समृद्ध संचार व्यवस्था की ओर इशारा करता है।

8. **जनसंचार के आधुनिक माध्यम** – समाचार–पत्र, पत्रिकाएँ, टेलीविजन, सिनेमा और इंटरनेट आदि हैं।

9. जनसंचार की मज़बूत कड़ी समाचार पत्र, पत्रिकाएँ या प्रिंट–माध्यम है? यही समाचारों के आदान–प्रदान का मुख्य साधन माना जाता है। पत्रकारिता के तीन पहलू हैं– पहला, समाचारों को संकलित करना। दूसरा, उन्हें संपादित कर छपने लायक बनाना। तीसरा, पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाठको तक पहुँचाना।

संवाददाता जो खबरें एकत्रित करके लाते हैं उन्हें व्यवस्थित ढंग से छापने का काम संपादक करता है।

10. 400 साल पहले ही अखबारी पत्रकारिता अस्तित्व में आई परन्तु भारत में इसकी शुरूआत 1780 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के बंगाल गजट से हुई। जो कोलकाता से निकला था। हिन्दी का पहला साप्ताहिक पत्र 'उदंत मार्तंड' भी 1826 में कोलकाता से ही प्रकाशित हुआ। जिसका संपादन पं जुगलकिशोर शुक्ल ने किया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने बहुत सी पत्र–पत्रिकाएँ निकालकर इस क्षेत्र में विशेष योगदान दिया।

11. स्वतन्त्रता से पूर्व पत्रकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, राम वृक्ष बेनीपुरी और बालमुकुंद गुप्त हैं।

12. **प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ** – 'केसरी', हिन्दुस्तान, सरस्वती, हंस, 'कर्मवीर', प्रताप, प्रदीप और विशाल भारत आदि है।

आज़ादी के बाद प्रमुख पत्रकारों में सच्चिदानन्द, हीरानन्द वात्स्यायन, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, राजेन्द्र माथुर आदि है।

समाचार पत्र– नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, नई दुनिया, अमर उजाला, दैनिक जागरण आदि है।

पत्रिकाएँ – धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, इन्डिया टुडे और साप्ताहिक कादम्बनी हैं।

13. **रेडियों** – रेडियों जनसंचार का श्रव्य माध्यम है जो सर्वाधिक लोकप्रिय है। 1895 में इटली के जी. मार्कोनी ने वायरलैस की खोज की और उसी का रुपान्तर रेडियों है। 1921 में मुंबई में टाइम्स ऑफ इंडिया डाक तार विभाग की ओर से संगीत कार्यक्रम प्रसारित हुआ। 1936 में ऑल इण्डिया रेडियों की स्थापना हुई आज देश में 350 से अधिक निजी रेडियों स्टेशन का जाल बिछ गया है।

14. **टेलीविजन** – यह दृश्य –श्रव्य माध्यम है। इसकी विश्वसनीयता सर्वाधिक है। 1927 में बेल टेलीफोन लेबोरैट्रीज में न्यूयार्क और वांशिगटन के बीच प्रायोगिक टेलीविज़न कार्यक्रम का प्रसारण किया। 1936 में बी.बी.सी. ने अपनी टेलीविज़न सेवा प्रारम्भ की। भारत में टेलीविज़न की शुरूआत 15 सितंबर 1959 को हुई जिसका उद्देश्य शिक्षा के सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करना था। 15 अगस्त 1965 में स्वतंत्रता दिवस से विधिवत टी.वी. सेवा प्रारंभ हुई । 1 अप्रैल 1976 से इसे आकाशवाणी से अलग कर दूरदर्शन का नाम दिया गया।

जनतंत्र को प्रबल बनाने में जहाँ समाज में पुराने मूल्य टूट रहे हों और नए न बन

रहे हों, दूरदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

15. **सिनेमा** – मनोरंजन के साथ–साथ परोक्ष रुप में सूचना ज्ञान और संदेश देने का काम करता है। सिनेमा का अविष्कार का श्रेय थॉमस अल्वा एडीसन को जाता है। 1894 में फ्रांस में पहली फिल्म 'द अराइवल ऑफ ट्रेन' बनी। भारत में पहली मूक फिल्म 1913 में 'राजा हरिश्चन्द्र' दादा साहब फल्के द्वारा बनाई गई । 1931 में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' बनी। इस समय भारत विश्व का सबसे बड़ा फिल्म निर्माता देश है यहाँ हिन्दी के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषा और बोली में भी फिल्में बनती हैं।

16. **इन्टरनेट** – इंटरनेट जनसंचार का सबसे आधुनिक और लोकप्रिय माध्यम है। रेडियों, टेलीविज़न, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि इसमें पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद है। यह एक अन्तर्क्रियात्मक माध्यम है। जिसमें प्रयोगकर्ता मूकदर्शक नहीं है, वह चर्चा बातचीत का एक हिस्सा होता है। इंटरनेट ने संचार की नई संभावनाएँ जगा दी हैं हमें विश्वग्राम का सदस्य बना दिया है। अश्लील पन्नों व आपराधिक गतिविधियों के कारण इसके दुरुपयोग की घटनाएँ सामने आने लगी है।

17. **जनसंचार माध्यमों का प्रभाव** – जनसंचार माध्यमों के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। अखबार पढ़े बिना हमारी सुबह नहीं होती। रेडियों, टेलीविज़न, मनोरंजन के साथ–साथ समाचार, ज्ञान–विज्ञान, बाज़ार भाव, विज्ञापन देते हैं। इंटरनेट का प्रयोग शादी ब्याह के लिए, टिकट बुक करवाने के लिए कोई भी बिल जमा कराने, बैंक के काम घर से करने के लिए करते हैं। ऐसा लगता है पूरी दुनिया नेट पर निर्भर है। सदुपयोग के साथ–साथ दुरूपयोग भी हो रहा है। नेट–क्राइम बढ़ता जा रहा है जहाँ सिनेमा, टी.वी. वास्तविकता से परे काल्पनिक दुनिया में पहुँचा देते हैं। वहीं वे अपराधों के नए–नए तरीके सिखा देते हैं हिंसा और अश्लीलता युवा वर्ग को प्रभावित करती है। विज्ञापनों के जाल में मनुष्य फंस जाता है। अखबार और टेलीविज़न चैनलों में कुछ खास मुद्दों को उछाला जाता है। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि जहाँ एक ओर लोग शिक्षित, सचेत और जागरुक हो रहे हैं वहीं नकारात्मक प्रभाव उन्हें भ्रमित, पथभ्रष्ट और चरित्र पर प्रभाव डाल रहे हैं। एक जागरूक पाठक व श्रोता होने के नाते हमें आँखें, कान और दिमाग सदा खुले रखने जाहिर।

जनसंचार माध्यमों की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि उनमें अनेक द्वारपाल (गेटकीपर) कार्य करते हैं। द्वारपाल का कार्य जनसंचार से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित एवम् निर्धारित करना है। किसी जनसंचार माध्यम

में काम करने वाले द्वारपाल ही निश्चित करते हैं कि वहाँ किस प्रकार की सामग्री प्रकाशित अथवा प्रसारित की जाएगी।

प्रश्न–विचार

लघुत्तरीय प्रश्न–

1. संचार से आप क्या समझते हैं?
2. मौखिक एवं अमौखिक संचार में क्या अंतर हैं?
3. अंतःवैयक्तिक संचार से आप क्या समझते हैं?
4. अंतरवैयक्तिक संचार क्या है?
5. संचार के विभिन्न तत्व कौन–कौन–से हैं?
6. फीडबैक क्या है?
7. एनकोडिंग किसे कहते हैं?
8. डीकोडिंग किसे कहते हैं?
9. जनसंचार क्या है?
10. जनसंचार के आधुनिक माध्यम कौन–कौन से हैं?
11. जन संचार में द्वारपाल की क्या भूमिका है?
12. द्वारपाल किसे कहते हैं?
13. भारत में पहला समाचार वाचक किसे माना जाता है?
14. अखबारी पत्रकारिता को अस्तित्व में आए कितने वर्ष हो गए?
15. भारत में पत्रकारिता की शुरूआत कब और किससे हुई?
16. भारत के पहले साप्ताहिक पत्र और उसके संपादक का नाम लिखिए।
17. आज़ादी से पूर्व के दो पत्रकारों एवं दो पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
18. स्वतंत्रता के बाद के दो पत्रकारों व पत्रिकाओं के नाम लिखिए।
19. रेडियों का आविष्कार किसने किया?
20. ऑल इंडिया रेडियों की स्थापना कब हुई?
21. एफ. एम. रेडियों कब से प्रारम्भ हुआ?
22. भारत में टी.वी. की शुरुआत कब से हुई?
23. सिनेमा का आविष्कार किसने कहाँ किया?
24. भारत में पहली फिल्म बनाने का श्रेय किसे जाता है?
25. भारत में पहली मूक फिल्म कब बनी और इसका क्या नाम था?

26. पहली बोलती फिल्म कब बनी और इसका क्या नाम था?

27. इंटरनेट के लाभ लिखें।

28. जनसंचार माध्यम का एक लाभ व एक दुष्परिणाम लिखें।

29. पत्रकारिता के तीन पहलू कौन–कौन से हैं?

30. रेडियों किस प्रकार का संचार माध्यम है?

31. टेलीविज़न जन–संचार का कैसा माध्यम है?

32. जन संचार का आधुनिक व लोकप्रिय माध्यम कौन–सा है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'भारत के जनसचांर माध्यमों का विकास पर टिप्पणी लिखिए।

2. अनुच्छेद लिखो– समाचार पत्र, रेडियों, सिनेमा, टेलीविजन।

3. आज के युग में इंटरनेट का महत्त्व।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. गांव की पंचायत या समिति की बैठक किस प्रकार के संचार का उदाहरण है?

   (क) अंतर वैयक्तिक संचार

   (ख) समूह संचार

   (ग) जनसंचार

   (घ) अंतः वैयक्तिक

2. नौकरी और दाखिले के लिए होने वाले इंटरव्यू में किस प्रकार के संचार का प्रभावी कौशल होना चाहिए?

   (क) अंतर वैयक्तिक (ख) समूह संचार

   (ग) जनसंचार (घ) अंतः वैयक्तिक

3. किस प्रकार के संचार में संदेश सबके लिए होते हैं?

   (क) अंतर वैयक्तिक संचार (ख) समूह संचार

   (ग) जनसंचार (घ) अंतः वैयक्तिक

4. जनसंचार माध्यमों में द्वारपाल होते हैं–

   (क) संवाददाता (ख) संपादक

   (ग) पाठक (घ) श्रोता

5. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य जनसंचार के कार्यों के अंतर्गत नहीं आता?

(क) मनोरंजन करना (ख) एजेंडा तय करना

(ग) विचार विमर्श के मंच (घ) असामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करना।

6. 'खबरों के संचार' को क्या कहा जाता है–

(क) कौशल (ख) समाचार

(ग) पत्रकारिता (घ) माध्यम

7. रेडियो को एक अद्‌भुत शक्ति किसने कहा था?

(क) जी मारकोनी (ख) महात्मा गांधी

(ग) सरदार वल्लभभाई पटेल (घ) उपरोक्त सभी

8. दूरदर्शन के उद्‌देश्य क्या हैं?

(क) सामाजिक परिवर्तन (ख) पर्यावरण संरक्षण

(ग) राष्ट्रीय एकता (घ) उपरोक्त सभी

9. निम्नलिखित में से कौन–सा माध्यम अंतर क्रियात्मक है?

(क) इंटरनेट (ख) समाचार पत्र

(ग) रेडियो (घ) टेलीविजन

10. जनसंचार माध्यमों का संबंध किससे है?

(क) सार्वजनिक हित (ख) धार्मिक हित

(ग) राजनैतिक हित (घ) व्यावसायिक हित

उत्तर–

1. (ग) समूह संचार 2. (क) अंतर वैयक्तिक संचार
3. (ग) जनसंचार 4. (ख) संपादक,
5. (घ) असामाजिक व्यवहार को प्रोत्साहित करना
6. (ग) पत्रकारिता 7. (ख) महात्मा गांधी
8. (घ) उपरोक्त सभी 9. (क) इंटरनेट
10. (क) सार्वजनिक हित

पत्रकारिता के विविध आयाम

स्मरणीय बिन्दु –

1. मनुष्य अपने सहज स्वभाव के कारण अपने आस–पास व दूर की जानकारी रखना चाहता है, ज्ञान अर्जित करना चाहता है। उसकी इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए ही पत्रकारिता का विकास हुआ है। अतः पत्रकारिता का मूल तत्व जिज्ञासा है।

2. पत्रकारिता क्या है ? पत्रकारिता, अंग्रेजी जर्नलिज़्म का हिन्दी अनुवाद है। जर्नल शब्द का प्रयोग पत्रिका के लिए होता है मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार–'पत्रकारिता शीघ्रता में लिखे जाने वाला साहित्य है। पत्रकार देश–विदेश की घटनाओं, समस्याओं और सूचनाओं को संकलित कर समाचार रुप में ढाल कर प्रस्तुत करते हैं। इसी प्रक्रिया को पत्रकारिता कहते हैं।

3. समाचार – हर घटना समाचार नहीं होती। समाचार के रुप में उन्हीं घटनाओं, सूचनाओं और मुद्दों को चुना जाता है जिन्हें जानने में अधिक से अधिक लोगों की रुचि हो। किसी घटना को समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्वों का होना आवश्यक है। समाचार किसी भी ऐसी ताजा घटना, विचार या समस्या की रिपोर्ट है जिसमें अधिक से अधिक लोगों की रूचि हो और जिसका प्रभाव अधिक से अधिक लोगों पर पड़े।

4. समाचार के आवश्यक तत्व –

   क) नवीनता – समाचार बनने के लिए 'न्यू' होने पर ही वह न्यूज है। दैनिक समाचार पत्र रात 12 बजे तक के समाचार कवर करता है जो (डेडलाइन) समय सीमा होती है।

   ख) निकटता– लोग उन घटनाओं को जानना चाहते हैं जो भौगोलिक, सामाजिक व सांस्कृतिक रुप में उनसे जुड़ी हों।

   ग) प्रभाव – घटना की तीव्रता इससे पता चलती है कि उससे कितने लोग प्रभावित होते हैं।

   घ) जनरुचि – किसी घटना, विचार या समस्या के समाचार बनने के लिए यह भी आवश्यक है कि उसमें आम लोगों की रूचि हो।

ड.) टकराव या संघर्ष– लोगों की टकराव या संघर्ष के बारें में स्वाभाविक दिलचस्पी होती है जैसे चुनाव के दिनों में राजनैतिक दलों के संघर्ष में लोग रुचि रखते हैं।

च) महत्वपूर्ण लोग– महत्वपूर्ण लोगों से सम्बन्धित जानकारी में लोग विशेष रुचि रखते हैं।

छ) उपयोगी जानकारी– उपयोगी जानकारियाँ भी समाचार की भूमिका निभाती हैं इन्हें जानने में आम लोगों की गहन दिलचस्पी होती है।

ज) अनोखापन– अनोखापन लिए हुए घटनाएँ भी समाचार पत्रों में। विशेष भूमिका निभाती हैं जैसे किसी शुष्क स्थान पर अत्यधिक वर्षा या बाढ़।

झ) पाठक वर्ग– समाचारीय घटना का महत्त्व इससे भी तय होता है कि खास समाचार का पाठक वर्ग कौन है? पाठक वर्ग की रूचियों और जरूरतों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

नीतिगत ढाँचा– विभिन्न समाचार संगठनों की समाचारों के चयन और प्रस्तुति को लेकर एक नीति होती है। इस नीति को 'संपादकीय नीति' कहते हैं। नीतिगत ढाँचा तथा संपादक ही तय करता है कि कौन–सी खबर चुनी जाए तथा उसकी प्रस्तुति किस प्रकार की जाए।

संपादन का अर्थ है किसी सामग्री की अशुद्धियों को दूर करके उसे पठनीय बनाना। उपसंपादक अपने संवाददाता की खबरों की भाषा, व्याकरण, वर्तनी तथा तथ्यपरक अशुद्धियों को दूर करके उसे प्रकाशित करने का स्थान तय करता है।

5. **संपादन के सिद्धान्त** – पत्रकारिता को खास बनाए रखने के लिए इन सिद्धान्तों का पालन करना आवश्यक हो जाता है।

क) निष्पक्षता (फेयरनेस) – पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना जरूरी है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है। निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। इसे सही–गलत, न्याय–अन्याय को ध्यान में रख किया जाता है।

ख) तथ्यों की शुद्धता (एक्युरेसी) – मीडिया या पत्रकारिता यथार्थ का प्रतिबिंब है। अतः तथ्यों को तोड़–मोड़ कर नहीं प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

ग) **वस्तुपरकता (आब्जेक्टीविटी)** – एक पत्रकार समाचार के लिए तथ्यों का आंकलन अपनी धारणा के आधार पर न करे, उसका वास्तविक रूप प्रस्तुत करें।

घ) **संतुलन (बैलेंस)** – समाचार को किसी एक पक्ष में झुका नहीं होना चाहिए। दोनों पक्षों की बात बराबर लानी चाहिए।

ड़) **स्रोत (सोर्सिंग एट्रीब्यूशन)** – किसी भी समाचार में शामिल की गई सूचना एवं जानकारी का कोई स्रोत होना आवश्यक है। स्रोत का उल्लेख आवश्यक हो जाता है।

6. **पत्रकारिता के अन्य आयाम** – इनके बिना कोई समाचार, पत्र स्वयं को पूर्ण नहीं मान सकता ।

क) **संपादकीय** – यह समाचार पत्र का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ होता है। संपादक इस पृष्ठ पर अपनी राय प्रकट करता है। इस पृष्ठ पर विभिन्न विषयों के विशेषज्ञो के लेख होते हैं। संपादक के नाम पत्र भी इसी पृष्ठ पर होते हैं। वह घटनाओं पर आम लोगों की टिप्पणी होती है।

ख) **फोटो पत्रकारिता** – जो बात हजार शब्द स्पष्ट नहीं कर सकते उसे एक फोटो स्पष्ट कर देती हैं यह बहुत प्रभावशाली माध्यम है।

ग) **कार्टून कोना** – कार्टून के माध्यम से की गई धारदार टिप्पणियाँ सीधे पाठक के मन को छूती हैं।

घ) **रेखांकन और कार्टोग्राफ** – इनके प्रयोग से शब्दों के बिना ही आँकड़ों को ग्राफ के द्वारा एक नज़र में समझाया जाता है। इसका प्रयोग समाचार पत्रों के अलावा टी.वी. में भी होता है।

7. **पत्रकारिता के प्रकार** –

क) **खोजपरक पत्रकारिता** – ऐसी पत्रकारिता जिसमें गहराई से छानबीन करके ऐसे तथ्यों व सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश की जाती है, जिन्हें दबाने या छुपाने का प्रयास किया जा रहा हो। आज इसी को स्टिंग ऑपरेशन कहा जाता है।

ख) **विशेषीकृत पत्रकारिता** – संसदीय, न्यायालय (कानून), आर्थिक, खेल विज्ञान, विकास, अपराध, फैशन और फिल्मों से संबंधित पत्रकार उस क्षेत्र की विशेषज्ञता प्राप्त होते हैं।

ग) **वॉचडॉग पत्रकारिता** – जब मीडिया सरकार के काम काज पर निगाह रखकर होने वाली गड़बड़ी का पर्दाफाश कर जनता के समक्ष लाती है तो उसे वॉचडॉग पत्रकारिता कहते हैं।

घ) **एडवोकेसी पत्रकारिता** – जब कोई समाचार संगठन किसी मुद्दे को उछाल कर उसके पक्ष में जनमत हासिल करने के लिए अभियान चलाते हैं तो उसे एडवोकेसी या पक्षधर पत्रकारिता कहते है।

ड़) **वैकल्पिक पत्रकारिता** – जो मीडिया स्थापित व्यवस्था के विकल्प को सामने लाने और उसके अनुकूल सोच को अभिव्यक्त करता है उसे 'वैकल्पिक मीडिया' कहा जाता है।

8. एक अच्छे पत्रकार को सफल होने के लिए पत्रकारिता के मूल्यों को ध्यान में रखना पड़ता है। इन्हीं मूल्यों को पत्रकार की बैसाखियाँ कहा जाता है–

क) सच्चाई ख) संतुलन 3) निष्पक्षता 4) स्पष्टता

9. संपादक मंडल – यह एक संगठन है जिसमें संपादक, संयुक्त संपादक, सहायक संपादक, विशेष संपादक, मुख्य संपादक, उप–संपादक, संवाददाता और प्रूफ रीडर शामिल होते हैं।

10. समाचार माध्यमों का मौजूदा रुझान – व्यापारीकरण के कारण सभी अधिक–से अधिक धन कमाना चाहते हैं। अतः अपने समाचार–पत्र अथवा चैनल को लोकप्रिय बनाने के लिए सनसनीखेज खबरें 'पीत पत्रकारिता' या पेज–थ्री का प्रयोग अधिक से अधिक करते हैं।

11. पत्रकारिता का महत्व –

1) देश–विदेश की गतिविधियों की जानकारी देती है।
2) जनसामान्य को उसके कर्त्तव्य और अधिकारों की जानकारी देती है।
3) रोजगार के अवसर तलाशने में सहायक है।
4) राष्ट्रीय चेतना का सशक्त आधार है।
5) युगीन समस्याओं से जनता को जोड़ती है।
6) मानव कल्याण की प्रेरणा देती है।

पीत पत्रकारिता– यह पत्रकारिता सनसनी फैलाने का कार्य करती है। पीत पत्रकारिता में अखबार अफवाहों, व्यक्तिगत आरोपों–प्रत्यारोपों, प्रेम संबंधों, भंडाफोड़ और फिल्मी गपशप को समाचार की तरह प्रकाशित करते हैं।

पेज़ थ्री–इसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों, महफिलों और जाने–माने लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह आमतौर पर पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती है। इसलिए इसे पेज़ थ्री पत्रकारिता कहते हैं। आजकल इसकी पृष्ठ संख्या अलग भी हो सकती है।

डेडलाइन–समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशित या प्रसारित होने के लिए पहुँचने की आखिरी समय–सीमा को डेडलाइन (समय–सीमा) कहते हैं।

न्यूज़पेग–किसी मुद्दे पर लिखे जा रहे लेख या फीचर में उस नवीनतम घटना का उल्लेख जिसके कारण वह मुद्दा चर्चा में आ गया हो।

प्रश्न विचार – लघुत्तरीय प्रश्न –

1. पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?
2. पत्रकारिता के मूल में कौन–सा भाव होता है?
3. समाचार क्या है?
4. समाचार के मुख्य तत्व कौन–कौन से हैं?
5. समाचार के संदर्भ में डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?
6. संपादन के प्रमुख सिद्धान्त कौन–कौन से हैं?
7. वस्तुपरकता एवं तथ्यपरकता में क्या अंतर है?
8. पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना क्यों आवश्यक है?
9. पत्रकारिता कितने प्रकार की होती है? उनके नाम लिखिए।
10. पीत पत्रकारिता क्या है?
11. 'न्यूज' का क्या अर्थ है?
12. 'संपादन' से आप क्या समझते हैं?
13. संपादकीय नीति से क्या अभिप्राय है?

14. फोटो पत्रकारिता का क्या महत्व है?
15. स्टिंग ऑपरेशन का क्या आशय है?
16. पत्रकारिता में विशेषज्ञता के प्रमुख क्षेत्र कौन–कौन से हैं?
17. वॉचडॉग पत्रकारिता का क्या तात्पर्य है?
18. एक सफल पत्रकार को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।
19. पत्रकार की बैसाखियाँ किन्हें माना जाता है?
20. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरूआत कब हुई?

दीर्घ उत्तर –

1. समाचार किसे कहा जाता है? समाचार के तत्वों पर प्रकाश डालिए।
2. संपादन के सिद्धान्तों पर प्रकाश डालिए।
3. पत्रकारिता के अन्य आयाम बताइए।

पाठ पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

1. पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है?

   (क) जिज्ञासा (ख) विविधता

   (ग) उपयोगी जानकारियाँ (घ) उपरोक्त सभी

2. किसी घटना के समाचार बनने के लिए किस तत्व को शामिल होना चाहिए?

   (क) नवीनता (ख) पाठकों की रुचि

   (ग) अनोखापना (घ) उपरोक्त सभी

3. अखबार या पत्रिका में समाचारों या रिपोर्ट को प्रकाशन के लिए स्वीकार करने के लिए एक निश्चित समय सीमा को क्या कहा जाता है–

   (क) डेडलाइन (ख) हैडलाइन

   (ग) टाइमलाइन (घ) लिमिट लाइन

4. यूट्यूब/इंटरनेट पर दिखाई जाने वाली विभिन्न वीडियो क्लिप्स में संपादन का कौन सा सिद्धांत संदिग्ध होता है?

   (क) स्रोत (ख) संतुलन

   (ग) तथ्यों की शुद्धता या तथ्यपरकता

   (घ) उपरोक्त सभी

5. कौन सी पत्रकारिता सार्वजनिक महत्व के मामले में भ्रष्टाचार और अनियमितताओं और गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश करती है?

   (क) खोजी पत्रकारिता (ख) विशेषीकृत पत्रकारिता

   (ग) एडवोकेसी (घ) वाचडॉग पत्रकारिता

6. समाचार मीडिया की सबसे बड़ी ताकत होती है–

   (क) सनसनीखेज खबरें (ख) साख और प्रभाव

   (ग) आकर्षक एंकर (घ) प्रस्तुतीकरण

7. पत्रकार में कैसा गुण होना चाहिए?

   (क) निष्पक्षता (ख) सच्चाई

   (ग) स्पष्टता (घ) उपरोक्त सभी

8. अखबार विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय किस पृष्ठ पर रखता है?

(क) पेज थ्री (ख) मुखपृष्ठ

(ग) संपादकीय पृष्ठ (घ) उपरोक्त सभी

9. निम्न में से किसे समाचार नहीं कहा जाएगा?

(क) प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना

(ख) किसी घटना की रिपोर्ट

(ग) समय पर दी जाने वाली हर सूचना

(घ) सहकर्मियों का आपसी कुशलक्षेम या किसी मित्र की शादी।

10. समाचार पत्र में प्रकाशित होते हैं–

(क) कार्टून (ख) विज्ञापन

(ग) लेख (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर–

1. (क) जिज्ञासा 2. (घ) उपरोक्त सभी
3. (क) डेडलाइन
4. (ग) तथ्यों की शुद्धता या तथ्यपरकता
5. (क) खोजी पत्रकारिता 6. (ख) साख और प्रभाव
7. (घ) उपरोक्त सभी 8. (ग) संपादकीय पृष्ठ
9. (घ) सहकर्मियों का अपासी कुशलक्षेम या किसी मित्र की शादी
10. (घ) उपरोक्त सभी

डायरी लिखने की कला

स्मरणीय बिन्दु –

1. डायरी क्या है? – डायरी एक मोटी जिल्दवाली नोटबुक होती है जिसके पन्नों पर साल के 365 दिनों की तिथियाँ क्रम से सजी होती हैं। हर पृष्ठ पर खाली जगह छूटी होती है। जिसे हम सूचनाओं या निजी बातों को दर्ज करने के लिए करते हैं।

2. डायरी एक व्यक्तिगत दस्तावेज है जिसमें हम अपने जीवन के कुछ विशेष क्षणों में घटित अनुभवों, विचारों, घटनाओं, मुलाकातों आदि का विवरण लिखते हैं।

3. डायरी–लेखन नितांत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और उससे संबंधित बौद्धिक –भावनात्मक समस्त प्रतिक्रियाओं का लेखा–जोखा है। जिस बात को हम दुनिया में किसी और व्यक्ति के सामने नहीं कह सकते उन्हें डायरी में लिखते हैं।

4. डायरी–लेखन में हम खुद को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं तथा अपने अंदर अनजाने में जमा हो रहे भार से मुक्त होते हैं इससे हमें अपने गुणों और अवगुणों का ज्ञान होता है जो हमारी कमियों को दूर करने में सहायक होता है।

5. डायरी–लेखन हमें अपने अंतरंग के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्रदान करता है। डायरी के माध्यम से हम अपने अतीत का स्मरण कर सकते हैं।

6. डायरी लिखते समय कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है –डायरी लिखना अपने साथ एक अच्छी दोस्ती कायम करने का बेहतरीन ज़रिया है। डायरी या तो किसी नोटबुक में या पुराने साल की डायरी में लिखी जानी चाहिए। पुराने साल की डायरी में पहले की छपी हुई तिथियों की जगह अपने हाथ से तिथि डालनी चाहिए।

7. कुछ प्रसिद्ध डायरियाँ और उनके लेखक

   क) द् डायरी ऑफ अ यंग गर्ल – एनी फ्रैंक

   ख) एक साहित्यकार की डायरी– गजानन माधव मुक्तिबोध

   ग) पैरों में पंख बाँध कर – राम वृक्ष बेनीपुरी

   घ) रुस में पच्चीस मास– राहुल सांकृत्यायन

   ड़) सुदूर दक्षिण पूर्व – सेठ गोविंद दास

   च) हरी घाटी – डॉ. रघुवंश

बोधात्मक प्रश्न

लघुत्तरीय प्रश्न

प्रश्न–विचार

1. डायरी–लेखन क्या है?
2. डायरी हमारा किससे साक्षात्कार करती है?
3. किन्हीं दो प्रसिद्ध डायरियों एवं उनके लेखकों के नाम लिखिए।
4. 'रूस में पच्चीस मास' किसकी रचना है?
5. डायरी–लेखक की भाषा–शैली कैसी होनी चाहिए?
6. डायरी किस समय लिखनी चाहिए।
7. ऐनी फ्रैंक का जन्म कहाँ हुआ था?
8. ऐनी फ्रैंक की डायरी किस नाम से प्रकाशित हुई ?
9. ऐनी की डायरी में कब से कब तक का वर्णन किया गया है?
10. ऐनी फ्रैंक की मूल डायरी किस भाषा में लिखी गई है। इस डायरी की प्रसिद्धि का मुख्य कारण क्या है?
11. डायरी लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

कथा–पट कथा

स्मरणीय बिन्दु –

1. पटकथा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है 'पट' और 'कथा'। पट का अर्थ है परदा और कथा का अर्थ है कहानी जो छोटे यानी दूरदर्शन या बड़े परदे यानी फिल्म किसी पर भी दिखाई जाए पटकथा कहलाती है। फिल्म व टी.वी. की पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से बहुत मिलती है। अंग्रेजी में इसे भी स्क्रीनप्ले कहते हैं। पटकथा लेखक, पत्रकार एवं साहित्यकार मनोहर श्याम जोशी ने अपनी पुस्तक 'पटकथा लेखन–एक परिचय में लिखा है–

   ''पटकथा कुछ और नहीं, कैमरे से फिल्म के परदे पर दिखाए जाने के लिए लिखी गई कथा है।

2. पटकथा के स्रोत – पटकथा तैयार करने के लिए सबसे पहले कथा का चयन किया जाता है। यह कथा हमारी जिंदगी, कोई घटना, इतिहास अथवा किसी सच्चे किस्से या साहित्य की किसी अन्य विधा पर आधारित होती हैं।

3. पटकथा की संरचना – अंग्रेजी के शब्द स्क्रीन प्ले 'पटकथा' के निम्न अंग होते हैं –

   1) पात्र–नायक प्रतिनायक होते हैं।

   2) इसमें द्वन्द्व–टकराहट और फिर समाधान होता है।

   3) इसमें अलग–अलग घटनास्थल होते हैं।

   4) इसमें दृश्य भी होते हैं।

4. नाटक और फिल्म की पटकथा में अन्तर –

   क) नाटक के दृश्य लम्बे होते हैं फिल्म के छोटे।

   ख) नाटक के घटनास्थल सीमित होते हैं फिल्म के असीमित।

   ग) नाटक एक सजीव कला माध्यम है।

   घ) नाटक में कथा का विकास रेखीय होता है फिल्म में विकास कई प्रकार से होता है।

5. फ्लैश बैक / फ्लैश फॉरवर्ड – फ्लैश बैक वह तकनीक हैं जिसमें अतीत में घटी किसी घटना को दिखाया जाता है। फ्लैश फॉरवर्ड में भविष्य में होने वाली किसी घटना को पहले दिखा देते हैं। फ्लैश बैक और फ्लैश फॉरवर्ड दोनों युक्तियों का प्रयोग करने के बाद हमें वर्तमान में आना जरूरी है। पटकथा की मूल इकाई दृश्य होता है।

6. पटकथा लेखन में कंप्यूटर की भूमिका – वर्तमान समय में पटकथा लेखन में कम्प्यूटर का प्रयोग होने लगा है। कम्प्यूटर पर ऐसे सॉफ्टवेयर आ गए हैं जिनमें पटकथा का प्रारुप बना बनाया आता है। सॉफ्टवेयर पटकथा में सुधार लाने के सुझाव भी प्रस्तुत करता है, इन्हें मानना न मानना लेखक की इच्छा पर निर्भर है।

7. शरत् चंद्र चट्टोपाध्याय के प्रसिद्ध उपन्यास देवदास पर कई फिल्म बन चुकी हैं। मुंशी प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु, धर्मवीर भारती तथा मन्नू भंडारी आदि की रचनाओं पर फिल्में एवं टी.वी. धारावाहिक बन चुके हैं।

8. सिनेमा, टेलीविज़न दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फिल्में या धारावाहिकों का मूल आधार पटकथा ही होती हैं

प्रश्न विचार–

1. समाचार के मुख्य तत्त्व कौन–कौन से हैं?
2. 'पटकथा' शब्द किन दो शब्दों से मिलकर बना है?
3. पटकथा का स्रोत क्या है?
4. 'फ्लैश बैक' तकनीक क्या है?
5. 'पटकथा लेखन–एक परिचय' पुस्तक के लेखक कौन हैं?
6. किन्हीं दो लेखकों एवं उनकी रचनाओं के नाम लिखिए जिन पर फिल्म बनी हैं।
7. किसी एक लेखक एवं उसकी रचना का नाम लिखिए जिस पर टी.वी. धारावाहिक बना हो।
8. नाटक और पटकथा के दृश्य में क्या अन्तर है?
9. पटकथा की मूल इकाई क्या है?
10. पटकथा लेखन में कम्प्यूटर का एक लाभ बताइए।
11. 'स्क्रीनप्ले' से आप क्या समझते हैं?
12. पटकथा में दृश्य बदलने पर कौन से शब्दों का प्रयोग किया जाता है?
13. नाटक और पटकथा की संरचना में क्या समानताएँ होती है?
14. नाटक और पटकथा में क्या अन्तर है?

दृश्य लेखन

(दी गई स्थिति/घटना के आधार पर)

विचारणीय बातें:–

विद्यार्थी दृश्य लेखन की गंभीरता को समझें, क्योंकि अपने विचारों, भावों व कल्पना को अभिव्यक्त करने का यह सशक्त माध्यम है।

दृश्य लेखन करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है–

- दृश्य लेखन की शब्द सीमा 100 से 150 होनी चाहिए।
- दृश्य लेखन प्रभावशाली हो।
- घटना या स्थिति में निहित भाव को समझ कर लिखें।
- भावाभिव्यक्ति में क्रमबद्धता हो।
- बिंब का अर्थ है 'अनुभूति' इसलिए दृश्य लेखन में बिंब की प्रधानता होनी चाहिए।
- इंद्रिय बोध जाग्रत होना चाहिए।
- दृश्य लेखन में सभी पाँचों इंद्रियों का बोध भी हो सकता है या किसी एक/दो का भी।
- दृश्य लेखन वर्तमान काल में होना चाहिए।

दृश्य लेखन का महत्त्व :

- अनुभूति/संवेदनशीलता का विकास।
- कल्पना शक्ति का विकास।
- विचारों व भावों को एक सूत्र में पिरोकर लेखन–क्षमता का विकास।
- भावों को स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने की कला का विकास।

दृश्य लेखन

परिभाषा : ''जब किसी फिल्म या धारावाहिक के किसी दृश्य में दिखाए जाने वाले दृश्यों, पात्रों के संवादों या अन्य होने वाली क्रियाओं का लिखित रूप तैयार किया जाता है।

अतः किसी भी दृश्य का संक्षिप्त शैली में वर्णन, भाषा कौशल, कल्पना शक्ति, शब्दों पर अधिकार आदि के आधार पर प्रस्तुति को दृश्य लेखन कहते हैं।

दृश्य लेखन के आवश्यक तत्व

- दृश्य संख्या
- समय
- स्थान
- पात्र
- 'कट' अथवा 'कट टू' का सम्बोधन दृश्य की समाप्ति पर दिया जाता है।
- दृश्य लेखन अत्यंत संक्षिप्त होना चाहिए।
- दृश्य लेखन में संख्याओं का विवरण दृश्य संख्या के अंतर्गत समाहित होता है।
- दृश्य लेखन की शब्दावली को वर्तमान काल में घटित होते हुए प्रस्तुत करना चाहिए।

चुनावी रैली का दृश्य

दृश्य 1/शाम का समय/बाहर/मुख्य सड़क/प्रत्याशी, चालक–1, चालक–2, लोगों की भीड़

{मुख्य सड़क से चुनावी रैली निकल रही है। सबके हाथ में बैनर, पोस्टर और पार्टी चुनाव चिन्ह लहरा रहे हैं। लोगों के झुण्ड के आगे कई रिक्शा और ऑटो रिक्शा कतारबद्ध चल रहे हैं। लाउडस्पीकर प्रत्याशी का गुणगान कर रहे हैं और बीच–बीच में देशभक्ति गीतों का मधुर स्वर भी गूंज रहा है। समर्थकों की भीड़ में उत्साह का ज्वार हिलोरे ले रहा है। भीड़ से घिरे प्रत्याशी द्वारा हाथ जोड़कर स्वयं को वोट देने की अपील की जा रही है। क्षेत्रवासी अपने प्रत्याशी की मुक्त कंठ से प्रशंसा कर रहे हैं

और प्रत्याशी को फूल मालाएँ पहना रहे हैं। सड़क पर ट्रैफिक जाम की स्थिति हो गई है। वाहन चालक परेशान निगाहों से जुलूस के गुजर जाने का इंतजार कर रहे हैं।}

एक चालक– {झुंझलाते हुए} 'अरे भाई! यह भीड़ कब तक हटेगी?'

अन्य चालक– {खींझते हुए} 'क्या करें भाई! हर बार की तरह मतदान वाले दिन तक तो रोज ही यही हाल रहेगा।'

{सड़क से सटी एक दुकान की कुछ सीढ़ियाँ चढते हुए उम्मीदवार ने माईक को हाथ में लेकर ओजपूर्ण भाषण देना शुरू कर दिया है।}

उम्मीदवार– {ओजपूर्ण स्वर में} 'भाइयों और बहनों! हमारी पार्टी ही सच्ची जनसेवक पार्टी है। आप सब मुझे अपना जनसेवक बनने का एक बार मौका जरूर दीजिए। मैं आप की बेहतरी के लिए रात दिन काम करना चाहता हूँ और विश्वास कीजिए क्षेत्र की सभी समस्याओं जैसेः बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य आदि समस्याओं को जल्द से जल्द दूर कर दूंगा।

{बीच–बीच में जोशीले नारे सभी का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं। बहुत ही विन्रम स्वर के साथ हाथ जोड़कर स्वयं को वोट देने की फिर से अपील करते हुए प्रत्याशी ने तेजी से कदम आगे बढ़ा लिए हैं। ढोल नगाड़ों का स्वर भी भीड़ के साथ आगे बढ़ता हुआ अब धीरे–धीरे कम होता जा रहा है।}

कट टू

दृश्य लेखन–2

सड़क दुर्घटना का दृश्य लेखन

दृश्य 1 / रात / बाहर / मुख्य सड़क / माता, पिता, नेहा, तीन युवक, कुछ पुलिस कर्मी, कुछ लोग

{31 दिसंबर की रात। सड़क पर वाहनों की खूब आवाजाही है और शोरगुल हो रहा है। हर कोई नववर्ष के स्वागत को उत्सुक है। नेहा अपने परिवार के साथ कार में फिल्मी गानों को गुणगुनाते हुए घर को वापस लौट रही है। अचानक एक मोटर बाइक पर तीन नौजवान हो हल्ला करते और स्टंट दिखाते हुए तेजी से गुजरते हैं।}

धड़ाम!!!!!! {जोरदार टक्कर का तेज़ स्वर}

नेहा के पापा {तेजी से ब्रेक लगाते हुए} 'अरे यह क्या! वही मोटर बाइक तेजी से

सड़क पर फिसलती हुई जा रही है}

{नेहा और उसका परिवार फौरन कार से नीचे उतरता है।}

नेहा – ''पापा! अलग–अलग दिशाओं में तीनों लड़के घायल पड़े हैं।''

नेहा {घबराते हुए} – ''मम्मी ऐसा लगता है जैसे सड़क के किनारे बनी रेलिंग से बाइक की भयंकर टक्कर हुई है।''

पापा {सिर पर हाथ रखकर} ''ओह ..... । तीनों बच्चों के शरीर से खून के फब्वारे फूट रहे हैं। अभी पुलिस को जानकारी देता हूँ।''

{सड़क पर आसपास के बहुत सारे लोग भी जमा हो गए हैं। एंबुलेंस के सायरन की आवाज दूर से पास आती जा रही है। हर कोई तीनों युवकों के बच जाने की दुआ कर रहा है। एंबुलेंस के आने पर पुलिस सभी लोगों को सावधानी पूर्वक घटनास्थल से हटने का अनुरोध कर रही है। नेहा और उसका परिवार गाड़ी में आकर वापस बैठ गया है। उनके मन से नववर्ष का उल्लास बिल्कुल खत्म हो गया है। नवयुवकों के मस्ती में होश खो बैठने के स्वभाव पर सब को मन ही मन गुस्सा आ रहा है।}

कट टू

दृश्य लेखन–3

हिंदी विषय की कक्षा का दृश्य

दृश्य 1 / दिन / अंदर / कक्षा कक्ष / अध्यापक, दीपक, 40 विद्यार्थी

{कक्षा कक्ष के मुख्य दरवाजें के ठीक ऊपर पीली पट्टी में काले रंग के मोटे अक्षरों में कमरा संख्या 104 अंकित है। प्रवेश द्वार के बाई तरफ 11वीं के नाम की तख्ती लगी है। हिंदी विषय की कक्षा चल रही है। कक्षा के भीतर श्यामपट्ट पर हिंदी विषय से संबंधित शब्दार्थ लिखे हैं। श्यामपट्ट के सामने की दीवार पर लगे डिसप्ले बोर्ड पर सभी विषयों के रंगीन चार्ट लगे हैं। डेस्कों की चार कतारों पर सभी छात्र शांत बैठे हैं व तल्लीनता से पाठ पढ़ रहे हैं। अध्यापक पाठ का सस्वर वाचन करते हुए कक्षा में धीरे–धीरे टहल रहे हैं। पहली कतार के अंतिम डेस्क पर पहुँचकर छात्र दीपक को देखते हैं।}

अध्यापक– {गंभीरता से} ''दीपक! तुम इस समय यह चित्र क्यों बना रहे हों?''

दीपक– {घबराते हुए} ''सर, वो ..... वो सर''।

{सभी बच्चे दीपक को देखकर हँसने लगे हैं}

अध्यापक– {सहज होकर} 'जरा दिखाओ तो चित्र। अरे! वाह! यह तो अति सुन्दर प्राकृतिक दृश्य है। इसका उपयोग हम 'बादल को घिरते देखा है' कविता में जरूर करेंगे। सभी बच्चे दीपक के लिए ताली बजाएंगे।

{तड़ तड़ तड़ तड़ तालियों की आवाज़ कक्षा में गूँज रही है।}

अध्यापक– {दीपक को प्यार से समझाते हुए} ''बेटा! यह चित्र अवकाश के समय में अवश्य पूरा करना। अभी आप ध्यानपूर्वक पाठ समझिए।''

दीपक– {आदर भाव से} ''जी सर, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। अब मैं पाठ पर ध्यान दूँगा।''

अध्यापक हर्ष अनुभूति के साथ पाठ का सस्वर वाचन करते हुए आगे बढ़ गए हैं।

कट टू

दृश्य लेखन–4

प्रातः काल का दृश्य

दृश्य 1 / प्रातः काल / बाहर / पार्क

{प्रातः कालीन लाल गोल सूर्य आकाश में छाये बादलों को लालिमा से रंग रहा है। पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ने की तैयारी कर रहे हैं। पक्षियों की चहचहाहट वातावरण में संगीत उत्पन्न कर रही है। ठंडी–ठंडी हवा चल रही है जिसके कारण पेड़ पौधे झूम रहे हैं। फूलों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं और फूलों से भीनी भीनी खुशबू आ रही है। पार्क में लोग समूह बनाकर व्यायाम कर रहे हैं। वहीं एक ओर बेंच पर लगभग 70 से 80 वर्ष की उम्र की महिलाएँ तन्मयता से तालियाँ बजाते हुए भजन गा रहीं हैं। पार्क के पैदल पथ पर महिलाएँ व पुरुष जोगिंग कर रहे हैं। अचानक बादलों की गड़गड़ाहट से आसमान गूँज उठा है। हल्की हल्की फुहार पड़ रही हैं जिससे मिट्टी की सोंधी सोंधी खुशबू आने लगी हैं। सैर करते हुए लोग शैड के नीचे आसरा ढूँढ़ रहे हैं। बारिश के कारण यौगिक क्रियाएँ करते हुए लोगों ने व्यायाम बंद कर तीव्रता से अपने आसनों को समेट लिया है। जो बच्चे पार्क में खेलने आए थे वो अब बारिश को होता देखकर तेज कदमों से वापस अपने घरों को लौट रहे हैं}

कट टू

अभ्यास हेतु

(दृश्य लेखन के विषय)

विवाह समारोह / संध्याकाल (स्थिति)

दीवाली मेला / झूले / चाट की दुकानें / खेल–खिलौने / सामान (स्थिति)

सब्जी मंडी

मैट्रो स्टेशन

अस्पताल / डेंगू बुखार / भागते लोग / डॉक्टर (स्थिति)

मेगा पी.टी.एम. / विद्यालय परिसर / प्रातःकाल (स्थिति)

साप्ताहिक बाजार

वर्षा का दिन।

- सुनसान सड़क / दोपहर का समय / हाथ में बैग लिए महिला (स्थिति)
- एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण

कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया

स्मरणीय बिन्दु –

1. सरकारी पत्र औपचारिक पत्र की श्रेणी में आते हैं।

2. प्रायः ये पत्र एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग या मंत्रालय को भेजे जाते हैं।

   पत्र के शीर्ष पर कार्यालय, विभाग या मंत्रालय का नाम व पता लिखा जाता हैं पत्र के बाईं तरफ संख्या लिखी जाती है। जिसे पत्र लिखा जा रहा है, उसका नाम पता भी बाईं ओर लिखा जाता है। 'सेवा में' का प्रयोग कम होता जा रहा है। पत्र के अंत में बाईं ओर प्रेषक का पता और तारीख दी जाती है और 'भवदीय' का प्रयोग कर नीचे भेजने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।

3. सरकारी कार्यालयों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इन पात्रों को कई श्रेणियों में बाँटा गया है। हर श्रेणी के पत्र के लिए एक विशेष स्वरूप निर्धारित कर दिया गया है।

4. मुख्य टिप्पणीं (नोटिंग) – किसी भी विचाराधीन पत्र अथवा प्रकरण को निपटाने के लिए उस पर जो राय, मत, आदेश या निर्देश दिया जाता है उसे टिप्पणी कहते हैं टिप्पणी लिखने की प्रक्रिया को हम टिप्पण (नोटिंग) कहते हैं। टिप्पण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं– सहायक स्तर पर टिप्पण, अधिकारी स्तर पर टिप्पण ।

5. टिप्पण का उद्देश्य मामलों को नियमानुसार निपटाना है।

6. आरंभिक टिप्पण में सहायक विचाराधीन मामले का संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए उसका विवेचन करता है। कार्यालय में टिप्पण के कार्य अधिकतर सहायक स्तर पर होते हैं।

7. टिप्पणी अपने आप में पूर्ण एवं स्पष्ट होनी चाहिए। टिप्पणी संक्षिप्त, विषय–संगत, तर्कसंगत और क्रमबद्ध होनी चाहिए।

8. टिप्पणी सदैव अन्य पुरुष में लिखी जाती है।

9. आनुषंगिक टिप्पण – सहायक टिप्पण को संबंधित अधिकारी को भेजा जाता है। अगर संबंधित अधिकारी उस टिप्पण से सहमत होता है तो टिप्पण के

नीचे केवल हस्ताक्षर कर देता है अथवा 'मैं उपर्युक्त टिप्पणी से सहमत हूँ' लिखता है। टिप्पणी पर संबंधित अधिकारी का मत आनुषंगिक टिप्पण कहलाता है। यदि अधिकारी सहमत है तो वह टिप्पणी को काटने, बदलने या हटाने का कार्य नहीं करता, अपितु केवल अपनी असहमति व्यक्त करता है। आनुषंगिक टिप्पणी प्रायः संक्षिप्त होती है लेकिन असहमति की स्थिति में टिप्पणी बड़ी भी हो सकती है।

10. स्मरण पत्र – इसे अनुस्मारक (रिमांइडर) भी कहा जाता है। जब किसी पत्र, ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त न हो तो याद दिलाने के लिए अनुस्मारक भेजा जाता है। इसे स्मरण पत्र भी कहते हैं। इसका प्रारूप तो औपचारिक पत्र की तरह होता है पर आकार छोटा होता है। यदि एक से अधिक अनुस्मारक भेजे जाते हैं तो उन्हें अनुस्मारक 1, 2, 3 इत्यादि लिखते हैं।

11. अर्धसरकारी पत्र– अर्ध सरकारी–पत्र में अनौपचारिकता का पुट होता है। इसमें मैत्री भाव होता है यह पत्र तब लिखे जाते हैं जब लिखने वाला अधिकारी संबंधित अधिकारी को व्यक्तिगत स्तर पर जानता हो या परामर्श लेना चाहता हो। इसके लेखन के लिए लेटर पैड का प्रयोग होता है। सबसे ऊपर बाईं ओर प्रेषक का नाम, पता और पदनाम होता है। पत्र का प्रारंभ श्री/श्रीमान/प्रिय इत्यादि से हो सकता है। पत्र के अंत में 'भवदीय' के स्थान पर 'आपका' शब्द प्रयोग किया जाता है। तत्पश्चात् संबोधित अधिकारी का नाम, पदनाम और पूरा पता दिया जाता है।

12. प्रेस विज्ञाप्ति (प्रेस रिलीज़) – कोई व्यक्ति या संस्थान किसी विषय या बैठक में जो निर्णय लेता है, उसे प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सर्वसामान्य तक पहुँचाया जाता है।

13. परिपत्र (सर्कुलर) – सरकारी या निजी संस्थान में जो निर्णय लिए जाते हैं उन्हें लागू करने के लिए अधीनस्थ कार्यालयों को परिपत्र जारी किया जाता है। जिसमें निर्णय को कार्यान्वित करते के निर्देश भी होते हैं।

14. कार्यसूची – विभिन्न संस्थाओं और कार्यालयों में विभिन्न विषयों में विचार–विमर्श कर निर्णय तक पहुँचने के लिए कई समितियों का गठन किया जाता है। इन समितियों में अध्यक्ष, सचिव के अतिरिक्त अन्य सदस्य भी होते

हैं। जब किसी विषय पर विचार–विमर्श करना हो अथवा निर्णय लेना हो तो समिति के सब सदस्य एक निश्चित समय में पूर्व निश्चित स्थान पर बैठक का आयोजन करते हैं। बैठक प्रारंभ होने से पहले विचारणीय मुद्दों की एक क्रमवार सूची बनाई जाती है, जिसे कार्यसूची (ऐजेंडा) कहते हैं।

15. कार्यसूची का निर्माण इसलिए किया जाता है ताकि केवल उन विषयों पर चर्चा की जाए जो विचारणीय हैं। इससे समय की तो बचत होती ही है साथ में विषय से भटकने की स्थिति भी नहीं आती।

16. बैठक का संचालन सचिव करता है।

17. कार्यवृत्त – कार्यसूची में दिए गए मुद्दों को सचिव बैठक में प्रस्तुत करता है। समिति के अध्यक्ष की उपस्थिति में सभी सदस्य विचारणीय मुद्दों पर अपने–अपने विचार व्यक्त करते हैं। विचार –विमर्श के बाद निर्णय लेते हैं। प्रत्येक मुद्दे पर किया गया विचार विमर्श एवं निर्णय ही कार्यवृत्त है।

कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया

प्रतिवेदन

स्मरणीय बिन्दु –

1. 'प्रतिवेदन' शब्द 'प्रति' 'उपसर्ग' और 'विद्' धातु के योग से बना है। इसका अर्थ है सम्यक् अर्थात् पूरी जानकारी। इस प्रकार 'प्रतिवेदन' से अभिप्राय अनुभव से युक्त विभिन्न तथ्यों का विस्तृत लेखा–जोखा है।

2. प्रायः रिपोर्ट एवं प्रतिवेदन को समान अर्थ में ले लिया जाता है किंतु 'प्रतिवेदन' शब्द का अर्थ, स्वरूप और विषय वस्तु रिपोर्ट से काफी भिन्न है जैसे–पुलिस को घटना की रिपोर्ट दी जाती है, डाक्टर मरीज की रिपोर्ट पढ़ता है, संवाददाता समाचार के लिए रिपोर्ट लिखता है। यहाँ पर रिपोर्ट का अर्थ सामान्य विवरण से हैं जबकि 'प्रतिवेदन' किसी घटना, कार्ययोजना इत्यादि का अनुभव और तथ्यों से परिपूर्ण विवरण है जो लिखित रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें कार्य विशेष की जानकारी तो दी जाती है, साथ ही विभिन्न आंकड़ों आदि के माध्यम से निष्कर्ष, सुझाव और संस्तुतियाँ भी दी जाती हैं।

3. प्रतिवेदन दो प्रकार के होते हैं। जब सरकार या किसी संस्था अथवा विशिष्ट अधिकारी के आदेशानुसार किसी कार्य विशेष के बारें में प्रतिवेदन तैयार किया जाता है उसे औपचारिक प्रतिवेदन तैयार किया जाता है। उसे औपचारिक प्रतिवेदन कहते हैं इसका वस्तुनिष्ठ और तथ्यात्मक होना अनिवार्य है। अनौपचारिक प्रतिवेदन किसी व्यक्ति विशेष का अपना अध्ययन एवं निष्कर्ष है। समाचारपत्रों में इस प्रकार के प्रतिवेदन प्रकाशित होते रहते हैं। इसमें अकेला व्यक्ति ही उत्तरदायी होता है।

4. प्रतिवेदन–लेखन के लिए कुछ बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

   1) रूपरेखा पहले बनानी चाहिए। 2) तथ्यों का संकलन

   3) विवेकपूर्ण, निष्पक्ष अध्ययन 4) विचारों की प्रामाणिकता

   5) विषय केन्द्रित अध्ययन 6) सही निर्णय

   7) अनावश्यक विस्तार से बचें।

बोधात्मक प्रश्न –

1. प्रतिवेदन से आप क्या समझते हैं?
2. प्रतिवेदन एवं रिपोर्ट में अंतर स्पष्ट कीजिए।
3. प्रतिवेदन के संदर्भ में निष्कर्ष से क्या अभिप्राय है।
4. एक अच्छा प्रतिवेदन प्रस्तुत करते समय किन–किन बातों पर ध्यान रखना चाहिए?
5. प्रतिवेदन कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट कीजिए।

प्रतिवेदन का प्रारूप–1

1. विद्यालय के शैक्षिक विकास और उन्नति को ध्यान में रखते हुए प्रधानाचार्य ने एक समिति का गठन किया। जाँच एवं अध्ययन के पश्चात समिति की ओर से प्रतिवेदन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर– विद्यालय के शैक्षिक विकास और उन्नति के लिए 1 अगस्त 2016 को विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रामसिंह जी ने एक समिति का गठन किया था। जिसमें निम्नलिखित सदस्य थे–

1) श्रीमती दीपा पाण्डे, शिक्षाविद् एवं सचिव
2) श्रीमती कांता, वरिष्ठ शिक्षिका हिंदी (सदस्य)
3) श्री अरूण कुमार, शारीरिक शिक्षक (सदस्य)
4) कु. उमा, वरिष्ठ अध्यापिका विज्ञान (सदस्य)
5) श्री संतोष कुमार, वरिष्ठ अध्यापक गणित (सदस्य)

समिति ने इस दिशा में अध्ययन किया कि वर्तमान में विद्यालय का विकास एवं उन्नति उस गति से नहीं हो रही है जैसी अपेक्षित थी। अध्ययन के अनुसार निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य करके स्थिति को सुधारा जा सकता है:–

1. विद्यालय में मूलभूत सुविधाएँ यथा –पीने का पानी, स्वच्छ शौचालय इत्यादि की उचित व्यवस्था की जाए।

2. विद्यालय में कम्प्यूटर शिक्षा का प्रावधान है परंतु शिक्षकों की कमी ने उसे अवरूद्ध कर दिया है। अतः शीघ्रातिशीघ्र कम्प्यूटर शिक्षकों की नियुक्ति होनी चाहिए।

3. विद्यालय के पुस्तकालय एवं शारीरिक शिक्षा कक्षा में विद्यार्थियों के अनुरूप पुस्तकें एवं खेल सामग्री उपलब्ध कराई जाए तथा बच्चों से उनका समुचित उपयोग कराया जाए।

4. छात्रों के विकास के लिए अभिभावकों से सतत् संपर्क रखा जाए।

5. नैतिक शिक्षा के वर्धन के लिए प्रार्थना–सभा एंव सदन व्यवस्था के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया जाए।

6. प्रत्येक तीन माह के पश्चात् उपर्युक्त सुझावों की प्रगति की समीक्षा की जाये।

दिनां क – 1 अगस्त 2016

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
सचिव	सदस्य	सदस्य	सदस्य	सदस्य

प्रतिवेदन का प्रारूप–2

दिल्ली में स्वच्छता अभियान चलाने से पूर्व एक समिति का गठन किया गया। समिति द्वारा दिए प्रतिवेदन को लिखिए।

दिल्ली में स्वच्छता अभियान चलाने व ''हमारी दिल्ली स्वच्छ दिल्ली'' के नोट को सार्थक बनाने हेतु, समिति का गठन किया गया।

जिसमें निम्न सदस्य थे–

1. श्रीमती प्रभा (सचिव)
2. श्रीमती उमा (अध्यक्ष)
3. श्रीमती रेखा (सदस्य)
4. श्री मुकेश (सदस्य)
5. श्री संतोष (सदस्य)

समिति ने इस दिशा में निम्न प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

हमारी दिल्ली का ऐतिहासिक व प्राचीन महत्त्व है। इसकी स्वच्छता का ध्यान रखना अनिवार्य है। अतः हमें निम्न प्रयास करने चाहिए–

1. सड़कों की चौड़ाई जहाँ संभव है बढ़ा देनी चाहिए व नालियों को गहरी व पक्की किया जाना चाहिए।
2. धार्मिक स्थलों पर चढ़ाई गई फूल मालाओं, पत्तों, छिलकों आदि को इधर–उधर न फेंक कर मिट्टी में दबाकर खाद बनाने के लिए प्रयुक्त किया जाए।
3. सड़कों के किनारों पर कुछ–कुछ दूरी पर कूड़ेदानों का प्रबंध किया जाना चाहिए।
4. टूटी सड़कों की मरम्मत होनी चाहिए।
5. सड़क के किनारे पेड़–पौधे व चौराहों पर आकर्षक मूर्तियाँ आदि लगाई जाए।
6. बिजली के तारों को भूमिगत किया जाए।
7. पुराने जर्जर होती इमारतों की रख–रखाव हेतु पुरातत्व विभाग की सेवाएं प्राप्त करें।
8. प्रत्येक दो माह के पश्चात् उपर्युक्त सुझावों की प्रगति की समीक्षा की जाए।

दिनांक : 12 अप्रैल 20.....

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
अध्यक्ष	सचिव	सदस्य	सदस्य	सदस्य

प्रतिवेदन अभ्यास हेतु

1. प्रताप विहार क्षेत्र के बदहाल पार्कों के विकास व रखरखाव से संबंधित जाँच समिति का प्रतिवेदन लिखिए।
2. बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु जाँच समिति का प्रतिवेदन लिखिए।
3. कोरोना काल में विधार्थियों पर हुए प्रभाव से संबंधित जाँच समिति का प्रतिवेदन लिखिए।
4. महिलाओं पर होने वाले घरेलू उत्पीड़न से संबंधित जाँच समिति का प्रतिवेदन लिखिए।
5. बाल मजदूरी की रोकथाम हेतु जाँच समिति का प्रतिवेदन लिखिए।

प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज)—कोई व्यक्ति या संस्थान किसी विषय या बैठक में जो निर्णय लेता है, उसे प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से सर्वसामान्य तक पहुँचाया जाता है।

प्रेस विज्ञप्ति

भारतीय रिज़र्व बैंक बोर्ड

प्रेस विज्ञप्ति

बैंक से जुड़े सभी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि

भारतीय रिज़र्व बैंक बोर्ड ने अपनी बैठकों में एकमत से यह निर्णय लिया कि बैंक के सभी कर्मचारियों के वेतन में तत्काल प्रभाव से वृद्धि की जाए।

ध्यान दें कि इसके पूर्व बैंक कर्मचारियों के वेतन में सन् 2012 में वृद्धि की गई थी। पिछले कुछ समय से कर्मचारियों द्वारा यह शिकायत की जा रही है, कि बैंक द्वारा दिया जाने वाला वेतन बहुत कम है और यही कारण है कि युवा वर्ग बैंकों में कार्य नहीं करना चाहता।

कर्मचारियों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए बोर्ड ने वेतन की दरों में वृद्धि को मंजूरी देते हुए यह विश्वास व्यक्त किया है कि इससे युवा वर्ग प्रोत्साहित होगा और बैंक द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों की गुणवत्ता में भी सुधार होगा।

परिपत्र (सर्कलुट)—सरकारी या निजी संस्थान में जो निर्णय लिए जाते हैं उन्हें लागू करने के लिए अधीनस्थ कार्यालयों को परिपत्र जारी किया जाता है। जिसमें निर्णय को कार्यान्वित करने के निर्देश भी होते हैं।

परिपत्र

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान

महानिदेशालय

पत्रांक 25 / 14 / प्र 2019 नई दिल्ली 30 मई 2019

परिपत्र

विषय : मोबाइल फोन पर होने वाले व्यय के लिए निर्धारित सीमा

महानिदेशालय ने उपर्युक्त विषय पर दिनांक 23 नवम्बर, 2018 को एक समसंख्यक परिपत्र जारी किया था।

उपर्युक्त परिपत्र द्वारा मोबाइल फोन पर होने वाले व्यय की सीमा दो हजार रूपए प्रतिमाह निर्धारित की गई थी।

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति बोर्ड द्वारा इस सीमा पर पुनःविचार किया गया तदनुसार उपर्युक्त परिपत्र में आंशिक संशोधन करते हुए यह निर्णय किया गया कि दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय के लिए यह सीमा 6 हजार रूपए प्रतिमाह होगी।

उपर्युक्त परिपत्र के अन्य प्रावधान पूर्ववत् रहेंगे। यह निर्णय तत्काल प्रभाव से लागू होंगे।

/—

रमा शंकर गौंड

पाठ–1

कार्यसूची व कार्यवृत्त

कार्यसूची |AGENDA

प्रत्येक स्कूल, कॉलेज, कार्यालय आदि में तरह–तरह के कार्य किये जाते हैं, समस्याएँ सुलझाई जाती हैं, निर्णय लिए जाते हैं व नई योजनाएँ बनाई जाती हैं। इन विभिन्न कार्यों को करने के लिए अनेक समितियाँ बनाई जाती हैं जो अलग–अलग स्तरों पर अपनी सभाएँ करती हैं। इन समितियों के सदस्य निश्चित स्थान और निश्चित समय पर मिलते हैं और विषय के प्रत्येक पक्ष पर गंभीरता पूर्वक चर्चा करते हैं

कार्यसूची–कार्यसूची किसी भी सभा की कार्यवाही का लिखित क्रमबद्ध वर्णन होता है। कार्यसूची के द्वारा बैठक में चर्चा के लिए निर्धारित विषयों की अग्रिम जानकारी दी जाती है। इससे बैठक के अनुशासित संचालन में सहायता मिलती है। निर्धारित विषयों से संबंधित कार्यसूची सदस्यों के पास अग्रिम रूप से भेजी जानी चाहिए ताकि वे बैठक में पूरी तैयारी से आ सकें। जब भी कोई सभा आरंभ होती है। तब सचिव या संयोजक द्वारा विचार योग्य बातों का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

कार्यसूची की विशेषताएँ

- कार्यसूची में स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए कि सभा में किन बिंदुओं पर चर्चा होगी। साथ ही समय का, तिथि, स्थान व अध्यक्ष का नाम, उपस्थिति व्यक्तियों के नाम और उनकी संख्या का उल्लेख प्रारंभ में करना होता है।
- विचारणीय विषयों को क्रमानुसार स्पष्ट व सरल भाषा में लिखा जाता है।

कार्यसूची के उपयोग

- सभा का समय अनावश्यक रूप से खराब नहीं होता।
- सदस्य केवल उन्हीं विषयों पर विचार विमर्श करते हैं जो कार्य सूची में तय किए गए होते हैं।
- सदस्यों का विषय भटकाव नहीं होता।

कार्यवृत्त [MINUTES OF MEETING]

जब किसी बैठक की कार्यवाही समाप्त हो जाती है तब संयोजक या सचिव उसके प्रारूप को लिखित रूप में तैयार करता है, इसे कार्यवृत्त कहते हैं। बैठक में जितने भी निर्णय लिए जाते हैं या प्रस्ताव पारित किए जाते हैं। उन सब का विवरण में कार्यवृत्त दिया जाता है।

कार्यवृत्त की विशेषताएँ

1. यह संक्षिप्त लेकिन स्पष्ट और सरल भाषा में होना चाहिए।
2. मीटिंग में रखे गए प्रस्तावों पर सदस्यों द्वारा दर्ज की गई सहमति या असहमति का पूरा विवरण कार्यवृत्त में लिखा जाना चाहिए।

अभ्यास–प्रश्न (उत्तर सहित)

प्रश्न 1. संगम विहार में निवासी कल्याण संघ (आर. डब्ल्यू.ए) ने युवाओं के एक दल को 'स्वतंत्रता दिवस समारोह' के आयोजन की जिम्मेदारी दी। हिमांशु की ओर से संयोजक की भूमिका का निर्वाह करते हुए कार्यक्रम के लिए कार्य सूची बनाएँ ।

(नोट : कार्यक्रम का सफल आयोजन सभी की सहायता से ही संभव है। अतः आप (हिमांशु, संयोजक) दल के साथ मीटिंग करेंगे लेकिन मीटिंग तिथि से पूर्व यानी 1 अगस्त से पहले (उदाहरण में दी गई तिथि) आवश्यक चर्चा हेतु कार्य सूची बनाएंगे। यह कार्यसूची प्रबन्धक दल के सदस्यों को बैठक से पूर्व उपलब्ध करवा दी जाएगी।)

उत्तर– उत्तर–संगम विहार में 'स्वतंत्रता दिवस' समारोह आयोजन हेतु प्रबंधक दल समिति की बैठक के लिए कार्य सूची।

बैठक की तिथि 1 अगस्त 2021

बैठक का समय–प्रातः 9:00 बजे

स्थान–सामुदायिक भवन, संगम विहार

अध्यक्ष–प्रधान (संगम विहार निवासी कल्याण समिति)

सदस्य–युवा दल सदस्य

i) सदस्यों का स्वागत

i) स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन पर विचार–विमर्श।

iii) ध्वजारोहण स्थान, बैठक की व्यवस्था, देशभक्ति व सांस्कृतिक कार्यक्रम व जलपान की व्यवस्था के लिए समितियों का गठन व खर्च पर चर्चा।

iv) मुख्य अतिथि के नाम पर विचार।

v) पुरस्कार व स्मृति चिह्न के लिए व्यय पर विचार–विमर्श।

vi) अध्यक्ष की अनुमति से किसी भी अन्य विषय पर विचार –विमर्श।

vii) धन्यवाद ज्ञापन।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
अध्यक्ष	संयोजक
.....	.....

स्वतंत्रता दिवस समारोह
प्रबन्धक दल समिति

प्रश्न 2. संगम विहार में 'स्वतंत्रता दिवस समारोह' के आयोजन के लिए प्रबन्धक दल समिति की बैठक हुई। इसका कार्यवृत्त लिखिए।

(नोट : सभी सदस्यों को बैठक में विचार के लिए मुख्य बिंदुओं की सूचना पहले ही दी जा चुकी है। अतः सभी सदस्य बैठक में निर्धारित समय, स्थान व दिनांक को मीटिंग में उपस्थित होंगे।)

उत्तर– 'स्वतंत्रता दिवस समारोह' आयोजन के लिए प्रबन्धक दल समिति की बैठक का कार्यवृत्त।

दिनांक 1 अगस्त 2021 को बैठक संपन्न हुई। प्रबंधक दल समिति की अध्यक्षता संगम विहार, निवासी कल्याण संघ के प्रधान श्री सुखलाल जी ने की। बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों की सूची इस प्रकार है–

i) श्री सुखलाल (अध्यक्ष)

ii) श्री हिमांशु (संयोजक)

iii) श्री कैफ अंसारी (सदस्य)

iv) सुश्री खुशी (सदस्य)

v) सुश्री महक (सदस्य)

vi) श्री हरविंदर सिंह (सदस्य)

vii) सुश्री दीप्ति (सदस्य)

viii) श्री मनोहर श्याम (सदस्य)

ix) सुश्री नूरजहां (सदस्य)

कार्यवाही का आरम्भ संयोजक द्वारा सभी सदस्यों का स्वागत करने से हुआ। इसके बाद उन्होंने अपने अनुभवों को बताया जिससे समिति स्वतंत्रता दिवस समारोह को अधिक प्रभावशाली व सफल बना सके।

सामान्य चर्चा के बाद कार्य सूची में लिखे गए विषयों पर विचार विमर्श हुआ जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

1. कार्यक्रम का आयोजन सेंट्रल पार्क में किया जाना सब सदस्यों की सहमति से तय किया गया।

2. ध्वजारोहण कार्यक्रम के लिए कैफ अंसारी को जिम्मेदारी दी गई।

3. राष्ट्रगान व देशभक्ति गीत, कविता, नाटक आदि कार्यक्रमों की तैयारी के लिए खुशी व महक ने समिति के गठन की जिम्मेदारी ली।

4. निवासियों के बैठने के लिए व्यवस्था, टैंट व माइक के लिए हरविंदर सिंह व मनोहर श्याम ने समिति का गठन किया।

5. मुख्य अतिथि के रूप में स्थानीय नेता को आमंत्रित करने के प्रस्ताव पर नूरजहाँ व मनोहर श्याम ने असहमति जताई।

6. मुख्य अतिथि के रूप में संगम विहार के निवासी श्री दर्शन कुमार धवन व श्रीमती लता धवन के नाम पर सभी ने सहमति जताई। क्योंकि उन्होंने कोरोना काल में जरूरतमंदों की बहुत मदद की थी।

7. जलपान में चाय, पकौड़े, समोसे, फूल, शर्बत व पानी की व्यवस्था की जिम्मेदारी संयोजक हिमांशु ने ली।

8. सभी समितियों ने उनको सौंपे गए कार्यों पर अनुमानित खर्च का ब्यौरा दिया जो लगभग एक लाख रुपए था। अध्यक्ष जी ने खर्च की स्वीकृति दी।

9. अध्यक्ष जी द्वारा समस्त कार्यक्रम पर अन्य सुझाव मांगे गए।

10. समारोह में वरिष्ठ नागरिकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए स्मृति चिह्न से सम्मानित करने की बात संयोजक ने रखी। जिसे सभी ने स्वीकार किया।

11. 'अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद देते हुए बैठक की समाप्ति की घोषणा की व प्रबन्धक दल को शुभकामनाएँ देते हुए कार्यक्रम के सफल आयोजन की आशा प्रकट की।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
अध्यक्ष	संयोजक
.....	.....
सुखलाल	हिमांशु

प्रश्न 3. किशन गंज विद्यालय की अलंकृत पत्रिका के लिए विद्यार्थियों में से सह–संपादक चुनने हेतु शिक्षक–संपादक दल की होने वाली बैठक के लिए कार्यसूची बनाएं।

उत्तर– अलंकृत पत्रिका हेतु सह–सम्पादक (विद्यार्थी) चुनाव के लिए शिक्षक –सम्पादक दल की बैठक के लिए कार्यसूची।

बैठक की तिथि – 22 नवम्बर 2022

समय – प्रातः 9:00 बजे।

स्थान–पुस्तकालय

अध्यक्ष–उपप्रधानाचार्य

सदस्य–सभी शिक्षक–संपादक

कार्यसूची–

i) सदस्यों का स्वागत।

ii) सह–संपादक (विद्यार्थी) की संख्या के चयन पर विचार विमर्श।

iii) चुनाव हेतु चयन प्रक्रिया पर विचार विमर्श।

iv) सह–संपादकों की जिम्मेदारियों पर विचार विमर्श।

v) अध्यक्ष की अनुमति से किसी भी अन्य विषय पर चर्चा।

धन्यवाद ज्ञापन

हस्ताक्षर

.....

संपादक

अलंकृत पत्रिका

किशनगंज विद्यालय

प्रश्न 4. किशनगंज विद्यालय की अलंकृत पत्रिका के लिए विद्यार्थियों में से सह–संपादक चुनाव हेतु शिक्षक–संपादक समिति की बैठक का कार्यवृत्त तैयार कीजिए।

उत्तर– अलंकृत पत्रिका के लिए सह–संपादक (विद्यार्थी) चुनाव हेतु बैठक का कार्यवृत्त। दिनांक–22 नवंबर 2022 को बैठक संपन्न हुई। शिक्षक–संपादक समिति की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री एस.कुमार जी ने की। बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों की सूची इस प्रकार है :

i) श्री एस. कुमार (उप–प्रधानाचार्य)

ii) श्रीमती अलका (संपादक, हिंदी विभाग)

iii) श्रीमती नीलम (संपादक, अंग्रेजी विभाग)

iv) श्री वरुण (संपादक, संस्कृत विभाग)

v) श्री नीरज (कला विभाग)

बैठक का आरंभ संपादक द्वारा सभी सदस्यों का स्वागत करने से हुआ। इसके बाद उन्होंने सह–संपादक के पद पर विद्यार्थियों के चुनाव की आवश्यकता पर चर्चा की।

सामान्य चर्चा के बाद कार्यसूची में लिखे गए विषयों पर विचार विमर्श हुआ। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

1. सह–संपादक के चार पदों के चुनाव पर सभी सदस्यों ने सहमति दी। सह–संपादक (हिंदी), सह–संपादक (अंग्रेजी), सह–संपादक (संस्कृत) व सह–संपादक (कला)।
2. चुनाव के लिए 11वीं व 12वीं कक्षा से इच्छुक विद्यार्थियों के नाम लिए जाएंगे। यह तय किया गया कि श्रीमती नीलम के नेतृत्व में सभी विद्यार्थियों का साक्षात्कार दिनांक 28 नवंबर 2022 को लिया जाएगा जिससे उनकी योग्यता, रुचि व लगन की जाँच की जाएगी।
3. श्री वरुण और श्री नीरज ने सह–संपादकों को दी जाने वाली जिम्मेदारियों पर चर्चा करते हुए बताया कि सह–संपादक विद्यालय के अन्य विद्यार्थियों को स्वरचित लेख लिखने के लिए मदद और प्रोत्साहित करेंगे। लेख के संपादन में अपनी टीम की भी मदद करेंगे।
4. अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद देते हुए बैठक की समाप्ति की घोषणा की।

हस्ताक्षर	हस्ताक्षर
अध्यक्ष	संपादक (अलंकृत पत्रिका)
.....	.....
एस. कुमार	अलका
किशनगंज विद्यालय	

प्रश्न 5. सह–शिक्षा सर्वोदय विद्यालय पीतमपुरा की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के लिए बुलाई गई बैठक की कार्य सूची बनाएं।

उत्तर– सहशिक्षा सर्वोदय विद्यालय की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के लिए बैठक की कार्य सूची।

बैठक की तिथि 2 दिसंबर 2021

समय – प्रातः 9:00 बजे

स्थान – उप–प्रधानाचार्य कक्ष

अध्यक्ष – उप–प्रधानाचार्य

सचिव – शारीरिक–शिक्षा शिक्षक

सदस्य – सभी शिक्षक

1. सदस्यों का स्वागत।
2. खेलकूद प्रतियोगिता पर विचार विमर्श।
3. विभिन्न खेल व दिनांक के चयन पर चर्चा।
4. खेलकूद संबंधित आवश्यक सामान की उपलब्धता पर चर्चा।
5. खेल के मैदान की तैयारी व रखरखाव पर विचार विमर्श।
6. अध्यक्ष की अनुमति से विषय से संबंधित अन्य किसी जरूरी विचार पर चर्चा।
7. धन्यवाद ज्ञापन

हस्ताक्षर

.....

सचिव

सहशिक्षा सर्वोदय विद्यालय पीतमपुरा।

प्रश्न 6. सहशिक्षा सर्वोदय विद्यालय पीतमपुरा की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिए गठित समिति की बैठक का कार्यवृत्त लिखिए।

उत्तर– सहशिक्षा–सर्वोदय विद्यालय पीतमपुरा की वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता की बैठक का कार्यवृत्त।

दिनांक – 3 दिसंबर 2021 को प्राचार्य कक्ष में बैठक संपन्न हुई। खेलकूद–प्रतियोगिता समिति की अध्यक्षता विद्यालय के उप–प्रधानाचार्य श्री दिनेश जी ने की।

बैठक में भाग लेने वाले सदस्यों की सूची इस प्रकार है :

i) श्री दिनेश (उप–प्रधानाचार्य)

ii) श्री नरेंद्र (खेलकूद इंचार्ज)

iii) श्री मनीष (सदस्य)

iv) श्री मोहम्मद जमशेद (सदस्य)

v) श्रीमती कविता (सदस्य)

vi) श्री चंद्रमोहन (सदस्य)

1. कार्यवाही का आरंभ खेलकूद इंचार्ज द्वारा सदस्यों का स्वागत करने से हुआ।

   सामान्य चर्चा के बाद कार्यसूची में लिखे गए विषयों पर विचार विमर्श हुआ। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

2. विद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन 24 दिसंबर 2021 को किया जाएगा।

3. इसकी तैयारियों के लिए विचार–विमर्श किया गया और निम्नलिखित समितियां गठित की गईः

   i) खेलकूद समिति–

      इंचार्ज – श्री नरेंद्र

      सदस्य – श्रीमती कविता व श्री चंद्रमोहन

   ii) पुरस्कार समिति

      इंचार्ज – श्रीमती वंदना

      सदस्य – श्रीमती अलका व श्रीमती प्रीति

   iii) टैंट व बैठक व्यवस्था समिति–

      इंचार्ज – श्री सुशील

      सदस्य – श्री अनुराग व श्री मोहम्मद जमशेद

   iv) प्रेस समिति :

      इंचार्ज – श्री मनीष

      सदस्य – श्री मनोहर व श्री नगेंद्र

   v) प्राथमिक उपचार समिति –

      इंचार्ज – श्रीमती आरती

      सदस्य – श्रीमती सीमा व श्रीमती ज्योति

   vi) जलपान व्यवस्था समिति–

      इंचार्ज – श्री राकेश

      सदस्य – श्री राजेश व श्री विनोद कुमार

4. सभी समितियाँ अपने क्षेत्र से संबंधित क्रियाकलापों के सफल आयोजन के लिए बैठक करेंगी।

5. सभी समितियों के इंचार्ज प्राचार्य के अनुमति से कार्यालय से अग्रिम धनराशि प्राप्त कर सकते हैं।

6. प्रतियोगिता की समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर उन्हें खर्चे की रिपोर्ट दफ़्तर में जमा करानी होगी।

7. अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद देते हुए बैठक की समाप्ति की घोषणा की व सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए खेलकूद प्रतियोगिता के सफल आयोजन की आशा प्रकट की।

अध्यक्ष	संयोजक
उप–प्रधानाचार्य	खेलकूद इंचार्ज
हस्ताक्षर	हस्ताक्षर

अभ्यास कार्य (कार्यसूची)

1. विद्यालय की भ्रमण कमेटी द्वारा दिल्ली के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का आयोजन करने के लिए गठित समिति की बैठक के लिए कार्य सूची बनाएं।

2. विद्यालय में हिंदी दिवस मनाने के लिए हिंदी साहित्य परिषद की बैठक के लिए कार्यसूची बनाएं।

3. राष्ट्रीय एकता दिवस (सरदार पटेल जयंती) मनाने के लिए गठित समिति की बैठक की कार्यसूची बनाएं।

4. 'सबल महिला संघ' की ओर से घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के कल्याण के लिए बैठक की कार्यसूची बनाएं।

कार्यवृत्त

1. विद्यालय की भ्रमण कमेटी द्वारा दिल्ली के दर्शनीय स्थलों के भ्रमण का आयोजन करने के लिए गठित समिति की बैठक का कार्यवृत्त तैयार कीजिए।

2. विद्यालय में हिंदी दिवस मनाने के लिए हिंदी साहित्य परिषद की बैठक का कार्यवृत्त तैयार कीजिए।

3. राष्ट्रीय एकता दिवस (सरदार पटेल जयंती) मनाने के लिए गठित समिति की बैठक का कार्यवृत्त तैयार कीजिए।

4. 'संबल महिला संघ' की ओर से घरेलू हिंसा से पीड़ित महिलाओं के कल्याण हेतु गठित समिति की बैठक का कार्यवृत्त लिखिए।

औपचारिक पत्र

उद्देश्य एवं आवश्यकता

- लिखित दस्तावेज का रिकॉर्ड रखा जा सकता है।
- लिखित शिकायतों को गंभीरता से लिया जाता है।
- स्थायी और प्रमाण सिद्ध होती है।
- विश्वसनीयता होती है

औपचारिक पत्र की भाषा कैसी होनी चाहिएः

- औपचारिक भाषा
- मानक भाषा एवं शब्दों का प्रयोग
- सटीक एवं सारगर्भित अभिव्यक्ति
- भावों की अपेक्षा विचारों और तथ्यों का प्रयोग
- शिष्टाचार का पालन

पत्र लेखन– अंक विभाजन

प्रारूप

प्रेषक का पता, दिनांक, प्रापक का पद एवं पता, विषय, संबोधन, आभार कथन, प्रेषक का नाम–1 अंक

विषय वस्तु व प्रस्तुतीकरण–3 अंक

भाषा {अभिव्यक्ति} की शुद्धता, सटीक शब्द एवं वर्तनी–1 अंक

आवेदनपत्र का प्रारूप

1. प्रेषक का पता
2. दिनांक
3. प्राप्तकर्ता {पाने वाले का पद एवं पता}
4. विषय संकेत

5. संबोधन

6. पत्र का कलेवर / विवरण

7. समापन निर्देश

8. हस्ताक्षर व नाम

9. संलग्नक

नियुक्ति आवेदन पत्र

{पद के लिए अपनी योग्यता और गम्भीरता के प्रति नियोक्ता का विश्वास जगाना}

नियुक्ति आवेदन पत्र प्रारूप

अपना पता / प्रेषक का पता

दिनांक

प्रति

प्रधानाचार्य / प्रबंधक / सचिव / निदेशक {प्राप्तकर्ता का पता}

विषय

महोदया / महोदय

दैनिक जागरण में दिनांक ..... को प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके .....में ..... के कुछ पद रिक्त हैं। मैं स्वयं को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रहा / रही हूँ। मैं आपको आश्वस्त करता / करती हूँ कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं अपना कार्य पूर्ण लगन परिश्रम और निष्ठा से करूंगा / करूंगी। आशा है आप मेरे आवेदन पर ध्यानपूर्वक विचार करेंगे। मैं अपने शैक्षिक योग्यताओं, कार्य अनुभव आदि विवरण सहित अपना स्ववृत्त संलग्न कर रहा / रही हूँ।

भवदीय

क ख ग

संलग्नक –

शैक्षिक तथा अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ

पासपोर्ट आकार की फोटो

स्ववृत्त लेखन

स्मरणीय बिन्दु –

1. 'स्ववृत्त' से अभिप्राय अपने विवरण से है। यह एक बना–बनाया प्रारूप होता है, जिसे विज्ञापन के प्रत्युत्तर में आवेदन पत्र के साथ भेजा जाता है।

2. नौकरी के संदर्भ में स्ववृत्त की तुलना एक उम्मीदवार के दूत या प्रतिनिधि से की जाती है। अभिप्राय यह है कि स्ववृत्त का स्वरूप उसे प्रभावशाली बनाता है।

3. एक अच्छा स्ववृत्त नियुक्तिकर्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी और सकारात्मक धारणा उत्पन्न करता है।

4. नौकरी में सफलता के लिए योग्यता और व्यक्ति के साथ–साथ स्ववृत्त निर्माण की कला में निपुणता भी आवश्यक है।

5. स्ववृत्त में किसी विशेष प्रयोजन को ध्यान में रखकर सिलसिलेवार ढंग से सूचनाएँ संकलित की जाती है।

6. स्ववृत्त में दो पक्ष होते हैं पहला पक्ष वह व्यक्ति है जिसका केन्द्र में रखकर सूचनाएँ संकलित की जाती है दूसरा पक्ष नियोजन का है।

7. स्ववृत्त में ईमानदारी होनी चाहिए। किसी भी प्रकार के झूठे दावे या अतिश्योक्ति से बचना चाहिए।

8. अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पहलुओं पर जोर देना चाहिए।

9. स्ववृत्त का आकार अति संक्षिप्त अथवा जरूरत से ज्यादा लंबा नहीं होना चाहिए।

10. स्ववृत्त साफ–सुथरे ढंग से टंकित या कम्प्यूटर–मुद्रित अथवा सुंदर–लेखन में होना चाहिए । स्ववृत्त में सूचनाओं को अनुशासित क्रम में लिखना चाहिए तथा व्यक्ति –परिचय, शैक्षिक योग्यता, अनुभव, प्रशिक्षण, उपलब्धियाँ, कार्येत्तर गतिविधियाँ इत्यादि।

11. परिचय में नाम, जन्मतिथि, उम्र, पत्र–व्यवहार का पता, टेलीफोन नंबर ई–मेल इत्यादि लिखे जाते हैं।

12. शैक्षिक योग्यता में विद्यालय का नाम, बोर्ड या विश्वविद्यालय का नाम, परीक्षा का वर्ष, प्राप्तांक, प्रतिशत तथा श्रेणी का उल्लेख करना आवश्यक है।

13. कार्येत्तर गतिविधियों का उल्लेख अन्य उम्मीदवारों से अलग पहचान दिलाने में समर्थ होता है।

14. स्ववृत्त में विज्ञापन में वर्णित योग्यताओं और आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए थोड़ा–बहुत परिवर्तन किया जा सकता है।।

प्रश्न–विचार

1. स्ववृत्त से आप क्या समझते हैं?

2. उम्मीदवार के चयन में स्ववृत्त किस प्रकार सहायक होता है?

3. एक अच्छे स्ववृत्त में क्या–क्या विशेषताएँ होती है?

4. स्ववृत्त में अन्य योग्यताओं के अतिरिक्त कार्येत्तर गतिविधियाँ की चर्चा करना क्यों आवश्यक है?

5. स्ववृत्त निर्माण की कला में निपुण होना क्यों आवश्यक है?

नोट– स्ववृत्त का प्रारूप 'पत्र–लेखन' शीर्षक के अंतर्गत आवेदन पत्र में देखें।

स्ववृत्त

स्ववृत्त {स्वयं के बारे में सूचनाओं का सिलसिलेवार संकलन / ब्यौरा}

स्व वृत्त का प्रारूप

नाम – क ख ग

पिता का नाम – क ख ग

जन्म तिथि– क ख ग

स्थाई पता – क ख ग

शैक्षिक योग्ताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा / डिग्री	विद्यालय / विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा			
2.	बारहवीं कक्षा			
3.	स्नातक			
4.	अन्य			

व्यावसायिक योग्यता–

कार्य अनुभव–

अन्य रुचियाँ– भाषा ज्ञान –

संपर्क दो व्यक्ति 1..... 2.....

दिनांक हस्ताक्षर

1. एस.एल. पब्लिक स्कूल में टी.जी.टी. {हिंदी} के पद रिक्त हैं। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र प्रस्तुत करें।

1. परीक्षा भवन

   नई दिल्ली

2. 12 जनवरी, 2021

3. प्रति

   प्रधानाचार्य

   एस.एल. पब्लिक स्कूल

   रोहिणी

   दिल्ली

5. विषय– टी.जी.टी. (हिंदी) पद के लिए आवेदन।

6. महोदय / महोदया

7. दैनिक जागरण में दिनांक 2 जनवरी 2021 को प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि एस.एल. पब्लिक स्कूल में टी.जी.टी. (हिंदी) के पद रिक्त हैं। मैं स्वयं को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं आपको आश्वस्त करती हूँ कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं अपना कार्य पूर्ण लगन, परिश्रम और निष्ठा से करूंगी। आशा है आप मेरे आवेदन पर ध्यान पूर्वक विचार करेंगे। मैं शैक्षिक योग्यताओं, कार्य अनुभव आदि विवरण सहित अपना स्ववृत्त संलग्न कर रही हूँ।

8. भवदीया

   क ख ग

9. संलग्नक–

   1. शैक्षिक तथा अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ

   2. पासपोर्ट आकार की फोटो

   3. स्ववृत्त

स्ववृत्त

नाम – क ख ग

पिता का नाम – क ख ग

जन्म तिथि– क ख ग

स्थाई पता – क ख ग

शैक्षिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा / डिग्री	विद्यालय / विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2007	80
2.	बारहवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2009	85
3.	हिंदी {ऑनर्स}	दिल्ली विश्व विद्यालय	2012	70
4.	बी.एड.	दल्ली विश्व विद्यालय	2013	75
5.	एम.ए. {हिंदी}	दल्ली विश्व विद्यालय	2015	60

अन्य योग्यताएँ – कम्प्यूटर का ज्ञान

कार्य अनुभव – सुरभि पब्लिक स्कूल {हरियाणा} में 2 वर्ष हिंदी शिक्षण का कार्यानुभव

उपलब्धियाँ– 1. राज्य स्तर पर 2016 में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार

2. कविता लेखन में 2018 में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत

अभिरुचियाँ– संगीत, योगाभ्यास व थिएटर व नाटक मंचन

भाषा ज्ञान – हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी

संपर्क दो व्यक्ति– 1. प्रधानाचार्य सर्वोदय विद्यालय रोहिणी.....

2. प्रबंधक, केनरा बैंक, रोहिणी .....

दिनांक – 12 जनवरी 2021

हस्ताक्षर

2. आरोग्य अस्पताल में डेटा प्रविष्टि हेतु कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद रिक्त है। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए निदेशक को आवेदन पत्र प्रस्तुत करें।

1. परीक्षा भवन

   नई दिल्ली

2. 12 जनवरी, 2021

3. प्रति

   प्रबन्धक

   आरोग्य अस्पताल

   रोहिणी

   दिल्ली

5. विषय– कम्प्यूटर ऑपरेटर के पद हेतु आवेदन पत्र।

6. महोदय/महोदया

7. दैनिक जागरण में दिनांक 2 जनवरी 2021 को प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आरोग्य अस्पताल में डेटा प्रविष्टि हेतु कम्प्यूटर ऑपरेटर के कुछ पद रिक्त हैं। मैं स्वयं को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रही हूँ। मैं आपको आश्वस्त करती हूँ कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं अपना कार्य पूर्ण लगन, परिश्रम और निष्ठा से करूंगी। आशा है आप मेरे आवेदन पर ध्यान पूर्वक विचार करेंगे। मैं अपने शैक्षिक योग्यताओं, कार्य अनुभव आदि विवरण सहित अपना स्ववृत्त संलग्न कर रही हूँ।

8. भवदीया

   क ख ग

9. संलग्नक–

   1. शैक्षिक तथा अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ

   2. पासपोर्ट आकार की फोटो

   3. स्ववृत्त

स्ववृत्त

नाम – क ख ग

पिता का नाम – क ख ग

जन्म तिथि– क ख ग

स्थाई पता – क ख ग

शैक्षिक योग्ताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा / डिग्री	विद्यालय / विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2007	80
2.	बारहवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2009	85
3.	बी.ए.	दिल्ली विश्व विद्यालय	2012	60
अन्य	–			

व्यावसायिक योग्यता – डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्लीकेशन {डी.सी.ए.}

कार्य अनुभव – अगस्त 2014 से जीवन अस्पताल अमृतसर में कार्यरत

अन्य रूचियाँ – ग्राफिक डिजाइनिंग, योगाभ्यास

भाषा ज्ञान – हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी

संपर्क दो व्यक्ति– 1. प्रधानाचार्य सर्वोदय विद्यालय, रोहिणी .....

2. प्रबंधक, केनरा बैंक, रोहिणी .....

दिनांक – 12 जनवरी 2021

हस्ताक्षर

संपादक के नाम पत्र

उद्देश्य

1. अपने विचारों और दृष्टिकोण को समुदाय के साथ साझा करने के लिए उपयुक्त मंच है।
2. समस्याओं के समाधान में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका।
3. समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति।

संपादक के नाम पत्र––प्रारूप

1. अपना/प्रेषक का पता
2. दिनांक
3. संपादक

पत्र का नाम और पता

4. विषय
5. महोदय,
6. मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से समाज के लोगों एवं अधिकारियों का ध्यान..... के विषय/समस्या मुद्दे की ओर आकर्षित करना चाहता/चाहती हूँ।

प्रथम अनुच्छेद.....समस्या

द्वितीय अनुच्छेद.....सुझाव

तृत्तीय अनुच्छेद ..... निष्कर्ष एवं आभार।

धन्यवाद!

7. भवदीय/भवदीया

   क. ख. ग.

सरकारी पत्र

भारत सरकार के गृह मंत्रालय के सचिव की ओर से मुख्य सचिव, पंजाब राज्य को एक सरकारी–पत्र लिखें जिसमें राज्य में कानून और व्यवस्था की बिगड़ती हुई स्थिति पर चिंता व्यक्त की गई हो।

संख्या 48 (गृ.पं.) / 12.8.50 / 98–99 / 50196

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
11 जून, 2018

प्रेषक

दीनदयाल उपाध्याय
सचिव, भारत सरकार
गृह मंत्रालय
नई दिल्ली।

प्रति

मुख्य सचिव
पंजाब राज्य
चंडीगढ़

विषय : राज्य में कानून तथा व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति के बारे में।

महोदय,

मुझे यह सूचना देने का निर्देश हुआ है कि पंजाब राज्य में कानून और व्यवस्था की दिनों–दिन बिगड़ती स्थिति से केन्द्र सरकार बहुत चिंतित है। सरकार ने आपका ध्यान इस गंभीर समस्या की ओर आकृष्ट किया है और इस स्थिति से दृढ़ता से निपटने का निश्चय किया है। पंजाब सरकार को भी इस दिशा में कड़े कदम उठाने चाहिए। इस संदर्भ में आपको सूचित किया जाता है कि राज्य में कानून तथा व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक कार्यवाही की जाए तथा केन्द्र सरकार को भी प्रगति से अवगत कराया जाए। इस संबंध में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार को सभी प्रकार की सहायता देने के लिए तैयार है।

भवदीय,

डॉ. दीनदयाल उपाध्याय

सचिव, गृह मंत्रालय

आवेदन पत्र

आप अमित कुमार हैं। नवभारत टाइम्स में प्रकाशित विज्ञापन से आपको पता चला है कि मानव संसाधन विभाग में मार्केटिंग एक्जक्यूटिव के कुछ पद रिक्त हैं। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए महाप्रबंधक को आवेदन प्रस्तुत कीजिए।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली

15 मार्च, 2021

प्रति

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

मानव संसाधन विभाग

इंडिया कैमिकल्स लिमिटेड

36, न्यू लिंग रोड, अंधेरी, मुंबई–400053

विषय : मार्केटिंग एग्जक्यूटिव पद के लिए आवेदन पत्र

महोदय,

दिनांक 16 अप्रैल, 2019 को दिल्ली से प्रकाशित नवभारत टाइम्स के प्रातः संस्करण में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ है कि आपकी कम्पनी में मार्केटिंग एक्जक्यूटिव की आवश्यकता है। मैं इस पद के लिए अपना आवेदन–पत्र प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरा स्ववृत्त इस आवेदन पत्र के निम्न भाग में वर्णित है इसका अवलोकन करने पर आप पायेंगे कि मैं इस पद के लिए पूरी तरह से उपयुक्त उम्मीदवार हूँ। मैं विज्ञापन में आपके द्वारा वर्णित सभी योग्ताओं व अर्हताओं को पूरा करता हूँ।

मैं विवरण सहित अपना स्ववृत्त संलग्न कर रहा हूँ।

भवदीय

अमित कुमार

संलग्नक– 1. शैक्षिक तथा अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ 2. पासपोर्ट आकार की फोटो 3. स्ववृत्त

स्ववृत्त

1.	नाम	–	अमित कुमार
2.	पिता का नाम	–	क. ख. ग.
3.	माता का नाम	–	क. ख. ग.

4. जन्मतिथि – क. ख. ग.
5. पता – परीक्षा भवन, नई दिल्ली
6. दूरभाष नं. – क. ख. ग.
7. मोबाइल नं. – क. ख. ग.
8. ई–मेल – क. ख. ग.
9. आधार नं. – xxxxxxxxxxx

शैक्षणिक योग्यताएँ :

क्र.सं.	परीक्षा का नाम	बोर्ड / महाविद्यालय संस्था	वर्ष	विषय	प्राप्तांक	श्रेणी
1.	हाई स्कूल	सी.बी.एस.ई डी.ए.वी.	2005	हिन्दी, अंग्रेजी गणित, विज्ञान सा. विज्ञान	480/500	प्रथम
2.	इन्टरमीडिएट	सी.बी.एस.ई	207	अंग्रेजी, गणित रसायन विज्ञान भौतिक विज्ञान, अंग्रेजी, कम्प्यूटर साइंस	440/500	प्रथम
3.	स्नातक	दिल्ली विश्वविद्यालय हंसराज कॉलेज	2010	रसायन विज्ञान (ऑनर्स)	435/500	प्रथम
4.	एम.बी.ए.	आई. पी. यूनिवर्सिटी आदर्श इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट		मार्केटिंग	85%	प्रथम

उपलब्धियाँ :

1. विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर क्रिकेट टीम का कप्तान।
2. वाद–विवाद और निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चयन।

अभिरुचियाँ :

मैं पर्यटन का शौक रखता हूँ और लगभग पूरे देश के महत्त्वपूर्ण स्थलों का भ्रमण कर चुका हूँ, मेरी यह प्रकृति पद की आवश्यकता के अनुकूल है।

अनुभव :

1. दो वर्ष तक एडोवी कम्पनी में मार्केटिंग का कार्य किया।
2. इंटरनेट सर्फिंग का अच्छा ज्ञान।

संपर्क :

1. प्रधानाचार्य राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
2. प्रबंधक बैंक ऑफ बड़ोदा

दिनांक – 15 मार्च, 2021 हस्ताक्षर – क. ख. ग.

देवेश शर्मा, दिल्ली की ओर से पत्र–पत्रिकाओं और टेलीविजन में प्रदर्शित होने वाले अश्लील विज्ञापनों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली

20 जनवरी, 2021

प्रति

संपादक,

नवभारत टाइम्स,

बहादुरशाह ज़फर मार्ग,

नई दिल्ली–110002।

विषय : अश्लील विज्ञापनों के संबंध में

महोदय,

मैं इस पत्र के माध्यम से अश्लील विज्ञापनों की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर जनता तथा संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूँ।

आज व्यापार के क्षेत्र में व्यापक वृद्धि हुई है। इस कारण व्यावसायिकता भी काफी बढ़ी है। कोई भी समाचार–पत्र, पत्रिका अथवा टेलीविजन चैनल ऐसा नहीं दिखता है, जहाँ अश्लीलता का प्रदर्शन नहीं हो रहा हो। अपनी बिक्री को बढ़ाने के लिए अश्लील चित्रों का खुला प्रयोग किया जा रहा है। समाचार–पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर ही मॉडलों तथा फिल्मी नायिकाओं के ऐसे चित्र दिखाए जाते हैं जिन्हें देखकर आँखें शर्म से झुक जाती है।

टी.वी. चैनलों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों के बीच में कई ऐसे अश्लील विज्ञापन दिखाए जाते हैं जिन्हें परिवार के साथ बैठकर नहीं देखा जा सकता।

इस प्रकार के विज्ञापनों से संस्कारों का पतन निश्चित है। ये अश्लील विज्ञापन व्यापार को तो बढ़ा रहे हैं लेकिन भारतीय संस्कृति को खतरे में डाल रहे हैं व युवा वर्ग को दिग्भ्रमित कर रहे हैं।

सरकार को इस तरह के विज्ञापनों पर रोक लगानी चाहिए तथा समाज में भी ऐसे विज्ञापनों का विरोध होना चाहिए। आपसे निवेदन है कि मेरे इस पत्र को अपने समाचार–पत्र में यथोचित स्थान देने की कृपा करें।

धन्यवाद

भवदीय,

देवेश शर्मा

संपादक को पत्र

शिवानी गुप्ता, दिल्ली की ओर से मानसून की पहली वर्षा के बाद दिल्ली की सड़कों की दुर्दशा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए किसी दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली

24 जनवरी, 2021

प्रति

संपादक,

नवभारत टाइम्स,

बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002।

विषय : पहली वर्षा के बाद सड़कों की दुर्दशा की ओर ध्यानाकर्षण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

मैं इस पत्र के माध्यम से आपका ध्यान दिल्ली की सड़कों की दुर्दशा की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ।

पिछले सप्ताह मानसून की पहली वर्षा हुई जिससे सभी को भीषण गर्मी से राहत मिली किन्तु दूसरी ओर शहर की सड़कों की दुर्दशा ने यातायात के लिए समस्या उत्पन्न कर दी। दिल्ली भारत की राजधानी है तथा यहाँ अनेक विदेशी दूतावास भी हैं। पर्यटक व अतिविशिष्ट विदेशी अतिथियों का आवागमन यहाँ हमेशा ही रहता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण शहर में सड़कों की दुर्दशा केवल असुविधा ही पैदा नहीं करती अपितु देश की प्रतिष्ठा को भी हानि पहुँचाती है। सड़कों के बीचोबीच बने बड़े–बड़े गड्ढों और किनारों पर जमा पानी से वाहनों का चलना कठिन हो गया है। साथ ही पैदल यात्री अलग परेशान है। इससे छोटी–मोटी दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ गई है तथा बीमारियाँ फैलने की भी आशंका है। अतः दिल्ली सरकार के उच्च अधिकारियों से अनुरोध है कि वे दिल्ली की सड़कों का दौरा कर तथा सड़क निर्माण विभाग के अधिकारियों के विरुद्ध कार्यवाही करें जिससे विभाग ऐसी सड़के बनाए जो हर मौसम के लिए उपयुक्त हों।

महोदय आपसे निवेदन है कि मेरे विचारों को अपने समाचार–पत्र में यथोचित स्थान देने की कृपा करें।

धन्यवाद

भवदीया,

शिवानी गुप्ता

राज /राजी की ओर से दैनिक हिन्दी समाचार–पत्र के संपादक को, सड़क पर बढ़ती दुर्घटनाओं के विषय में चिंता प्रकट करते हुए लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए।

1. परीक्षा भवन, नई दिल्ली

2. दिनांक – 25 मई 2022

प्रति

सम्पादक,

नवभारत टाइम्स

बहादुर शाह ज़फर मार्ग नई दिल्ली– 11000

4. विषय–सड़क पर बढ़ती दुर्घटनाओं के संबंध में।

5. महोदय/महोदया,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से सरकार और समाज का ध्यान बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं की ओर दिलाना चाहती हूँ। वाहन चालकों द्वारा यातायात के नियमों का उल्लंघन ही इस चिंताजनक समस्या के बढ़ने का मुख्य कारण है।

निर्धारित गति से तेज वाहन चलाना, लाल बत्ती होने के उपरांत भी जल्दबाजी में अपने वाहन को निकालना, शराब सेवन के बावजूद गाड़ी चलाना, व्यस्त सड़को में युवा वर्ग द्वारा वाहन तेज चलाने की होड़ करना इत्यादि कारणों द्वारा वाहन चालक अपनी जान को तो जोखिम में डालते ही हैं। साथ अन्य मासूम लोगों को भी असमय काल का ग्रास बना देते हैं।

अतः ऐसे अड़ियल मनोवृत्ति के लोगों पर शिकंजा कसा जाना चाहिए। इसके लिए प्रत्येक सड़क की निगरानी कैमरे द्वारा की जानी चाहिए। नियम न जानने वालों से चालान के रूप में भारी–भरकम राशि वसूल की जानी चाहिए। टेलीविजन पर यातायात–नियम व दुर्घटनाओं से होने वाली हानियों से संबंधित जन–जागरुकता कार्यक्रम दिखाए जाने चाहिए।

आशा है आप इसे जनहित में अवश्य प्रकाशित करेंगे ताकि लोगों और प्रशासन के साझा प्रयासों से दुर्घटनाओं को समाप्त किया जा सके।

धन्यवाद

भवदीय

राजी

पत्र लेखन

विद्यालय स्तर पर सैनिक शिक्षा को अनिवार्य किए जाने के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए अपने राज्य के शिक्षा सचिव को पत्र लिखकर उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने का अनुरोध कीजिए।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली

20 जनवरी, 2021

प्रति

शिक्षा सचिव,

दिल्ली राज्य सरकार,

दिल्ली..... ।

विषय : विद्यालय स्तर पर सैनिक शिक्षा को अनिवार्य करने के अनुरोध के संदर्भ में

महोदय / महोदया,

निवेदन यह है कि आज के आधुनिक युग में जहाँ चारों ओर मानव विकास चाहता है वहीं वह स्वयं सुविधा संपन्न भी बनना चाहता है। चाहे प्रकृति का हनन करके या नई–नई वैज्ञानिक ख़ोज करके। आज दुनिया के सभी देशों में एक–दूसरे से होड़ लगी हुई है। जिसके परिणाम स्वरूप देश की आंतरिक और वाह्य सीमा पर रोज़ एक नई समस्या खड़ी हो जाती है। जिसका सामना हमारे सैनिकों को ही करना पड़ता है। देश के प्रति कर्त्तव्य बोध प्रत्येक नागरिक में होना चाहिए और इसके लिए विद्यालयों में कम से कम उच्च माध्यमिक स्तर पर सैनिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाए जिससे विद्यार्थियों में एक जिम्मेदारी का भाव आएगा और वे सैनिकों के त्याग बलिदान व देश–प्रेम को समझ पाएंगे। देश में आई किसी भी संकटकालीन स्थिति से निपट पाने में सरकार व आम नागरिकों की सहायता करेंगे।

अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि आप उच्च माध्यमिक स्तर पर सैनिक शिक्षा अनिवार्य करने के विषय में विचार करेंगे, जिससे देश को उच्चकोटि के देशभक्त व सैनिक प्राप्त हो सकेंगे।

धन्यवाद

भवदीय

क. ख. ग.

संस्था 'हमारा हाथ' उत्तराखंड की आपदा से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए कुछ राहत सामग्री और पुनर्वास विशेषज्ञों को लेकर जाना चाहती है। संस्था के सचिव के रूप में पूरा विवरण देते हुए सचिव आपदा नियंत्रण उत्तराखंड सरकार को पत्र लिखिए।

हमारा हाथ संस्था
दिल्ली
प्रति
सचिव
आपदा नियंत्रण
उत्तराखंड सरकार

विषय : आपदा से पीड़ित लोगों की सहायता के लिए राहत सामग्री पहुंचाने के सम्बंध में।

महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूं कि 'हमारा हाथ' संस्था एक गैर सरकारी संगठन है जिसे वर्ष 2005 में बनाया गया था। इस संस्था का मुख्य कार्यालय दिल्ली में है व भारत सरकार द्वारा पंजीकृत है। यह संस्था आपदा से प्रभावित लोगों की सहायता करती है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में बाढ़, भूकंप आगजनी, महामारी आदि से पीड़ित लोगों के लिए इस संस्था द्वारा कपड़े, दवाइयां, भोजन, आवास तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध करवाई जाती है। उत्तराखंड में बादल फटने के काराण आई भयंकर त्रासदी ने हजारों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। 'हमारा हाथ' संस्था के सदस्य प्रभावित लोगों को आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध करवाना चाहते हैं। इस संस्था के पुनर्वास विशेषज्ञ आपदा पीड़ितों को पुनः बसाने में मदद करेंगे।

आशा करता हूं कि आप निःशुल्क व निःस्वार्थ सहायता को स्वीकार करेंगे व संस्था को आपदा पीड़ितों की मदद करने का अवसर प्रदान करेंगे।

धन्यवाद
भवदीय
सचिव
क ख ग
'हमारा हाथ' संस्था

जनसाधारण की सुविधा के लिए इलेक्ट्रॉनिक बसों के चलाए जाने पर बधाई देते हुए, परिवहन निगम के महाप्रबंधक को मनीष/मनीषा की ओर से लगभग 120 शब्दों में पत्रा लिखिए।

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली
दिनांक 30 मई 2022
प्रति
महाप्रबंधक
परिवहन निगम,
दिल्ली
विषय–इलेक्ट्रॉनिक बसों के चलाए जाने पर बधाई हेतु।
महोदय/महोदया,

इस पत्र के माध्यम से, मैं प्रशासन व नागरिकों को बधाई देना चाहता हूँ क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक बसों के द्वारा सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था और भी अधिक सुदृढ़ हुई है। इन बसों के संचालन से बसों के बेड़े में बढ़ोत्तरी होगी जिससे जन साधारण के लिए आवागमन सुगम होगा। यह पर्यावरण–मित्र बसें बिजली द्वारा चार्ज होने पर चलेंगी जिससे प्रदूषण की रोकथाम भी होगी। इन बसों के द्वारा पेट्रोल, डीजल व सी. एन. जी जैसे ईंधनों की बचत भी होगी।

आशा करता हूँ कि प्रशासन द्वारा इसी प्रकार जन साधारण को आधुनिक सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु प्रयास किये जाते रहेंगे।

धन्यवाद
भवदीय
मनीष

अभ्यास कार्य

1. बढ़ती मँहगाई पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार–पत्र के संपादक को पत्र लिखिए एवं सुझाव भी दीजिए–

2. पेट्रोल के मूल्यों में हो रही वृद्धि के बावजूद कारों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस स्थिति का कारण स्पष्ट करते हुए राज्य के परिवहन मंत्री को एक पत्र लिखो।

3. आपके क्षेत्र में आभूषण झपटमारी की घटनाएँ दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसकी शिकायत करते हुए अपने क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए।

4. बस कंडक्टर (सह–चालक) के साहसिक कार्य के कारण कई यात्रियों की जान बची। इस संदर्भ में उसे पुरस्कृत करने का अनुरोध करते हुए दिल्ली परिवहन निगम के महाप्रबंधक को पत्र लिखिए।

5. आपके घर का पानी का मीटर बंद हो गया है। शिकायत करने पर भी अभी तक ठीक नहीं हुआ है। इस संदर्भ में 'दिल्ली जल बोर्ड' के संबंधित अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

6. सार्वजनिक सूचना–पट्टों पर लिखी अशुद्ध हिन्दी की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

7. आभा पब्लिक स्कूल में शारीरिक शिक्षक का एक पद रिक्त है। विज्ञापन के अनुसार अपनी योग्यता का विवरण प्रस्तुत करते हुए शिक्षा–निदेशक को आवेदन पत्र प्रस्तुत कीजिए।

8. सम–विषम फार्मूले के विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को पत्र लिखो।

9. कोरोना–काल में जन जागरूकता की आवश्यकता के संबंध में दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

कोश–एक परिचय

शब्दकोश–

1. शब्दों का खजाना है इसमें एक भाषा भाषी समुदाय में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को संचित किया जाता है।
2. शब्दकोश में शब्दों की व्युत्पत्ति, स्रोत, लिंग, शब्दरूप एवं विभिन्न संदर्भपरक अर्थों के बारें में जानकारी दी जाती है।
3. हिंदी शब्दकोश में हिन्दी वर्णमाला का अनुसरण किया जाता है। परंतु अ से प्रारम्भ होने वाले शब्द सबसे पहले दिए जाते हैं।
4. यद्यपि हिन्दी वर्णमाला में कुछ संयुक्त व्यंजन सबसे अंत में आते हैं परंतु शब्दकोश में उन्हें उस क्रम में रखा जाता है जिन व्यंजनों से मिलकर वे बने हैं जैसे – क् + ष = क्ष, ज् + ञ = ज्ञ, त् + र = त्र, श् + र = श्र
5. स्वर रहित व्यंजनों सें प्रारम्भ होने वाले शब्द उस व्यंजन में इस्तेमाल होने वाले सभी स्वरों के बाद में रखे जाते हैं। जैसे क्या शब्द 'कौस्तुभ' के बाद ही आएगा।

देखें और समझें

ग्र की स्थिति

1. ग्रंथ	2. ग्रंथि	3. ग्रस्त
4. ग्रह	5. ग्राम	6. ग्रीवा

वर्ण योजना क्रमवार

स्वर – अं/अँ अः अ आं/आँ, अ, इं, इ, ईं, ई, उं/उँ, उ, ऊं/ऊँ ऊ, ऋ, एं/एँ, ए, ऐ, ऐं, ओं, ओ, औं, औ।

व्यंजन – क, क्ष, ख, ग, घ, च, छ, ज/ज़ झ ट ठ ड/ड़ ढ/ढ़ ण त त्र थ द ध न प फ/फ़ ब भ म य र ल व श श्र ष ह

सामान्य नियम

1. कोश के वर्णक्रम में पूर्ण अक्षर से पहले अनुस्वार (अं युक्त वर्ण) फिर अनुनासिक चिह्न अँ युक्त वर्ण आएँगे। जैसे कंगन, कँगला / हंस, हँस।
2. आधे अक्षर पूर्ण अक्षरों के बाद आएँगे। (कारगर, क्या, क्लेश)
3. संयुक्ताक्षरों का वर्णक्रम उनके घटकों के क्रम से निर्धारित होता है जैसेः

क्ष = क् + ष	त्र = त् + र
ज्ञ = ज् + ञ	श्र = श् + र
क्र = क् + र	र्क = र् + क
द्ध = द् + ध	द्व = द् + व
द्य = द् + य	तृ = त् + ऋ

शब्दकोंश में त वर्ण से बनने वाले शब्दों की क्रम स्थिति ध्यानपूर्वक समझिए :

तंग, तंडुल, तंतु, तंत्र, तंदूरी, तंद्रा, तंबू, तकरार, तक्षक, तगड़ी, तड़पना, ततैया, तत्काल, तन, तपाक, तमोगुण, तरंग, तरजनी, तलहटी, तसला, तस्वीर, ताँगा, ताड़पत्र, तिकोन, तिजोरी, तीखा, तीन, तुंग, तुच्छ, तुलसी, तूफान, तृण, तृतीया, तेंदुआ, तेज, तैंतीस, तोंद, तोता, तौलिया, त्याग, त्योहार, त्रस्त, त्रिकाल, त्रिविध।

नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोशीय क्रम में लिखिएः

यायावर, इमरती, विश्राम, उत्सर्जन, उचित, घड़ी, परिकथा, परीक्षित, प्रमाद, अंबर, बोध, हिमाचल, आँख, ईश्वर, हृदय, आखिर, अंक, परतंत्र, ग्लानि, चिरकाल, घंटा, घास।

उत्तर –

अंक, अंबर, आँख, आखिर, इमरती, ईश्वर, उचित, उत्सर्जन, ग्लानि, घंटा, घड़ी, घास, चिरकाल, परतंत्र, परिकथा, परीक्षित, प्रमाद, बोध, यायावर, विश्राम, हिमाचल, हृदय।

संदर्भ–ग्रंथ

1. जिस प्रकार शब्दकोश में शब्दों के अर्थ दिए जाते हैं उसी प्रकार संदर्भ ग्रन्थों में मानव द्वारा संचित ज्ञान को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
2. संदर्भ–ग्रंथ कई प्रकार के होते हैं। संदर्भ –ग्रंथ का सबसे विशद रूप 'विश्व ज्ञान कोश' है इसमें मानव द्वारा संचित हर प्रकार की जानकारी और सूचना का संक्षिप्त संकलन होता है।
3. संदर्भ –ग्रंथों के अन्य महत्वपूर्ण प्रकार है –'साहित्य कोश' और 'चरित्र कोश' साहित्यकोश में साहित्यिक विषयों से सम्बन्धित जानकारियाँ संकलित होती हैं। 'चरित्र–कोश' में साहित्य, संस्कृति, विज्ञान आदि क्षेत्रों के महान व्यक्तियों के व्यक्तित्व के बारें में जानकारी संकलित होती है।
4. संदर्भ –ग्रंथ गागर में सागर के समान होते हैं। जब भी किसी विषय पर तुरंत जानकारी की आवश्यकता होती है, संदर्भ–ग्रन्थ हमारे काम आते हैं।
5. संदर्भ–ग्रन्थों में जानकारियों का सिलसिलेवार संकलन 'शब्दकोश' के नियमों के अनुसार ही होता है।

प्रश्न–विचार

1. शब्दकोश किसे कहते हैं?
2. शब्दकोश से शब्द के विषय में क्या–क्या जानकारी मिलती है?
3. संयुक्त व्यंजन वाले शब्द कहाँ मिलते हैं?
4. नीचे दिए गए शब्दों को शब्दकोश के क्रमानुसार लिखिए :

   चौपाई, प्रमाण, विश्वामित्र, अंशुल, इशारा, उत्प्रेरक, घंटाघर, अंकसूची, परिचय, योग, हीरक, आँकड़ा, उजास, ग्लोब, घन, आगम, परीक्षा, घिनौना, बेखबर, ईशान, हृदयंगम, परछाई।
5. संदर्भ–ग्रंथ क्या है?
6. हिन्दी संदर्भ ग्रंथ का सबसे विशद रुप कौन–सा है?
7. संदर्भ–ग्रंथ को गागर में सागर क्यों कहा गया है?

''अपठित–बोध''

विचारणीय तथ्य

अपठित का अर्थ है जो पहले से न पढ़ा गया हो। अपठित अवतरण गद्य अथवा पद्य दोनों में हो सकता है। परीक्षा में केवल अपठित गद्यांश देकर उस पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इनका उत्तर देते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

- दिया गया गद्यांश अपठित होता है अतः कम से कम दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए ताकि मूल–भाव समझ में आ जाये।
- पूछे गए प्रश्नों के उत्तर रेखांकित कीजिए। ध्यान रहे प्रश्नों के उत्तर अनुच्छेद में दी गई सामग्री पर ही आधारित हो।
- प्रश्नों के उत्तर अत्यंत सरल भाषा और अपने शब्दों में दीजिए।
- प्रश्नों के उत्तर सीधे, संक्षिप्त एवं सटीक होने चाहिए।
- मुहावरों, अलंकार, सूक्तियों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- कभी कठिन शब्दों के अर्थ, विलोम शब्द भी पूछे जाते हैं।
- उचित स्थानों पर विराम–चिन्हों का प्रयोग करना न भूलें।
- पूछे प्रश्नों में अनावश्यक विस्तार न करें।

अपठित–बोध में सार और शीर्षक भी लिखने को कहा जाता है। अतः अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अपठित गद्यांश/पद्यांश से लघूत्तरात्मक प्रश्न अथवा बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जा सकते हैं। (लघूत्तरात्मक प्रश्न युक्त)

उदाहरण (अभ्यास)

प्र. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

''मैं जिस समाज की कल्पना करता हूँ, उसमें गृहस्थ संन्यासी और संन्यासी गृहस्थ होंगे। अर्थात सन्यास और गृहस्थ के बीच वह दूरी नहीं रहेगी जो परंपरा से चलती आ रही है। संन्यासी उत्तम कोटि का मनुष्य होता है। क्योंकि उसमें संचय की वृत्ति नहीं होती, लोभ और स्वार्थ नहीं होता। यही गुण गृहस्थ में भी होना चाहिए। संन्यासी भी वही श्रेष्ठ है जो समाज के लिये कुछ करे। ज्ञान और कर्म को भिन्न करोगे तो विषमता उत्पन्न होगी ही। 'मुख में कविता और करघे

पर हाथ, यह आदर्श मुझे बहुत पसन्द था। इसी की शिक्षा मैं दूसरों को भी देता हूँ। श्रेष्ठ समाज वही है जिसके सदस्य ज्ञान और कर्म में से एक को श्रेष्ठ और दूसरे को अद्यम नहीं मानते। श्रेष्ठ समाज वह है जिसके सदस्य जी खोलकर श्रम करते हैं। जरूरत से अधिक धन पर अधिकार जमाने की उनकी इच्छा नहीं होती। वे मानते हैं :

''उदर समाता अन्न लैं, तनहिं समाता चीर।
अधिकहि संग्रह ना करें, ताको नाम फकीर।''

प्रश्न :

1) 'गृहस्थ संन्यासी और संन्यासी गृहस्थ' से लेखक का क्या आशय है? 1

2) संन्यासी उत्तम कोटि का मनुष्य क्यों होता है? 1

3) समाज में विषमता कब उत्पन्न होती है? 1

4) 'मुख में कविता और करघे पर हाथ' के आधार पर अनुमान लगाओ कि इस गद्यांश में विचार किसके हैं? 1

5) श्रेष्ठ समाज कौन–सा है? 1

6) उपर्युक्त गद्यांश का 'शीर्षक' बताओ। 1

7) संचय की वृत्ति का क्या अभिप्राय है? 1

8) 'उदर' व 'चीर' शब्दों के अर्थ लिखो। 1

9) श्रेष्ठ संन्यासी किसे कहा गया है? 1

10) गृहस्थ में कौन–सा गुण अपेक्षित है? लेखक के दृष्टिकोण से स्पष्ट करें। 1

उत्तर :

1) गृहस्थ–संन्यासी और संन्यासी–गृहस्थ से आशय है गृहस्थ में रहकर संन्यासी जैसा सादा जीवन जीना दोनों में सन्तुलन बनाना ही संन्यासी–गृहस्थ जीवन है।

2) संन्यासी उत्तम कोटि का इसलिये होता है क्योंकि उसमें संचय (जोड़ने) की वृत्ति नहीं होती।

3) ज्ञान और कर्म को भिन्न करने से समाज में विषमता उत्पन्न होती है।

4) इस पंक्ति के आधार पर कहा जा सकता है कि इसमें संत कबीर के विचार व्यक्त हुए हैं।

5) श्रेष्ठ समाज वह है जिसके सदस्य ज्ञान और कर्म को बराबर का महत्व देते हैं। ऐसे समाज के लोग खूब मेहनत करते हैं तथा अधिक धन पर अधिकार नहीं जमाते।

6) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक ''सच्चा संन्यासी और गृहस्थ''।

7) संचय की वृत्ति का अभिप्राय है– आवश्यकता से अधिक मात्रा में एकत्रित करने की मंशा।

8) उदर–पेट, चीर–वस्त्र।

9) ऐसे व्यक्ति को श्रेष्ठ संन्यासी कहा गया है जिसमें लोभ, स्वार्थ न हो और जो संचय करने की अपेक्षा समाज के लिए कुछ करे।

10) गृहस्थ को एक संन्यासी की भाँति संचय वृत्ति त्यागकर लोभ और स्वार्थ से ऊपर उठकर अपने परिवार का पालन करना चाहिए।

प्रश्न–निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए– (हल सहित)

बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना ही भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन–मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। जरा सी गफलत हुए कि सारे संसार में आपके विरुद्ध ज़हरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातें बड़ी तेजी से फैल जाती हैं।

समाचारों के शीघ्र आदान–प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारत वर्ष की आत्मा कभी दंगा–फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती परंतु इतनी तेजी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते।

अगर लाखों–करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें जरूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे

नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद–विवाद और दंगे–फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा–जाप तो है नहीं।

यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन–मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

अपठित गद्यांश पर आधारित प्रश्न

(क) लेखक ने कठिन समस्या किसे माना है?

(ख) राजनीति अफवाहों के जरिए क्या करवाती है?

(ग) आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है?

(घ) चुप रहना खतरनाक कब हो जाता है?

(ड़) लेखक ने संघर्ष करना आवश्यक क्यों माना है?

(च) हमारा सारा साहित्य किसका साहित्य है?

(छ़) कौन से साधन अब भी दुर्बल है?

(ज) हम किस पर दृढ़ रहते हैं?

(झ) 'आदान–प्रदान' में प्रयुक्त समास है?

(ञ) गद्यांश के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शीर्षक होगा?

उत्तर–

(क) 1. अफवाहों के दौर में शांत रहना।

(ख) 2. दंगे।

(ग) 2. गलत बातों का प्रचार–प्रसार।

(घ) 1. जब गलत प्रचार होता है।

(ड़) 2. जन की हानि से बचने के लिए।

(च) 3. नीति और सच्चाई का।

(छ) 1. मनुष्य की भलाई को सोचने का।

(ज) 3. सच्चाई और भद्रता पर।

(झ) 2. द्वंद्व समास।

(ञ) 1. अन्याय का प्रतिकार।

अभ्यास कार्य

सभी धर्म हमें एक ही ईश्वर तक पहुँचाने के साधन हैं। अलग–अलग रास्तों पर चलकर भी हम एक ही ईश्वर तक पहुँचते हैं। इसमें किसी को दुखी नहीं होना चाहिए। हमें सभी धर्मों के प्रति समान भाव रखना चाहिए। दूसरे धर्मों के प्रति समभाव रखने से धर्म का क्षेत्र–व्यापक बनता है। हमारी धर्म के प्रति अंधता मिटती है। इससे हमारा प्रेम अधिक ज्ञानमय एवं पवित्र बनता है। यह बात लगभग असंभव है कि इस पृथ्वी पर कभी भी एक धर्म रहा होगा या हो सकेगा। यही कारण है कि लेखक विविध धर्मों में ऐसे तत्त्व को खोजने का प्रयास करता है जो विविधि धर्मों के अनुयायियों के मध्य सहनशीलता की भावना को विकसित कर सके।

सत्य के अनेक रूप होते हैं। यह सिद्धांत हमें दूसरे धर्मों को भली प्रकार समझने में मदद करता है। लेखक सात अंधों का उदाहरण देता है जिन्होंने हाथी का वर्णन अपने–अपने ढंग से किया। जिस अंधे का हाथी का जो अंग हाथ में आया, उसके अनुसार हाथी वैसा ही था। एक प्रकार से वे सभी अपनी–अपनी समझ से सही थे, पर इस दृष्टि से गलत थे कि उन्हें पूरे हाथी की समझ न थी। जब तक अलग–अलग धर्म मौजूद हैं, तब तक उनकी पृथक पहचान के लिए बाहरी चिह्न की आवश्यकता होती है, लेकिन ये चिह्न जब आडंबर बन जाते हैं और अपने धर्म को दूसरे से अलग बताने का काम करने लगते हैं, तब त्यागने के योग्य हो जाते हैं। धर्म का उद्देश्य तो यह होना चाहिए कि वह अपने अनुयायियों को अच्छा इंसान बनाए। उसे ईश्वर से यह प्रार्थना करनी चाहिए – तू सभी को वह प्रकाश प्रदान कर, जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।

ईश्वर एक ऐसी रहस्यमयी शक्ति है जो सर्वत्र व्याप्त है। उस शक्ति का अनुभव तो किया जा सकता है, पर देखा नहीं जा सकता। इस शक्ति का कोई प्रमाण नहीं दिया जा सकता। वह शक्ति इंद्रियों की पहुँच के बाहर है। लेखक यह अनुभव करता है कि उसके चारों ओर हर चीज हमेशा बदलती रहती है और नष्ट होती रहती है। इन परिवर्तनों के पीछे कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जो बदलती नहीं। वही शक्ति नया निर्माण एवं संहार करती रहती है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है। यह जीवन देने वाली शक्ति ही परमात्मा है। उसी का अस्तित्व अंतिम है। हमें यह तथ्य समझना चाहिए कि इंद्रियों द्वारा दिखाई देने वाली चीज स्थायी नहीं हो सकती। ईश्वर की शक्ति कल्याण करने वाली है। लेखक देखता है कि मृत्यु के बीच जीवन कायम रहता है, असत्य के बीच सत्य टिका रहता है और अंधकार के मध्य प्रकाश स्थिर रहता है। इससे पता चलता है कि ईश्वर जीवन है, सत्य है और प्रकाश है। वह परम कल्याणकारी है।

प्रश्न :

1) धर्मों के बारे में क्या कहा गया है? 1
2) धर्मों के प्रति समभाव रखना क्यों अच्छा है? 1
3) सत्य के अनेक रूप होने को किस उदाहरण द्वारा समझाया गया है? 1
4) ईश्वर कैसी शक्ति है? 1
5) हमें किस बात को समझना चाहिए? 1
6) असत्य और अंधकार के मध्य क्या स्थिर रहता है? 1
7) उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1
8) नव निर्माण व संहार के लिए उत्तरदायी शक्ति को लेखक ने क्या नाम दिया? 1
9) इस संसार में क्या अस्थायी है? 1
10) धर्म का वास्तविक उद्देश्य क्या होना चाहिए? 1

अभ्यास हेतु बहुविकल्पीय अपठित गद्यांश

(हल सहित)

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

इतिहास लिखने की ओर कोई जाति तभी प्रवृत्त होती है जब उसका ध्यान अपने इतिहास के निर्माण की ओर जाता है यह बात साहित्य के बारे में उतनी ही सच है जितनी जीवन का हिंदी में आज इतिहास लिखने के लिए यदि विशेष उत्साह दिखाई पड़ रहा है तो यही समझा जाएगा कि स्वराज्य–प्राप्ति के बाद सारा भारत जिस प्रकार सभी क्षेत्रों में इतिहास–निर्माण के लिए आकुल है उसी प्रकार हिंदी के विद्वान एवं साहित्यकार भी अपना ऐतिहासिक दायित्व निभाने के लिए प्रयत्नशील है। पहले भी जब साहित्य का इतिहास लिखने की परंपरा का सूत्रपात हुआ था तो संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के इतिहास निर्माण के साथ ही। यदि आरंभिक इतिहास का इतिहास में न जाकर पं. रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास को ही ले, जो हिंदी–साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास माना जाता है, तो उसकी ऐतिहासिकता द्योतित करने के लिए उस युग का राष्ट्रीय आंदोलन समानांतर दिखाई पड़ेगा। राजनीतिक इतिहास ग्रथों का सिलसिला उसी ऐतिहासिक दौर में जमा। परंतु शुक्लजी के इतिहास के संदर्भ में जो सबसे प्रासंगिक तथ्य है वह है तत्कालीन रचनात्मक साहित्य की ऐतिहासिक क्रांति–कविता और कथा–साहित्य का नवीन सृजनात्मक प्रयत्न। साहित्य का वैसा इतिहास तभी संभव हुआ जब साहित्य रचना के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक परिवर्तन आया, जब असच्चे अर्थों में इतिहास बना।

इसके अतिरिक्त, शुक्लजी का इतिहास 'हिन्दी शब्द सागर' के समय आया था, जिसके आसपास ही पं. कामताप्रसाद गुरु का पहला प्रमाणिक 'हिंदी व्याकरण' भी निकला था। साहित्य का इतिहास, शब्दकोश एवं व्याकरण क्या इन तीनों का एक साथ बनना आकस्मिक है? यह तथ्य इसलिए ध्यान देने योग्य है कि आज फिर जब साहित्यिक इतिहास लिखने का उत्साह उमड़ा है तो साथ–साथ शब्दकोश और व्याकरण के संशोधन एवं परिवर्तन के प्रयत्न भी हो रहे हैं, बल्कि जिस काशी नगरी प्रचारिणी सभा ने पिछले ऐतिहासिक दौर में ये तीनों कार्य किए थे, वही संस्था आज फिर बहुत बड़े पैमाने पर तीनों योजनाओं के साथ प्रस्तुत है। और चूंकि अब हिंदी का कार्यक्षेत्र पहले से कहीं अधिक व्यापक हो गया है इसलिए इस प्रकार के प्रयत्न यदि अन्य अनेक जगहों से भी हो तो स्वाभाविक ही कहा जाएगा, जैसे भारतीय हिंदी परिषद्, प्रचार की ओर से तीन

जिल्दों में प्रकाशित होने वाला 'हिंदी साहित्य'। इन तथ्यों से प्रमाणित होता है कि आज भी हिंदी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूर्णतः तत्पर है, जो कि उससे अपेक्षित भाषा जो कार्य काफी पहले कर चुकी है उसे थोड़े समय में ही जल्द से जल्द पूरा करके हिंदी भी सबके साथ आ जाना चाहती है, बल्कि संभव हुआ तो आगे निकल जाने के लिए भी आकुल है। सभा एवं परिषद् के बृहद–मध्यम इतिहास अनायास ही कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंगलिश लिटरेचर और ऑक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंगलिश लिटरेचर की याद दिला देता है। जैसा कि इन हिंदी इतिहासों का संतव्य स्पष्ट किया गया है, 'कोई एक लेखक सभी विषयों पर विशेषज्ञता की दृष्टि से विचार नहीं कर सकता है, इसलिए विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों के सहयोग से ऐसा इतिहास प्रस्तुत किया जाए जिसमें नवीनतम खोजो और नवीन व्याख्याओं का समुचित उपयोग हो सके। ऐसे संदर्भ–ग्रंथों की एक निश्चित उपयोगिता है किन्तु यह उनकी अनिवार्य सीमा भी है। इस सीमा को ध्यान में रखकर ही साहित्यिक इतिहास पर पुनर्विचार संभव है।

1. प्रस्तुत गद्यांश में किस विषय पर बात हुई है?
2. किस समय से इतिहास लेखन में हिंदी के विद्वानों ने व्याकुलता दिखाई?
3. साहित्यिक इतिहास की सीमा क्या है?
4. वर्तमान में हिंदी का कार्य क्षेत्र कैसा है?
5. भारतीय हिंदी परिषद् कहाँ स्थित है?
6. शुक्ल जी का इतिहास किसके साथ आया था?
7. साहित्य का इतिहास लिखना कैसे संभव हुआ?
8. इतिहास लिखने की ओर कोई प्रवृत्त कब होता है?
9. इतिहास लेखन का कार्य किस संस्था ने पहले किया था?
10. हिंदी साहित्य का पहला व्यवस्थित इतिहास किसके इतिहास को माना जाता है?

2. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

तत्ववेत्ता शिक्षाविदों के अनुसार विद्या दो प्रकार की होती है। प्रथम वह, जो हमें जीवन–यापन के लिए अर्जन करना सिखाती है और द्वितीय वह, जो हमें जीना सिखाती है। इनमें से एक का भी अभाव जीवन को निरर्थक बना देता है। बिना कमाए जीवन–निर्वाह संभव नहीं। कोई भी नहीं चाहेगा कि वह परावलंबी हो–

माता–पिता, परिवार के किसी सदस्य, जाति या समाज पर। पहली विद्या से विहीन व्यक्ति का जीवन दूभर हो जाता है, वह दूसरों के लिए भार बन जाता है। साथ ही विद्या के बिना सार्थक जीवन नहीं जिया जा सकता। बहुत अर्जित कर लेनेवाले व्यक्ति का जीवन यदि सुचारू रूप से नहीं चल रहा, उसमें यदि वह जीवन–शक्ति नहीं है, जो उसके अपने जीवन को तो सत्यपथ पर अग्रसर करती ही है, साथ ही वह अपने समाज, जाति एवं राष्ट्र के लिए भी मार्गदर्शन करती है, तो उसका जीवन भी मानव–जीवन का अभिधान नहीं पा सकता। वह भारवाही गंदर्भ बन जाता है या पूँछ–सींगविहीन पशु कहा जाता है।

वर्तमान भारत में दूसरी विद्या का प्रायः अभाव दिखाई देता है, परंतु पहली विद्या का रूप भी विकृत ही है, क्योंकि न तो स्कूल–कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त करके निकला छात्र जीवविकार्जन के योग्य बन पाता है और न ही वह उन संस्कारों से युक्त हो पाता है, जिनसे व्यक्ति 'कु' से 'सु' बनता है। सुशिक्षित, सुसभय और सुसंस्कृत कहलाने का अधिकारी होता है। वर्तमान शिक्षा–पद्धति के अंतर्गत हम जो विद्या प्राप्त कर रहे हैं, उसकी विशेषताओं को सर्वथा नकारा भी नहीं जा सकता। यह शिक्षा कुछ सीमा तक हमारे दृष्टिकोण को विकसित भी करती है, हमारी मनीषा को प्रबुद्ध बनाती है तथा भावनाओं को चेतन करती है, किन्तु कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी आदि की शिक्षा नाममात्र की होने के फलस्वरूप इस देश के स्नातक के लिए जीविकार्जन टेढ़ी खीर बन जाता है और बृहस्पति बना युवक नौकरी की तलाश में अर्जियों लिखने में ही अपने जीवन का बहुमूल्य समय बर्बाद कर लेता है।

जीवन के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षा के क्रमिक सोपानों पर विचार किया जाए, तो भारतीय विद्यार्थी को सर्वप्रथम इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो आवश्यक हो, दूसरी जो उपयोगी हो और तीसरी जो हमारे जीवन को परिष्कृत एवं अलंकृत करती हो। ये तीनों सीढ़ियों एक के बाद एक आती है, इनमें व्यतिक्रम नहीं होन चाहिए। इस क्रम में व्याघात आ जाने से मानव–जीवन का चारू प्रासाद खड़ा करना असंभव है। यह तो भवन की छत बनाकर नींव बनाने के सदृश है। वर्तमान भारत में शिक्षा की अवस्था देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने 'अन्न' से 'आनन्द' की ओर बढ़ने को जो 'विद्या का सार' कहा था, वह सर्वथा समीचीन ही था।

1. बिना कमाए क्या संभव नहीं है?
2. विद्या के कितने रूप बताये गए हैं?
3. आधुनिक शिक्षा पद्धति की विशेषता है–
4. विद्याहीन व्यक्ति का जीवन कैसा होता है?
5. विद्याहीन मनुष्य का जीवन कैसा होता है?
6. विद्या हमें किस पथ पर अग्रसर करती है?
7. मनुष्य मानव जीवन का अभिधान कब नहीं पा सकता?
8. 'परावलम्बी शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग है–
9. आधुनिक शिक्षित युवक का अधिकांश समय कैसे व्यतीत होता है?
10. गद्यांश के लिए उचित शीर्षक होगा–

अपठित पद्यांश

क) निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

यदि फूल नहीं बो सकते तो,
काँटे कम–से–कम मत बोना।
है अगम चेतना की घाटी,
कमजोर बड़ा मानव का मन।
ममता की शीतल छाया में,
होता कटुता का स्वयं शमन।
ज्वालाएँ जब घुल जाती हैं
खुल–खुल जाते हैं मुँदे नयन।
होकर निर्मलता में प्रशांत,
बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन।
संकटमें यदि मुस्का न सको,
भय से कातर हो मत रोना।
यदि फूल नहीं बन सकते तो,
काँटे कम से कम मत बोना।।

प्रश्न :

1) 'काँटे बोने' से कवि का क्या आशय है? 1
2) कटुता का शमन कैसे होता है? 1
3) मुँदे नयन कब खुल जाते हैं? 1
4) संकट आने पर मनुष्य को कैसा व्यवहार करना चाहिए? 1
5) 'खुल–खुल जाते हैं' में कौन–सा अलंकार है? 1
6) चेतना की घाटी कैसी है? 1
7) मानव मन कैसा होता है? 1
8) कवि के अनुसार हमें दूसरों के लिए क्या नहीं बोना चाहिए? 1

उत्तर :

1) किसी के जीवन में बाधाएँ, परेशानियाँ पैदा करना।
2) ममता की शीतल छाया में आकर।

3) जब ईर्ष्या–द्वेष और बुरे विचार समाप्त हो जाते हैं।

4) भय से घबराना, रोना नहीं चाहिए बल्कि धैर्य से काम लेना चाहिए।

5) पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार।

6) अगम

7) कमजोर

8) काँटे

अपठित काव्यांश अभ्यास कार्य

ख) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा उससे सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. देखकर बाधा विविध बहुविघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग्य के दुःख भोग पछताते नहीं।।
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं।।
हो गए एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।।

प्रश्न :

1) कैसा व्यक्ति असफल होकर दुःख भोगता है? 1

2) किन व्यक्तियों के बुरे दिन भी भले दिन बन जाते हैं? 1

3) संसार में कैसा व्यक्ति फलता फूलता है? 1

4) कर्मवीर व्यक्ति के क्या–क्या लक्षण बताएं हैं? 1

5) 'भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं' का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

6) भाग्य के भरोसे कौन रहता है? 1

7) उकताने का अर्थ बताओ। 1

8) चंचल का विलोम लिखो। 1

2. इतनी ऊँची इसकी चोटी सकल धरती का ताज यही,
पर्वत पहाड़ से भरी धरा पर केवल पर्वत राज यही।
अंबर में सिर, पाताल चरन,

मन इसका गंगा का बचपन

तन वरन वरन मुख निरावरण

इसकी छाया में जो भी है, वह मस्तक नहीं झुकाता हैं

गिरिराज हिमालय से भारत का कुछ ऐसा ही नाता है।।

प्रश्न :

1) हिमालय का भारत से क्या सम्बन्ध है? 1

2) हिमालय को पर्वतराज क्यों कहते हैं? 1

3) हिमालय का तन और मन कैसा है? 1

4) किसके मन को गंगा का बचपन कहा गया है? 1

5) 'इसकी छाया में जो भी है वह मस्तक नहीं झुकाता है' का आशय स्पष्ट कीजिए। 1

6) 'अंबर' के दो पर्यायवाची लिखिए। 1

7) 'गिरिराज' का अर्थ लिखिए। 1

8) 'पाताल' का विलोम लिखिए। 1

अपठित काव्यांश–1

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 1×8=8

आम की थी डाल हरियल,
मैं मग्न मन झूमता था
कई पल्लव और भी थे,
उन्हें जी भर चूमता था।
देख मेरा हरा यौवन मुस्कुराती नित्य डाली
गीत से मन जीत लेते कभी कोयल, कभी माली
बाग बस्ती में अचानक हुआ मेरा रंग पीला
खिलखिलाना बंद, बजना बंद, यह तन पड़ा ढीला।
हवा ने ऐसा हिलाया डाल का भी साथ छूटा,
रह गया परिवार पीछे, एक पल्लव हाथ! टूटा।
जब हवा की गोद में कुछ दूर बगिया से बहा
देवता हो तुम पवन मेरी सुनो मैंने कहा।
जन्मभूमि बाग मेरी मूल माँ चरण चूमूँ
खाद बनकर करूँ सेवा फिर किसी डाली पै झूमूँ
पवन की करुण कृपा से बाग में उड़ लौट आया,
वृक्ष के चरणों में पल्लव खाद बनकर मुस्कुराया।

प्रश्नः

(i) पल्लव की युवावस्था का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए/कीजिए। 1

(ii) अचानक पल्लव को क्या पीड़ा हुई और क्यों? 1

(iii) पल्लव ने पवन से क्या प्रार्थना की और क्यों? 1

(iv) इस काव्यांश से क्या प्रेरणा मिलती है? 1

(v) काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। 1

(vi) यौवन का विलोम लिखो। 1

(vii) पल्लव का अर्थ स्पष्ट करो। 1

(viii) करुण कृपा में कौन सा अलंकार है? 1

अपठित काव्यांश–2

निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– 1×5=8

सुबह जब अंधकार कहीं नहीं
होगा, हम बुझी हुई बत्तियेां को
इकट्ठा करेंगे और
आपस में बाँट लेंगे
दुपहर जब कहीं बर्फ नहीं
होगी और न झड़ती हुई पत्तियाँ
आकाश नीला और स्वच्छ
होगा नगर
क्रेन के पट्टे में झूलता हुआ
हम मोड़ पर मिलेंगे और
एक दूसरे से ईर्ष्या करेंगे।
रात जब युद्ध एक गीत–पंक्ति की तरह
प्रिय होगा, हम वायलिन को
रोते हुए सुनेंगे
अपने टूटे संबंधों पर सोचेंगे।
दुखी होंगे।

प्रश्न :

1. कौन, क्या काम सुबह करेगा? 1
2. दुपहर के समय कैसा वातावरण होगा? 1
3. हम लोग कहाँ मिलेंगे? 1
4. रात के समय क्या होगा? 1
5. कवि इस कविता के माध्यम से क्या कहना चाह रहा है? 1
6. स्वच्छ का विलोम लिखो। 1
7. 'अंधकार' के दो पर्याय लिखिए। 1
8. कवि के अनुसार नगर कैसा होगा? 1

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–1

विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा–XI

समयः 3 घण्टे **पूर्णांक : 80**

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

विद्वानों का यह कथन बहुत ठीक है कि विनम्रता के बिना स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं। इस बात को सब लोग मानते हैं कि आत्मसंस्कार के लिए थोड़ी–बहुत मानसिक स्वतंत्रता परमावश्यक है चाहे उस स्वतंत्रता में अभिमान और नम्रता दोनों का मेल हो और चाहे वह नम्रता ही से उत्पन्न हो। यह बात तो निश्चित है कि जो मनुष्य मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहता है, उसके लिए वह गुण अनिवार्य है, जिसमें आत्मनिर्भरता स्मरण है और जिसमें अपने पैरों के बल खड़ा होना आता है।

युवा को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि वह बहुत कम बातें जानता है, अपने ही आदर्श से वह बहुत नीचे है और उसकी आकांक्षाएँ उसकी योग्यता से कहीं बढ़ी हुई हैं। उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने बड़ों का सम्मान करे, छोटों और बराबर वालों से कोमलता का व्यवहार करें, ये बातें आत्ममर्यादा के लिए आवश्यक है। यह सारा संसार, जो कुछ हम हैं और जो कुछ हमारा है– हमारा शरीर, हमारी आत्मा, हमारे भोग, हमारे घर और बाहर की दशा, हमारे बहुत अवगुण और थोड़े गुण सब इसी बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि हमें अपनी आत्मा को नम्र रखना चाहिए नम्रता से मेरा अभिप्राय दब्बूपन से नहीं है, जिसके कारण मनुष्य दूसरों का मुहँ ताकता है जिससे उसका संकल्प क्षीण और उसकी प्रज्ञा मंद हो जाती है, जिसके कारण वह आगे बढ़ने के समय भी पीछे रहता है और अवसर पड़ने पर चट–पट किसी बात का निर्णय नहीं कर सकता। मनुष्य का बेड़ा उसकी अपने ही हाथ में है, उसे वह चाहे जिधर ले जाए। सच्ची आत्मा वही है जो प्रत्येक दशा में, प्रत्येक स्थिति के बीच अपनी राह आप निकालती है।

निम्नलिखित प्रश्नों का सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

(क) विनम्रता के बिना किसका अर्थ नहीं होता?

(ख) मानसिक स्वतंत्रता किसके लिए आवश्यक है?

(ग) आत्मनिर्भर मनुष्य कैसा नहीं रहता है?

(घ) दब्बूपन का क्या दुष्परिणाम होता है?

(ड.) आत्ममर्यादित व्यक्ति कैसा होता है?

(च) युवा को किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

(छ) सच्ची आत्मा किसे कहा गया है?

(ज) 'अवगुण' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग कौन सा है?

(झ) दब्बूपन व्यक्ति के विकास में बाधक है, कैसे?

(ञ) गद्यांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

निर्झर की बूँदे ही गुमसुम, चट्टानों में कितनी मचलीं
पत्थर तोड़ कूदतीं झर–झर, झर–झर निर्भय निकलीं।
अब आगे क्या ? किसी गर्त में पड़ सकती थीं।
बन न सकीं तो गड्ढे में ही सड़ सकती थीं।
नहीं रुकेंगी, नहीं झुकेंगी, आगे बढ़ती सबसे कहती–
''गति है तो जीवन है'' कहकर मार्ग बनाती, बहती रहतीं,
लात मारकर पत्थर जैसी बाधा को जिसने ललकारा।
वही आज इठलाती फिरती गंगा–यमुना जैसी धारा।
आँधी तूफानों में निश्चय अपना सीना तान के निकले।।

प्रश्न–

1. जीवन में गति न हो तो क्या परिणाम हो सकता है?
2. जीवन के संदर्भ में ''आँधी–तूफान'' का क्या अर्थ है?
3. निर्झर की बूँदों से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?
4. 'झर–झर' में कौन सा अलंकार है?
5. निर्झर की बूँदें आगे नहीं बढ़ती तो क्या होता?
6. निर्झर की बूँदें क्या कहती आगे बढ़ती है?
7. पत्थर को लात मारकर निर्झर ने क्या किया?
8. 'गति है तो जीवन' का अर्थ क्या है?

अथवा

मुझको देना शक्ति–
कुछ अच्छा करने की
सबका दुःख हरने की
हर फूल खिलाने की
हर शूल हटाने की

मुझको देना शक्ति–
हरियाली ले आऊँ
खुशहाली दे पाऊँ
नेह नीर बरसाऊँ
धरती को सरसाऊँ

मुझको देना शक्ति–
मैं सबकी पीर हरूँ
आँधी में धीर धरूँ
पापों से सदा डरूँ
जीवन में नया करूँ

मुझको देना शक्ति–
नन्हीं पौध लगाऊँ
सींच सींच हरपाऊँ
अनजाने आँगन को
उपवन सा महकाऊँ

प्रश्न–

1. कवि ने अच्छा करने की शक्ति क्यों माँगी?
2. हरियाली लाने की कामना कवि ने क्यों की है?
3. 'आँधी' से क्या तात्पर्य है?
4. नन्हीं पौध लगाने से क्या आशय है?
5. 'अनजाने आँगन' को किस प्रकार महकाना चाहा है?

6. सीच सीच में कौन सा अंधकार है?

7. शूल हटाने से कवि का क्या आशय है?

8. नेह–नीर में कौन सा अलंकार है?

प्रश्न–3 निम्नलिखित प्रश्नों से उचित विकल्प छाँटिए–

(i) संचार प्रक्रिया में किसके द्वारा कूटवाचन अथवा डिकोडिंग की जाती है?

(क) संचारक (ख) वक्ता

(ग) प्राप्तकर्ता (घ) उपरोक्त सभी

(ii) जब दो व्यक्ति आपस में और आमने–सामने संचार करते हैं, ऐसी स्थिति किस प्रकार के संचार का उदाहरण है?

(क) अंतः वैयक्तिक (ख) जनसंचार

(ग) समूह संचार (घ) अंतर वैयक्तिक संचार

(iii) बाहर से खबरें लाने का काम कौन करता है?

(क) संपादक (ख) संवाददाता

(ग) सह–संपादक (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(iv) निम्न में से किसने हिंदी का पहला साप्ताहिक पत्र निकाला था?

(क) उदंत मार्तण्ड (ख) जेम्स ऑगस्ट हिकी

(ग) पंडित जुगल किशोर शुक्ल (घ) रामचंद्र शुक्ल

(v) पहली मूक फिल्म कौन–सी थी?

(क) आलम आरा (ख) राजा हरिश्चंद्र

(ग) अंकुर (घ) राजा रामचंद्र

प्रश्न–4 निम्नलिखित प्रश्नों में से उचित विकल्प का चयन करिए–

(i) कबीर किस काव्य परंपरा के कवि थे?

(क) निर्गुण संत (ख) सगुण संत

(ग) रामभक्त कवि (घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) "माली की मड़ई से 'उठ' में कौन सा अलंकार है।

(क) अनुप्रास (ख) यमक

(ग) रूपक (घ) उपमा

(iii) 'सूर' किस रस के सम्राट है?

(क) शांत (ख) शृंगार

(ग) वात्सल्य (घ) रौद्र

(iv) 'मानसरोवर' कहां स्थित है?

(क) तिब्बत के पार (ख) आसाम में

(ग) नेपाल में (घ) हिमालय में

(v) सपना टूटने पर नायिका का क्या हाल हुआ?

(क) वह कृष्ण के साथ झूलने लगी।

(ख) उसकी आँखों से अश्रु बहने लगे।

(ग) उसके घर के बाहर वर्षा होने लगी

(घ) वह खुशी से नाचने लगी

(vi) मगध किस बात का प्रतीक है?

(क) राज्य सत्ता का (ख) नगर का

(ग) राजा का (घ) संसार का

निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

1. भारत की पहली महिला शिक्षक कौन थी?

(क) सरोजिनी (ख) सावित्रीबाई फुले

(ग) पंडित रमाबाई (घ) मदर टेरेसा

2. 'दोपहर का भोजन' पाठ का केंद्रबिंदु कौन है?

(क) मुंशी जी (ख) रामचंद्र

(ग) मनोज (घ) सिद्धेश्वरी

3. 'खानाबदोश' कहानी में महेश को नशे की लत लगने का कारण था–

(क) बेरोज़गार होना

(ख) समय पर पैसा न मिलना

(ग) पत्नी का गलत राह पकड़ लेना

(घ) मालिक के द्वारा पिटाई होना

4. हामिद की दादी के अठन्नी बचाने की तुलना किससे की गई है?

(क) बूँद–बूँद घड़ा भरने से (ख) उनके ईमान से

(ग) गुल्लक से (घ) सागर भरने से

5. चमेली की बेटी का क्या नाम था?

(क) परी (ख) बसंता

(ग) शकुंतला (घ) किशोर

6. 'टॉर्च बेचने वाले' पाठ में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(क) भगवान के प्रातः आस्था रखने वालों

(ख) धार्मिक आडंबरों

(ग) राजनीतिक दुनिया (घ) इनमें से कोई नहीं

निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

1. 'हुसैन की कहानी' अपनी ज़बानी पाठ किस की आत्मकथा है?

(क) मकबूल फ़िदा हुसैन (ख) मोहन राकेश

(ग) शरतचंद्र (घ) विष्णु प्रभाकर

2. हुसैन किसकी मृत्यु के बाद कमरे में बंद रहने लगा?

(क) दादी की मृत्यु (ख) नानी की मृत्यु

(ग) दादा की मृत्यु (घ) मित्र की मृत्यु

3. किस फिल्म का पोस्टर देखकर मकबूल को ऑयल पेंटिंग बनाने का विचार आया?

(क) लोहागढ़ (ख) सिंहगढ़

(ग) बहादुरगढ़ (घ) लोहे की दीवार

4. आवारा मसीहा आत्मकथा के लेखक कौन है?

(क) शरतचंद्र (ख) विष्णु प्रभाकर

(ग) प्रेमचंद्र (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी

5. नाना के परिवार की आर्थिक हालत खराब होने पर परिवार को लौटकर कहां वापस जाना पड़ा?

(क) कलकत्ता (ख) विलासपुर

(ग) देवानंदपुर (घ) रायपुर

खण्ड (ब) (वर्णनात्मक प्रश्न) 40 अंक

7. निम्नलिखित विकल्पों में से किसी एक विषय पर दृश्य लेखन कीजिए।

बाढ़ का दृश्य

अथवा

कक्षा कक्ष का दृश्य

8. प्लास्टिक थैलियों पर प्रतिबंध के बावजूद इनके बढ़ते प्रयोग पर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करते हुए क्षेत्र के प्रमुख समाचार–पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए।

अथवा

दिल्ली नगर निगम कार्यालय में लिपिक पद के लिए स्ववृत्त सहित आवेदन पत्र लिखिए।

9. (क) आपके स्कूल में हिंदी साहित्य परिषद की एक सभा हिंदी दिवस समारोह को मनाने हेतु आयोजित की गई। उसका प्रतिवेदन लिखिए।

अथवा

रेजिडेंट्स वैलफेयर सोसायटी, दयानंद विहार की कार्यकारिणी समिति की बैठक के चुनाव के लिए कार्य सूची बनाइए।

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. संचार के विभिन्न तत्व कौन–कौन से हैं?
2. पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना क्यों आवश्यक है?

11. निम्नलिखित में से किसी दो प्रश्न का उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए–

1. कस्तूरी मृग के अपने पर चिढ़ने के क्या कारण हैं?
2. शाम होते ही कौन–कौन घर की ओर लौट पड़ते हैं?
3. 'गिरिधर नार नवावति' से सखी का क्या आशय है?

12. निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

कोई टोकता तक नहीं
इस डर से
कि मगध में
टोकने का रिवाज न बन जाए
एक बार शुरू होने पर
कहीं नहीं रुकता हस्तक्षेप–

वैसे तो मगधनिवासियों
कितना भी कतराओं
तुम बच नहीं सकते हस्तक्षेप से–
जब कोई नहीं करता
तब नगर के बीच से गुज़रता हुआ
मुर्दा
यह प्रश्न कर हस्तक्षेप करता है–
मनुष्य क्यों मरता है?

अथवा

साहिब अंध, मुसाहिब मूक, सभा बहिरी, रंग रीझ को माच्यो।
भूल्यो तहाँ भटक्यो घट औघट बूढ़िये को काहू कर्म न बाच्यो।।
भेष न सूझायो, कह्यो समझ्यो न, बतायो सुन्यो न, कहा रुचि राच्यो।?
'देव' तहाँ निबरे नट की बिगरी मति को सगरी निसि नाच्यो।।

13. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए–

(i) 'खनाबदोश' कहानी में आज के समाज की किन–किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है?

(ii) 'दोपहर का भोजन' शीर्षक किस प्रकार से सार्थक है?

(iii) 'टार्च बेचने वाले' पाठ के आधार पर निम्न कथन को स्पष्ट करें–

"भव्य पुरुष ने कहा–"जहाँ अंधकार है वहीं प्रकाश है।"

14. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

1888 में ज्योतिबा फुले को 'महात्मा' की उपाधि से सम्मानित किया गया तो उन्होंने कहा–"मुझे 'महात्मा' कहकर मेरे संघर्ष को पूर्ण विराम मत दीजिए। जब व्यक्ति मठाधीश बन जाता है तब वह संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए आप सब साधारण जन ही रहने दें, मुझे अपने बीच से अलग न करें।" महात्मा ज्योतिबा फुले की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे जो कहते थे, उसे अपने आचरण और व्यवहार में उतारकर दिखाते थे।

15. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दें–

(1) पाठ में मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की कौन–कौन सी बातें उभरकर आई हैं? (हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी पाठ से)

(2) उस समय वह सोच भी नहीं सकता था कि मनुष्य को दुःख पहुँचाने के अलावा भी साहित्य का कोई उद्देश्य हो सकता है? लेखक ने ऐसा क्यों कहा? आपके विचार से साहित्य के कौन–कौन से उद्देश्य हो सकते हैं?

उत्तर–

उत्तर संकेत एवं अंक योजना

1. (क) 1 स्वतंत्रता का।

   (ख) 2 आत्मसंस्कार के लिए।

   (ग) 3 परमुखपेक्षी।

   (घ) 4 वह त्वरित निर्णय नहीं ले सकता।

   (ड़) 2 आत्मसंस्कारित।

   (च) युवा को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसकी आकांक्षाएं उसकी योग्यताओं से बढ़ी हुई हैं।

   (छ) जो हर दशा में अपनी राह निकाल लेती है, वही सच्ची आत्मा कहलाती है।

   (ज) 'अवगुण' शब्द में उपसर्ग' अव है।

   (झ) दब्बूपन व्यक्ति के विकास में बाधक है क्योंकि उसका निर्णय स्थिर नहीं रह पाता।

   (अ) शीर्षक 'विनम्रता का महत्व'।

प्रश्न 2.

1. जीवन में गति न हो तो जीवन स्थितियों के गर्त में गिरकर सड़ जायेगा।
2. जीवन के संदर्भ में 'आँधी–तूफान' का अर्थ दुःखों–संकटों आदि से लगाया जा सकता है।
3. निर्झर की बूँदों से हमें विपरीत स्थितियों से संघर्ष रखते हुए आगे बढ़ने रहने की प्रेरणा मिलती है।
4. 'झर–झर' में अनुप्रास अलंकार है।
5. (घ) गर्त में पड़ जाती।
6. (ख) गति है तो जीवन है।
7. (ग) ललकारा
8. (घ) व्यक्ति को सदैव कर्मशील होना चाहिए।

अथवा

उत्तर

(1) अच्छा काम करने से दूसरों का दुख दूर किया जा सकता है?

(2) हरियाली से खुशहाली और समृद्धि आती है?

(3) जीवन में बाधा पहुँचाने वाली शक्तियाँ।

(4) भावी पीढ़ी को सही दिशा देना।

(5) कवि अनजाने आँगन को उपवन की तरह महकाना चाहता है?

(6) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।

(7) लोगों के जीवन से कठिनाइयों का समाधान करने से।

(8) अनुप्रास / रूपक

प्रश्न (3)

(i) (ग) प्राप्तकर्त्ता (ii) (घ) अन्तरवैयक्तिक संचार

(iii) (ग) संवाददाता (iv) (ग) पं. जुगल किशोर शुक्ल

(v) राजा हरिश्चंद्र

उत्तर संख्या–4

(i) निर्गुण संत (ii) अनुप्रास

(iii) वात्सल्य रस (iv) तिब्बत के पार

(v) उसकी आँखों से अश्रु बहने लगे।

(vi) राज्य सत्ता का।

उत्तर संकेत–5

1. (ख) सावित्रीबाई फुले 2. (घ) सिद्धेश्वरी

3. (ग) पत्नी का गलत राह पकड़ लेना

4. (ख) उनके ईमान से 5. (ग) शकुंतला

6. (ख) धार्मिक आडंबरों

उत्तर संकेत–6

1. (क) मकबूल फ़िदा हुसैन 2. (ग) दादा की मृत्यु

3. (ख) सिंहगढ़ 4. (ख) विष्णु प्रभाकर

5. (ग) देवानंदपुर

दृश्य लेखन

बाढ़ का दृश्य

दृश्य 1 / दोपहर / बाहर / गाँव

{एक बड़ा क्षेत्र जलमग्न है। तेज रफ्तार में बहते पानी अनेक पेड़ पौधों, खेत खलिहानों, मकानों आदि को अपने में समाता जा रहा है। तेज बढ़ते पानी में मवेशियों की लाशे तैर रही हैं। डोंगियों में सवार लोग अपने जरूरी सामान को समेटकर परेशानी भरे मन से चप्पू चला रहे हैं। कुछ लोग आसपास की ऊँची छतों पर चढ़ कर बचाव दल के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। रेडियो पर समाचार बुलेटिन चल रहा है। छत पर सभी लोग रेडियो के इर्द गिर्द खड़े हैं। डोंगियों में बैठे लोग मोबाइल फोन से अपनी स्थिति व अपनों के सुरक्षित हालचाल की जानकारी साझा कर रहे हैं। बच्चों के जोर–जोर से रोने की आवाजे आ रही हैं। सबके चेहरे पर दुःख और भय छलक रहा है। आसमान में हेलिकॉप्टर की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही है। हेलिकॉप्टर से छतों पर लोगों के लिए खाने के पैकेट गिराए जा रहे हैं। भूख से बेहाल लोग पैकेट सावधानीपूर्वक लपक रहे हैं किन्तु कुछ पैकेट पानी में भी गिर रहे हैं। दिन ढल रहा है और पानी की रफ्तार बढ़ती जा रही है।}

कट टू

अथवा

दृश्य 1 / दिन / अंदर / कक्षा कक्ष / अध्यापक, दीपक, 40 विद्यार्थी

{कक्षा कक्ष के मुख्य दरवाजे के ठीक ऊपर पीली पट्टी में काले रंग के मोटे अक्षरों में कमरा संख्या 104 अंकित है। प्रवेश द्वार के बाएं तरफ 11वीं स के नाम की तख्ती लगी है। कक्षा के भीतर श्यामपट्ट पर हिंदी विषय से संबंधित शब्दार्थ लिखे हैं। श्यामपट्ट की सामने की दीवार पर लगे डिस्प्ले बोर्ड पर सभी विषयों के रंगीन चार्ट लगे हैं। डेस्कों की चार कतारों पर सभी छात्र शांत बैठे हैं व तल्लीनता से पाठ पढ रहे हैं। हिंदी की कक्षा चल रही है। अध्यापक पाठ का सस्वर वाचन करते हुए कक्षा में धीरे–धीरे टहल रहे हैं। पहली कतार के अंतिम डेस्क पर पहुंचकर छात्र दीपक को देखते हैं।}

अध्यापक–{गंभीरता से} दीपक, तुम इस समय यह चित्र क्यों बना रहे हो?

दीपक– {घबराते हुए} सर, वे ..... वो सर।

{सभी बच्चे दीपक को देखकर हँस रहे हैं}

अध्यापक– {सहज होकर} जरा दिखाओं तो चित्र। अरे! वाह! यह तो अति सुन्दर प्राकृतिक दृश्य है। इसका उपयोग हम 'बादल को घिरते देखा है' कविता में जरूर करेगे। सभी बच्चे दीपक के लिए ताली बजाएंगे।

{तड़ तड़ तड़ तड़ तालियों की आवाज कक्षा में गूँज रही है।}

अध्यापक– {दीपक को प्यार से समझाते हुए} बेटा! यह चित्र अवकाश के समय में अवश्य पूरा करना। अभी आप ध्यान पूर्वक पाठ समझिए।

दीपक – {आदर भाव से} जी सर, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। अब मैं पाठ पर ध्यान दूँगा।

अध्यापक हर्ष अनुभूति के साथ पाठ का सस्वर वाचन करते हुए आगे बढ़ गए हैं।

परीक्षा भवन,

नई दिल्ली

15 सितम्बर 2021

प्रति

सम्पादक

नवभारत टाइम्स

बहादुर शाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली–110001

विषय – प्लास्टिक थैली पर प्रतिबंध के बावजूद इनके बढ़ते प्रयोग के संबंध में।

महोदय/महोदया

मैं आप के प्रतिष्ठित एवं लोकप्रिय समाचार पत्र के माध्यम से देश के नागरिकों और अधिकारियों का ध्यान प्लास्टिक थैलों पर प्रतिबंध के बावजूद इनके बढ़ते प्रयोग पर दिलाना चाहता हूँ।

दिल्ली हमारे देश की राजधानी है तथा विश्व के प्रमुख नगरों में गिनी जाती है आज दिल्ली महानगर की प्रदूषण समस्या अत्यंत चिंताजनक है। हालांकि सरकार ने प्लास्टिक थैलों पर प्रतिबंध लगा दिया है परंतु जैसा कि हम देखते हैं कि आज भी बाजार में हर तरह की वस्तुओं को प्लास्टिक बैग में ही डाल कर बेचा जाता है।

प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग पर्यावरण के लिए हानिकारक है किन्तु यह लोगों की जीवन शैली की एक आम जरूरत बन गई है। इसी कारण लोग इसके दुष्प्रभावों को जानते हुए भी इसके उपयोग को पूरी तरह बंद नहीं कर पा रहे हैं और चिंतनीय पहलू यह है कि लोग प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं। प्रतिदिन प्लास्टिक बैग में ही भरकर कूड़ेदान में डाला जाता है। सब्ज़ियाँ व फल लाने में भी प्लास्टिक का ही उपयोग हो रहा है। प्लास्टिक को जलाए जाने पर प्रदूषण बढ़ता है। जल सरोवर के पानी में भी प्लास्टिक बैग उपयोग करके फेंक दिया जाता है जिसे जल जंतु खाकर मर रहे हैं। प्लास्टिक जलाने के कारण प्रदूषण की समस्या दिन प्रतिदिन बदतर होती जा रही है। हमें इस समस्या को अत्यंत गंभीरता से लेकर जागरूकता को अपनाना चाहिए। मेरा अधिकारियों से विनम्र निवेदन है कि इस दिशा में कोई ठोस कदम उठाकर इस समस्या का समाधान करें।

आशा है कि मेरे विचारों को आप अपने समाचार पत्र में स्थान देंगे ताकि लोगों और सरकार के साझा प्रयासों से इस समस्या का स्थाई निवारण हो सके।

धन्यवाद

भवदीय

क ख ग

अथवा

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

24 मार्च, 2021

प्रति

अध्यक्ष

दिल्ली नगर निगम

दिल्ली

विषय – लिपिक पद हेतु आवेदन पत्र।

महोदय/महोदया

दैनिक जागरण में दिनांक 10 मार्च, 2021 को प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके विभाग में लिपिक के कुछ पद रिक्त हैं। मैं स्वयं को इस पद के उम्मीदवार के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैं आपको आश्वस्त करता हूँ कि यदि आप मुझे अवसर देंगे तो मैं अपना कार्य पूर्ण लगन परिश्रम और निष्ठा से करूँगा। आशा है कि आप मेरे आवेदन पर ध्यान पूर्वक विचार करेंगे। मैं शैक्षिक योग्यताओं, कार्य अनुभव आदि विवरण सहित अपना स्ववृत्त संलग्न कर रहा हूँ।

भवदीय

क ख ग

संलग्नक –

शैक्षिक तथा अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ

पासपोर्ट आकार की फोटो

स्ववृत्त

नाम – क ख ग

पिता का नाम – क ख ग

जन्म तिथि – क ख ग

स्थाई पता – क ख ग

शैक्षिक योग्यताएँ

क्रम संख्या	परीक्षा / डिग्री	विद्यालय / विश्वविद्यालय	उत्तीर्ण वर्ष	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2007	80
2.	बारहवीं कक्षा	सी.बी.एस.ई.	2009	85
3.	बी.ए.	दिल्ली विश्व विद्यालय	2012	60
अन्य	–			

व्यावसायिक योग्यता–टंकण में एक वर्षीय डिप्लोमा व 50 शब्द प्रति मिनट की गति

कार्य अनुभव – रेलवे विभाग में दो वर्ष का अनुभव

अन्य रुचियां – यात्रा सम्बन्धी ब्लॉग लेखन

भाषा ज्ञान – हिंदी, अंग्रेजी व पंजाबी

संपर्क :

1. प्रधानाचार्य सर्वोदय विद्यालय, रोहिणी
2. प्रबन्धक, केनरा बैंक, रोहिणी

दिनांक – 12 जनवरी, 2021

हस्ताक्षर

उत्तर 9 'हिंदी भाषा के प्रति सम्मान व विकास' सम्बंधी प्रतिवेदन

(क) स्कूल में हिंदी भाषा के प्रति सम्मान इसका निरंतर उपयोग करने के भाव जगाने व इसकी वैज्ञानिक प्रवृत्ति को समझाने के लिए 14 सितम्बर 20..... को विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री के.पी. सिंह ने हिंदी साहित्य परिषद के साथ एक सभा आयोजित की जिसमें निम्नलिखित सदस्य थे।

1. श्रीमती निर्जरा हिंदी शिक्षक (सचिव)
2. श्रीमती यशोदा हिंदी शिक्षक (सदस्य)
3. श्री सुशील पटेल हिंदी शिक्षक (सदस्य)
4. विकास कुमार छात्र (सदस्य)
5. मनीषा छात्रा (सदस्य)

हिंदी साहित्य परिषद द्वारा यह अनुभव किया गया कि अंग्रेजी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने के कारण विज्ञान व वाणिज्य विषय पढ़ने वाले विद्यार्थियों की सामान्य बोलचाल की भाषा में अंग्रेजी का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है जो कि उचित नहीं है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए अपनी भाषा की पहचान और प्रयोग गर्व की बात है। अतः निम्नलिखित कार्ययोजना से हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति को बढ़ावा दिया जाएगा।

विद्यालय में नियमित रूप से भाषण, कविता पाठ और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी।

हिंदी के गौरव को प्रकट करने वाली उक्तियाँ विद्यालय परिसर में लिखी जाएगी।

गत वर्ष की हिंदी परीक्षा विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी को सम्मानित किया जाएगा।

दिनांक .....

हस्ताक्षर

1. सचिव 2. सदस्य 3. सदस्य 4. सदस्य 5. सदस्य

अथवा

बैठक की तिथ – 23 जनवरी

समय – 2:00 बजे

स्थान – दयानन्द विहार, दिल्ली

कार्य सूची–

1. सचिव का स्वागत
2. पिछली बैठक के कार्यवृत्त पर चर्चा
3. कार्यकारिणी की वार्षिक आम सभा के कार्यक्रम पर विचार
4. चुनाव तिथि व कार्यक्रम निर्धारण
5. समिति के आय व व्यय पर चर्चा
6. समिति का घोषण पत्र
7. धन्यवाद ज्ञापन

हस्ताक्षर
(सचिव)
रेजिडेंट्स वेलफेयर सोसइटी
दयानन्द विहार
दिल्ली

उत्तर 10(क)

1. स्रोत–संचार प्रक्रिया को प्रारंभ करता है। जो व्यक्ति अपने संदेश या सूचना को अन्य तक पहुंचाना चाहता है वह स्रोत या संचारक होता है।

2. कूटी कृत या एनकोडिंग–संदेश की भाषा का ज्ञान संचारक व प्राप्तकर्त्ता दोनों को होना चाहिए।

3. संदेश–सफल संचार के लिए संदेश का स्पष्ट और सीधा होना आवश्यक है।

4. माध्यम (चैनल)–संदेश को जिस माध्यम (टेलीफोन, समाचार पत्र, रेडियो या इंटरनेट) से संदेश प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचाया जाता है।

5. डिकोडिंग–प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझना।

6. फीडबैक–फीडबैक द्वारा पता चलता है कि संदेश सही रूप में प्राप्तकर्त्ता तक पहुँचा या नहीं।

7. शोर–संचार प्रक्रिया में आने वाली रुकावटें शोर कहलाती हैं। शोर मानसिक तकनीकी और भौतिकी भी हो सकता है।

10 (ख) पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना जरूरी है किसी पत्रकार के लिए वह पक्षपात अपशब्द की तरह है। जो पत्रकार अपने समाचारों में निष्पक्ष नहीं हो सकता वह पत्रकार नहीं हो सकता। पक्षपात करने वाले पत्रकार को उसके पाठक ही खारिज कर देते हैं। इसलिए जरूरी है कि पत्रकार समाचार में निजी राय न व्यक्त करें।

उत्तर 11 (क)

कस्तूरी मृग (हिरण) की नाभि में कस्तूरी बसी होती है। उसकी सुगंध उसे मस्त करती रहती है, लेकिन भाला हिरण इस सत्य से अपरिचित होता है। वह उसे ढूँढने के लिए इधर–उधर दौड़ता–फिरता है पर उसे ढूँढ नहीं पाता। कस्तूरी को कहीं भी न पाकर वह चिढ़–सा जाता है।

उत्तर 11 (ख)

शाम होते ही पशु, पक्षी, किसान, व्यापारी एवम् वो सभी लोग जो घरों से बाहर होते हैं, घर को लौट जाते हैं।

उत्तर 11 (ग)

'गिरिधर नार नवावति' से सखी का यह आशय है कि जो कृष्ण गोवर्धन पर्वत को

उठाते समय भी नहीं झुके, वही कृष्ण मुरली के वशीभूत होकर अपनी गर्दन झुका देते हैं। वैसे बाँसुरी बजाने में यह एक सामान्य–सी क्रिया है, पर सखी सौतिया डाहवश मुरली को स्त्रीरूप मानकर उससे ईर्ष्या रखती है। उसके कथन में यह व्यंग्य है कि कृष्ण एक साधारण नारी (बाँसुरी के रूप में) के प्रेम में वशीभूत होकर अपनी गर्दन तक नवाने को तैयार हो जाते हैं।

उत्तर 12.

1. अवतरण–कोई टोकता.....मरता है।

2. संदर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर श्रीकांत वर्मा की कविता हस्तक्षेप से उद्धृत हैं। प्रस्तुत कविता. श्रीकांत वर्मा जी के 'मगध' काव्य संग्रह का अंग हैं।

3. प्रसंग–प्रस्तुत पंक्तियों में कवि श्रीकान्त वर्मा सत्ता की निरंकुशता का उल्लेख कर रहे हैं। कवि के अनुसार सत्ता कभी नहीं चाहती कि उसके किसी भी क्रिया–कलाप पर कोई प्रश्नचिन्ह लगाया जाए उस टोका–टोकी को रोकने के लिए सत्ता विभिन्न प्रकार के नियम बनाती है श्री वर्मा कहते हैं कि–

4. व्याख्या–मगध में सत्ता के हुक्मरानों ने लोगों में इस तरह का विचार रोपित कर दिया है कि सत्ता के किसी भी कार्य में टोका–टोकी नहीं होनी चाहिए, कोई भी प्रश्न सत्ता पक्ष से पूछे नहीं जाने चाहिए वरना भविष्य में प्रश्न पूछने का चलन बन जाएगा।

कवि के अनुसार मगध की सत्ता किसी भी प्रकार के टोका–टोकी के खिलाफ है। लेकिन कवि कहता है बहुत सारी चीजें ऐसी है जिन पर सत्ता चाहकर भी नियंत्रण नहीं कर सकती जैसे भूख, गरीबी, बीमारी इत्यादि से मरते हुए को। जब कोई भूख, गरीबी या लाचारी से मरता है तो नगर के मध्य से गुजरता हुआ मुर्दा उस नगर के समस्त नगरवासियों से प्रश्न करता है कि यदि तुम्हारी सारी व्यवस्था यदि इतनी ही बेहतरीन थी तो व्यक्ति भूख, गरीबी से भरा क्यों?

साहित्यिक सौंदर्य–

(क) भाषा–खड़ी बोली (ख) रस–शान्त रस

(ग) छंद–मुक्त छंद (घ) गुण–माधुर्य

(ङ) शब्द शक्ति–व्यंजना

(च) श्रीकान्त वर्मा ने मगध के बहाने सत्ता की निरंकुशता का वर्णन किया है।

उत्तर 13. (i)

'खानाबदोश'कहानी में आज के समाज की निम्नलिखित समस्याओं को रेखांकित किया गया है–

- मजदूर वर्ग का सभी शोषण करते हैं और वे इस यातना को झेलने के लिए विवश हैं।
- मजदूर अभी भी नारकीय जीवन जीते हैं। उनके लिए सुविधाओं का अभाव है।
- हमारे समाज में अभी भी जातिवादी मानसिकता हावी है। यह समाज में दरार डालती है।
- समाज में स्त्रियों की इज्जत सुरक्षित नहीं है।

इन समस्याओं के प्रति लेखक का दृष्टिकोण मानो और सुकिया के माध्यम से प्रकट हुआ है। वे शोषण के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं करते बल्कि कष्टपूर्ण जीवन झेलने के लिए कहीं और चल देते हैं किन्तु कोई गारंटी नहीं है कि वहाँ उन्हें इसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। कहानीकार की श्रमिक वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट हुई है।

उत्तर 12. (ii)

(क) अमरकांत की कहानी 'दोपहर का भोजन' शीर्षक की दृष्टि से सफल रचना है। इस कहानी का सम्पूर्ण कथानक दोपहर के भोजन पर सिमटा है। सिद्धेश्वरी ने दोपहर का भोजन तैयार कर लिया है। सबसे पहले उसका बड़ा बेटा रामचंद्र भोजन के लिए आता है, उसके बाद छोटा बेटा मोहन व फिर मुंशी जी भोजन के लिए आते हैं। इस कहानी के पूरे संवाद दोपहर के भोजन पर केन्द्रित हैं। पात्रों की सभी वार्ताएँ दोपहर का भोजन करते हुए ही होती हैं। अतः इस कहानी का शीर्षक 'दोपहर का भोजन' पूरी तरह से सार्थक और सटीक है।

(ख) जहाँ अंधकार होता है वहीं प्रकाश भी होता है। प्रकाश है तो अंधकार भी अवश्य ही होगा। जिस प्रकार दुख है तो सुख भी है इसी प्रकार अंधकार है तो प्रकाश भी है। अंधकार का स्थान प्रकाश ग्रहण करता है और प्रकाश का स्थान अंधकार ग्रहण करता है। यही इस कथन का अर्थ भी है। अंधकार में कोई न कोई प्रकाश की किरण अवश्य होती है। अतः उस किरण को तलाश कर अपने लिए जीवन में मार्ग बनाना चाहिए।

उत्तर 14.

संदर्भ– पाठ ज्योतिबा फुले

लेखिका सुधा अरोड़ा

प्रसंग – लेखिका ने यहाँ 'ज्योतिबा फुले' के उस वक्तव्य का उल्लेख किया है जो उन्होंने उस समय दिया था जब उन्हें महात्मा कहकर पुकारा था।

व्याख्या–1888 में ज्योतिबा फुले को महात्मा की उपाधि से सम्मानित किया गया। फुले जी ने कहा कि महात्मा की उपाधि मेरे संघर्ष में बाधक बनेगी। उनका तर्क तथा कि मठाधीश बनने के बनने के बाद व्यक्ति आराम पसंद हो जाता है। ऐशो–आराम का जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति कभी संघर्ष नहीं कर सकता। उनका कहना था कि आप मुझे जैसा हूँ, वैसा ही रहने दीजिए। मुझे महात्मा या मठाधीश मत बनाओ। मैं अभी अपने जीवन को पूर्ण विराम नहीं देना चाहता। मैं अभी समाज की कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करना चाहता हूँ।

साहित्यिक सौंदर्य–

(1) खड़ी बोली का प्रयोग

(2) भाषा सरल, सहज रोचक

(3) ज्योतिबा फुले की कथनी और करनी में समानता बताकर उनके महान व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है।

(4) सादा सरल जीवन जीने की प्ररेणा मिलती है।

(5) 'मठाधीश' शब्द से समाज की वर्ग विषमता का पता चलता है।

उत्तर–15

मकबूल के पिता के व्यक्तित्व की निम्नलिखित बातें उभरकर सामने आई–

(i) संतान के भविष्य के प्रति चिंतित–दादा की मृत्यु के बाद मकबूल के पिता ने पुत्र के भविष्य का ध्यान करके उसे बड़ौदा के बोर्डिंग हाउस में भेजने का फैसला किया है।

(ii) धार्मिक व्यक्तित्व–मकबूल के पिता धार्मिक थे। वे चाहते थे कि उनका बेटा भी पढ़ाई के साथ–साथ मज़हबी तालीम ले, रोजा–नमाज को समझे तथा अपना आचरण अच्छा रखे। वे पवित्रता पर भी बल देते थे।

(iii) दूरदर्शी–मकबूल ने प्रसिद्ध चित्रकार बेन्द्रे को अपने अब्बा से मिलवाया। बेन्द्रे ने मकबूल के काम पर बात की। मकबूल के अब्बा को बात समझ आ गई। दूसरे दिन उन्होंने 'विनसर न्यूटन' से ऑयल ट्यूब और कैनवस मँगवाने का ऑर्डर भिजवा दिया। इससे मकबूल के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखी गई। उन्होंने तमाम पुरानी परंपराओं को तोड़ दिया और बेटे को कहा–"बेटा जाओ और जिंदगी को रंगों से भर दो।"

उत्तर–15.2

लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि शरत् को छात्रवृत्ति क्लास में जो साहित्य पढ़ना था उसका संबंध मनुष्य को केवल दुःख पहुँचाना प्रतीत होता था। उसे 'सती–वनवास' 'चारू पाठ', सद्भाव–सद्गुरु और प्रकांड व्याकरण पढ़ना पड़ा। उसे प्रतिदिन पंडितजी के सामने खड़े होकर परीक्षा भी देनी पड़ती थी। इस प्रकार बाल शरत् का सहित्य से प्रथ्झम परिचय आँसुओं के माध्यम से ही हुआ। उस स्थिति को देखकर यही सोचना पड़ता था कि मनुष्य को दुःख पहुँचाने के अलावा साहित्य का कोई और उद्देश्य नहीं हो सकता।

साहित्य के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं–

- मानवीय गरिमा को स्थापित करना।
- पहचान दिलाना और जीवन दृष्टि विकसित करना।
- मानव समाज में संवेदनशीलता की जड़े गहरी करना।

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–2

विषय : हिन्दी (ऐच्छिक)

कक्षा–XI

समयः 3 घण्टे **पूर्णांक : 80**

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते हैं, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारों पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने उन्हें कभी उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है। परन्तु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। हुआ यह है कि इस देश के कोटि–कोटि दरिद्र जनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे–कानून बनाए गए हैं, जो कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारू बनाने के लक्ष्य से प्रेरित है, परन्तु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन हर समय पवित्र नहीं होता। प्रायः ही वे लक्ष्य को भूल जाते हैं और अपनी ही सुख–सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गए। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परन्तु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं। भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि जो लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते। (1×10=10)

(क) भारतवर्ष में किस बात को महत्त्वहीन माना गया?

(ख) किस प्रकार के आचरण को निकृष्ट कहा गया है?

(ग) दरिद्रजनों की हीन आवस्था को दूर करने के लिए किए गए प्रयास सफल क्यों नहीं हो पाए?

(घ) व्यक्ति चित्त के आदर्शों द्वारा चालित न होने का परिणाम किस रूप में देखने को मिला?

(ड.) कानून और धर्म में अंतर किए जाने का क्या परिणाम हुआ?

(च) प्रस्तुत गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उचित विकल्प छांटिए –

(छ) मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान विकार है।

(ज) दरिद्र जनों की हीन अवस्था को सुधारने के लिए क्या उपाय किए गए?

(झ) भारतवर्ष में कानून को किस रूप में देखा गया?

(ञ) निकृष्ट का अर्थ है–

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

मिट्टी तन है, मिट्टी मन है, मिट्टी दाना–पानी है।
मिट्टी ही तन–बदन हमारा, सो सब ठीक कहानी है।
पर जो उल्टा समझ इसे ही बने आप ही ज्ञानी है।
मिट्टी करता है जीवन को और बड़ा अज्ञानी है।
समझ सदा अपना तन मिट्टी, मिट्टी जो कि रमाता है।
मिट्टी करके सरबस अपना मिट्टी में मिल जाता है।
जगत् है सच्चा तनिक न कच्चा समझो बच्चा इसका भेद।
खाओ पिओ कर्म करो नि कभी न लाओ मन में खेद।
रचा उसी का है यह जग जो निश्चय उसको प्यार है।
इसमें दोष लगाना अपने लिए दोष का द्वार है।

प्रश्न –

1. कवि ने मिट्टी की महिमा का बखान करते हुए क्या कहा है? 1
2. कवि इन काव्य–पंक्तियों के द्वारा क्या प्रेरणा देता है? 1
3. संसार की रचना में दोष निकालना क्यों व्यर्थ हैं? 1
4. 'सरबस' का तत्सम रूप लिखिए। 1
5. उपर्युक्त पंक्तियों के लिए उचित शीर्षक दीजिए। 1
6. निश्चय शब्द का विलोम लिखो। 1
7. दाना–पानी का अर्थ स्पष्ट करो। 1
8. अज्ञानी का दो पर्याय लिखो। 1

अथवा

पश्न–2

मैं बार–बार आऊँगा
लेकर फूलों का हार
तुम्हारे द्वार।

जितने भी काँटे पथ में
बिखरे हुए पाऊँगा
जरूर हटाऊँगा।

मैं बार–बार आऊँगा।
बहुत हैं अँधेरे जग मे
आँगन में देहरी पर
जहां तक हो सकेगा
दीपक जलाऊँगा

मैं बार–बार आऊँगा।
मुस्कानों की खुशबू को
बिखेर हर चेहरे पर
सूरज–सी चमक सदा
हर बार लाऊँगा
मैं बार–बार आऊँगा।

1. कवि ने बार–बार क्या लेकर आने को कहा है?
2. काँटों के बारे में कवि ने क्या कहा है?
3. कवि दीपक जलाने की बात क्यों करता है?
4. सूरज–सी चमक कैसे लाई जा सकेगी?
5. कवि की बार–बार आने की इच्छा क्या प्रकट करती है?
6. 'सूरज सी चमक' में कौन सा अलंकार है?
7. 'बहुत हैं अँधेरे जग में से कवि का क्या आशय है?
8. आँगन में देहरी से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न–3 निम्नलिखित प्रश्नों से उचित विकल्प छाँटिए–

1. जनसंचार माध्यमों में द्वारपाल होते हैं।

   (क) संवाददाता (ख) पाठक

   (ग) संपादक (घ) श्रोता

2. निम्नलिखित में से कौन–सा माध्यम अंतरक्रियात्मक है?

   (क) मुद्रित माध्यम (ख) इंटरनेट

   (ग) रेडियो (घ) टेलीविजन

3. जो समाचारों को संपादित कर छपने लायक बनाते हैं, उन्हें कहते हैं–

   (क) संवाददाता (ख) लेखक

   (ग) संपादक (घ) उपरोक्त सभी

4. समाचार पत्र में प्रकाशित होते हैं–

   (क) कार्टून (ख) विज्ञापन

   (ग) लेख (घ) उपरोक्त सभी

5. हिंदी के पहले साप्ताहिक पत्र व संपादक का नाम क्या है?

   (क) बंगाल गज़ट पं. जुगल किशोर शुक्ल

   (ख) उदंत मार्तण्ड, पं. जुगल किशोर

   (ग) उदंत मार्तण्ड, पं. जुगल किशोर शुक्ल

   (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न संख्या–4 : निम्न में से उचित विकल्प का चयन कीजिए।

1. कबीर की भाषा है–

(क) ब्रज (ख) सधुक्कड़ी

(ग) अवधी (घ) मैथिली

2. सूर किस काल के कवि हैं?

(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल

(ग) रीतिकाल (घ) इनमें से कोई नहीं

3. 'दरबार' कविता के अनुसार राजा कैसा था?

(क) गूँगा (ख) बहरा

(ग) अंधा (घ) लंगड़ा

4. "तट पर बगुलों सी वृद्धाएँ में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) उत्प्रेक्षा (घ) यमक

5. 'मोम के बंधन' से कवयित्री का क्या आशय है?

(क) माता–पिता (ख) मित्र

(ग) सभी रिस्ते–नाते (घ) सखा

6. धूमिल का पूरा नाम क्या है?

(क) सुदामा पाण्डेय (ख) श्रीदामा पाण्डेय

(ग) नरेश पाण्डेय (घ) अवधेश पाण्डेय

प्रश्न–5 निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटिए–

1. 'टॉर्च बेचने वाले' पाठ की भाषा है–

(क) व्यंग्यात्मक खड़ी बोली (ख) रचनात्मक बोली

(ग) प्रेम प्रधान बोली (घ) हास्य प्रधान बोली

2. सूबेसिंह कौन था?

(क) भट्टे के मालिक का बेटा (ख) शहर का कारोबारी

(ग) गाँव का मुखिया (घ) असगर का पिता

3. ज्योतिबा फुले जी को महात्मा की उपाधि कब दी जा रही थी?

(क) 1885 (ख) 1886

(ग) 1888 (घ) 1988

4. चमेली ने गूंगे को कितने पैसे पर काम पर रखा था?

(क) 4 रुपए (ख) 3 रुपए

(ग) 100 रुपए महीना (घ) 200 रुपए महीना

5. ज्योतिबा फुले के अनुसार एक आदर्श परिवार में कौन होना चाहिए?

(क) माता ईसाई (ख) पिता बौद्ध

(ग) बेटा सत्यधर्मी (घ) उपयुक्त सभी

6. रुस्तम–ए–हिंद' की उपाधि किसे दी गई?

(क) भिश्ती को (ख) चिमटे को

(ग) वकील साहब को (घ) सिपाही को

प्रश्न–6 निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

1. 'हुसैन की कहानी अपनी ज़बानी' पाठ किस व्यक्तित्व से संबंधित है?

(क) मेंहदी हसन (ख) मकबूल फिदा हुसैन

(ग) रजा हुसैन (घ) हामिद कंवर हुसैन

2. मुसदअली चाचा की दुकान पर बैठकर कौन से बाज़ार में हुसैन ड्राइंग और पेंटिंग बनाते थे?

(क) राजापुर बाज़ार (ख) रीनापुर बाज़ार

(ग) रानीपुर बाज़ार (घ) सर्राफ़ा बाज़ार

3. आवारा मसीहा आत्मकथा किस के चरित्र पर आधारित है?

(क) शरतचंद्र (ख) विष्णु प्रभाकर

(ग) प्रेमचंद (घ) रामवृक्ष बेनीपुरी

4. शरतचंद्र के पिता का क्या नाम था?

(क) मोतीलाल नेहरु (ख) मोतीलाल

(ग) ज्योति प्रसाद (घ) अघोरनाथ

5. बड़ौदा के किस महाराजा का जिक्र पाठ 'हुसैन की कहानी' में आया है?

(क) सियाजीराव (ख) बाजीराव I

(ग) बाजीराव II (घ) बालाजी विश्वनाथ

प्रश्न 7– निम्न विकल्पों में से किसी एक विषय पर दृश्य लेखन कीजिए।

प्रातःकालीन दृश्य

अथवा

साप्ताहिक बाजार का दृश्य

प्रश्न–8 अपने क्षेत्र में मलेरिया फैलने की संभावना को देखते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

अथवा

नारियों के प्रति अत्याचार की बढ़ती घटनाओं का विश्लेषण करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान का उपाय भी सुझाइए।

प्रश्न–9 (क) बाल मजदूरी की रोकथाम करने वाली समिति की जाँच का प्रतिवेदन लिखिए।

अथवा

विद्यालय की पर्यावरण संरक्षण समिति के द्वारा वन महोत्सव मनाने संबंधी बैठक संपन्न हुई थी। उसका कार्यवृत्त तैयार कीजिए।

प्रश्न–10 (क) पत्रकारिता के तीन पहलू कौन–कौन से हैं?

(ख) वॉच डॉग पत्रकारिता का क्या तात्पर्य है?

प्रश्न–11 निम्नलिखित में से किसी दो का उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए–

(i) खेल में रूठने वाले साथी के साथ सब क्यों नहीं खेलना चाहते?

(ii) नायिका अपने सपने में क्यों प्रसन्न थी और वह सपना कैसे टूट गया?

(iii) पंत जी ने संध्या के बाद कविता में नदी के तट का जो वर्णन किया है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न–12 निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए'

(i) दुर्गम बरफानी घाटी में

शत–सहस्र फुट ऊँचाई पर

अलख नाभि से उठने वाले
निज के ही उन्मादक परिमल–
के पीछे धावित हो–होकर
तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देख है
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

तट पर बगुलों सी वृद्धाएँ
विधवाएं जप ध्यान में मगन
मंथर धारा में बहता,
जिनका अदृश्य गति अंतर–रोदन

प्रश्न–13 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए।

(i) देश की सब प्रकार की उन्नति हो, इसके लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जो उपाय बताए हैं उनका वर्णन कीजिए।

(ii) (क) ज्योतिबा फुले व सावित्री बाई का दाम्पत्य जीवन किस प्रकार आधुनिक दंपत्तियों को प्रेरणा प्रदान करता है?

(iii) 'उसकी मां' कहानी के आधार पर लाल का चरित्र–चित्रण कीजिए।

प्रश्न–14 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मैं आज मनुष्य को एक घने अंधकार में देख रहा हूं। उसके भीतर कुछ बुझ गया है। यह युग ही अंधकारमय है। यह सर्वग्राही अंधकार संपूर्ण विश्व को अपने उदर में छिपाए है। आज मनुष्य इस अंधकार से घबरा उठा है। वह पथभ्रष्ट हो गया है। आज आत्मा में भी अंधकार है। अंतर की आँखें ज्योतिहीन हो गई हैं। वे उसे भेद नहीं पातीं। मानव–आत्मा अंधकार में घुटती है। मैं देख रहा हूं, मनुष्य की आत्मा भय और पीड़ा से त्रस्त हैं।"

प्रश्न–15 निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए–

1. "जो रुदन के विभिन्न रूपों को पहचानता है वह साधारण बालक नहीं है। बड़ा होकर वह निश्चय ही मनस्तत्व के व्यापार में प्रसिद्ध होगा।" अघोरनाथ बाबू के मित्र की इस टिप्पणी पर अपनी टिप्पणी कीजिए।

2. आप इस बात को कैसे कह सकते हैं कि लेखक का अपने दादा से विशेष लगाव रहा?

प्रतिदर्श प्रश्न पत्र–3

विषय : हिन्दी

कक्षा–XI

समयः 3 घण्टे **पूर्णांक : 80**

1. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1x10=10

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं हैं। इसके पोषक तत्व कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं। समर्थन के एक आधार पर कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है और चूंकि जाति–प्रथा भी श्रम विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई स्पष्ट नहीं है। इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यह आपत्तिजनक है कि जाति–प्रथा श्रम विभाजन के साथ–साथ श्रमिक–विभाजन का भी रूप लिए हुए है। श्रम विभाजन, निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है, लेकिन किसी सभ्य समाज में श्रम विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन नहीं करती। भारत की जाति–प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वास्थ्य विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक दूसरे की अपेक्षा ऊंच–नीच भी करार देती है जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता। जाति–प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। कुशल व्यक्ति या सक्षम–श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे व अपना परिचय या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके। इस सिद्धांत के विपरीत जाति–प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण या उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण जैसे माता–पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार, पहले से ही अर्थात् गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है।

1. आधुनिक सभ्य समाज कार्य कुशलता के लिए किसे आवश्यक मानता है?
2. किसी मनुष्य के लिए पेशा कैसे निर्धारित होता है?
3. जाति प्रथा के अनुसार श्रम विभाजन स्वाभाविक क्यों नहीं होता है?
4. श्रम विभाजन का दूसरा रूप क्या है?
5. किस आधार पर एक दूसरे के बीच ऊँच–नीच का भेद किया जाता है?
6. सक्षम श्रमिक समाज के निर्माण के लिए क्या आवश्यक है?
7. गर्भधारण के समय ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर देना किसका प्रतीक है?

8. जाति प्रथा के आधार पर क्या गलत है?
9. प्रस्तुत गद्यांश में क्या दर्शाया गया है?
10. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 1x8=8

चलते चलो, चलते चलो!
सूरज के संग–संग चलते चलो, चलते चलो!
तम के जो बंदी थे
सूरज ने मुक्त किए
किरनों से गगन पोंछा
धरती को रंग दिए
सूरज को विजय मिली ऋतुओं की, रात हुई
कह दो इन तारों से चंदा के संग–संग चलते चलो!

रत्नमयी वसुधा पर
चलने को चरन दिए
बैठी उस क्षितिज पार
लक्ष्मी शृंगार किए,
आज तुम्हें मुक्ति मिली, कौन तुम्हें दास कहे?
स्वामी तुम ऋतुओं के संवत् के संग–संग चलते चलो

मानव जिस ओर गया
नगर बने, तीर्थ बने
तुम से है कौन बड़ा?
गगन–सिंधु मित्र बने,
भूमि का भोगो सुख, नदियों का सोम पिओ
त्यागो सब जीर्ण वसन नूतन के संग–संग चलो।

प्रश्न –

1. कवि क्या करने को कह रहा है?
2. सूरज ने क्या काम किया है?
3. हमें चरण किसलिए मिले हैं?
4. लक्ष्मी के बारे में क्या कहा गया है?

5. वसुधा कैसी है?
6. 'धरती को रंग किसने दिए?
7. मानव जिधर गया उधर क्या बना?
8. कवि नदियों का क्या पीने को कहता है?

अथवा

तिनका तिनका–लाकर चिड़िया
रचती है आवास नया।
इसी तरह से रच जाता है
सर्जन का आकाश नया।

माव और दानव में यूँ तो
भेद नजर नहीं आएगा।
एक पोंछता बहते आँसू
जीभर एक रुलाएगा।
रचने से ही आ पाता है
जीवन में विश्वास नया।

कुछ तो इस धरती पर केवल
खून बहाने आते हैं।
आग बिछाते हैं राहों में
फिर खुद भी जल जाते हैं।
जो होते खुद मिटने वाले
वे रचते इतिहास नया।

मंत्र नाश का पढ़ा करें कुछ
द्वार–द्वार पर जा करके।
फूल खिलाने वाले रहते
घर–घर फूल खिला करके।

1. सर्जन का नया आकाश कैसे बनता है?
2. मानव और दानव में क्या अंतर है?
3. जीवन में नया विश्वास किस प्रकार आता है?
4. अत्याचार करने वालों का क्या अंत होता है?

5. नाश का मंत्र पढ़ने और फूल खिलाने से क्या तात्पर्य है?

6. पोंछता बहते आँसू से कवि का क्या आशय है?

7. तिनका–तिनका में कौन सा अलंकार है?

8. 'आग–बिछाते हैं राहों में' से कवि का क्या आशय है?

प्रश्न–3

1. पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथ स्तंभ क्यों है?

   (क) इसकी भाषा शैली प्रभावशाली होती है।

   (ख) इसकी राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में अहम् भूमिका है।

   (ग) इसकी पहुंच सभी वर्गों तक होती है।

   (घ) उपरोक्त सभी

2. जो पत्रकारिता किसी विचारधारा या किसी खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाती है और उस उद्देश्य या मुद्दे के पक्ष में जनमत् बनाने के लिए लगातार और जोर–शोर से अभियान चलाते हैं। इस प्रकार की पत्रकारिता को ..... कहते हैं।

   (क) खोजपरक पत्रकारिता (ख) वॉचडॉग पत्रकारिता

   (ग) विशेषीकृत पत्रकारिता (घ) पक्षधर या एडवोकेसी

3. किस पत्रकारिता का एक नया रूप टेलीविज़न में स्टिंग ऑपरेशन के रूप में सामने आया है?

   (क) वैकल्पिक पत्रकारिता (ख) विशेषीकृत पत्रकारिता

   (ग) खोजी पत्रकारित (घ) वॉचडॉग पत्रकारिता

4. भारत में पत्रकारिता की शुरुआत किस समाचार पत्र से हुई?

   (क) उदंत मार्तण्ड (ख) नवभारत टाईम्स

   (ग) बंगाल गजट (घ) कोलकाता गज़ट

5. टेलीविज़न माध्यम है–

   (क) श्रव्य (ख) दृश्य

   (ग) दृश्य–श्रव्य (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न संख्या–4

1. निम्न में से उचित विकल्प का चयन कीजिए।

(i) कवि के घर में कितने जोड़ी आँखें हैं?

(क) चार (ख) पाँच

(ग) दो (घ) तीन

(ii) "मगध में" हस्तक्षेप का साहस कौन करता है?

(क) मंत्री (ख) राजा

(ग) मुर्दा (घ) नागरिक

(iii) 'रजत–रचित मणि खचित' में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) श्लेष

(iv) नाश पथ से कवयित्री का क्या आशय है?

(क) नाशवान जीवन (ख) मृत्यु

(ग) जीवन (घ) अमरता

(v) पंत की कविता (क) संध्या के बाद किस वाद से प्रभावित है?

(क) गाँधीवाद (ख) पूँजीवाद

(ग) मार्क्सवाद (घ) प्रयोगवाद

(vi) "आपुन पौढ़ि अधर सज्जा" में कौन सा अलंकार है?

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) अनुप्रास (घ) यमक

प्रश्न–5 निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों में से सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

1. 'वज़ू' शब्द का अर्थ है–

(क) इबादत करना

(ख) 30 दिन के रोज़े रखना

(ग) नमाज़ पढ़ने से पूर्व हाथ–मुँह धोकर शुद्धि करना

(घ) सिज़दे में सिर झुकाना

2. गूंगा किसकी आवाज़ को कभी अनसुना नहीं करता था?

(क) चमेली (ख) सुशीला

(ग) बसंता (घ) शकुंतला

3. किसनी के बदले ऑफिस में काम करने के लिए किसे बुलाया गया था?

(क) महेश (ख) सुकिया

(ग) जसदेव (घ) मानो

4. 'भारतवर्ष की उन्नति कैसे हो सकती है' पाठ के लेखक कौन हैं?

(क) भारतेंदु हरिश्चंद्र (ख) प्रेमचंद

(ग) रामचंद्र शुक्ल (घ) हरिशंकर परसाई

5. 'टॉर्च बेचने वाले' पाठ की शैली कौन–सी है?

(क) व्यंग्यात्मक (ख) विवरणात्मक

(ग) वर्णनात्मक (घ) रहस्यात्मक

6. 'उसकी माँ' कहानी में लाल की मां कौन थी?

(क) सावित्री (ख) जानकी

(ग) सिद्धेश्वरी (घ) सरोजिनी

प्रश्न–6 निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नों का सर्वाधिक उचित विकल्प छाँटिए–

1. मकबूल फिदा हुसैन किस पेशे से थे?

(क) पत्रकार (ख) चित्रकार

(ग) मूर्तिकार (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

2. दादा जी की मृत्यु के बाद मकबूल को किस जगह भेजा?

(क) बड़ौदा (ख) मेरठ

(ग) उत्तराखंड (घ) दिल्ली

3. मकबूल के ड्राइंग मास्टर का क्या नाम था?

(क) अजहर खान (ख) मोहम्मद आमिर

(ग) मोहम्मद अतहर (घ) अब्बास जी अहमद

4. शरत की माता का क्या नाम था?

(क) चन्द्रमोहिनी (ख) भुवनमोहिनी

(ग) सुशीला (घ) बबीता

5. भागलपुर आने पर शरत् को कौन से स्कूल में भर्ती कराया गया?

(क) इन वैली स्कूल (ख) दुर्गाचरण एम.ई. स्कूल

(ग) भागलपुर एस.डी. स्कूल (घ) रामचरण एस.डी. स्कूल

प्रश्न–7 निम्न विकल्पों में से किसी एक विषय पर दृश्य लेखन कीजिए–

प्रार्थना सभा का दृश्य

अथवा

चुनावी रैली का दृश्य

प्रश्न–8 दिल्ली जल बोर्ड के अधिकारी को पत्र लिखकर अपनी कॉलोनी में अनियमित व अपर्याप्त जल वितरण से होने वाली असुविधाओं के प्रति ध्यान आकृष्ट करते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

हिंदी विषय प्रवक्ता पद पर नियुक्ति हेतु नवयुग पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य को आवेदन पत्र स्ववृत्त सहित लिखिए।

प्रश्न–9

(1) प्रेस विज्ञप्ति (प्रेस रिलीज़) में किसके बारे में जानकारी दी जाती है?

अथवा

(2) परिपत्र क्यों जारी किए गए हैं? व परिपत्र में किससे संबंधित निर्देश दिए जाते हैं।

प्रश्न–10 (क) जनसंचार में द्वारपाल की क्या भूमिका है?

(ख) समाचार किसे कहा जाता है?

प्रश्न–11 (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए–

(क) प्रणय कलह से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ख) दरबार सवैये में किस प्रकार के वातावरण का वर्णन किया गया है?

(ग) कृष्ण के अधरों की तुलना सेज से क्यों की गई है?

प्रश्न–12 निम्नलिखित में से किसी एक काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

शतदल लाल कमल वेणी में?
रजत–रचित मणि–खचित कलामय
पान पात्र द्राक्षासव पूरित
रखे सामने अपने–अपने
लोहित चंदन की त्रिपदी पर,
नरम निदाग बाल–कस्तूरी
मृगछालों पर पलथी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन
उन्मद किन्नर–किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है।
बादली को घिरते देखा है।

अथवा

झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानो,
घहरि–घहरि घटा घेरी है गगन में।
आनि कह्यो स्यामा मो सौं 'चलौ झुलिबे को आज'
फूली न समानी भई ऐसी हौं मगन मैं।।
चाहत उठ्योई उठि गई सो निगोड़ी नींद,
सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में।
आँख खोलि देखौं तौ न घन हैं, न घनश्याम,
वेई छाई बूँदें मेरे आँसु हैं दृगन में।।

प्रश्न–13 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर 40–50 शब्दों में लिखिए–

(i) 'दोपहर का भोजन' कहानी के सबसे जीवंत पात्र का चारित्रिक चित्रण कीजिए।

(ii) 'गूँगे' कहानी में आज के समाज की किन–किन समस्याओं को रेखांकित किया गया है?

(iii) लाल और उसके साथियों ने कैसे सिद्ध किया कि जानकी माँ नहीं भारत माता है? इसमें जानकी के चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है?

प्रश्न–14 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

भाइयों, राजा–महाराजों का मुँह मत देखो, मत यह आशा रक्खो कि पंडित जी कथा में कोई ऐसा उपाय भी बतलावैंगे कि देश का रुपया और बुद्धि बढ़े। तुम आप ही कमर कसो, आलस छोड़ो। कब तक अपने को जंगली हूस मूर्ख बोदे डरपोकने पुकरवाओगे। दौड़ो इस घोड़दौड़ में जो पीछे पड़े तो फिर कहीं ठिकाना नहीं है। "फिर कब राम जनकपुर ऐहैं।" अबकी जो पीछे पड़े तो फिर रसातल ही पहुँचोगे।

प्रश्न–15 (क) निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर दीजिए–

1. प्रचार–प्रसार के पुराने तरीकों और नवीन तरीकों में आपको कौन–सा तरीका पसंद है और क्यों?
2. नाना के घर किन–किन बातों का निषेध था? शरत् को उन निषिद्ध कार्यों को करना क्यों प्रिय था?

नोट्स

नोट्स